बा

हमारी बा

(अुनकी जीवन-कस्तूरी)

लेखिका

वनमाला परीख

सुशीला नय्यर

अनुवादक

काशिनाथ त्रिवेदी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

पहली बार २,२००
दूसरी बार ३,०००

जुलाओी, १९४९

दो रुपया

दो शब्द

कोचरबमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुआी, तभीसे भाआी नरहरि परीख अुसमें शामिल होनेवालोंमें हैं। अिसलिए चिरंजीव वनमालाको जो कुछ मिला है, सो आश्रममेंसे ही मिला है। वह सरकारी मदरसेसे और वहाँ मिलनेवाली शिक्षासे अछूती रही है, अिसलिअे यह माना जा सकता है कि वह मज़दूरी करना जानती है। लेकिन अुसने तो कस्तूरबाके जीवन-वृत्तान्तकी सामग्री इकट्ठा करनेका साहस किया है। अिसमें अुसने दूसरोंकी मदद ली है। यह लिखते समय मैंने दूसरे लेखोंको देखा नहीं है। चिरंजीव वनमालाका आग्रह था कि अुसके अपने लिखेको मैं देख जाअूँ। बेचारी लिखने तो बैठी कस्तूरबाके बारेमें, लेकिन बचपनमें मेरे साथ दौड़ी और खेली थी, सो मुझे कैसे भूलती? देखता हूँ कि अुसने अिधर-अुधरसे बहुतसी अप्राप्य हकीकत इकट्ठा की है और अुसे ठीक-ठीक सजाया है। अुसकी भाषा घरेलू और सादी है। मुझे अुसमें कहीं भी बनावट नहीं दिखाई दी। चिरंजीव वनमालाका यह पहला प्रयत्न कुल मिलाकर सफल हुआ है या निष्फल, अिसका फैसला तो पाठकोंको ही करना होगा।

चिरंजीव प्यारेलालकी बहन चिरंजीव सुशीलाबहनने जेलमें अुसे मिले हुअे बा के अनुभव लिखे थे। चिरंजीव वनमालाने सोचा था कि अुनमेंसे कुछ वह अपने लेखमें ले लेगी। लेकिन पढ़ने पर अुसे लगा कि बहन सुशीलाकी लिखावटमें अेक सहज कला है। अुसका अंगभंग करनेकी अुसकी हिम्मत न हुआी। मूल

हिन्दीमे ही है। वहन सुशीलाने डॉक्टरीकी आखिरी डिग्री हासिल की है। साथ ही अुसको गानेका, बजानेका, चित्र निकालनेका और साहित्यका शौक है। वह सार्वजनिक जीवनमे दिलचस्पी लेती है। स्वर्गीय महादेवने अुसके अिस गुणको देखा था और अिसे बढानेमे खूब दिलचस्पी ली थी। लेकिन वह तो सबको छोडकर चले गये। यह जीवन पूरा किया। पाठक चि० सुशीलाके लेखको अिस दृष्टिसे देखे।

यह तो हुआ लेखिकाओंके बारेमे।

लेकिन दोनों कहती है कि जब तक मै बा के विषयमे कुछ न कहूँ, तब तक यह पुस्तक अधूरी ही मानी जायगी। जब मैं ही इस सग्रहका परिचय दे रहा हूँ, तो मेरे लिअे बा के विषयमे कुछ लिख देना शायद अुचित माना जायगा। समय मिला तो विस्तारसे लिखनेका मेरा अिरादा है। यहाँ तो जिस कारणसे बा ने जनतामे अितना बडा आकर्षण पैदा किया था, अुसकी जडको मै ढूँढ सकूँ, तो ढूँढूँ। बा का जबरदस्त गुण महज अपनी अिच्छासे मुझमे समा जानेका था। यह कुछ मेरे आग्रहसे नहीं हुआ था। लेकिन समय पाकर बा के अन्दर ही अिस गुणका विकास हो गया था। मै नहीं जानता था कि बा मे यह गुण छिपा हुआ था। मेरे शुरू-शुरूके अनुभवके अनुसार वा बहुत हठीली थी। मेरे दवाव डालने पर भी वह अपना चाहा ही करती। अिसके कारण हमारे बीच थोडे समयकी या लम्बी कडुवाहट भी रहती, लेकिन जैसे-जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन अुज्ज्वल बनता गया, वैसे-वैसे वा खिलती गअी, और पुख्ता विचारोंके साथ मुझमे यानी मेरे काममे समाती गअी। जैसे दिन बीतते गये, मुझमे और मेरे काममे — सेवामे — भेद न रह गया। बा धीमे-धीमे

अुसमें तदाकार होने लगी। शायद हिन्दुस्तानकी भूमिको यह गुण अधिक-से-अधिक प्रिय है। कुछ भी हो, मुझे तो बा की अुक्त भावनाका यह मुख्य कारण मालूम होता है।

बा में यह गुण पराकाष्ठाको पहुँचा, अिसका कारण हमारा ब्रह्मचर्य था। मेरी अपेक्षा बा के लिअे वह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ। शुरूमें बा को अिसका कोअी ज्ञान भी न था। मैंने विचार किया और बा ने अुसको अुठाकर अपना बना लिया। परिणाम-स्वरूप हमारा सम्बन्ध सच्चे मित्रका बना। मेरे साथ रहनेमें बा के लिए सन् १९०६ से, असलमें सन् १९०१ से, मेरे काममें शरीक हो जानेके सिवा या अुससे भिन्न और कुछ रह ही नहीं गया था। वह अलग रह नहीं सकती थी। अलग रहनेमें उसे कोई दिक्कत न होती, लेकिन अुसने मित्र बनने पर भी स्त्रीके नाते और पत्नीके नाते मेरे काममें समा जानेमें ही अपना धर्म माना। अिसमें बा ने मेरी निजी सेवाको अनिवार्य स्थान दिया। अिसलिअे मरते दम तक अुसने मेरी सुविधाकी देखरेखका काम छोड़ा ही नहीं।

सेवाग्राम, १८-२-'४५

मोहनदास करमचन्द गांधी

पूज्य महादेवकाकाके
चरणोंमें

विषयसूची

हमारी बा

भाग पहला

जीवनकी कहानी

१

जन्म और विवाह

काठियावाड़के पोरबन्दर नगरमें सन् १८६९के अप्रैल महीनेमें बा का जन्म हुआ था। बापूजीसे बा क़रीब छह महीने बड़ी थीं। पिताका नाम गोकुलदास मकनजी था और माताका नाम व्रजकुँवर। कुल पाँच भाअी-बहनोंमें तीन भाअी और दो बहनें थीं। अिनमेंसे अेक बहन और अेक भाअी बचपनमें ही गुज़र गये थे। बड़े भाअी जवानीमें चल बसे। फिर अेक बा और अेक अुनके छोटे भाअी माधवदास दो ही रह गये। माधवदास मामा सबसे छोटे और बा तीसरी थीं।

अुस ज़मानेमें, और सो भी काठियावाड़में, लड़कियोंको कोअी पढ़ाता नहीं था। अिसलिअे बचपनमें बा बिल्कुल निरक्षर थीं। लेकिन अुनको घरके काम-काजकी अच्छी तालीम मिली थी और पिताके संस्कारी वैष्णव परिवारके कुछ अुत्तम गुण अुन्हें विरासतमें मिले थे। धार्मिक वातावरणमें अेक खास संकल्प-बल और संयमका विकास होता है, और ये दोनों बातें बा में ठेठ बचपनसे ही पाअी जाती थीं।

बा के पिताजी पोरबन्दरमें व्यापारी थे। आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। पोरबन्दर राज्यकी दीवानगीरी करनेवाले गांधी परिवारके साथ अुनका अच्छा सम्बन्ध था। अिसलिअे अुन्होंने सात सालकी अुमरमें ६॥ सालके बापूके साथ बा की सगाअी कर दी और तेरह सालकी अुमरमें अुनका विवाह हुआ।

आज हमको अिस तरहके बाल-विवाहकी बात विचित्र और विनोद-पूर्ण मालूम होती है। बापूजीने भी आत्मकथामें अुसका रोचक चित्र खींचा है। वे लिखते हैं: "मुझे याद नहीं पड़ता कि सगाअीके समय मुझसे कुछ कहा गया था। अिसी तरह ब्याहके वक़्त भी कुछ पूछा नहीं

गया। सिर्फ तैयारियोंसे ही पता चला कि ब्याह होने वाले हैं। अुस समय तो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनेंगे, बाजे बजेंगे, जुलूस निकलेंगे, अच्छा-अच्छा खानेको मिलेगा, अेक नअी लड़कीके साथ हँसी-खेल करेंगे, वगैरा अिच्छाओंके सिवा और कोअी विशेष भाव मेरे मनमे रहा हो, अैसा याद नहीं आता।" ब्याहके अवसरका वर्णन करते हुअे बापू लिखते है: "मण्डपमे बैठे, फेरे फिरे, कसार खाय खिलाया और वर-वधू तभीसे साथमे रहने लगे। दो अबोध बालक बिना जाने, बिना समझे, ससार-सागरमे कूद पड़े. . . .। कुछ अैसा खयाल होता है कि हम दोनों अेक-दूसरेसे डरते थे, अेक-दूसरेसे शरमाते तो थे ही। बाते किस तरह करना, क्या करना, सो मैं क्या जानूँ? धीरे-धीरे अेक-दूसरेको पहचानने लगे, बोलने लगे।"

अुस समयकी अपनी भावनाओंका और बा के स्वभावका बापू यों वर्णन करते है: "मुझे अपनी पत्नीको आदर्श स्त्री बनाना था। वह साफ बने, साफ रहे, मैं जो सीखूँ, सीखे, जो पढ़ूँ, पढ़े, और हम दोनों अेक-दूसरेमे ओतप्रोत रहे, यह मेरी भावना थी। मुझे याद नहीं पडता कि क़स्तूरबाअीकी भी यह भावना थी। वह निरक्षर थीं, स्वभावकी सीधी, स्वतत्र, मेहनती और मेरे साथ कम बोलनेवाली। अुन्हे अपने अज्ञानसे असतोष न था। मैंने अपने बचपनमे अुनको कभी यह अिच्छा करते हुअे नहीं पाया कि जिस तरह मैं पढता हूँ, अुस तरह वह खुद भी पढ़े, तो अच्छा हो . . . .। अुन्हे पढानेकी मेरी बड़ी अिच्छा थी। लेकिन अुसमे दो कठिनाअियाँ थीं। अेक तो बा की पढ़नेकी भूख खुली नहीं थी, दूसरे, बा अनुकूल हो जातीं, तो भी अुस ज़मानेके भरे-पूरे परिवारमे अिस अिच्छाको पूरा करना आसान नहीं था।"

बापूजी खुद अुस ज़मानेका वर्णन यों करते है: "अेक तो मुझे ज़बर्दस्ती पढाना था, और सो भी रातके अेकान्तमे ही हो सकता था। घरके बड़े-बूढोंके सामने पत्नीकी तरफ देख तक नहीं सकते थे। बाते तो हो ही कैसे सकती थीं? अुस समय काठियावाडमे घूँघट निकालनेका निरर्थक और जगली रिवाज था। आज भी बहुत-कुछ मौजूद है। अिसलिअे पढानेके अवसर भी मेरे लिअे प्रतिकूल थे। चुनाँचे, मुझे क़बूल

करना चाहिये कि जवानीमें मैंने बा को पढ़ानेकी जितनी कोशिशें कीं, वे सब क़रीब-क़रीब बेकार गयीं। जब मैं विषयकी नींदसे जागा, तब तो सार्वजनिक जीवनमें पड़ चुका था, अिसलिअे मेरी स्थिति अैसी नहीं रह गयी थी कि मैं ज़्यादा समय दे सकूँ। शिक्षकके ज़रिये पढ़ानेकी मेरी कोशिशें भी बेकार हुअीं। नतीजा यह हुआ कि आज कस्तूरबाअी मुश्किलसे पत्र लिख सकती हैं और मामूली गुजराती समझ लेती हैं। मैं मानता हूँ कि अगर मेरा प्रेम विषयसे दूषित न होता, तो आज वह विदुषी स्त्री होतीं। अुनके पढ़नेके आलस्यको मैं जीत सकता।"

२

बा का बाल-गृहस्थाश्रम

अिस प्रकार बचपनमें ही बा और बापूजीके गृहस्थाश्रमका आरम्भ हुआ। बाल-वयके अिन पति-पत्नीकी गृहस्थीका और नादानीसे भरे झगड़ोंका वर्णन बापूजीने बहुत ही मार्मिक शब्दोंमें किया है। अुससे हम देख सकते हैं कि जो भी बा निरक्षर थीं, तो भी अैसी नहीं थीं कि अपनी स्वतन्त्रताको न समझें। वे लम्बी बहस या दलील नहीं कर पाती थीं, लेकिन अपने मनकी करनेमें किसीके दाबे दबती भी नहीं थीं। बापूजी लिखते हैं:

"जिन दिनों शादी हुअी, अुन दिनों निबन्धोंकी छोटी-छोटी पुस्तिकाअें निकला करती थीं। अुनमें दाम्पत्य-प्रेम, किफ़ायतशारी, बाल-विवाह वग़ैरा विषयोंकी चर्चा रहती थी। अुनमेंसे कुछ निबन्ध मेरे हाथ पड़ जाते और मैं अुन्हें पढ़ जाता। यह आदत तो थी ही कि पढ़ना, जो पसन्द न आये अुसे भूल जाना और जो पसन्द पड़े, अुस पर अमल करना। पढ़ा था कि अेक पत्नीव्रत पालना पतिका धर्म है, और यह बात हृदयमें बसी रही।

"लेकिन अिस सद्‌विचारका अेक बुरा परिणाम हुआ। अगर मुझे अेक पत्नीव्रतका पालन करना है, तो पत्नीको अेक पतिव्रतका पालन करना चाहिये। अिस विचारकी वजहसे मैं अीर्ष्यालु पति बन गया। 'पालना

चाहिये' परसे मै 'पलवाना चाहिये' के विचार पर पहुँच गया, और अगर पलवाना है, तो पत्नीके अुपर निगरानी रखनी चाहिये। मुझे पत्नीकी पवित्रता पर शक करनेका कोअी कारण न था, लेकिन ओर्ष्या कब कारण देखने बैठती है? मुझे यह जानना चाहिये कि मेरी स्त्री कहाँ जाती है, अिसलिअे मेरी अिजाजतके बिना वह कहीं जा ही नहीं सकती। यह चीज हमारे बीच दुःखद झगड़ेका कारण बन गअी। अिजाज़तके बिना कहीं न जा सकना तो अेक तरहकी कैद हुअी। लेकिन कस्तूरबाअी अिस तरहकी कैद सहन करनेवाली थीं ही नहीं। जहाँ जाना चाहती, वहाँ मुझसे बिना पूछे जरूर जातीं। जितना ही मै दबाता, अुतनी ही ज़्यादा वह आजादी लेतीं और मै ज़्यादा चिढ़ता।"

बापू ओर्ष्यालु और शकाशील (वहमी) पति थे। अिसके खिलाफ बा बराबर आजादी लेती ही रहीं, और फिर भी बापूके वहम और अुनकी ओर्ष्याको अुन्होंने सह लिया। अैसा न किया होता, तो गृहस्थी वहीं खतम हो जाती। हिन्दू गृहस्थाश्रमोमे बालक पति पत्नीके बीच अक्सर अैसे कलह होते है, लेकिन अुनमे कुल मिलाकर स्त्रियाँ ही ज़्यादा समझदारी, धीरज और सहनशीलताका परिचय देती है। यही वजह है कि गृहस्थीकी नैया टकरा कर चूर होनेसे बच जाती है। फिर तो दोनो सयाने हो जाते है, और गृहस्थी सरलतासे चलती है। अिस प्रकार अुसको सरल और सफल बनानेमे अधिक हिस्सा स्त्रियोका होता है। अैसे समय स्त्री गम खाती है और सहन कर लेती है। पुरुषको तो अुस वक्त अपनी सत्ता जमाने, स्वामित्व सिद्ध करनेका जोश चढ़ा रहता है। लेकिन स्त्रीकी समझदारीके कारण गृहस्थी निभती है।

बापूजी आत्मकथामे लिखते है: "कस्तूरबाअीने जो आजादी ली थी, अुसे मै निर्दोष मानता हूँ। अेक बालिका, जिसके मनमे पाप नहीं, वह देव-दर्शनको जानेके लिअे या किसीसे मिलने जानेके बारेमे अैसा दबाव क्यो सहन करे? अगर मै अुस पर दबाव रखता हूँ, तो वह मुझ पर क्यों न रखे? किन्तु यह तो अब समझमे आता है।"

लेकिन अैसा नहीं हुआ कि बा हरबार चुप ही रह गअी हों। बापूके गर्विष्ठ (घमण्डी) पति होते हुअे भी जब जरूरत मालूम हुअी, बा अुन्हें

चेतावनी देनेमें पीछे नहीं रहीं। बापूजीने लिखा है कि अेक बुरे मित्रकी सोहबतके सिलसिलेमें मेरी माताजी, बड़े भाअी और मेरी पत्नीने मुझको चेताया था। अुस मित्रकी सोहबतमें रहनेके जिस खतरेको बापूजी नहीं देख सके थे, अुसे बा अपनी सहज बुद्धिसे ताड़ गअी थीं और खास बात यह थी कि अैसा करके वह चुप नहीं बैठ गअीं। अनपढ़ और कम अुम्रकी बा में अुस समय भी विवेकशक्ति और स्वतन्त्र विचारशक्ति थी। अपने लिअे क्या अच्छा है और क्या बुरा है, सो तो बा समझती ही थीं। अिसके सिवा, अुन्हें अिस बातका भी खयाल था कि अपने पतिके लिअे क्या अच्छा है और क्या खतरनाक है। अिसलिअे "पत्नीकी चेतावनीको मैं गर्विष्ठ पति क्यों मानने लगा?"—अिन शब्दोंमें अपने दुःखको व्यक्त करनेके साथ ही साथ बापूजीने बा की समझदारीको भी स्वीकार किया है।

* * *

अिस समयके बा के जीवनकी दूसरी घटनाओंको मैं अेकत्र नहीं कर सकी। सन् १८८८ में बापूजीके विलायत जानेसे पहले बा के अेक बालक जन्मा था, जो दो या चार ही दिनमें मर गया और अुसके बाद हरिलालभाअीका जन्म हुआ। अुस समय अुनकी अुमर क़रीब १९ सालकी थी। बापूजीने लिखा है कि विलायत जानेके समय अुन्होंने सबसे विदा वगैरा माँगी थी, लेकिन बासे विदा माँगनेके बारेमें और अुनकी भावनाके बारेमें कहीं कुछ भी नहीं लिखा है। अलबत्ता, बा को यह अच्छा तो नहीं लगा होगा। बहुत-बहुत तो बा ने अितना पूछा होगा कि वापस कब आयेंगे और बापूने प्रेमपूर्वक कुछ आश्वासन दिया होगा। बापूजी विलायतमें थे, तभी अुनकी माताजी यानी बा की सास गुज़र गअीं। बा की जेठानी घंटों पूजामें रहती थीं। अुस समय अुनके बच्चोंको नहलाने-धुलाने और सँभालनेका सारा काम बा ही दिन-रात किया करती थीं। रसोअीघर तो समूचा बा के ही ज़िम्मे था। बा ने सासके जैसी ही जेठानीकी भी सेवा की है।

विलायतसे वापस आनेके बाद भी बापूजी अपने ओर्ष्यालु स्वभावको छोड़ नहीं पाये थे। वे लिखते हैं: "हर मामलेमें मेरी नुक्ताचीनी और

मेरा वहम क़ायम रहा। अिसकी वजहसे मैं अपनी चाही हुअी मुरादोंको पूरा नहीं कर पाया। मैंने सोचा था कि मेरी पत्नीको अक्षरज्ञान होना ही चाहिये और वह मैं अुसे दूँगा। लेकिन मेरी विषयासक्तिने मुझे वह काम करने ही न दिया, और अपनी खामीका गुस्सा मैंने पत्नी पर अुतारा। अेक वक़्त तो अैसा आया कि मैंने अुसे अुसके मायके ही भेज दिया और बहुत ज़्यादा तकलीफ देनेके बाद फिर साथ रहने देना क़बूल किया। बादमे मै देख सका कि अिसमे मेरी निरी नादानी ही थी।"

अिस घटनाके बारेमे बापूजीसे ज़्यादा जानकारी प्राप्त की जा सकती थी। लेकिन अुनकी बीमारी और दूसरे महत्त्वके कामोंमे अुनकी व्यस्तताके कारण मे अिस सम्बन्धका ब्यौरा अुनसे प्राप्त नहीं कर सकी।

हिन्दुस्तानमे बापूजीकी बैरिस्टरी अच्छी तरह नहीं चली और अुन्हे अेक मुकदमेके सिलसिलेमे अफ्रीका जाना पडा। अुस समयकी अपनी और बा की भावनाकी थोड़ी झॉकी बापूजीने हमे दी है। वे लिखते है: "विलायत जाते समय जो वियोग-दुःख हुआ था, वह दक्षिण अफ्रीका जाते वक्त नहीं हुआ। माता तो चली गअी थीं, अिसलिअे अिस बार सिर्फ पत्नीके साथका वियोग दुःखदायी था। विलायतसे लौटनेके बाद दूसरे अेक बालककी प्राप्ति हुअी थी। हमारे बीचके प्रेममे अभी विषय तो था ही, फिर भी अुसमे निर्मलता आने लगी थी। मेरे विलायतसे लौट आनेके बाद हम बहुत कम समय अेक साथ रहे थे। और चूँकि मै स्वयं, कैसा भी क्यों न होअूँ, अेक शिक्षक बना था, और मैंने अपनी पत्नीमे कुछ सुधार कराये थे, अिसलिअे अुन्हें कायम रखनेके खयालसे भी हमारे अेक साथ रहनेकी जरूरत हम दोनोंको मालूम होती थी। लेकिन अफ्रीका मुझे खींच रहा था। अुसने वियोगको सरल बना दिया। 'अेक सालके बाद तो हम मिलेंगे ही न?' — अिस प्रकार ढाढस बँधाकर मैंने राजकोट छोड़ा और बम्बअी पहुँचा।" लेकिन बापूजी तो दक्षिण अफ्रीकामे अेकके बदले तीन साल रह गये। बा के ये साल भी राजकोट ही मे बीते। १८९६ मे बापूजी छह महीनोंके लिअे अपने परिवारको ले जानेके अिरादेसे देशमे आये। लेकिन छह महीने पूरे

ई. स. १९१५ में

बा और बापू

होनेसे पहले ही अफ्रीकासे फ़ौरन वापस आनेका तार आया और बापूजी बा को, अपने दो बालकोंको और अपने स्वर्गीय बहनोअीके अेक पुत्रको लेकर अफ्रीकाके लिअे रवाना हो गये।

३

आदर्श सहधर्मचारिणी

बापूजीने अेक जगह लिखा है: "अगर मैं अपनी पत्नीके बारेमें अपने प्रेम और अपनी भावनाका वर्णन कर सकूँ, तो हिन्दूधर्मके बारेमें अपने प्रेम और अपनी भावनाओंको मैं प्रकट कर सकता हूँ। दुनियाकी दूसरी किसी भी स्त्रीके मुक़ाबले मेरी पत्नी मुझ पर ज़्यादा असर डालती है।"

कहा जा सकता है कि बापूजीको अपने जीवनमें जो भी अूँचीसे अूँची चीज़ मिली है, जो भी प्रेरणा प्राप्त हुअी है, जो कुछ मार्ग-दर्शन मिला है, वह जिस तरह हिन्दूधर्मसे मिला है, अुसी तरह बा से भी मिला है। अिन दोनों जीवनदायी और प्रेरणा पहुँचानेवाले बलोंके बारेमें रहस्यकी बात यह है कि बापू अिन दोनोंमेंसे किसी अेकको भी पसन्द करने नहीं गये थे। हिन्दूधर्म जन्मके साथ मिला। विलायत जाते समय माताकी अिच्छासे अेक जैन साधुके सामने ली हुअी प्रतिज्ञाओंका वहाँ पूरा-पूरा पालन किया, सो अुन प्रतिज्ञाओंके महत्त्वको समझकर नहीं, बल्कि अिसलिअे किया कि ली हुअी प्रतिज्ञाका पालन विकटसे विकट परिस्थितिमें भी करना ही चाहिये। हिन्दूधर्मकी अिस भावनाका माँके दूधकी तरह अुन्होंने बचपनसे पान किया था। अिसी तरह पत्नीको भी अुन्होंने चुना नहीं था। जिस तरह धर्म माता-पिताका मिला, अुसी तरह पत्नी भी माता-पिताने ही ला दी। आत्मकथामें वे कहते हैं: "किसी लड़कीके साथ शादी होनेवाली है, और वह मुझे पसन्द है या नहीं, सो सब कुछ मुझसे पूछा नहीं गया था, बल्कि सारा प्रबन्ध मेरे माता-पिताने ही किया था।"

दूसरी अेक रहस्यमय घटना यह है कि अपने जीवनके आरम्भमे अिन दोनोंके बारेमे, यानी हिन्दूधर्मके बारेमे और पत्नीके बारेमे, बापू सशक थे। दक्षिण अफ्रीकामे हिन्दूधर्मके बारेमे अुन्होंने अेक मित्रसे कहा था: "जो भी मै जन्मसे हिन्दू हूँ, फिर भी हिन्दूधर्मके बारेमे बहुत जानता नहीं। दूसरे धर्मोके बारेमे तो और भी कम जानता हूँ। धर्मके मामलेमे मेरी धारणा क्या है, किस धर्ममे मुझे श्रद्धा है और किस धर्ममे मुझे श्रद्धा रखनी चाहिये, सो मै कुछ भी नहीं जानता।" जिस तरह बापूने हिन्दूधर्मके पूरे-पूरे महत्त्व और सच्चे रहस्यको जाने बिना धार्मिक जीवनका आरम्भ किया था, अुसी तरह पत्नीके महत्त्व और अुसके सच्चे गुणोकी किसी कल्पनाके बिना ही अुन्होंने अपने गृहस्थ जीवनका श्रीगणेश किया था। बापूजी खुद ही कहते हैं: "मै अीर्ष्यालु और वहमी पति था। पत्नी कहाँ जाती है और क्या करती है, अिस पर मैं अकुश रखना चाहता था।"

अैसा होते हुअे भी बापूजीने आखिर अिन दोनोंको समझनेकी खूब कोशिश की। दोनोको अपनाया और दोनोकी मददसे अपने जीवनको धन्य किया। हिन्दूधर्मके गहरेसे गहरे रहस्यको खुद खोज निकाला और अुसके प्रभावसे स्वय दुनियाकी अेक धार्मिक विभूति बने — सन्त और महात्माके नामसे मशहूर हुअे। अिसी तरह जैसे-जैसे बा के सच्चे गुणोंको वे समझते गये, वैसे-वैसे अपने गृहस्थ-जीवनको धन्य बनाते गये और बापू सच्चे 'बापू' बने।

बापूजीको तपश्चर्याका शौक है। तप और संयमके बडे-बडे प्रयोग वे करते ही रहते है। जीवनको अुन्होने तपोमय बना दिया है। फिर भी तपस्वीमे जो शुष्क वैराग्य और कर्कशता आ जाती है, वह अुनके जीवनमे नही आ पाअी है। प्रेम और करुणा मूल ही से अुनके स्वभावमे रहे हैं। अिस प्रेम और करुणाके स्रोतको अुनकी तपःपरायणता शायद सुखा डालती, लेकिन यह सोता न सिर्फ सूखा ही नहीं, बल्कि बढते तपके साथ खुद भी बढता ही गया है, सो बा का प्रताप समझना चाहिये।

बापूजीके समान अुग्र तपस्वीके जीवन पर अिस तरहका असर डालना किसी मामूली योग्यताका काम नहीं है। बापूकी तपस्याकी भट्टीके नज़दीक कुछ देरके लिअे रहना भी कितना कठिन है, सो तो अनुभवी ही जानते हैं। श्रीमती पोलाक ब्याहके बाद तुरन्त ही बापूजीके अेक परिजनके नाते अुनके घर ही में रही थीं। वहाँ अुनको कितनी कठिनाअियाँ सहनी पड़ी होंगी, अिसके बारेमें हमें सहृदय बननेकी सलाह देते हुअे श्री अेण्ड्रयूज़ लिखते हैं: "अैसे अेक सन्तके साथ, जो हमेशा किसी-न-किसी शारीरिक कष्टको भोगनेका आग्रह रखता हो, जो ज़िद्दी और धुनका पक्का हो, और अितना होने पर भी जिसे प्यार करनेकी मनमें अिच्छा होती हो, अुसके अेक परिजनकी तरह रोज़का बहुत निकटका जीवन बिताना श्रीमती पोलाकके लिअे कितना कठिन हुआ होगा?"

श्रीमती पोलाकको तो कुछ महीने या अेक-दो साल ही बापूके घरमें रहना पड़ा होगा, और वह भी अुन्हें कठिन मालूम हुआ; तो फिर जिनके जीवनका गठबन्धन ही अैसे 'सन्त'के साथ हुआ हो, अुन बा की क्या हालत हुअी होगी, सो सोच लीजिये। अलबत्ता, बा को बहुत-सी मुश्किलोंका सामना करना ही पड़ा होगा। लेकिन अुन्होंने अुन तमाम मुश्किलोंको गौरवके साथ न सिर्फ़ पार किया है, बल्कि बापूजीको भी अुनकी तपश्चर्याके जोशमें ज़रूरतसे ज़्यादा कठोर या शुष्क नहीं बनने दिया। बा के जीवनका यही सच्चा रहस्य है। बापू ख़ुद कहते हैं: "हमारे बीच झगड़े तो ख़ूब हुअे हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही रहा है। बा ने अपनी अद्भुत सहनशक्तिसे विजय प्राप्त की है।"

दक्षिण अफ्रीकामें बापूजीके जीवनने करवट लेना शुरू किया और सन् १९०४ में तो अुन्होंने जीवनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन कर डाला। जीवनके परिवर्तनका अुनका आग्रह अितना तीव्र और अुत्कट था कि अुन दिनों अुनके साथ निभना मुश्किल था। अेक दफ़ा गोखलेजीने बापूजीको हँसी-हँसीमें, लेकिन सच ही कहा था: "तुम बड़े ज़ालिम हो। अेक ओरसे तुम्हारा प्रेम और दूसरी ओरसे तुम्हारा आग्रह दूसरे पर अितने ज़ोरका असर करते हैं कि बेचारा तुम्हारी अिच्छाके अनुसार चलने और तुम्हें ख़ुश करनेको मजबूर हो जाता है।" श्रीमती सरोजिनी नायडू

भी बापूजीको अक्सर जालिम ('टायरण्ट') कहतीं और अपने पत्रोंमें अुन्हें 'माय डीयर टायरण्ट' (मेरे प्यारे जालिम) लिखा करती थीं। बापूके अैसे अत्याचारी प्रेममें और जीवन-परिवर्तनकी अुत्कट तीव्रतामें बा किस तरह निभी होंगी? बापूजीके जीवनका प्रवाह त्याग, वैराग्य, सन्यासकी तरफ जोरसे बहा जा रहा था। बा ने अुसको अनुकूल और अिष्ट मार्गसे बहने दिया है, अुसमें कोअी रुकावट नहीं डाली, और फिर भी जहाँ-जहाँ जरूरत हुअी, वहाँ-वहाँ नम्र सूचनाके रूपमें बाँध बाँध कर, सविनय प्रतिकारके रूपमें अिष्ट रुकावटें खड़ी करके, प्रवाहको प्रतिकूल या अनिष्ट दिशामें बहनेसे रोका है और हमेशा योग्य दिशामें रखा है। काव्यप्रकाशके कर्ता मम्मटने कविताके बोध अथवा अुपदेशकी कान्ताके अुपदेशके साथ तुलना की है। बा ने अिस अुपमाको भलीभांति चरितार्थ किया है। अपनी नम्रतापूर्ण समझाअिश, सौम्य आग्रह और निरुपाय हो जाने पर आँसुओंके ज़रिये बा ने बापूजीको कठोर बनने, कर्कश बनने और ज़ालिम बननेसे रोका है। अुनको प्रेमल और सरस बनाये रखा है।

अिससे कोअी यह न समझे कि बा ने बापूजीको जीवनमें आगे बढ़नेसे रोका है। बापूजी कहते हैं: "बा में अेक गुण बहुत बड़ी मात्रामें है, जो दूसरी बहुतसी हिन्दू स्त्रियोंमें न्यूनाधिक मात्रामें पाया जाता है। अिच्छासे हो या अनिच्छासे, ज्ञानसे हो या अज्ञानसे, मेरे पीछे-पीछे चलनेमें अुन्होंने अपने जीवनकी सार्थकता मानी है, और शुद्ध जीवन बितानेके मेरे प्रयत्नमें मुझे कभी रोका नहीं। अिसके कारण, जो भी हमारी बुद्धिशक्तिमें बहुत अन्तर है, तो भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन सन्तोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी है।" बापूजीके धार्मिक महाव्रतोंमें और देशसेवाके महाव्रतोंमें बा हमेशा अुनके साथ ही रही हैं। अुन्होंने बापूको बराबर आगे ही बढ़ने दिया है। अुदाहरणके लिअे, बापू खुद कहते हैं: "ब्रह्मचर्य व्रतके पालनमें बा की तरफसे कभी विरोध नहीं अुठा। अथवा बा कभी ललचानेवाली नहीं बनीं। मेरी अशक्ति अथवा आसक्ति ही मुझे रोक रही थी।" सादगी भी बा में सहज थी, स्वभावसिद्ध थी। कपड़ों वगैराके ठाठबाटको छोड़नेमें किसीको थोड़ा भी

प्रयत्न करना पड़ा हो, तो कपड़ोंकी टीम-टामके शौक़ीन और चिकन-पोश बापूको ही करना पड़ा होगा। अपरिग्रह बा के लिअे अवश्य ही कठिन रहा होगा। लेकिन अुसके सम्बन्धमें भी बा ने अपने लिअे तो अपने मनको बहुत जल्द मना लिया था। परिग्रहका जो थोड़ा मोह या अिच्छा बा में थी, सो लड़कोंकी बहुओं और बेटियोंके लिअे ही थी। मनको मना लेनेके सम्बन्धकी बा के जीवनकी अेक घटना पूज्य रावजीभाअी मणिभाअी पटेलने — जिनको अफ्रीकामें बा और बापूकी गृहस्थीमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था — मुझे लिख भेजी है, और वह अिस प्रकार है:

"बात फिनिक्स आश्रमकी है। सन् १९१३का साल था। अेक दिन सवेरे भोजनके बाद कोअी ११ बजे मैं खानेकी मेज़के पास बैठा था। बापूजी हमेशा सबको जिमा कर जीमते थे। वे भोजन कर रहे थे और अुनके पास अुनके परिवारके अेक बुज़ुर्ग कालिदास गांधी बैठे थे। वे टूँगाट नामक गांवमें रहते थे और वहांसे कुछ दिनके लिअे आये थे। बा खड़ी-खड़ी रसोअीघरमें सफ़ाअीका काम कर रही थीं। श्री कालिदासभाअी कुछ पुराने विचारोंके थे।

"दक्षिण अफ्रीकामें अेक मामूली व्यापारीके यहां भी रसोअीघरका और दूसरा सफ़ाअी वगैराका काम करनेके लिअे नौकर रहते थे। यहां बा को अपने हाथों सब काम करते देखकर श्री कालिदासभाअीने बापूजीको सम्बोधन करके कहा: 'भाअी, तुमने तो जीवनमें बहुत हेरफेर कर डाला। बिलकुल सादगी अपना ली। अिन कस्तूरबाअीने भी कोअी वैभव नहीं भोगा।'

"'मैंने अिन्हें वैभव भोगनेसे रोका कब है?' — बापूने खाते-खाते जवाब दिया।

"'तो तुम्हारे घरमें मैंने क्या वैभव भोगा है?' — बा ने हँसते-हँसते ताना मारा।

"बापूजीने अुसी लहजेमें हँसते-हँसते कहा — 'मैंने तुझे गहने पहननेसे या अच्छी रेशमी साड़ियाँ पहननेसे कब रोका है, और जब तूने चाहा, तब तेरे लिअे सोनेकी चूड़ियां भी बनवा लाया था न?'

भेजा ही नहीं, अखबारोंमे तो वह छपता ही कैसे ? सेवाग्राममे मैं महादेव काकाके कुछ पत्रोंकी नकल कर रही थी, अुन्हींमे यह पत्र मुझे मिल गया। बापूकी अिजाजतसे अुसे यहाँ देती हूँ। असल गुजराती पत्रका चित्र सामनेवाले पृष्ठ पर दिया है। सुधार कर पढ़नेसे वह अिस तरह पढ़ा जाता है :

शुक्रवार

"अ० सौ० लीलावती,

तुम्हारा पत्र मुझे बहुत खटकता रहता है। तुम्हारे और मेरे बीच तो कभी बातचीतका भी बहुत मौका नहीं आया। फिर तुमने कैसे जाना कि गांधीजी मुझे बहुत दुःख देते हैं? मेरा चेहरा अुतरा रहता है, वे मुझे खानेके बारेमे भी दुःख देते हैं, सो तुम देखने आओी थीं ? मेरे जैसा पति तो दुनियामे भी किसीके नहीं होगा। सत्यके कारण वह सारे ससारमे पूजा जाता है। हजारों अुसकी सलाह लेने आते है। हजारोंको सलाह देते है। कभी, किसी दिन, बिना मेरी भूलके मेरा दोष नहीं निकाला। मैं दूरकी सोच न सकूँ, मेरी दृष्टि सकुचित हो, तो कहते है कि यह तो सारी दुनियामे होता ही आया है। गांधीजी अखबारोंमे चर्चा करते हैं। दूसरे घरमे कलह मचाते हैं। अपने पतिके कारण तो मैं सारे ससारमे पूजी जाती हूँ। मेरे सगे-सम्बन्धियोंमे खूब प्रेम है। मित्रोंमे मेरा बहुत मान है। तुम मुझ पर झूठा आरोप लगाती हो, सो कोओी मानेगा नहीं। मैं तुम्हारी तरह आजकलके जमानेकी नहीं हूँ। खूब आजादी लेना, पति तुम्हारे ताबेमे रहे तो ठीक, नहीं तो तेरा और मेरा रास्ता अलग है। लेकिन सनातनी हिन्दूको यह शोभा नहीं देता।

पार्वतीजीका तो यह प्रण था कि 'जन्मोजन्म' शंकर मेरे पति हैं।

लि० कस्तूर गांधी"

શુક્રવાર

અંસરી, બીબામ્માવી

તમારો પત્ર મને બહુ ખુશ કરે છે
તમારે અને અમારે તો કોઈ દીવસ વાત
ચીત કરવાનો વખત બહુ નથી આવ્યો
તોત મે કે મ જાણ્યુ કે મને ગાંધીજી
બહુ દુઃખ આપે છે મારો ચેરો ઉતરયો
હોય છે. મને ખાવા પીવો પણ દુઃખ આપે
તેની મેં બેવા આવ્યા તા મારા જેવો પતી
તો કોઈને દુખ આપનાર [illegible] હિ હોય
સત્યથી આખા જગતમા પુજાય છે. હજારો
તેની સલા લેવા આવે છે. હજારોને સલા
આપે છે. મને કોઈ દીવસ મારી ભુલ વગર
મારો વાક નથી કઢયો મારા બાળ[illegible]માં
ન આવે તુકો ધોટ હોય તો કહે તેનો આખા જ
ગતમાં [illegible] છે ગાંધીજી છાપે મોટા

પે બીન આદરમાં ફેરફાર કરે મારા પતીને
લીધે તો હું આ બાબતમાં પુછવું. મારા સગા
વહાલામાં ખુબ પ્રેમ છે. મિત્રોમાં મારૂ ઘણું માન છે
તમે મારા ઉપર ખોટી આડઆડા પા છો તે
કોઈ માનવાનું નથી હું તમારા જેવી આજ
કાલના નમાલા જેવી હું નથી ખુબ ધરી લેવી
પતીના તમુસના આમાર રહે તો સારૂ નહિં તો તારો અને
મારો રસતો નોખો છે
પણ સમાલજો હિંદુને તે ન છાજે
પાર્વતીજીને એવુ પણ હતું કે જનમો જનમ
સંકર મારા માનજો છે,
લી. કસ્તુર ગાંધી

४

संकटकी साथिन

पिछले प्रकरणमें यह कहा जा चुका है कि सन् १८९६ के अखीरमें जब बापूजी दूसरी बार अफ्रीका गये, तो बा अुनके साथ थीं। बापू जो थोड़ा वक्त हिन्दुस्तानमें रहे, अुस बीच अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी हालतके बारेमें यहाँ कुछ भाषण दिये थे। अिन भाषणोंकी खबरें तोड़-मरोड़कर और बढ़ा-चढ़ाकर दक्षिण अफ्रीका भेजी गअी थीं, जिनके कारण डरबनके गोरे लोग बापूसे चिढ़ गये थे। तिसपर वहाँ यह अफ़वाह फैलाअी गअी थी कि गांधी तो अेक स्टीमर भर हिन्दुस्तानियोंको लाया है, और नातालको हिन्दुस्तानियोंसे भर देना चाहता है। अिस वजहसे वे बहुत ही अुत्तेजित हो अुठे थे और बापूके स्टीमरसे अुतरने पर अुन पर हमला करनेका अिरादा रखते थे।

अैसी हालतमें वहाँके मंत्रि-मण्डलके अेक सदस्य और डरबनके अेक खास कार्यकर्ताकी ओरसे स्टीमरके कप्तानको संदेशा मिला कि लोग अुत्तेजित हैं और गांधीकी जान जोखिममें है, अिसलिअे अुनको और अुनके परिवारको शामके वक्त अँधेरा होनेके बाद स्टीमरसे अुतारना। लेकिन बापूके और हिन्दुस्तानियोंके अेक गोरे वकील मित्रको यह सूचना पसन्द नहीं पड़ी। अुन्होंने स्टीमर पर आकर बापूसे कहा: "अगर आपको ज़िन्दगीका डर न हो, तो मैं चाहता हूँ कि श्रीमती गांधी और बच्चे गाड़ीमें रुस्तमजी सेठके घर जायँ और आप और मैं सरेआम रास्तेसे पैदल चलें। आप अँधेरा होने पर चुपचाप शहरमें दाखिल हों, यह मुझे तो ज़रा भी नहीं रुचता। मैं तो मानता हूँ कि आपका बाल तक बाँका नहीं होगा। अब तो सब शान्त है; गोरे सब तितर-बितर हो गये हैं, और मेरी राय है कि कुछ भी क्यों न हो, आपको छिप कर तो हरगिज़ न जाना चाहिये।"

बापू अुनकी अिस रायसे सहमत हुअे। बा और बच्चे तॉगेमे रुस्तमजी सेठके घर सही-सलामत पहुँचे। बापू अुन गोरे मित्रके साथ पैदल चले। ज्योंही लोगोंको पता चला, वे सब जमा हो गये और अूधमी लोगोंके अुस दलने अुन मित्रको बापूसे अलग कर दिया और फिर बापूजी पर हमला किया। ककर पत्थर, अण्डे, लात वगैराकी बापू पर वर्षा-सी की गअी। अिसी बीच पुलिसके अफसरकी पत्नी अुधरसे गुजरीं। अुन्होंने बापूको पहचाना और अुन्हे बचानेके लिअे भीड़के सामने खड़ी हो गअीं। दूसरी तरफसे पुलिसकी मदद भी आ पहुँची और बापू रुस्तमजी सेठके घर पहुँचे। बापूको जो अन्दरूनी मार पड़ी थी, अुसका अिलाज स्टीमरके डॉक्टरने, जो वहॉ मौजूद थे, करना शुरू किया। गोरोंकी भीड़ने घरको घेर लिया और धमकी देनी शुरू की कि गांधीको सौंपा न गया, तो मकानमे आग लगा दी जायगी। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी हिकमतसे बापूजीको अुस घरसे भगाया गया। जब लोगोको पता चला कि अुनका शिकार छटक गया है, तो वे भी तितर-बितर हो गये।

बापूजीकी यह अेक बड़ी कसौटी थी। लेकिन साथ ही साथ बा की भी कितनी ज़बरदस्त कसौटी! खुद बा को मार तो नहीं पडी थी, लेकिन स्वय कष्ट सहन करनेकी अपेक्षा अेक अनजान देशमे पैर रखते ही अपने पतिके प्राण सकटमे पड़ जायॅ, अुस समय कितनी घबराहट और कितनी चिन्ता होती है, सो सोचने लायक है। बापूके सकटमे साथ रहनेकी यह घटना तो अचानक ही हो गअी, लेकिन तबसे बा हमेशा बापूजीके सकटोंमे अुनकी साथिन रही है। बा के दिलमे हमेशा, जागते-सोते, बापूजीके लिअे बराबर चिन्ता बनी ही रहती थी। अुन्होंने हमेशा अपने दिलमे अिस भावनाका सेवन किया था कि जब बापूजी आफतमे हों, तब वह और कहीं रह ही नहीं सकतीं। अिसके कुछ अुदाहरण 'स्त्री-जीवन' के विशेषांकमे श्री० कुसुमबहन देसाअीने, जो आश्रममे बापूके साथ कुछ साल रह चुकी हैं, अपने अेक लेखमे दिये है। अुन्हींमेसे कुछ यहॉ दिये जाते है:

"अेक बार बहुत रात बीते बापूजी साबरमती-आश्रममे सो रहे थे। सामने ओसारीमे बा और मै सोअी थी। कोअी दो-ढाअी बजे बापूजी

अेकाअेक अुठे और चल पड़े। बा जाग अुठीं और मुझसे पूछने लगीं: 'बापूजी कहाँ जाते होंगे? हम अुनके पीछे चलें? कहीं बुद्धके जैसा तो नहीं हुआ?' हम दोनों पीछे-पीछे गअीं और थोड़ी दूर ही से बापूजीको देखा। बापूजीने कहा: 'तुमने सोचा होगा कि मैं भाग जाअूँगा?' सड़क पर कोअी आदमी बिच्छूके काटनेसे रो रहा था। अुसका रोना सुनकर बापूजी अुधर गये थे।

"१९२९में बापूजी कुछ समयके लिअे हिमालयके कौसानी नामक स्थानमें रहे थे। अुस समयकी यह घटना है:

"हिमालयमें सरदी और कुहरेका पार नहीं रहता, फिर भी बापूजी अपने नियमके अनुसार वहाँ खुलेमें ही सोते थे। अेक रातको बाघका बच्चा बापूजीके बिछौनेके पास चक्कर काट गया। नैनीतालसे आये हुअे कुछ कार्यकर्त्ता वहाँ बापूजीके स्वागत-सत्कारके लिअे रहते थे। अुनमेंसे अेकने अिस बच्चेको देखा। दूसरे दिन बापूजीसे यह बात कही गअी। सबने खुलेमें सोनेके बदले अन्दर सोनेका बहुत आग्रह किया। अिस पर बापूजी खूब ही हँसे और हमेशाकी तरह खुलेमें ही अपना बिस्तर लगवाया। यह देखकर बा ने भी, जो रोज़ अन्दर सोती थीं, अपना बिछौना बाहर करवाया और बापूजीकी जोखिममें खुद सहभागिन बनीं।

"अुसी साल बापूजी बनारस गये थे। तब वहाँके सनातनियोंने अुनके खिलाफ़ बहुत ज़ोरोंका आन्दोलन अुठाया था। आम सभामें बापूजीके साथ बा वग़ैरा कोअी गया नहीं था। ज्यों ही बा को पता चला कि सभामें बहुत गड़बड़ मची है, वे खुद वहाँ जानेको तैयार हो गअीं। बा, देवदासभाअी, जवाहरलालजी वग़ैरा सभा-स्थानकी ओर चले। रास्तेमें सामनेसे अुपद्रवी लोगोंकी अेक भीड़ने आकर मोटरको सभाकी जगह जानेसे रोकनेकी कोशिश की। देवदासभाअी और जवाहरलालजी मोटरसे अुतर पड़े। जवाहरलालजीने दो-चारको पकड़कर दूर हटाया और टोली तितर-बितर हो गअी। लेकिन भीड़ बहुत ज़ोरोंकी थी। अिसलिअे हम सभी मोटरसे अुतर गये। देवदासभाअी और जवाहरलालजी बा से अलग पड़ गये। अितनेमें पता चला कि सभामें पत्थर बरस रहे हैं, और बा बोल अुठीं: 'सभामें पत्थर बरसते हों, बापूजी सभामें हों और मैं बाहर

कैसे रहूँ ?' और बा ने सभा-स्थानकी ओर चलना शुरू किया। हमने बड़ी कठिनाअीके साथ भीड़को चीरा और हम सभाकी जगह पहुँचीं।"

बापूजीके अनेक अुपवासोंमें भी बा ज़्यादातर बापूके साथ ही रही हैं, और बहुत फ़िक्रके साथ अुन्होंने अुनकी सार-सँभाल की है। जब पति जीवन और मरणके बीच झोंके खा रहा हो, अैसे समय विह्वल न होकर कड़ी छाती रखने और सेवा-चाकरीमें कोअी कमी न रहने देने जितना मन पर क़ाबू रखनेके लिअे भी अद्भुत वीरताकी जरूरत होती है। बा में यह वीरता थी। सन् १९३२ मे हरिजनोंके सवालको लेकर जब यरवड़ा जेलमें बापूजीने आमरण अुपवास शुरू किये थे, तब बा साबरमती जेलमें थीं। सौ० लाभु बहनने, जो साबरमती जेलमें अुनके साथ थीं, बापूसे दूर रहनेके कारण अुस समय बा की बेचैनीका वर्णन करते हुअे लिखा है: "हम भागवत पढ़ते हैं, रामायण-महाभारत पढ़ते हैं, लेकिन अुनमें कहीं अैसे अुपवासोंकी बात नहीं आती। बापूकी तो बात ही और है। वे अैसा ही करते रहते हैं। अब क्या होगा?" साथकी बहनें आश्वासन देतीं कि सरकार कोअी रास्ता निकालेगी, अुनके पास सेवा-चाकरी करनेवाले बहुत हैं, वग़ैरा। लेकिन बा को तो पल-पलमें यही विचार आता कि क्या हुआ होगा? क्या होगा?"

बहनें कहतीं: "सरकार बापूको सब सहूलियतें देगी। आप क्यों फिकर करती है?" अिस पर बा जवाब देतीं: "लेकिन बापू कोअी सहूलियत ले तब न? वे तो सभी बातोंमें असहयोग करते हैं। अुनके जैसा आदमी तो न कहीं देखा, न कहीं सुना। पुराणोंकी बहुतेरी बातें सुनी हैं, लेकिन अैसा तप तो कहीं नहीं देखा।" फिर कुछ समय बीतता और बा खुद ही कहने लगतीं: "वैसे कोअी दिक्कत नहीं होगी, महादेव वहाँ है, वल्लभभाअी है, सरोजिनीदेवी हैं। लेकिन हम हों, तो फर्क पड़े न?"

"हम हों तो फ़र्क़ पड़े न?" अिस अेक वाक्यसे बा की समूची चिन्ता व्यक्त होती है। अुन्हें बराबर यह लगा करता था कि अुनके जितनी सार-सँभाल दूसरे नहीं कर सकते और यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि बापूजीको जितना वे जानतीं, अुनकी आदतोंका जितना ज्ञान अुन्हें होता, अुतना दूसरोंको कैसे हो सकता था और वे पहलेसे कैसे सब बातोंको सोच

सकते थे? आखिर सरकारने बा को साबरमती जेलसे हटाकर बापूके पास यरवड़ा भेजा। बापूके पास पहुँचकर बा ने अुलाहनेभरी आँखोंसे कहा: 'यह फिर और क्या?' बापू चुप रहे। बा की प्रेमभरी चिन्तातुर आँखोंने और बापूके भक्तिभावसे भरे मौनने परस्पर बहुतसी बातें कह डालीं और बा ने आगे बिना कुछ कहे-सुने बापूकी तीमारदारीका ज़िम्मा ले लिया।

बिल्कुल अखीरी घड़ी तक बा बापूके संकटमें अुनकी साथिन रह सकीं, यह अुनका परम सौभाग्य ही माना जायगा। आगाखान महलमें बापूके अुपवासके समयकी कसौटी तो कड़ी-से-कड़ी कसौटी थी। अुस समयकी बा की दशाका वर्णन सुशीलाबहनने (अिस पुस्तकके दूसरे भागमें) अपने लेखमें सुन्दर ढंगसे किया है।

८

सत्याग्रहकी गुरु

बापूने अपनी आत्मकथामें अिस घटनाका वर्णन 'अेक पुण्य-स्मरण और प्रायश्चित्त' शीर्षकसे किया है। सन् १८९८ के आसपासकी यह घटना है।

"जिस समय मैं डरबनमें वकालत करता था, तब अक्सर मेरे कारकुन मेरे साथ ही रहते थे। अुनमें हिन्दू और अीसाअी थे, अथवा प्रान्तोंके हिसाबसे कहूँ, तो गुजराती और मद्रासी थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि अुनके विषयमें मेरे मनमें कभी भेद-भाव पैदा हुआ हो। मैं अुन्हें बिल्कुल अपने कुटुम्बीके जैसा समझता और अगर पत्नीकी ओरसे अुसमें कोअी रुकावट आती, तो मैं अुससे लड़ता-झगड़ता था। मेरा अेक कारकुन अीसाअी था। अुसके माता-पिता पंचम जातिके थे। हमारे घरकी बनावट पश्चिमी ढबकी थी। अुसके कमरोंमें मोरियाँ नहीं होतीं, और होनी भी नहीं चाहिये, अैसा मेरा मत है। अिसलिअे हरअेक कमरेमें मोरीके बदले पेशाबके लिअे अलगसे अेक बरतन रहता था। अुसे साफ़ करनेका काम नौकरका नहीं था, बल्कि हमारा— पति-पत्नी — दोनोंका था। हाँ, जो कारकुन अपनेको घरका ही समझने

लग जाते थे, वे तो अपने बरतनको खुद भी साफ कर डालते थे। ये पंचम कुलमें जन्मे कारकुन नये थे। अुनका बरतन हमींको अुठाकर साफ करना चाहिये। दूसरे बरतन तो कस्तूरबाअी अुठातीं और साफ करती थीं, लेकिन अिन भाअीके बरतन अुठाना अुन्हें असह्य मालूम हुआ। हमारे बीच झगड़ा हुआ। मैं अुठाता हूँ, तो अुनसे देखा नहीं जाता और खुद अुठाना अुनके लिअे कठिन था। आँखोंसे मोतीके बिन्दु बरसाती, हाथमें बरतन लिये मुझको अपनी लाल-लाल आँखोंसे अुलाहना देतीं, और सीढ़ियाँ अुतरती हुअी कस्तूरबाअीको मैं आज भी ज्यों-का-त्यों चितर सकता हूँ।

"लेकिन मैं जितना प्रेमल अुतना ही कठोर पति था। मैं अपने आपको अुनका शिक्षक भी मानता था, अिसलिअे अपने अंध-प्रेमके अधीन होकर अुन्हें काफी सताता था।

"अिस तरह अुनके बरतनको अुठाकर ले जाने भरसे मुझे सन्तोष न हुआ। वह हँसते हुअे अुसे ले जायँ, तभी मुझे सन्तोष हो। अिसलिअे मैंने दो बात अूँची आवाज़में कहीं और मैं गरज अुठा: 'मेरे घरमें यह बखेड़ा नहीं चलेगा।'

"यह वचन तीरकी तरह चुभा। पत्नी खौल अुठीं: 'तो अपना घर अपने पास रखो, मैं चली।'

"मैं अीश्वरको भूल बैठा था। दयाका लेशमात्र मुझमें न रह गया था। मैंने हाथ पकड़ा। जीनेके सामने ही बाहर निकलनेका दरवाजा था। मैं अुस दीन अबलाको पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गया। दरवाजा आधा खोला।

"आँखोंसे गंगा-जमुना बह रही थीं और कस्तूरबाअी बोलीं: 'तुम्हें तो शरम नहीं, मुझे है। ज़रा तो शरमाओ। मैं बाहर निकलकर कहाँ जाती? यहाँ माँ-बाप भी नहीं कि अुनके पास चली जाअूँ। मैं औरत ठहरी, अिसलिअे मुझे तुम्हारी चपत भी खानी ही होगी। अब जरा शरम करो और दरवाज़ा बन्द कर लो। कोअी देखेगा, तो दोनोंकी फजीहत होगी।'

"मैंने अपना चेहरा तो सुर्ख बनाये रखा, लेकिन मनमें शरमा जरूर गया। दरवाजा बन्द किया। अगर पत्नी मुझे छोड़ नहीं सकती थी, तो मैं भी अुसे छोड़कर कहाँ जा सकता था? हमारे बीच झगड़े तो बहुत

हुअे हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही हुआ है। पत्नीने अपनी अद्‌भुत सहनशीलतासे विजय पाओी है।

"आज मैं तटस्थ भावसे अिसका वर्णन कर सकता हूँ, क्योंकि वह घटना तो हमारे बीते युगकी है। आज मैं मोहान्ध पति नहीं हूँ। शिक्षक भी नहीं। चाहें तो कस्तूरबाओी आज मुझे धमका सकती हैं। हम आज कसौटी पर चढ़े हुअे भुक्त-भोगी मित्र हैं। अेक दूसरेके प्रति निर्विकार रहकर जी रहे हैं। वह मेरी बीमारीमें किसी भी प्रकारके बदलेकी अिच्छा किये बिना मेरी चाकरी करनेवाली सेविका हैं।"

अिस छोटी-सी घटना द्वारा हम बा और बापूजीके अुस समयके गृह-जीवनकी थोड़ी झाँकी कर सकते हैं। बा के देहान्तके बाद बापूको आश्वासनके कअी पत्र और तार मिले थे। वाअिसराय लॉर्ड वेवेलके पत्रके जवाबमें बापूने लिखा था:

". . . .पहले तो अपनी पत्नीकी मृत्युके बारेमें आपकी ममता-भरी समवेदनाके लिअे मैं आपका और लेडी वेवेलका आभार मानता हूँ। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वह सतत वेदनासे छूट गयी हैं, अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दुःख होनेकी कल्पना मैंने की थी, अुससे अधिक दुःख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। १९०६ में अेक दूसरेकी स्वीकृतिसे और अनजानी आजमाअिशके बाद हमने आत्म-संयमके नियमको निश्चित रूपसे स्वीकार किया था। अिसके परिणामस्वरूप हमारी गाँठ पहलेसे कहीं ज्यादा मज़बूत बनी और मुझे अुससे बहुत आनन्द हुआ। हम दो भिन्न व्यक्ति नहीं रह गये। मेरी वैसी कोअी अिच्छा नहीं थी, तो भी अुन्होंने मुझमें लीन होना पसन्द किया। फलतः वह सचमुच ही मेरी अर्धांगिनी बनीं। वह हमेशासे बहुत दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थीं, जिनको अपनी नवविवाहित दशामें मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन दृढ़ अिच्छा-शक्तिके कारण वह अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गयीं। आचरणका आरम्भ मेरे अपने परिवारसे ही किया। १९०६ में जब मैंने अुसे राजनीतिके क्षेत्रमें दाखिल किया, तब अुसका अधिक विशाल और विशेष रूपसे योजित 'सत्याग्रह' नाम पड़ा। दक्षिण

अफ्रीकामे जब हिन्दुस्तानियोंकी जेल-यात्रा शुरू हुअी, तब श्रीमती कस्तूरबा भी सत्याग्रहियोंमे अेक थीं। मेरे मुक़ाबले अुनको ज़्यादा शारीरिक पीड़ा हुअी। वह कअी बार जेल जा चुकी थीं, फिर भी अिस बारके अिस क़ैदखानेमे, जिसमे सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थीं, अुनको अच्छा नहीं लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही अुनकी जो गिरफ्तारी हुअी, अुससे अुन्हे जोरका आघात पहुँचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वह मेरी गिरफ्तारीके लिअे बिलकुल तैयार नहीं थीं। मैने अुन्हे विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहूँ, वह मुझे पकड़ेगी नहीं। सचमुच अुनके ज्ञानतन्तुओंको अितने जोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हे दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ० सुशीला नायरने, जो अुनके साथ ही पकड़ी गअी थीं, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमे आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हे आश्वासन मिला और बिना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था, सो खट्टा ही बना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमे चिड़चिड़ापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ।”

६

अपरिग्रहकी दीक्षा

बापूके साथ अुनके कुछ व्रतोंमे अनायास और अिच्छापूर्वक और कुछ दूसरे व्रतोंमे शुरू-शुरूमे अनिच्छापूर्वक और आयासपूर्वक, लेकिन बादमे समझके साथ, बा ने बापूका अनुसरण किया है। अपरिग्रहके मामलेमे बा को ठीक-ठीक कोशिश करनी पड़ी है। अिसका पहला अुदाहरण 'आत्मकथा' से लेकर बापूकी ही भाषामे नीचे दिया है:

“लड़ाअीके (सन् १८९७ से '९९ तकका बोअर युद्ध) कामसे छुट्टी पानेके बाद मुझे लगा कि अब मेरा काम दक्षिण अफ्रीकामे नहीं, बल्कि

देशमें है। मैंने साथियोंसे मुक्त होनेकी अिजाज़त चाही। बड़ी मुश्किलसे शर्तके साथ मेरी माँग मंजूर की गअी। शर्त यह थी कि अगर अेक सालके अन्दर क़ौमको मेरी ज़रूरत मालूम हो, तो मुझे वापस दक्षिण अफ्रीका पहुँचना चाहिये। मुझको यह शर्त कड़ी लगी। लेकिन मैं प्रेमपाशमें बँधा था। मित्रोंकी बातको मैं ठुकरा नहीं सकता था। मैंने वचन दिया और अिजाज़त हासिल की।

"यों कहना चाहिये कि अिस समय मेरा निकट सम्बन्ध नातालके साथ ही था। नातालके हिन्दुस्तानियोंने मुझको प्रेमामृतसे नहला दिया। जगह-जगह मानपत्र देनेकी सभायें हुअीं और हरअेक जगहसे क़ीमती भेंटें मिलीं। भेंटोंमें सोने-चाँदीकी चीजें तो थी हीं, लेकिन अुनमें हीरेकी चीज़ें भी थीं।

"और अिन भेंटोंमें ५० गिन्नियोंका अेक हार कस्तूरबाअीके लिअे था। लेकिन अुन्हें मिली हुअी चीज़ भी मेरी सेवाके सिलसिलेमें थी, अिसलिअे अुसे अलग नहीं गिना जा सकता था।

"जिस शामको अिन अुपहारोंमेंसे खास-खास अुपहार मिले थे, वह रात मैंने बावरेकी भाँति जागकर बिताअी। अपने कमरेमें चक्कर काटता रहा, लेकिन अुलझन सुलझती नहीं थी। सैंकड़ोंकी क़ीमतके अुपहारोंको छोड़ देना बहुत मुश्किल मालूम होता था। रखना अुससे भी ज़्यादा मुश्किल लगता था।

"मैं शायद अिन भेंटोंको पचा सकूँ, लेकिन मेरे बच्चोंका क्या? स्त्रीका क्या? अुन्हें तालीम तो सेवाकी मिल रही थी। हमेशा यह समझाया जाता था कि सेवाका कोअी बदला नहीं लेना चाहिये। घरमें क़ीमती गहने वग़ैरा नहीं रखता था। सादगी बढ़ती जाती थी। अब अिन गहनों और जवाहरातको मैं क्या करूँ?

"आखिर मैं अिस निर्णय पर पहुँचा कि मुझे ये चीज़ें हरगिज़ न रखनी चाहियें। पारसी रुस्तमजी वग़ैराको अिन गहनोंका ट्रस्टी मुकर्रर करके अुनके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया और तय किया कि सबेरे स्त्री-पुत्र वग़ैराके साथ चर्चा करके मैं अपने बोझको हल्का कर लूँ।

"मै जानता था कि धर्मपत्नीको समझाना मुश्किल होगा। साथ ही मुझे विश्वास था कि बच्चोंको समझानेमे ज़रा भी मुश्किल नहीं होगी। अुनको वकील बनानेका विचार किया।

"बच्चे तो फौरन समझ गये। अुन्होंने कहा: 'हमे अिन गहनोंकी जरूरत नहीं। हमको यह सब वापस ही दे देना चाहिये और अगर कभी हमे अैसी चीज़ोंकी जरूरत हुआी, तो हम खुद कौन अुन्हे नहीं खरीद सकेंगे?'

"मै खुश हुआ। मैंने पूछा— 'तो तुम बा को समझाओगे न?'

"जरूर, यह काम हमारा। अुन्हे कौन ये गहने पहनने है? वे तो हमारे लिअे रखना चाहती है। हम अुन्हे नहीं चाहते, तो वे हठ क्यों करने लगीं?'

"लेकिन काम जितना सोचा था, अुससे ज्यादा मुश्किल साबित हुआ। 'तुम्हे चाहे ज़रूरत न हो, तुम्हारे लड़कोंको भी न हो। बालकोंको तो जैसा सिखाओ, सीखते हैं। चाहो, मुझको मत पहनने दो, लेकिन मेरी बहुओंका क्या? अुनके तो काम आयेंगे। और कौन जानता है, कल क्या होगा? अितने प्रेमसे दी हुआी चीजे लौटाअी नहीं जाती।' अिस तरह वाग्धारा चली और अुसके साथ अश्रुधारा आ मिली। बालक दृढ़ रहे। मेरे डिगनेका कोअी सवाल नहीं था।

"मैंने धीमेसे कहा, 'लडकोकी शादी तो होने दो। हमे कौन बचपनमे अिन्हे ब्याहना है? बडे होने पर ये भले जो चाहें, करें। और, हमे कौन गहनोंकी शौकीन बहुअे ढूँढनी है? फिर भी कुछ बनवाना ही पडा, तो मैं तो हूँ ही न?'

"'तुम्हे मै जानती हूँ। तुम वही हो न कि जिनने मेरे गहने भी छीन लिये? तुमने मुझे सुखसे नहीं पहनने दिया, तो तुम मेरी बहुओंके लिअे क्या लोगे? बच्चोंको आजसे वैरागी बनाना चाहते हो? ये गहने नहीं लौटेंगे, और मेरे हार पर तुम्हारा हक़ क्या।'

"मैंने पूछा: 'लेकिन यह हार तुम्हारी सेवाके लिअे मिला है या मेरी?'

"'कुछ भी हो। तुम्हारी सेवा मेरी भी हुअी। मुझसे रात-दिन मज़दूरी करायी, सो क्या सेवा नहीं मानी जायगी? मुझे रुला-रुलाकर हर किसीको घरमें रखा और चाकरी करवाअी, अुसका कोअी हिसाब नहीं?'

"ये सारे बाण नुकीले थे। अिनमेंसे कुछ चुभते थे, लेकिन गहने तो मुझे लौटाने ही थे। कअी बातोंमें मैं जैसे-तैसे मंजूरी ले सका। १८९६ में और १९०१ में मिली हुअी भेंटें लौटा दीं। अुनका ट्रस्ट बना और सार्वजनिक कामके लिअे मेरी अिच्छाके अनुसार या ट्रस्टियोंकी अिच्छाके अनुसार अुनका अुपयोग किया जाय, अिस शर्त पर रकम बैंकमें रखी गअी।

"अपने अिस कार्यका मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ। जैसे समय बीता, कस्तूरबाको भी अिसका औचित्य पट गया। हम बहुतसे प्रलोभनोंमेंसे बच गये हैं।

"मैं अिस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि सार्वजनिक सेवकको निजी अुपहार नहीं लेने चाहियें।"

* * *

अिस तरह बा को अपरिग्रहकी पहली दीक्षा सन् १९०१ में मिली। लेकिन पक्की दीक्षा तो अुनको अभी दूसरे ही गुरुओंसे मिलनेवाली थी।

साबरमती आश्रममें चोरोंका अुपद्रव हमेशासे रहता आया है। अलबत्ता, चोरोंको बहुत क़ीमती चीज़ तो वहाँ मिलती नहीं थीं, लेकिन हमारे देश जैसे ग़रीब देशमें थोड़े कपड़ों-लत्तों अथवा बरतन-भाँडोंके लिअे भी ग़रीब लोग चोरी करनेको तैयार हो जाते हैं। आश्रममें समय-समय पर अैसी चोरियाँ हुआ करती थीं। अेक बार बा के कमरेमें चोरी हुअी। ठीक खयाल तो नहीं है, लेकिन १९२६ या २७ का साल था; चोर कपड़ोंसे भरी दो सन्दूकें अुठा ले गये। अुनमेंसे कपड़े-कपड़े सब ले लिये और पेटियाँ पासके खेतमें फेंककर चले गये। चोरीके सिलसिलेमें बातचीत चल रही थी। बापूने सवाल किया कि 'बा के पास दो सन्दूकें भरकर कपड़े होते ही कहाँसे? और होने भी क्यों चाहियें? बा रोज़की नअी-नअी साड़ियाँ तो कुछ पहनती नहीं। बा ने कहा: "चि० रामी और चि० मनु (हरिलालभाअीकी दो लड़कियाँ) की माँ तो मर गअी है, लेकिन

कभी-कदास जब वे मेरे पास आयें, मुझे अुनको दो कपड़े तो देने चाहिये न? अिसके लिअे जब-तब भेटमे मिली हुअी साड़ियाँ और खादी मैंने रख छोड़ी थी।" अलबत्ता, अिस पर बापूकी दलील तो यही थी कि हम अिस तरहका सग्रह कर ही नही सकते और साड़ियाँ या खादी निजी भेटके रूपमे मिली हों, तो भी तत्काल अुनकी जरूरत हो, तभी वे अपने पास रखी जायँ। जितनी फाज़िल हो, सो सब तो आश्रमके कार्यालयमे ही जमा करा देनी चाहिये। अुन गहनोंकी तरह अिस बार भी बा को अपने लिअे अिन चीजोंकी जरूरत थी ही नहीं। माँ का दिल बेटीको कुछ-न-कुछ देनेके लिअे हमेशा छटपटाता है, और यही वजह थी कि बा ने साड़ियाँ और खादी जुटा कर रखी थी। बापूने शामको प्रार्थनामे अिसकी चर्चा करते हुअे कहा: 'हमको अैसा व्यवहार भी नहीं पुसाता। लड़कियाँ हमारे घर आयें, तो रहें और खायें-पीयें। लेकिन जिन्होंने गरीबीका जीवन बितानेका व्रत लिया है, अुन्हे अिस तरहकी भेंटें देना पुसाता नहीं।' वगैरा वगैरा। अिन चोर गुरुओंसे मिली हुअी दीक्षाके बाद बा ने अिस तरहके दो कपड़े भी कभी जुटा कर नहीं रखे।

अपनी निजी जरूरतोंके खयालसे तो बा के लिअे अपरिग्रह बिलकुल आसान था। अपनेको चुस्त आश्रमवासी मानने-मनवानेवाले भी बा की सादगीको देखकर शरमाते थे। मीराबहन लिखती है: "जब हम लम्बा और कड़ा सफर करते थे, तब बापूजी कहा करते: 'बा हम सबको हराती है। अितना कम सामान और अितनी कम ज़रूरतें दूसरे किसीकी है? मैं सादगीका अितना अधिक आग्रह रखता हूँ, फिर भी मेरा सामान बा के मुक़ाबिले दुगना है।' हमारी सजग कोशिशोंके बाद भी हम बा की स्वाभाविक, किन्तु अचूक रूपसे स्वच्छ और भव्य सादगीके साथ किसी तरह होड़मे टिक नहीं सकते थे। सारे दलमे अुनका बिस्तर सबसे छोटा होता था और अुनकी नन्हीं-सी पेटी भी कभी अव्यवस्थित या ठूँसी-ठाँसी नहीं रहती थी।"

लेकिन यह तो भौतिक अपरिग्रहकी बात हुअी। बापूके साथ रहकर बा ने धीरे-धीरे अपनी आकांक्षाओं और अभिलाषाओंका परिग्रह तजा था, जो विशेष अुच्च और विशेष भव्य अपरिग्रह है।

बा के अिस अपरिग्रहकी या त्यागकी बापू खूब क़दर करते थे। अेक बार आश्रममें हाल ही भरती हुअे अेक भाअीके साथ बापू बात कर रहे थे। बापूका अपना खयाल है कि चाय, कॉफी-जैसे पेय नुक़सानदेह हैं। अिस पर अुन भाअीने बापूसे कहा : "तो फिर बा आश्रममें रहकर कॉफी क्यों पीती हैं?"

बापूने फ़ौरन जवाब दिया : "लेकिन तुम्हें क्या पता कि बा ने कितना छोड़ा है! अुनकी यह अेक टेव रह गअी है। मैं अुन्हें अिसे भी छोड़ देनेको कहूँ, तो मेरे जैसा ज़ालिम और कौन होगा!"

तो भी अखीर अखीरमें तो बा ने खुद ही कॉफी पीना भी छोड़ दिया था और जब ज़रूरत मालूम होती थी, तुलसी और काली मिर्चका काढ़ा पी लेती थीं।

७

जोहानिसबर्गमें बा का घर

'सत्याग्रहकी गुरु' नामक प्रकरणमें सन् १८९८ की अेक घटनाका वर्णन किया है। अुससे हमें थोड़ा पता चलता है कि जब बापू डरबन (नाताल) में वकालत करते थे, तब अुनका घर कैसा था। सन् १९०५ में वे ट्रान्सवालके जोहानिसबर्ग नगरमें वकालत करते थे। अुस समयके बापू और बा के गृहस्थाश्रमका परिचय हमें श्रीमती पोलाककी 'मिस्टर गांधी — द मैन' नामक पुस्तकसे और आत्मकथासे मिलता है। श्रीमती पोलाक लिखती हैं :

"घर शहरके बाहर अच्छे मध्यम श्रेणीके लोगोंके मोहल्लेमें था। दुमंज़िला और अलग अहातेवाला बंगलानुमा घर था। अहातेमें बगीचा था। और सामने छोटी-छोटी टेकरियोंवाला खुला मैदान था। मकानमें कुल आठ कमरे थे। दुमंज़िले परका बरामदा लम्बा-चौड़ा और खूब हवादार था। गरमियोंमें वहाँ सोया जा सकता था और सोनेके काममें अुसका अुपयोग होता भी था।

"परिवारमे गांधीजी, अुनकी पत्नी और तीन बालक थे। मणिलाल ११ सालके, रामदास ९ सालके और देवदास ६ सालके थे (हरिलाल अुन दिनोमे देश गये हुअे थे)। अिनके सिवा, तारघरमे काम करनेवाले अेक नौजवान अंग्रेज, गांधीजीके अेक हिन्दुस्तानी युवक रिश्तेदार और पोलाक — अितने लोग और थे। मै अुनमे आ मिली, जिससे मकानमे और अधिकके लिअे सहूलियत नहीं रह गअी।

"सबेरे ६ बजे घरका पुरुषवर्ग चक्की पीसता था, (यहाँ यह याद रखना है कि बापूने जीवनमे परिवर्तन शुरू कर दिया था।) क्योंकि रोटी घर ही मे बनाअी जाती थी। अेक कमरेमे चक्की रखी गअी थी वहीं सब अिकठ्ठा होते थे। पीसनेका काम तो कोअी आधे घण्टेमे पूरा हो जाता था, लेकिन चक्कीकी आवाजसे भी ज़्यादा बातचीत और हँसीकी आवाज होती थी। क्योंकि अुन दिनों घरमे हँसीके फव्वारे बारबार छूटते ही रहते थे। अुपयोगिताकी दृष्टिसे अिस कामके महत्त्वके अलावा अिससे सबेरे अच्छी कसरत भी हो जाती थी। दूसरी कसरत रस्सी कुदानेकी होती थी। बापू अुसमे निष्णात थे।

"घरमे शामकी व्यालूका समय ज़्यादा-से-ज़्यादा आनन्दमय रहता था। घरके सब लोग अुसी समय अेक जगह जमा होते थे। बापूको मेहमानदारीका बड़ा शौक़ था, अिसलिअे अैसा दिन तो शायद ही कभी बीतता, जब कोअी-न-कोअी मेहमान न हो। हररोज शामके भोजनमे १० से १५ आदमी रहते।

"भोजनकी चीजें बहुत सादी रहतीं। मेज पर सब चीजे सजाकर ही जीमने बैठते थे, जुनॉचे परोसनेके लिअे किसी नौकरके खड़े रहनेकी जरूरत नहीं पडती थी। भोजनमे पहले दो-तीन साग-भाजी, दाल, कढ़ी, सिकी हुअी रोटी, मूँगफली या दूसरे किसी मगजको पीसकर बनाया हुआ मक्खन और तरह-तरहके कच्चे सागोंका कचूमर, अितनी चीजे परोसी जाती थीं। दूसरी दफाके परोसनेमे दूध और फल लिये जाते थे और अुसके बाद ऋतुके अनुसार कॉफी या लेमनेड गरम या ठंडा पीया जाता था। भोजनमे कभी जल्दी नहीं होती थी। मेज पर पूरा अेक घण्टा बीतता था और जीमते समय कअी तरहकी चर्चायें हुआ करती

थीं। आमतौर पर हल्के विषयोंकी चर्चा, हँसी-मज़ाक और गप-शप होती रहती थीं। बापूमें विनोदकी वृत्ति तो खूब ही है, अिसलिअे किसी भी हँसीकी बातके निकलते ही वे खूब हँसते।

"अेक बार कुछ युरोपियन भोजनका न्योता लेकर हमारे यहाँ आये। बापूकी अुनके साथ कोअी अच्छी पहचान नहीं थी, और बा तो अुन्हें बिल्कुल ही नहीं पहचानती थीं। अुन्होंने तो आते ही गृह-जीवनके बारेमें सीधे-सीधे और असभ्य मानी जानेवाली कुतूहलवृत्तिके साथ सवाल पूछने शुरू किये। निजी मामलोंसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नोंमें अुनके घमण्डका भी पता चलता था। लेकिन बापू तो शान्तिके साथ जवाब देते जाते थे। और, हिन्दुस्तानी लोग क्या करते हैं और क्या नहीं करते, अिसके बारेमें अुनकी कुछ बातें सुनकर खूब हँसते भी थे। लेकिन बा को तो यह सब देखकर गुस्सा हो आया और हमारे भोजनके कमरेमें दाखिल होनेसे पहले ही वे वहाँसे चली गअीं। बापूने किसीके मारफ़त अुन्हें बुला भेजा, लेकिन वे नहीं आअीं। अिस पर बापू खुद बुलाने गये, मगर बा ने तो नीचे आनेसे अिनकार ही किया। बापूने लौटकर बा की गैरहाज़िरीका थोड़ा खुलासा दिया और भोजन समाप्त हुआ। दूसरे दिन जब मैं बा से मिली तो अुन्होंने कहा: 'अैसे निठल्ले लोग घरका रंग-ढंग देखने आवें और मेरे घरका मज़ाक अुड़ावें (To make laugh of me and my home), यह मुझसे तो नहीं सहा जाता। अैसे लोगोंसे मैं तो हरगिज़ न मिलूँगी। बापू मिलना चाहें, तो भले मिलें।' मैं समझती हूँ कि बापूजीने बा के अिस निश्चयको छुड़ानेके लिअे अुन्हें समझा देखा, लेकिन वे तो अपनी राय पर डटी ही रहीं और बापूजीकी अेक भी दलीलसे नहीं पसीजीं।"

अपनी आत्मकथामें बापूने लिखा है कि जीवनमें परिवर्तन करके अुन्होंने अपना घर कैसा बना लिया था। वे लिखते हैं:

"बैरिस्टरके घरमें जितनी सादगी रखी जा सकती थी, अुतनी तो रखनी शुरू की ही। फिर भी कुछ सामान अैसा था, जिसके बिना काम चलाना मुश्किल था। सच्ची सादगी तो मनसे बढ़ी। हरअेक काम अपने हाथों करनेका शौक बढ़ा और अुसमें बालकोंको भी तैयार करना शुरू किया।

"बाजारकी रोटी लानेके बदले घर पर क्यूनेकी सूचनाके अनुसार बिना खमीरकी रोटी हाथसे बनाना शुरू किया। अिसमे पनचक्कीका आटा काम नहीं देता। साथ ही, यह भी खयाल था कि पनचक्कीके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेकी बनिस्बत हाथके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेमे सादगी, आरोग्य और धनकी अधिक रक्षा होती थी। अिसलिअे ७ पौण्ड खर्च करके अेक हाथकी चक्की खरीदी। अिस चक्कीका पाट वजनदार था। दो आदमी अुसे आसानीसे चला लेते थे, अकेलेको तकलीफ होती थी। अिस चक्कीको चलानेमे पोलाक, मैं और बच्चे खास तौर पर शामिल होते थे। कभी-कभी कस्तूरबाअी भी आतीं, हालाँकि अुनका वह समय रसोअी बनानेमें खर्च होता था। जब श्रीमती पोलाक आअीं, तो वे भी अिसमे शरीक हो गअीं। बच्चोंके लिअे यह कसरत बहुत अच्छी साबित हुअी। मैंने अुनसे यह या दूसरा कोअी भी काम जबरदस्ती नहीं करवाया, बल्कि वे खुद अिसे अेक खेल-सा समझकर चक्की चलाने आते थे। थकनेपर छोड़ देनेकी आजादी अुन्हे थी ही। लेकिन कौन जाने क्या वजह थी कि क्या अिन बालकोंने और क्या दूसरोंने, मुझे तो खूब ही काम दिया। नटखट बालक भी मेरे नसीबमे थे ही। लेकिन अुनमेसे ज्यादातर सौंपे हुअे कामको खुशी-खुशी करते थे। 'थक गये' कहनेवाले तो अुस जमानेके थोड़े ही बालक मुझे याद आते है।

"घर साफ रखनेके लिअे अेक नौकर था। वह कुटुम्बी बनकर रहता था और बालक अुसके काममे पूरा हाथ बँटाते थे। टट्टी कमानेके लिअे म्युनिसिपैलिटीका नौकर आता था। लेकिन पाखानेके कमरेको साफ करने और बैठक वगैरा धोनेका काम नौकरको नहीं सौंपा जाता था। वैसी आशा भी नहीं रखी जाती थी। यह काम हम खुद करते थे और बालकोंको अिससे तालीम मिलती थी। नतीजा यह हुआ कि शुरू ही से मेरे अेक भी लड़केको पाखाना साफ करनेकी घिन न रही और आरोग्यके साधारण नियम भी वे सहज ही सीख गये। जोहानिसबर्गमे शायद ही कोअी कभी बीमार पड़ता था। लेकिन जब बीमारी आती थी, तो तीमारदारीके काममे बालक रहते ही थे और वे अिस कामको खुशी खुशी करते थे।"

बा की दृढ़ता

हिन्दूधर्मके संस्कार बा में कितने गहरे पैठ गये थे, अिसकी यह अेक कहानी है। मर जाना मंजूर है, लेकिन मांस और शराब लेकर 'मानुस देह' को भ्रष्ट करना मंजूर नहीं — यह बा का निश्चय था। बापूजीकी 'आत्मकथा' से यह प्रसंग लिया है :

"खूनी बवासिरके कारण कस्तूरबाअीको बार-बार रक्तस्राव होता रहता था। अेक डॉक्टर मित्रने शस्त्रक्रिया (ऑपरेशन) की सिफ़ारिश की। थोड़ी आनाकानीके बाद पत्नीने शस्त्रक्रिया कराना मंजूर किया। शरीर तो बहुत कमज़ोर हो गया था। डॉक्टरने बिना क्लोरोफ़ॉर्म दिये शस्त्रक्रिया की। अुस समय दर्द तो खूब होता था, लेकिन जिस धीरजसे कस्तूरबाअीने अुसे सहा, अुससे मैं तो आश्चर्यचकित हो गया। शस्त्रक्रिया निर्विघ्न समाप्त हुअी। डॉक्टरने और अुनकी पत्नीने कस्तूरबाअीकी सुन्दर सुश्रूषा की।

"यह घटना डरबनमें हुअी थी। दो या तीन दिन बाद डॉक्टरने मुझे बिल्कुल बेफिकर होकर जोहानिसबर्ग जानेकी अिजाज़त दी। मैं गया। कुछ ही दिन बाद खबर मिली कि कस्तूरबाअीकी तबीयत ज़रा भी सँभल नहीं रही है। वह बिछौने पर अुठ-बैठ भी नहीं सकती हैं। अेक बार बेहोश भी हो गअी थीं। डॉक्टर जानते थे कि मुझसे पूछे बिना कस्तूरबाअीको दवाके साथ या खुराकके साथ शराब या मांस नहीं दिया जा सकता। डॉक्टरने मुझे जोहानिसबर्गमें टेलीफ़ोन पर कहा : 'आपकी पत्नीको मैं मांसका शोरबा या 'बीफ-टी' देनेकी ज़रूरत समझता हूँ। मुझे अिजाज़त मिलनी चाहिये।'

"मैंने जवाब दिया : 'मैं यह अिजाज़त नहीं दे सकता। लेकिन कस्तूरबाअी स्वतंत्र हैं। अुनसे पूछने-जैसी हालत हो, तो पूछिये और वह लेना चाहें, तो बिलाशक दीजिये।'

"'रोगीसे अिस तरहकी बातें मैं पूछना नहीं चाहता। आपको खुद यहाँ आ जाना चाहिये। अगर आप मुझको, मैं जो चाहूँ, खिलानेकी अिजाज़त नहीं देते, तो आपकी स्त्रीके लिअे मैं ज़िम्मेदार नहीं।'

“ मैंने अुसी दिन डरबनकी ट्रेन पकड़ी। डरबन पहुँचा। डॉक्टरने खबर दी : ‘मैंने तो गोरवा पिलाकर ही आपको फोन किया था।’

“ ‘ डोक्टर, अिसे मै दग़ा समझता हूँ ’, — मैंने कहा।

“ ‘ अिलाज करते समय मैं दग़ा-वगा कुछ नहीं जानता। हम डॉक्टर लोग अैसे समय रोगीको और अुसके रिश्तेदारोंको धोखा देनेमे पुण्य समझते हैं। हमारा धर्म तो किसी भी तरह रोगीको बचाना है।’ डॉक्टरने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया।

“ मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं शान्त रहा। डॉक्टर मित्र थे, सज्जन थे। अुनका और अुनकी पत्नीका मुझ पर अुपकार था, लेकिन अुनके अिस व्यवहारको सहन करनेके लिअे मै तैयार नहीं था।

“ ‘ डॉक्टर, अब साफ-साफ बात कर लो। क्या करना चाहते हो ? मैं अपनी पत्नीको अुसकी अिच्छाके बिना कभी मांस नहीं देने दूँगा। मांस न लेनेसे अुसकी मृत्यु होनेवाली हो, तो अुसे सहनेके लिअे मै तैयार हूँ।’

“ डॉक्टरने कहा : ‘ आपकी फिलासफी मेरे घर बिलकुल नहीं चलेगी। मै आपसे कहता हूँ कि जब तक आप अपनी पत्नीको मेरे घर रहने देंगे, मै अुनको मांस या जो भी कुछ देना मुनासिब होगा, जरूर दूँगा। अगर अैसा करना मजूर न हो, तो आप अपनी पत्नीको ले जाअिये। अपने ही घरमे जान-बूझकर मै अुनकी मौत नहीं होने दूँगा।’

“ ‘ तो क्या आप यह कहते है कि मुझे अपनी पत्नीको अभी ले जाना चाहिये ?’

“ ‘ मै कब कहता हूँ कि ले जाअिये ? मै तो कहता हूँ कि मुझ पर किसी तरहका अकुश न रखिये। तभी हम दोनों अुनकी जितनी बन सकेगी, सेवा-सुश्रूषा करेंगे और आप निश्चिंत होकर जा सकेंगे। अगर यह सीधी बात आप न समझ सकें, तो मुझे लाचार होकर यह कहना चाहिये कि अपनी पत्नीको मेरे घरसे ले जाअिये।’

“ मेरा खयाल है कि अुस समय मेरा अेक लड़का मेरे साथ था। मैंने अुससे पूछा। अुसने कहा : ‘ आपकी बात मुझे मजूर है। बा को मांस तो हरगिज़ नहीं दिया जा सकता।’

"फिर मैं कस्तूरबाअीके पास गया। वह बहुत कमज़ोर थीं, अुनसे कुछ भी पूछना मेरे लिअे दुःखदायी था। लेकिन धर्म समझकर मैंने अुन्हें अूपरकी सारी बातचीत थोड़ेमें कह सुनाअी। अुन्होंने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया : 'मैं मांसका शोरवा नहीं लूँगी। 'मानुस देह' बार-बार नहीं मिलती। भले मैं आपकी गोदमें मर जाअूँ। लेकिन मैं अपनी देहको भ्रष्ट नहीं कर सकूँगी।'

"मैंने जितना समझाया जा सकता था, समझाया, और कहा : 'तुम मेरे विचारोंका अनुसरण करनेके लिअे बँधी नहीं हो।' यह भी कहा कि हमारी जान-पहचानके कुछ हिन्दू दवाके रूपमें मांस और शराब लेते हैं। लेकिन वह टस-से-मस न हुअीं और बोलीं : 'मुझे यहाँसे ले चलो।'

"मैं बहुत खुश हुआ। ले जाते घबराहट हुअी, लेकिन निश्चय कर लिया। डॉक्टरको पत्नीका निश्चय कह सुनाया। डॉक्टर गुस्सा होकर बोले : 'तुम तो निष्ठुर पति मालूम होते हो। अैसी बीमारीमें अुस बेचारीसे अिस तरहकी बात करते तुम्हें शरम भी न आअी? मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी स्त्री यहाँसे ले जाने लायक नहीं है। अुसका शरीर अब अैसा नहीं रहा कि थोड़े भी धक्के-दचके सहन कर सके। रास्तेमें ही अुसका प्राण छूट जाय तो मुझे आश्चर्य न होगा। अितने पर भी तुम हठवश नहीं ही मानोगे, तो तुम तुम्हारी जानो। अगर मैं अुसे शोरवा नहीं दे सकता, तो अुसको अपने घरमें रखनेकी जोखिम भी मैं नहीं अुठा सकता।'

"रिमझिम-रिमझिम मेह बरस रहा था। स्टेशन दूर था। डरबनसे फिनिक्स तक रेलका रास्ता था और फिनिक्ससे क़रीब २॥ मीलका पैदल रास्ता था। खतरा काफ़ी था, लेकिन मैंने मान लिया कि अीश्वर सहायता करेगा। मैंने पहलेसे अेक आदमीको फिनिक्स भेज दिया। फिनिक्समें हमारे पास 'हैमक' था। यह जालीदार कपड़ेकी अेक झोली या पालना-सा होता है। बाँसों पर अिसके छोर बाँध देनेसे रोगी अिसमें आरामके साथ झूलता रह सकता है। मैंने मिस्टर वेस्टके नाम सँदेशा भेजा कि वे 'हैमक', अेक बोतल गरम दूध और अेक बोतल गरम पानी और छह आदमियोंको लेकर फिनिक्स स्टेशन पर आयें।

"जब दूसरी ट्रेनके छूटनेका समय हुआ, तो मैंने रिक्शा मँगवाओ और अुस भयकर हालतमे पत्नीको रिक्शामे बैठाकर मैं चल पडा।

"पत्नीको हिम्मत दिलानेकी मुझे कोओी ज़रूरत नहीं पडी। अुल्टे, अुन्होंने मुझको हिम्मत देते हुअे कहा: 'मुझे कुछ नहीं होगा। आप चिन्ता न करें।'

"हड्डियोंके अुस ढाँचेमे वज़न तो कुछ रह ही नहीं गया था। खूराक कुछ खाओी नहीं जाती थी। ट्रेनके डब्बे तक पहुँचनेके लिअे स्टेशनके लम्बे-चौडे प्लेटफॉर्म पर दूर तक चलकर जाना था। रिक्शा वहाँ तक जा नहीं सकती थी। मैं अुन्हें अुठाकर डब्बे तक ले गया। फिनिक्समे तो वह झोली आ गओी थी। अुसमे हम रोगीको आरामके साथ ले गये। वहाँ सिर्फ पानीका अिलाज करनेसे धीरे-धीरे शरीर सशक्त बना।

"फिनिक्स पहुँचनेके कोओी दो-तीन दिन बाद ही वहाँ अेक स्वामी पधारे। हमारे 'हठ'की बात सुनकर अुन्होंने दया जतलाओी और वे हम दोनोंको समझाने आये। जैसा कि मुझे याद पड़ता है, जब स्वामीजी आये, मणिलाल और रामदास हाजिर थे। स्वामीजीने मांसाहारकी निर्दोषता पर व्याख्यान देना शुरू किया, मनुस्मृतिके श्लोकोंका हवाला दिया। पत्नीकी अुपस्थितिमे अुन्होंने यह चर्चा चलाओी, यह मुझे अच्छा न लगा। लेकिन विनयके विचारसे मैंने अिस चर्चाको चलने दिया। मांसाहारके समर्थनमे मुझको मनुस्मृतिके प्रमाणकी जरूरत नहीं थी। मुझे अुन श्लोकोंका पता था। मैं जानता था कि अुन्हें प्रक्षिप्त समझनेवाले लोग भी हैं। किन्तु वे प्रक्षिप्त न हों, तो भी अन्नाहारके विषयमे मेरे विचार स्वतत्र रीतिसे बन चुके थे। कस्तूरबाओीकी श्रद्धा अपना काम कर रही थी। वह बेचारी शास्त्रके प्रमाणोंको क्या समझे? अुनके लिअे तो बाप-दादाकी रूढि ही धर्म थी। बालकोंको अपने बापके धर्म पर विश्वास था, अिसलिअे वे स्वामीके साथ विनोद कर रहे थे। अन्तमे कस्तूरबाओीने अिस चर्चाको यह कहकर बन्द किया:

"'स्वामीजी, आप कुछ भी क्यों न कहें, लेकिन मुझे मांसका शोरवा खाकर स्वस्थ नहीं होना है। अब आप मेरा सिर न पचायें, तो आपका अुपकार हो। बाक़ी बातें करना चाहें, तो लड़कोंके बापके साथ बादमे कीजिये। मैंने अपना निश्चय आपको जता दिया।'"

९

बापूको बचाया

जिस तरह बापूने बा को बीमारीसे बचाया, अुसी तरह बा ने बापूको भी अद्‌भुत रीतिसे बचाया है। यह कहना बिल्कुल गलत न होगा कि आज बापू जो हमारे बीच हैं, सो बा के ही प्रतापसे हैं।

यह मानकर कि दूध प्राणिज पदार्थ है, और अिस कारण मांसके जैसी ही खुराक है, बापूने अेक अरसेसे दूध छोड़ रखा था। तिस पर जब अुन्हें पता चला कि गायों और भैंसों पर, अुनसे अधिक-से-अधिक दूध पानेके लिअे, कलकत्तेमें और दूसरे शहरोंमें फूँकेकी क्रिया की जाती है, तो तभीसे अुन्होंने दूध न पीनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। अुन दिनों बापूका मुख्य आहार सिकी हुअी और कुटी हुअी मूँगफली, गुड़, केले और दो-तीन नीबुओंका पानी, अितना ही था। अेक दिन कुछ ज्यादा मूँगफली खा जानेकी वजहसे बापूको पेचिशकी थोड़ी शिकायत हो गअी। अुन्होंने कोअी परवाह नहीं की। दूसरे दिन कोअी त्यौहार था। बापू दूध या घी तो खाते नहीं थे, अिसलिअे अुनके वास्ते दले हुअे गेहूँकी लपसी तेलमें तैयार की थी और पूरे मूँग बनाये थे। बापूका अिरादा तो खानेका नहीं था, लेकिन कुछ तो स्वादके वश होकर और कुछ बा को खुश करनेके खयालसे वे जीमने बैठे। थोड़ा ही खाकर अुठ जानेके अिरादेसे बैठे थे, लेकिन कुछ ज्यादा खा गये। खाये अभी पूरा घंटा भी नहीं हुआ था कि ज़ोरके दर्दके साथ पेचिश शुरू हो गअी। खेड़ा ज़िलेके मशहूर सत्याग्रहके बाद रँगरूटोंकी भरतीके वे दिन थे और अुसके सिलसिलेमें अुसी दिन शामको अुन्हें नड़ियाद जाना था। पेचिशकी परवाह किये बिना बापू वहाँ गये। लेकिन वहाँ जाने पर बीमारी बहुत बढ़ गअी। पाव-पाव घंटेसे दस्त होने लगे। और चौबीस घंटोंमें तो बापूका सुगठित शरीर बिल्कुल लुंज-पुंज हो गया। डॉक्टर आये, लेकिन दवा न लेनेके अुनके आग्रहके खिलाफ़ किसीकी कुछ चली नहीं। अच्छी-से-अच्छी सार-सँभालके बावजूद शरीर क्षीण होने लगा। पानीके और अैसे ही अपने दूसरे अिलाजोंकी

मददसे बापूने रोग तो मिटा लिया। लेकिन शरीर किसी भी तरह पनप नहीं पाया। दो-तीन मित्रोंने दूधका और दूध न ले, तो मांसका शोरवा या अण्डे लेनेका आग्रह किया। लेकिन जिसने दूधको मांसवत् मानकर छोड़ दिया हो, वह अिन चीजोंको लेना कैसे कबूल करे? किसीने सलाह दी कि माथेरान जानेसे शरीर पनपेगा, अिसलिअे बापू माथेरान गये। लेकिन वहाँका पानी भारी साबित हुआ, अिसलिअे वहाँ बिलकुल जमा नहीं और वे बम्बअी आये। बम्बअीमें डॉक्टर दलालने अुनके शरीरकी जाँच की और अपना अिलाज शुरू करनेसे पहले कहा: "जब तक आप दूध न लेंगे, मैं आपके शरीरको पुष्ट नहीं बना सकूँगा। आपको दूध और लोहा और 'सोमल' की पिचकारी लेनी चाहिये। आप अितना करें, तो आपके शरीरको फिरसे ठीक-ठीक पुष्ट बनानेकी गारण्टी मैं दूँ।"

"पिचकारी दीजिये, लेकिन दूध मैं न लूँगा।"

"दूधके बारेमें आपकी प्रतिज्ञा क्या है?"

"जबसे मैंने यह जाना है कि गाय-भैंस पर फूँकेकी क्रिया होती है, तबसे मुझे दूधसे नफरत हो गअी है, और मैं हमेशासे मानता हूँ कि दूध मनुष्यकी खुराक नहीं है। अिसलिअे मैंने दूध छोड़ा है।"

बा बापूकी खटियाके पास ही खड़ी थीं। वे बोल अुठीं: "तब तो बकरीका दूध ले सकते हैं।" अपने मनकी-सी बात सुनकर डॉक्टर अुत्साहमें आ गये और बोले: "आप बकरीका दूध लें, तो मेरा काम बन जाय।"

बापूने बा की और डॉक्टरकी सलाह मान ली। बापूके समान सत्यके पुजारीको प्रतिज्ञाकी आत्माका घात करनेका दुःख तो रह ही गया। लेकिन प्रतिज्ञाके शब्दार्थका पालन हुआ।

अिस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि बा की समय-सूचकताने और सहजबुद्धिने बापूको जिलाया।

पहली स्त्री-सत्याग्रही

आजकल जेल जाना बहुत आसान बात हो गअी है; लेकिन पहले तो जेल्का नाम सुनकर लोग डरते थे। अुस समय किसीको यह कल्पना तो थी ही नहीं, कि स्त्री जेल जा सकती है; लेकिन बापूजी तो जिनकी कल्पना भी नहीं होती, अैसे बहुतेरे काम करते-कराते आये हैं। दक्षिण अफ्रीकामें सन् १९१३में अेक अैसा क़ानून पास हुआ कि अीसाअी धर्मके अनुसार किये गये ब्याहके सिवा — जो विवाह-विभागके अधिकारीके यहाँ दर्ज हुअे हों — दूसरे सब ब्याहोंको क़ानूनमें कोअी जगह नहीं। अिसका मतलब यह हुआ कि हिन्दू-मुसलमान-पारसी वगैरा धर्मोंके अनुसार की गअी शादियाँ अिस क़ानूनकी वजहसे रद्द मानी गअीं; और अिस कारण बहुत-सी विवाहिता हिन्दुस्तानी स्त्रियोंका दरजा अुनके पतिकी धर्मपत्नीका न रहकर रखेलीका माना गया। यह अेक अैसी स्थिति थी, जिसे स्त्री-पुरुष दोनों सह नहीं सकते थे। बापूने अिस क़ानूनको रद्द करनेके लिअे वहाँकी सरकारके साथ बातचीत चलाअी, लेकिन अुसका कोअी नतीजा नहीं निकला और बापूने सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। अुन्होंने अिस लड़ाअीमें स्त्रियोंको भी न्योतनेका निश्चय किया। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' नामक पुस्तकमें बापू लिखते हैं:

"मैं जानता था कि बहनोंको जेल भेजनेका काम बहुत खतरनाक था। फिनिक्समें रहनेवाली अधिकतर बहनें मेरी रिश्तेदार थीं। वे सिर्फ़ मेरे लिहाजके कारण ही जेल जानेका विचार करें और फिर अैन मौक़े पर घबराकर या जेलमें जानेके बाद अुकताकर माफ़ी वगैरा माँग लें, तो मुझे सदमा पहुँचे। साथ ही, अिसकी वजहसे लड़ाअीके अेकदम कमज़ोर पड़ जानेका डर भी था। मैंने तय किया था कि मैं अपनी पत्नीको तो हरगिज़ नहीं ललचाअूँगा। वह अिनकार भी नहीं कर सकती थीं, और 'हाँ' कह दें, तो अुस 'हाँ'की भी कितनी क़ीमत की जाय, सो मैं कह

नहीं सकता था। अैसे जोखिमके काममे स्त्री खुद होकर जो निश्चय करे, पुरुषको वही मान लेना चाहिये और कुछ भी न करे, तो पतिको अुसके बारेमे तनिक भी दुखी नहीं होना चाहिये, अितना मै समझता था। अिसलिअे मैंने अुनके साथ कुछ भी बात न करनेका अिरादा रखा था। दूसरी बहनोंसे मैंने चर्चा की। वे जेल-यात्राके लिअे तैयार हुअीं। अुन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वे हर तरहका दुःख सहकर भी अपनी जेल-यात्रा पूरी करेंगी। मेरी पत्नीने भी अिन सब बातोंका सार जान लिया और मुझसे कहा :

"'मुझसे अिस बातकी चर्चा नहीं करते, अिसका मुझे दुःख है। मुझमे अैसी क्या खामी है कि मैं जेल नहीं जा सकती? मुझे भी अुसी रास्ते जाना है, जिस रास्ते जानेकी सलाह आप अिन बहनोंको दे रहे हैं।'

"मैंने कहा : 'मै तुम्हें दु.ख पहुँचा ही नहीं सकता। अिसमे अविश्वासकी भी कोअी बात नहीं। मुझे तो तुम्हारे जानेसे खुशी ही होगी। लेकिन तुम मेरे कहने पर गअी हो, अिसका तो आभास तक मुझे अच्छा नहीं लगेगा। अैसे काम सबको अपनी-अपनी हिम्मतसे ही करने चाहिये। मैं कहूँ और मेरी बात रखनेके लिअे तुम सहज ही चली जाओ, और बादमे अदालतके सामने खड़ी होते ही कॉप अुठो और हार जाओ या जेलके दुःखसे अूब अुठो, तो अिसे मैं अपना दोष तो नहीं मानूँगा, लेकिन सोचो कि मेरे क्या हाल होंगे? मैं तुमको किस तरह रख सकूँगा और दुनियाके सामने किस तरह खडा रह सकूँगा? बस, अिस भयके कारण ही मैने तुम्हे ललचाया नहीं।'

"मुझे जवाब मिला : 'मैं हारकर छूट आअूँ, तो मुझे मत रखना। मेरे बच्चे तक सह सकें, आप सब सहन कर सकें और अकेली मैं ही न सह सकूँ, अैसा आप सोचते कैसे है! मुझे अिस लडाअीमे शामिल होना ही होगा।'

"मैंने जवाब दिया : 'तो मुझे तुमको शामिल करना ही होगा। मेरी शर्त तो तुम जानती ही हो। मेरे स्वभावसे भी तुम परिचित हो। अब भी विचार करना हो, तो फिर विचार कर लेना और भलीभाँति सोचनेके बाद तुम्हे यह लगे कि शामिल नहीं होना है, तो समझना कि

तुम अिसके लिअे आज़ाद हो। साथ ही, यह भी समझ लो कि निश्चय बदलनेमें अभी शरमकी कोअी बात नहीं है।'

"मुझे जवाब मिला: 'मुझे विचार-विचार कुछ नहीं करना है। मेरा निश्चय ही है'।"

* * *

बापूने लड़ाअी शुरू की और अुसकी शुरूआतमें बा और तीन दूसरी बहनें जेल गअीं। वॉल्क्रस्टके जेलमें दाखिल होनेके दूसरे ही दिन जो घटना घटी, श्री प्रभुदास गांधीने 'जीवनका प्रभात' नामक अपनी लेखमालामें अुसका वर्णन दिया है। वहाँका जेलर गुजराती नहीं जानता था और बहनें अंग्रेज़ी नहीं जानती थीं। अुनके नाम या पते और पहचान लिख लेनी थी। जेलरने श्री छगनलाल गांधीको दुभाषियेका काम करनेके लिअे आफिसमें बुलाया और कारकुनसे कहा कि वह सवालोंके जवाब ले:

कारकुन (बा को दिखाकर): यह जो खड़ी हैं, अिनका नाम पूछो।
छगनलाल गांधी (बा से): अिस कृष्ण-भवनकी पहली रात कैसे बीती?
बा: हम तो अँधेरा होनेके बाद भजन-कीर्तन करके आरामसे सो गअीं।
छगनलाल गांधी (कारकुनसे): अिनका नाम कस्तूरबा।
कारकुन (बा को दिखाकर): अिसकी शादी हुअी है?
छगनलाल गांधी (बा से): रात ब्यालू किया था?

बा: मुझको तो फलाहार चाहिये। अिन सबने तो आये हुअे रोटी और सागको सूँघ कर रख दिया। कहने लगीं, अैसे घिनौने बरतनमें कैसे खाया जाय? और अैसा बसाता साग कोअी मुँहमें कैसे डाले?

छगनलाल गांधी (कारकुनसे): अिनकी शादी हुअी है। अिनके पतिका नाम मोहनदास करमचन्द है। अिसके बाद अुमर, जात, वतन वगैराके बारेमें अेकके बाद अेक चारोंसे सवाल पूछे गये और छगनलाल गांधीने पहली रातके पूरे समाचार जाने और पहुँचाये। बा के फलाहारके बारेमें भी चर्चा की और अुन्हें बताया कि हनूमानजी (मि० कैलेनबेक) वॉल्क्रस्ट आ पहुँचे हैं और खबर यह है कि वे जेलरसे मिलकर फल पहुँचानेका बन्दोबस्त करनेवाले हैं।

लेकिन तीन-चार दिनमे सबका तबादला मैरित्सबर्ग जेलमे हो गया। तबादला होनेसे पहले खबर आअी कि बा को फल नहीं दिये गये और बा की तो प्रतिज्ञा थी कि कुछ भी क्यों न हो, जेलमे फलाहार ही करेंगी। अगर जेलवाले फलोंका अिन्तज़ाम न करें, तो भूखों रहना, मरनेकी नौबत आये, तो मर जाना। जेलके अधिकारियोंने अिस प्रतिज्ञाकी कोअी परवाह नहीं की और कहा : 'अैसे ढोंग करने थे, तो जेल क्यों आअीं ?'

बा के लिअे दूसरा कोअी अुपाय न रह गया। अुन्होंने अुपवास शुरू किया। अेक, दो, तीन दिन हो गये, अितनेमे अुन पर हुकूमत चलानेवाली मैट्रन ठंढी पड़ गअी। बोली : "हमे तो सुबह अेक वक्तकी चाय नहीं मिलती, तहाँ हमारा सिर घूमने लगता है और तुम दुबली-पतली होकर तीन-तीन दिन बिना खाये कैसे रहती हो ? हम लाचार हैं। तुम्हारे लिअे कुछ भी नहीं कर सकते। जेलमे मुँहमाँगा खानेको नहीं मिलता। मेहरबानी करके जो मिलता है, अुसीसे काम चलाओ।"

पाँचवें दिन सरकार झुकी और बा को फल मिले। लेकिन वे अितनी कम तादादमे मिलते कि दर असल बा को तीन महीने आधे पेट ही रहना पड़ा। सिर्फ तीन केले, चार 'प्रुन्स', दो टमाटर और दो नीबू मिलते थे। अिनमे मूँगफली-जैसी अेक भी चीज़ नहीं थी, जिससे घी-तेलकी गरज़ पूरी होती। तीन महीनों बाद जब बा जेलके दरवाज़ेसे बाहर आअीं, तो बिलकुल हड्डियोंका ढाँचा भर रह गअी थीं। अुनके दर्शन करनेवालोंकी आँखोंसे आँसू टपके बिना न रहे।

११

बा की सेवा-सुश्रूषा

जब बा मेरित्सबर्गके जेलसे रिहा हुअीं, अुनकी तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। पिछले प्रकरणमें अिसकी चर्चा हो चुकी है। बापू अुन्हें लिवाने जेल तक आये थे। बा की तन्दुरुस्ती और जर्जर बनी हुअी देहको देखकर बापूने पहली ही बात यह कही: "तुम तो बहुत बूढ़ी हो गअीं।" जेल ही से बा की तबीयत खराब रहने लगी थी। बाहर आनेके बाद भी तन्दुरुस्ती सुधरनेके बदले और ज़्यादा बिगड़ने लगी। जठराग्नि मन्द हो जानेकी वजहसे अुल्टियाँ होती थीं और सारे शरीरमें सूजन आ गअी थी। बापूने अिस पर घरेलू दवायें दीं, लेकिन बा की सूजन जड़से नहीं मिटी। और कुछ ही समयमें तबीयतने फिर पल्टा खाया। हाथों पर और पैरों पर सूजन बहुत ही बढ़ गअी। डॉक्टरोंने बहुतेरी दवायें दीं, लेकिन कोअी फ़र्क नहीं पड़ा। आखिर डॉक्टरकी दवासे बा भी अुकता गयीं। बापूने बा से कहा: "अगर तुझे मुझ पर विश्वास हो, तो अब मैं तुझ पर अपना प्रयोग करके देखूँ।" बा ने मंजूर किया: "तुम जैसा कहोगे, करूँगी।" बापूने कहा: "अुपवास करने होंगे और दवामें नीमका रस लेना होगा।" बा ने यह भी मंजूर किया और अुसी दिनसे बापूका अिलाज शुरू हुआ।

बापूने बा से १४ दिनके अुपवास करवाये और नीमका सेवन करवाया। अिन दिनों बापूने बा की जो सेवा की, अुसका वर्णन करनेके लिअे शब्द मिलने मुश्किल हैं। सवेरे बापू खुद बा को दतौन कराते। कॉफी भी खुद ही बना कर पिलाते, अेनीमा देते। 'पॉट' साफ़ कर लाते। बापू सारा दिन बा को धूपमें सुलाते। अुनके घरके सामने बाहरकी तरफ़ बकायनका (अेक तरहका नीम) पेड़ था। बा का शरीर तो बहुत ही दुबला हो गया था। छोटे बालकको अुठानेके ढंगसे बापू बा को दोनों हाथोंमें अुठाकर बाहर ले आते और पेड़के नीचे खटिया पर सुला देते। जैसे-जैसे धूप बदलती जाती, बा की खटियाको बदलते रहते। शामको फिर अुठा

कर अन्दर ले आते। बापू बा का सभी काम करते थे, लेकिन वे अुनका सिर नहीं गूँथ पाते थे। अिसलिअे काशीकाकी रोज सिर सँवारने जाती थीं। अेक दिन अुन्हे जरा देर हो गअी, तो बापू खुद सिरमे कघी करने बैठ गये। तेल डालकर अुलझे बालोंको सुलझा भी चुके थे, कि अितनेमे वे पहुँच गअीं। बापूने कहा: "लो, अब तुम करो। मुझे ठीकसे वेनी गूँथना नहीं आता।"

बापू बा की सूजन पर रोज नीमके तेलकी मालिश करते थे। अेक दिन पीतलकी रकाबीमे तेल निकाला था। अुसके दूसरे दिन बापूने बा के लिअे कॉफी तैयार की और अुसे प्याले व रकाबीमे ढालने जाते थे कि अितनेमे काशीकाकी आ पहुँचीं। बापूको बास बहुत ही कम आती है, अिसलिअे अुस रकाबीमे तेलकी बास आती है या नहीं, यह जाननेकी गरज़से अुन्होंने काकीसे कहा: "जरा सूँघकर तो देखो, बास आती है?"

काशीकाकीने कहा: "हाँ, बास तो आती है।"

अिस पर बापू बोले: "अगर मै अिसमे कॉफी ले जाता, तो मेरी आ ही बनती न?" मानो बापू बा से अितने अधिक डरते हों!

बापूकी सेवा फली और बा अुस बीमारीसे मुक्त होकर बिल्कुल चगी हो गअीं।

*

अंग्रेज सरकारके खिलाफ बापूके कअी सत्याग्रहोंकी बाते हम जानते हैं। कभी-कभी बापूने मित्रोंके साथ भी सत्याग्रह किया है। अेक बार बा के साथ सत्याग्रह करनेका मौका भी बापूको मिल गया। आत्मकथामे 'घरमे सत्याग्रह' शीर्षकसे बापूने अिसका वर्णन किया है:

"शस्त्रक्रियाके बाद जो भी थोडे समयके लिअे कस्तूरबाअीका रक्तस्राव बन्द हो गया था, तो भी अुसने फिर पलटा खाया और वह किसी तरह मिटता ही नहीं था। अकेले पानीके अुपचार बेकार साबित हुअे। जो भी पत्नीको मेरे अुपचारों पर विशेष श्रद्धा नहीं थी, तो भी अुनके लिअे मनमे तिरस्कार भी नहीं था। दूसरा कोअी अिलाज करानेका आग्रह नहीं था।

अिसलिअे जब मेरे दूसरे अुपचारोंमें सफलता न मिली, तो मैंने अुन्हें नमक और दाल छोड़नेके लिअे समझाया। बहुत मनाने पर भी, अपने कथनके समर्थनमें अिधर-अुधरकी बातें पढ़कर सुनाने पर भी, वे मानी नहीं। आखिर अुन्होंने कहा: 'दाल और नमक छोड़नेकी बात तो कोअी तुमसे कहे, तो तुम भी अिन्हें न छोड़ो।' मुझे दुःख हुआ और खुशी भी हुअी। मुझे अपने प्रेमकी वर्षा करनेका मौक़ा मिला। मैंने अुस खुशीमें आकर तुरन्त ही कहा, 'तुम्हारा खयाल ग़लत है। मुझे कोअी रोग हो और वैद्य यह चीज़ या दूसरी कोअी चीज़ छोड़ देनेको कहे, तो मैं ज़रूर छोड़ दूँ। लेकिन जाओ, मैंने तो अेक सालके लिअे द्विदल (दाल) और नमक दोनों छोड़े। तुम छोड़ो या न छोड़ो, दूसरी बात है।'

"पत्नीको बहुत पश्चात्ताप हुआ। वह कहने लगीं: 'मुझे माफ़ करो। तुम्हारे स्वभावको जानते हुअे भी मैं यह कह बैठी। अब तो मैं दाल और नमक नहीं खाअूँगी, लेकिन तुम अपनी बात लौटा लो। यह तो मेरे लिअे बहुत बड़ी सज़ा हो जायगी।'

"मैंने कहा: 'तुम नमक और दाल छोड़ दोगी तब तो बहुत ही अच्छा होगा। मुझे यक़ीन है कि अुससे तुम्हें फ़ायदा ही होगा। लेकिन की हुअी प्रतिज्ञाको मैं लौटा नहीं सकता। मुझे तो लाभ ही होगा। आदमी किसी भी निमित्तसे संयम पाले, अुसे अुसमें लाभ ही है। अिसलिअे तुम मुझसे आग्रह न करना। दूसरे, मुझको भी अपना अन्दाज़ मालूम हो जायगा, और तुमने दो चीज़ें छोड़नेका जो निश्चय किया है, अुस पर डटे रहनेमें तुम्हें मदद मिलेगी।' अिसके बाद मुझे अुन्हें मनानेकी तो ज़रूरत ही नहीं रही। 'तुम तो बहुत हठीले हो, किसीकी बात मानते ही नहीं,' कहकर अंजलि भर आँसू बहा लिये और चुप रह गअीं।

"अिसको मैं सत्याग्रहका नाम देना चाहता हूँ, और अपने जीवनके मीठे संस्मरणोंमेंसे अेक अिसे मानता हूँ।

"अिसके बाद कस्तूरबाअीकी तबियत खूब सँभली। अिसमें नमक और दालका त्याग कारणभूत था, अथवा किस हद तक वह कारणभूत हुआ था, या अुस त्यागके कारण आहारमें जो छोटे-मोटे हेरफेर हुअे,

वे कारणरूप थे, अथवा अुसके बाद दूसरे नियमोंका पालन करानेमे मैंने जो सतर्कता बरती थी, वह निमित्तरूप थी, या अूपरकी घटनाके कारण अुत्पन्न मानसिक अुल्लास निमित्त बना था, सो मै कह नहीं सकता। लेकिन कस्तूरबाअीकी गिरी हुअी तन्दुरुस्ती सुधरने लगी। शरीर पुष्ट होने लगा। खून जाना बन्द हुआ और 'वैद्यराज' के नाते मेरी साख कुछ बढी।"

१२

बा की अंग्रेजी

यह स्वाभाविक है कि अफ्रीकामे चारों तरफका वातावरण अंग्रेजीसे भरा हो। बापूके साथी ज़्यादातर अंग्रेज होते थे। बादमे जब हिन्दुस्तान आये, तो यहाँ भी आश्रममे कअी भाषाअें बोलनेवालोंका जमघट रहा। अिसलिअे आश्रममे भी अंग्रेज़ीका ठीक-ठीक अुपयोग करनेकी ज़रूरत रही। अिसलिअे हालाँकि बा अंग्रेजी पढी नहीं थीं, तो भी मौक़ा पड़ने पर वे अिधर-अुधरके अंग्रेजी शब्दोंसे अपना काम चला सकती थीं।

श्रीमती पोलाक विलायतसे दक्षिण अफ्रीका आयीं थीं और मि० पोलाकके साथ ब्याह करके बापूके घरमे ही रहने लगी थीं। वे लिखती है: "बा टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेती थीं, लेकिन ज़्यादा नहीं। पहले दिन तो हम परस्पर बहुत मिली भी नहीं थीं। लेकिन दूसरे ही दिनसे जब गांधीजी और मेरे पति दफ्तर चले गये, तो हम दोनों घरमे अकेली रह गअीं। फिर तो हमे किसी भी तरह अेक दूसरेसे बातचीत करनी ही थी। कुछ ही समयमे बा की अंग्रेजी सुधर गअी और मेरे साथका अुनका सकोच भी दूर हो गया। फिर तो जब हम अंग्रेज मित्रोंसे मिलने जातीं, तो वहाँ वे भी बातचीतमे अच्छी तरह शामिल होतीं।"

बा वहाँ कैसी अंग्रेजी बोलती थीं, अिसकी कुछ मिसालें श्रीमती पोलाककी 'Mr. Gandhi — The Man' नामकी किताबसे यहाँ देती हूँ। अेक बारकी बात है। मि० पोलाक बापूजीसे कुछ

नाराज़ हो गये थे। वे घरमें किसीसे बोलते नहीं थे और बेचैन रहा करते थे। अिस पर बा ने श्रीमती पोलाकसे पूछा :

"What the matter Mr. Polak? What for he cross?" — मि॰ पोलाकको क्या हुआ है? वे अितने नाराज़ क्यों दीखते हैं?

श्रीमती पोलाकने कहा : "बापू पर गुस्सा हुअे हैं।"

तब बा ने पूछा : "What for he cross Bapu? What Bapu done?" — बापू पर गुस्सा क्यों हुअे हैं? बापूने क्या किया है?

अिसके बाद श्रीमती पोलाकने अिस सम्बन्धकी सारी हक़ीक़त बा को कह सुनाअी। अुस पर बा ने जवाब दिया :

"Oh, Oh!" — हाँ, हाँ।

श्रीमती पोलाक अिस 'हाँ-हाँ' का यह अर्थ करती हैं कि मि॰ पोलाक बापू पर गुस्सा हुअे, अिसका बा को कोअी दुःख नहीं हुआ, क्योंकि वे खुद भी अिस मामलेमें बापू पर नाराज़ होती थीं; और बापूके लिअे अितना भाव रखनेवाले आदमीको अुनसे नाराज़ होनेका कारण मिलता है, अिससे बा को हिम्मत बँधी कि अुनका नाराज़ होना भी सकारण ही होता है।

बा अिस तरहकी अंग्रेज़ी तो अफ्रीकासे आनेके बाद यहाँ भी बोलती थीं। आश्रममें आनेवाले गोरे मेहमानोंका स्वागत करना, अुनके कुशल-समाचार पूछना, अुनकी ज़रूरतोंके बारेमें पूछताछ करना वग़ैरा मामूली बातचीत बा अच्छी तरह कर सकती थीं। अिस प्रकार वे अंग्रेज़ी बोलना तो जानती थीं, लेकिन '३०के जेल जीवनमें ६० सालकी अुम्रमें अुन्होंने जेलके अन्दर अंग्रेज़ी लिखना-पढ़ना सीखनेकी जो कोशिश शुरू की थी, अुसके बारेमें सौ॰ लाभुबहन, जो जेलमें अुनके साथ ही थीं, 'स्त्री-जीवन' मासिकके बा-सम्बन्धी विशेषांकमें अिस प्रकार लिखती हैं :

"बा को पता चला कि मैं अंग्रेज़ी जानती हूँ और अुन्होंने मुझसे अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू किया। अितनी बड़ी अुम्रमें, अितने बड़े पदको पहुँचनेके बाद भी, मेरे पास बैठकर अंग्रेज़ी सीखनेमें अुनको न तो हीनता

मालूम हूअी, न शरम। अुन्हे तो अेक ही धुन लगी थी कि खुद बापूका पता अंग्रेजीमे लिख सके। 'अे-बी-सी-डी' पर लगातार कअी-कअी दिन तक मेहनत करके वे कभी अुकताअी नहीं थीं। अेक ही नामको २०-२५ बार लिखते वे थकी नहीं थीं और न जल्दी-जल्दी, नये-नये शब्दों या वाक्योंको सीख लेनेकी अुन्होंने कभी अिच्छा की थी। वे कहा करतीं : 'अंग्रेज़ी आ जाय तो बापूको जो पत्र लिखती हूँ, अुसका पता तो किसीसे न लिखवाना पड़े? और ढेर-की-ढेर जो डाक आती है, अुसमेसे मेरा पत्र खुद ही पहचाना जा सके न?"

* * *

पूज्य बापूजी सन् १९२२से '२४ तक यरवड़ा जेलमे थे। वहाँ अुन्होंने अेक कैदीकी खुराकके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्टके सामने कुछ माँगें पेश की थीं। सुपरिण्टेण्डेण्टने अुन्हें नामजूर कर दिया, अिससे बापूजीको बहुत बुरा मालूम हुआ और अुन्होंने सिर्फ दूध ही पर रहनेका निश्चय किया। अिस तरह चार हफ्ते बीत गये और अिस बीच अुनका वजन १०४ से ९० पर आ गया। जब बा के साथ परिवारके कुछ लोग अुनसे मिलने गये, तो जीना चढते हुअे बापूके पैर कुछ लड़खडाये। बा ने बापूकी यह हालत देखी और अिसका कारण पूछा। बापूको अनिच्छापूर्वक अपनी सारी बात बा से कहनी पड़ी। सबने अेक होकर बापूसे आग्रह किया कि वे अिस प्रयोगको छोड़ दें और फल लेने लगे। बापूने बात मजूर भी कर ली।

यह देखकर यरवड़ाके सुपरिण्टेण्डेण्टने बा से कहा : "मि० गांधी यह जो सब करते हैं, अिसमें मेरा कोअी कसूर नहीं।"

बा ने जवाब दिया : "Yes, I know my husband. He always mischief"

क्या अिस अेक वाक्यमे बा ने, अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजीमे ही क्यों न हो, बापूके सारे चारित्र्यका निरूपण नहीं कर डाला है? "मै अपने पतिको पहचानती हूँ, वे कभी चुप बैठनेवाले नहीं हैं। अुन्हें रोज़ कुछ-न-कुछ शरारत ही सूझती है।" क्या अिन शब्दोंमे बापूके समूचे जीवनचरित्रका सार नहीं समा जाता? १८९३मे वे दक्षिण अफ्रीका पहुँचे, तबसे आज तकके अिन ५९ वर्षोंमे बापू कभी चैनसे बैठे है? आज सारी दुनियामे

अेक क्षण भी चैनसे न बैठनेवाला और दूसरोंको न बैठने देनेवाला बापूके जैसा दूसरा कौन होगा? बापूकी रग-रगको जाननेवाली बा को छोड़कर अैसे अेक वाक्यमें अुनके चारित्र्यका अितना हूबहू और गंभीर अर्थोंवाला वर्णन और कौन कर सकता है? और अिस वर्णनमें अंग्रेजी भाषाका अधूरा ज्ञान भी अुनके लिअे बाधक नहीं बना। अच्छे-अच्छे अंग्रेज़ीदाँ भी अैसे अेक वाक्यमें बापूका वर्णन क्या करनेवाले थे?

१३

खादी-परिधान

बा को अपनी पोशाकमें और कपड़ोंकी पसन्दगीमें बापूकी अिच्छा और सूचना पर चलना पड़ा है, या यों कहिये कि बा चलीं हैं। सन् १९१९–'२०में बा ने खादी धारण की। अुसका ज़िक्र करनेसे पहले हम यह देख लें कि सन् १८९६में दक्षिण अफ्रीका जाते समय बापूने बा की पोशाकमें किस तरहका हेरफेर कराया था। बापूजी आत्मकथामें कहते हैं:

"परिवारके साथ यह मेरी पहली समुद्र-यात्रा थी। मैंने कअी बार लिखा है कि हिन्दुओंकी गृहस्थीमें बचपनमें शादी होनेके कारण और मध्यमश्रेणीके लोगोंमें अधिकतर पतिके शिक्षित और पत्नीके निरक्षर होनेके कारण, पति-पत्नीके जीवनमें फ़र्क़ रहता है, और पतिको पत्नीका शिक्षक बनना पड़ता है। मुझको अपनी धर्मपत्नीकी और बालकोंकी पोशाकका, खाने-पहननेका और बातचीतका बहुत खयाल रखना पड़ता था। मुझे अुन्हें रीति-रिवाज सिखाने होते थे। अुनमेंसे कुछकी याद आज भी मुझको हँसाती है। हिन्दू पत्नी पतिपरायणतामें अपने धर्मकी पराकाष्ठा मानती है। हिन्दू पति अपनेको पत्नीका अीश्वर समझता है, अिसलिअे पत्नीको, जैसा वह नचावे, नाचना पड़ता है।

"जिन दिनोंकी बात मैं लिख रहा हूँ, अुन दिनों मैं मानता था कि सुधरे हुओंमें अपनी गिनती करानेके लिअे हमें अपना बाहरी आचरण भरसक युरोपियनोंसे मिलता-जुलता रखना चाहिये। अैसा करनेसे ही रोब पड़ता है, और रोब पड़े बिना देशभक्ति नहीं हो सकती।

"अिसलिअे पत्नीकी और बालकोंकी पोशाक मैंने ही पसन्द की। बच्चों वगैराका काठियावाडके बनियेके रूपमे परिचय देना कैसे अच्छा लगता? पारसी ज़्यादासे ज़्यादा सुधरे हुअे माने जाते हैं, अिसलिअे जहाँ युरोपियन पोशाककी नकल करना जँचा ही नहीं, वहाँ पारसी पोशाककी नकल की। पत्नीके लिअे पारसी बहनोंके तर्जकी साड़ियाँ लीं। बच्चोंके लिअे पारसी कोट-पतलून बनवाये। सबके लिअे बूट-मोजे तो होने ही चाहिये। पत्नीको और बच्चोंको दोनो चीजें कअी महीनो तक अच्छी न लगीं। बूट काटते, मोजे बदबू देते, पैर तंग रहते। अिन अड़चनोंके अुत्तर मेरे पास तैयार थे और अुत्तरोंके औचित्यके मुकाबले हुक्मकी ताक़त तो ज़्यादा थी ही। अिसलिअे पत्नीने और बच्चोंने लाचारीके साथ पोशाकके अिस हेर-फेरको मंजूर किया। अुतनी ही लाचारीसे और अुससे भी अधिक अरुचिसे वे खाते समय छुरी-काँटेका अिस्तेमाल करने लगे। जब मेरा मोह अुतरा, तब फिरसे अुन्होंने बूट-मोजे और छुरी-काँटे वगैराका त्याग किया। शुरूका परिवर्तन जिस तरह दुःखदायी था, अुसी तरह आदत पड़ जानेके बाद अुसे छोड़ना भी दुःख देनेवाला था, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि हम सब सुधारोंकी केंचुली अुतारकर हल्के हो गये हैं।"

जिस तरह बा को बूट-मोजे कअी महीनों तक अटपटे लगे, अुसी तरह अुनको खादी पहनानेमें भी बापूको कअी महीने नहीं तो कुछ दिन जरूर लगे थे। रौलट-अेक्टके खिलाफ शुरू की गअी सत्याग्रहकी लड़ाअीको मुल्तवी करनेके बाद बापूने 'स्वदेशी'के कामको बहुत जोर-शोरसे अुठाया। अुस समयके स्वदेशी व्रतमें कुछ महीनों तक तो मिलके कपड़ेको भी मंजूर रखा गया था, लेकिन कुछ ही समयमें बापूने देख लिया कि मिलके कपड़ेका प्रचारक बननेकी हमें जरूरत नहीं। असली जरूरत तो परदेशसे आनेवाले कपड़ेकी रोकके लिअे ज़्यादा कपड़ा पैदा करनेकी है, और यह काम चरखेके जरिये ही अच्छी तरह हो सकता है। अिसलिअे बापूने सबसे आग्रह करना शुरू किया कि वे चरखा चलायें और खादी पहनें। लेकिन अुन दिनों बड़े अर्जकी खादी तो बनती नहीं थी। ३७ अिंच पनेकी खादी भी मुश्किलसे बुनी जाती थी और अगर धोती या साड़ी खादीकी पहननी हो, तो ६ या ८ नम्बरके

असमान सूतकी और कम अर्ज़की अैसी खादीको जोड़कर ही पहनी जा सकती थी। अिस तरह जोड़कर बनाअी गअी साड़ीका वज़न २॥ से ३ पौण्ड होता होगा। जो बहनें यह दलील करतीं कि अैसी साड़ी तो बहुत भारी पड़ती है, हमसे अुठ भी नहीं सकती, अुनसे बापू कभी-कभी कहते कि नौ-नौ महीनों तक बच्चेको पेटमें धारण करनेवाली बहनोंको देशके खातिर, अपनी ग़रीब बहनोंकी आबरूके खातिर, यह अितनी-सी साड़ी भारी क्यों लगनी चाहिये?

आश्रममें भी बापू रोज़ सब बहनोंको खादी पहननेके लिअे समझाते। बापूकी अुस दलीलको सुनकर साड़ीके वज़नकी दलील तो कोअी बहन न करती, लेकिन रोज़ धोनेकी मुश्किलवाली दलील बहनें बहुत ज़ोरके साथ पेश किया करतीं। अिस पर बापूजी कहते कि हम तुम्हें तुम्हारी साड़ियाँ धो देंगे। अिस तरह हँसी-विनोद होता रहता। अिन सब दलीलोंमें बा बहनोंकी अगुआ बनतीं। बापू अक्सर कहते: 'बा को बूट और मोज़े पहनानेमें मुझे अुनकी कुछ कम खुशामद नहीं करनी पड़ी। और अुनको फिरसे छुड़वाते समय भी थोड़ी खुशामद तो करनी ही पड़ी थी। लेकिन अब देखता हूँ कि बूट-मोजे पहनानेमें जितनी खुशामद करनी पड़ी थी, खादीकी साड़ी पहनानेमें अुससे ज़्यादा खुशामद करनी पड़ेगी।' जहाँ तक मैं जान पाअी हूँ, अुसके मुताबिक तो श्री० सरलादेवी चौधरानीने पहले-पहल खादीकी साड़ी पहनी थी। शायद सारे देशमें सबसे पहले खादीकी साड़ी पहननेवालियोंमें वही प्रथम रही हों। अुन दिनों वे आश्रममें ही रहती थीं। फिर तो तुरन्त ही बा ने भी खादीकी साड़ी धारण की और कुछ ही समयमें सब बहनें खादी पहनने लग गअीं। बादमें तो बड़े अर्ज़की खादी भी बुनी जाने लगी और खुद कातनेवालोंके लिअे तो साड़ीकी कोअी कठिनाअी ही नहीं रह गअी।

अिसके बाद तो बा को खादीसे कितना प्रेम हो गया था, अिसका सूचक अेक अुदाहरण यहाँ देती हूँ। अेक दिन बा के पैरकी छोटी अँगुलीसे खून निकला। बा खादीकी पट्टी बाँधने जा रही थीं, अितनेमें अेक बहनने महीन कपड़ेकी पट्टी ला दी और कहा: "अिस महीन कपड़ेसे रगड़ नहीं लगेगी और पट्टी अच्छी तरह बँधेगी।" "मुझे तो खादीकी

पट्टी ही चाहिये। वह खुरदरी भी होगी, तो मुझे नहीं चुभेगी," कहकर बा ने खादीकी ही पट्टी बाँधी।

जब बापूजीने आगाखान महलमे अुपवास शुरू किये, तो अुनसे मिलनेके लिअे गअी अेक आश्रमवासिनी बालासे बा ने सेवाग्राममे पड़े हुअे अपने कपड़े भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंको बाँट देनेके लिअे कहा और सूचना की: "बापूजीके अपने हाथसे कती और मेरे लिअे खास तौर पर तैयार की गअी साड़ी तो मुझे जेलमे भेज ही देना। मृत्युके बाद मेरी देह पर वह साडी लपेटनी है।"

आम तौर पर बा की साडी बापूके काते सूतकी ही बनती थी और बा चिता पर चढ़ीं, सो भी बापूके हाथसे कते सूतकी साड़ी पहनकर ही।

१४
आश्रमकी बा

जिस तरह बापूको 'बापू' ही बनाये रखनेमे बा का बहुत बड़ा हाथ था, अुसी तरह आश्रमको आश्रम — साधारण मनुष्योंका आश्रयस्थान — बनाये रखनेमे भी बा का हिस्सा कम नहीं रहा। जब अहमदाबादमे बापूने आश्रम कायम किया, तो खयाल अुठा कि अुसका नाम क्या रखा जाय? अनेक नामोंके साथ अेक 'तपोवन' भी सुझाया गया था। बापूका आश्रम वैसा 'तपोवन' बना होता, तो कौन जाने अुसमे कैसे-कैसे लोग रहते होते। आज जो साधारण लोग आश्रमवासी कहलाते है, अुनके लिअे तो शायद जगह ही न रहती। सार्वजनिक कामोंके सिलसिलेमे या निजी कारणोंसे बापूको मिलने आनेवाले लोग अुस तपोवनमे अेक दिन भी रह सकते या नहीं, अिसमे शक है।

बापूका तप सूरजकी तरह तपता है। सूरजका ताप जिस तरह दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही होता है, अुस तरह बापूका तप दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही है। लेकिन जैसे सूरजके तापके बहुत पास जानेवाला जल जाता है, अुसी तरह बापूके बहुत नजदीक रहना भी अेक कड़ी तपस्या ही है। बापूजीके पास रहनेवालोंकी अिस तरहकी कड़ी

कसौटीमें बा ने हमेशा अुनकी ढालका काम किया है और अुनको बापूके तापसे झुलसने नहीं दिया। बा ने यह सब सोच-समझकर या योजनाके साथ नहीं, बल्कि सहजभावसे ही किया है।

आश्रममें रहनेवाली बहनोंके लिअे बा किस तरह ढाल बन जाया करती थीं, अिसकी अेक मिसाल यहाँ देती हूँ।

आश्रमका नियम था कि सबकी अेक संयुक्त रसोअी हो। हरअेक अपने हिस्से आनेवाला काम कर ले। यह भी अेक नियम था कि आश्रममें होनेवाली साग-सब्जीका ही अिस्तेमाल किया जाय। बाहरसे साग वगैरा न मँगाया जाय। संयुक्त रसोअीमें आश्रमके खेतमें पैदा होनेवाले कद्दूका साग रोज़ बनता था। कद्दूके सागसे मतलब है, कद्दूके बड़े-बड़े टुकड़ोंका पानीमें अुबाला हुआ पदार्थ। अुसमें नमक भी नहीं छोड़ा जाता था। जिसे ज़रूरत हो, वह अलगसे नमक ले ले। मेरी माँको अिस सागके खानेसे बादीकी तकलीफ़ होती और चक्कर आते। दुर्गामौसीको बादीकी शिकायतके साथ-साथ डकारें आतीं। दूसरी भी बहुतेरी बहनोंको वह माफ़िक नहीं आता था। बापूजी तो सबको पानी चढ़ाते रहते थे, अिसलिअे, और कुछ संकोचकी वजहसे भी, सब बहनें बापूजीसे अिसका ज़िक्र नहीं करती थीं। लेकिन बा के साथकी बातचीतमें ये सब बातें हुआ करतीं। मेरी माँने रोज़-रोज़के अिस कद्दूके साग पर अेक गरबी (तुकबन्दी) तैयार कर ली। बा ने वह सुनी और वे तुरन्त ही बापूके पास पहुँचीं। बापूसे कहा: "तुम्हारे कद्दूका साग खाकर मणिबहनको बादीकी तकलीफ़ होती है और चक्कर आते हैं। दुर्गाबहनको डकारें आती हैं। कद्दूका साग भी कहीं निरा अुबाला हुआ बनता है? अुसे मेथीसे छौंका जाय, और अुसमें गरम मसाला वगैरा सब कुछ डाला जाय, तभी वह बाधक नहीं होता। नहीं तो, कद्दू बिना कष्ट दिये कभी रहा है?"

अिस गरबीमें विनोदके तौर पर आश्रमकी रसोअीका थोड़ा मज़ाक किया गया था। अिस पर कुछ आश्रमवासी तो मेरी माँसे कहने लगे कि यह तो तुमने बापूका अपमान किया। लेकिन अिसमें अपमानकी तो कोअी बात थी ही नहीं, महज़ मीठा मज़ाक था। दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद बापूने कहा कि हमारे आश्रममें अेक नये कवि पैदा हुअे हैं। हमें अुनकी

कविता सुननी है। अिसके बाद बापूने आग्रह करके मेरी मॉसे कद्दूवाली वह गर्बी गवाअी। गर्बीके खतम होने पर बापूने कहा : “अच्छी बात है, आपकी फरियाद मजूर की जाती है। जिन्हे छोककर और मसाले डालकर साग खाना हो, वे अपने नाम मुझे लिखा दे।”

बा बोलीं : “यों आपको कोअी नाम नहीं देगा। हम बहने खुद तय कर लेंगी।”

बापूने कहा : “अच्छा, तो अैसा ही सही। लेकिन देखना भला, अिसमे बच्चोंको शामिल न कर लेना। बच्चे तो बिना मसालेका साग ही पसन्द करते है।” बा ने कहा : “अिस तरह कह-कहकर बच्चोको चढाओ और भले अुन्हे अपने पास ही रखो। ये सब बच्चे कहॉ तक तुम्हारे रहेंगे, सो मै जानती हूँ।”

फिर सब बहनोंने नाम तय किये। मसाला खानेकी आजादी हासिल की। लेकिन बापूजी कुछ सुखसे मसाला खाने देते हो, सो नहीं। बहनोंकी पगत अुनके सामने ही बैठती। अिसलिअे खाते-खाते भी बापू मजाक करते और कहते : “क्यों, बघार कैसा लगा है? साग अच्छा मसालेदार है न?”

अिसके जवाबमे बा भी विनोदभावसे कहतीं : “तुम कौन कम थे? पहले हर अितवारको मुझसे ‘वेढमी’ (प्ररणपोली) और पकौड़ी या ‘पातरे’ (अरवीके पत्तेके भजिये) बनवा कर खूब अुडाते थे, सो तुम्हीं थे या और कोअी?”

अैसा ही अेक किस्सा और है।

आश्रममे नियम था कि हरअेकको अमुक निश्चित कीमतका ही साबुन अिस्तेमाल करना चाहिये। आश्रमकी बहनोंको अुतना साबुन पूरा नहीं पडता था। और अिसके खिलाफ शिकायत करनेका मतलब होता था, बापूके बनाये नियमका विरोध करना। फिर भी सब बहनोंने मिलकर सबकी सहीसे अेक अर्जी तैयार की। बा ने भी अुस पर सही की और अर्जी बापूको दी गअी। अर्जीमे बा का नाम पढकर अर्ज करनेवाली जो अेक खास बहन थीं अुनकी ओर अिशारा करके बापूने कहा : “अिन्होंने तो हम दोनोंमे भी झगड़ा करा दिया!” कहनेकी

ज़रूरत नहीं कि बापूने अर्ज़ी मंजूर की और बहनोंको ज्यादा साबुन मिलने लगा।

* * *

सेवाग्राममें बापूकी झोंपड़ीकी ओर जानेसे पहले बा की झोंपड़ी पड़ती है। बा या तो चबूतरे पर बैठी कातती मिलतीं, या अैसा ही कोअी काम करती नज़र आतीं। किसी नये आनेवाले मेहमानको पहले बा के दर्शन होते। बा अुन्हें पहचानती हों या न पहचानती हों, फिर भी बड़े प्रेमसे अुनका स्वागत करतीं। कहाँसे आये? सीधे यहीं आ रहे हैं या वर्धा होकर आये? भोजन हुआ या नहीं? गाड़ीमें बहुत तकलीफ़ तो नहीं हुअी न? वग़ैरा छोटी-से-छोटी बातें पूछतीं। भोजन न किया हो, तो करातीं। आये हुअे मेहमानको बापूके साथ तो जिस कामके लिअे आये हों अुसकी चर्चा करनेका ही काम रहता था। पर अुनकी दूसरी तमाम कठिनाअियोंको बा हल कर दिया करतीं। आश्रममें रहनेवालोंसे भी बा जब-तब पूछती रहतीं: 'खाना तो माफ़िक़ आता है न? कोअी तकलीफ़ न अुठाना भला! किसी चीज़की ज़रूरत हो, तो मुझसे कहिये।' छोटे बच्चे रहते, तो अुन्हें दोपहरमें नाश्ता भी देतीं। आश्रममें खातिरदारीकी या प्यार-दुलार पानेकी कोअी जगह थी, तो वह बा की।

पण्डित मोतीलालजी जैसे आश्रममें कअी-कअी दिन तक रह जाते थे, सो बा की ही बदौलत। बा न हों, तो राजाजीको चाय-कॉफी कौन दे? जवाहरलालजीके लिअे खास ज़ायकेवाली चाय कौन तैयार करे? मीठुबहनको ज़िन्दा रखना हो, तो अुनको चाय देनी ही चाहिये — बा के सिवा दूसरा कौन अुनकी अैसी वकालत करता?

* * *

बहुत साल पहलेकी बात है। अेक दिन गोशीबहन आश्रममें आअी थीं। आश्रमका रिवाज यह था कि खाना खानेके बाद हरअेक अपनी-अपनी थाली माँज डाले। सब खाने बैठे। बा और गोशीबहन पास-पास बैठी थीं। भोजनके बाद हरकोअी अपनी-अपनी थाली अुठाकर जाने लगा। गोशीबहनने कभी बरतन मले नहीं थे। अुनका भोजन हो चुका था, लेकिन वे परेशान थीं कि क्या करें। अितनेमें बा भी खा चुकीं।

अुन्होंने धीरेसे गोशीबहनकी थाली खींच ली। गोशीबहन और भी परेशान हुआीं और शरमाआीं। बा से कहीं थाली मॅजवाअी जा सकती है? लेकिन बा अुनकी कठिनाअीको समझ गअी थीं, अिसलिअे बोलीं: "बहन, तुमने कभी थाली मॉजी नहीं है, तो तुमसे यह नहीं बनेगा। मुझको तो रोज़की आदत है। मेरे लिअे अेक थाली ज़्यादा नहीं होगी।"

'बापूने आश्रमका अेक नाम 'अस्पताल' भी रख छोड़ा है। बीमारोंको अपने पास रखकर अुनकी तीमारदारी करनेका बापूको शौक है। बापू अपनेको अेक बहुत अच्छा नर्स और डॉक्टर भी समझते है। जिस तरह खुराकके और कुदरती अिलाजोंके प्रयोग वे अपने अूपर आजमाते है, अुसी तरह दूसरों पर भी आज़मानेको तैयार रहते है। अपने अिस कामसे वे अेक तरहकी मानसिक विश्रान्ति प्राप्त करते है। सरदार वल्लभभाअी-जैसे भी बापूके बीमार है। चूँकि आश्रम अिस तरहका अेक अस्पताल है, अिसलिअे बाहरसे बापूके वास्ते फलकी जो भेंटें आती है, अुनमेसे ज़्यादातर फलोंका अुपयोग बीमारोंके लिअे ही होता है। आश्रममे तन्दुरुस्त आदमीके हिस्से फल शायद ही कभी आते है। बा को अिसमे कुछ भी अनुचित नहीं लगता था। लेकिन जब कभी फलोंकी अिफरात होती, बा स्वस्थ आश्रमवासियोंका मुँह मीठा करानेकी मुराद रखतीं। रसोअीघरके व्यवस्थापककी स्वाभाविक वृत्ति फलोंके संग्रहकी रहती। लेकिन बा को यह पसन्द न पड़ता। अुनकी नजर पड़ती और फल ज़्यादा होते, तो फौरन ही ज़रूरी फल रखकर बाकीके फलोंको वे पंगतमे परोस देनेके लिअे कह देतीं। अैसे समय वे रसोअीघरके व्यवस्थापक पर ताना भी कसतीं। कहतीं: "वह तो लालची है, बापूको भी पीछे छोड़नेवाला।" यह टीका व्यवस्थापककी अपेक्षा बापू पर ही अधिक होती।

और, आश्रममे बा न हों तो अक्सर त्योहारके दिनका भी किसीको पता न चले। बा हमेशा अेकादशीका व्रत रखती थी और त्योहारके सब दिनोंको भी याद रखतीं थीं। अिसलिअे त्योहारके दिन सभी आश्रम-वासियोंको बा की कुछ-न-कुछ प्रसादी मिल जाती थी। अिस तरह बा के कारण आश्रममे आनन्दका वातावरण रहा करता।

लेकिन अब सेवाग्राम जाने पर बा का वह हमेशा हँसनेवाला चेहरा और फलों वग़ैराकी अुनकी वह प्रसादी कहाँ मिलेगी? बा के अभावमें वहाँ कौन भावके साथ स्वागत करेगा? जिस तरह माँके बिना घर सूना-सूना लगता है, अुसी तरह बा के बिना आश्रम भी सूना लगेगा।

१५

हरिजनोंकी माँ

बा तो सारे देशकी माँ बनकर गओीं। अुनके दिलमें कभी क़ौमी भेदभाव था ही नहीं। लेकिन सफ़ाओी और छूतछातसे सम्बन्ध रखनेवाले वैष्णव सम्प्रदायके संस्कारोंके कारण हरिजनोंकी माँ बननेमें अुनको थोड़ा वक़्त ज़रूर लग गया। मगर अिस पुरानी घिनके निकल जानेके बाद तो अुन्होंने हरिजनों और सवर्णोंके बीच कभी कोओी भेदभाव नहीं रखा।

अहमदाबादमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना करते समय बापूने अस्पृश्यता-निवारण-सम्बन्धी अपने विचारोंको मित्रोंके सामने साफ़-साफ़ रख दिया था: "अगर कोओी लायक अछूत (अुस समय हरिजन शब्द प्रचलित नहीं हुआ था) भाओी आश्रममें भरती होना चाहेगा, तो मैं अुसे ज़रूर भरती करूँगा।"

"लेकिन आपकी शर्तोंका पालन कर सकनेवाले अछूत अितने सुलभ हैं कहाँ?" अेक वैष्णव मित्रने अिन अुद्गारोंके साथ अपने मनको मना लिया।

आश्रमकी स्थापनाके कुछ ही महीनों बाद ठक्करबापाने आश्रमके नियमोंका पालन करनेवाले अेक प्रामाणिक परिवारको आश्रममें भरती करनेकी सिफ़ारिश की। बापू तो यह चाहते ही थे। दूधाभाओी, अुनकी पत्नी दानीबहन और अेक छोटी लड़की लक्ष्मी आश्रममें आ पहुँचे।

आश्रममें बड़ी खलबली मची। अफ्रीकामें बापूजीके घर अछूत आते और रहते थे, लेकिन यह तो देश था। यहाँ अछूत परिवारके

१६

बा की दिनचर्या

अिस अध्यायमे मैं यह बता देना चाहती हूँ कि आम तौर पर बा अपना दिन किस तरह बिताती थीं। अिसमे बापूकी सेवा-टहल सूरजकी तरह मुख्य थी, बाकीका सारा वक्त 'बा'के नाते और आश्रमवासिनीके नाते अपने धर्मका पालन करनेमें बीतता था। किसीको पता भी नहीं चलता था कि वे अपने निजी कामोंसे कब निबट लेती थीं।

बा हमेशा सुबह ४ बजेकी प्रार्थनाके समय अुठनेका आग्रह रखतीं। प्रार्थनाके बाद बापूजीको आधा-पौना घंटा सो जानेकी आदत है। लेकिन बा अुठनेके बाद फिर सोती नहीं थीं। वे तो बापूजीके फिरसे जागनेके पहले अुनके लिअे गरम पानी और शहद या जो भी कुछ बापू सवेरे लेनेवाले हों, सो तैयार करने या करानेमे लग जातीं। 'करानेमे' अिस लिअे लिख रही हूँ कि बापूके अैसे निजी कामोंको करनेकी बहुतोंकी अिच्छा रहती और अिसके लिअे कभी-कभी आपसमे होड़ाहोड़ी भी होती। बा अैसे अुम्मीदवारोंको बापूजीकी सेवाके काम बाँट देतीं। लेकिन काम किसीको भी क्यों न सौंपा हो, बा सामने खड़ी रहकर देखतीं कि काम ठीक हो रहा है या नहीं? बा का अिस तरह खड़ा रहना कुछ मतलब रखता था। श्री० कुसुमबहन देसाअीने अिसका अेक अुदाहरण दिया है। अेक बार अलीगढमे बापूजीका दूध छाननेकी सेवा अेक भाअीने बहुत हठ करके बा से माँग ली। दूध छाना और बापूजीको दिया। बापूजीको दूधमे अेक बाल दिखाअी पड़ा। बा से पूछने पर अुन्होंने सारी बात बता दी। बापूजीने कहा: 'नतीजा देखा न? दूधमे बाल रह गया।' अुस दिन बापूने दूध नहीं लिया। बा को बहुत क्लेश रहा। अुन्होंने कहा: "किसीको करने न दूँ, तो अुसका दिल दुखता है और करने देती हूँ, तो काम ठीक नहीं हो पाता। दिन-रात अेक-सी सिरपच्ची करना, और पेटमे देखो तो अेक जूनकी भी जमा नहीं।"

अिसलिअे आम तौर पर बा ने रिवाज यह रखा था कि काम दूसरोंने किया हो, तो भी बरतन भलीभाँति साफ हुअे हैं या नहीं, चीज़ अच्छी तरह

बनी है या नहीं, सो वे खुद ही देख लेती थीं और खुद ही बापूजीके पास ले जाती थीं। और, चीज़ खानेकी हो या पीनेकी, जब तक बापू अुसे खा-पी न लें, बा अुनके पास ही बैठी रहतीं। अिसके बाद वे यह देख लेतीं कि बरतन ठीकसे साफ़ होकर जगह पर रखे गये हैं या नहीं। कभी किसी लड़कीने बरतन मले हों और वे अच्छी तरह साफ़ न हुअे हों, तो बा खुद अुन्हें दुबारा साफ़ कर लेतीं। बरतनोंको हमेशा चमकीले रखनेकी बा को आदत ही थी।

बापू सवेरे कोअी ७ बजे घूमने निकलते हैं। अुस समय बा अपने स्नान वग़ैरा कामोंसे निपट लेतीं और पूजा-पाठमें बैठतीं। घीके दीये और अगरबत्तीकी धूपके साथ क़रीब अेक घण्टा गीताजीका और तुलसी-रामायणका पाठ करतीं। अिसके बाद बा रसोअीघरमें पहुँच जातीं। रसोअीघरमें कहाँ क्या हो रहा है, अिसे वे तुरंत अेक निगाह देख लेतीं और किसीको कुछ सुझाना होता तो सुझातीं। रसोअीघरमें कोअी चीज़ खुली पड़ी हो, फ़ाज़िल साग-सब्ज़ी, फ़ाज़िल फल वग़ैरा बिगड़नेकी हालतमें हों, तो बा अुन्हें फ़ौरन ही देख लेतीं। वे बहुत स्पष्टवक्ता थीं, अिसलिअे जिसको जो कहना होता, साफ़ साफ़ कह देतीं। मुँहसे हाँ-हाँ कहने और अपने अंगीकृत कामको भलीभाँति न करनेवालोंके लिअे बा की बड़ी नाराज़ी रहा करती थी। अिसलिअे नये आये हुअे लोगोंको कभी-कभी बा की बातका बुरा भी लग जाता। बा चाहती थीं कि तमाम चीज़ें और कपड़े वग़ैरा सभी कुछ ठीकसे जमाकर अपनी जगह रखे जाने चाहियें। कहीं कुछ बेठिकाने देखतीं, तो बा खुद अुसे सहेजने लग जातीं। बा की किसी बातसे किसीके नाराज़ होनेकी खबर बापू तक पहुँचती, तो वे कहते : "अगर बा के पास थोड़ा-बहुत कड़ुआ नीम है, तो मीठी शकरकी तो अिफ़रात ही है।"

जैसा कि अभी कहा है, बापूजीका भोजन तो बा खुद ही तैयार करतीं या किसी औरने करनेका ज़िम्मा लिया हो, तो खुद वहाँ खड़ी रहतीं। बापूके लिअे बनाअी गअी खस्ता रोटी अेक गोल डिब्बेमें रखी जाती हैं। सभी रोटियाँ डिब्बेमें बराबर जमाकर रखी गअी हैं या नहीं, सभी अेकसे आकारकी हैं या नहीं, कोअी मोटी-पतली तो नहीं है,

किसीकी किनार तो फटी नहीं है, अधिक सिकनेसे किसी पर दाग तो नहीं पड गया है, या कोअी कच्ची तो नहीं रह गअी है, अुसमें नमक और सोडा ठीक पड़ा है या नहीं, सो सब बा खुद ही देख लेतीं। बा स्वयं रसोअी बनानेके काममें बहुत ही निपुण थीं। अिसलिअे जब वे खुद 'खाखरे' (खस्ता रोटी) बनातीं, तब तो वे आदर्श 'खाखरे' बनते और बापूको भी पता चल जाता कि आज 'खाखरे' बा ने बनाये हैं।

भोजनकी घण्टी बजती और सब भोजनालयमें आ पहुँचते। तब बापूजीको और खास मेहमानोंको परोसकर बा बापूजीके पास ही खाने बैठ जातीं। अुस वक्त भी अुनकी अेक निगाह तो बापूकी तरफ ही रहती। बापूके पास अेक मक्खी भी आते देखतीं, तो अुनका दायाँ हाथ पखेको सँभाल ही लेता। खानेके बाद बा बापूके साथ भोजनालयसे अुनके कमरेमें आतीं और जब बापू अखबार पढने लगते, तो वे अुनके तलवोंमें घी मलतीं। जब बापूकी आँख लग जाती, तो बा अुठकर अपने कमरेमें जातीं और जरा देर लेटतीं। १५–२० मिनटके बाद अुठकर मुँह धोतीं और खुद अखबार पढतीं।

यों बा की गिनती कम पढे-लिखोंमें और राजकाजको न जानने-वालोंमें की जायगी। लेकिन बा अखबारोंके जरिये और बातचीतके मारफत देशकी मौजूदा हालतसे खूब परिचित रहती थीं। गुजरात-काठियावाडकी खबरें जाननेके लिअे वे बिलानागा 'वन्देमातरम्' और 'गुजरात–समाचार' पढा करती थीं। हर हफ्ते 'हरिजनबन्धु' आता। बा अुसे भी रोज थोड़ा-थोड़ा करके शुरूसे अखीर तक पढ जातीं, ताकि जुदा-जुदा कार्यक्रमोंके बारेमें अुन्हें बापूजीके विचार जाननेको मिल सकें। अखबार पढकर दुनियाकी मुसीबतों व तकलीफोंसे बा को बहुत दुःख होता। अेक बार अिस लडाअीके बारेमें बा ने कहा: "कौन जाने, यह लडाअी तो दुनियाको तबाह करके ही बन्द होगी?" बंगालके भीषण अकालकी खबरें पढकर बा ने आगाखान महलसे लिखे पत्रमें लिखा: "बंगालके समाचार सुनकर तो दिल फटता है। वहाँ तो आसमान फट पड़ा है। न जाने, अीश्वर क्या कर रहा है?"

बचपनमें तो बा पढ़ न सकीं, लेकिन बादमें अुन्हें पढ़नेका शौक़ हो गया था। हर दिन अेक-आध घंटा तो वे किसी-न-किसीके पास बैठकर कुछ-न-कुछ पढ़ा करतीं। राष्ट्रभाषाके नाते हिन्दुस्तानीकी अच्छी जानकारी होनी चाहिये, अिस खयालसे वे कअी दफ़ा हिन्दीका अभ्यास करतीं। या कभी किसीकी मददसे तुलसीरामायणका अथवा गीताजीका अभ्यास करतीं। गीताजीके श्लोकोंको सही-सही पढ़ने और अुन्हें ज़बानी याद करनेकी वे बराबर कोशिश करती रहतीं। अखीर-अखीरमें अुन्होंने आगाखान महलमें बापूसे गीताजीके श्लोकोंका शुद्ध अुच्चारण सीखना शुरू किया था। जब ७५ सालकी बा ७५ सालके बापूके सामने बैठकर अेक निष्ठावान् शिष्यके-से अुत्साहसे गीता सीखती होंगी, तो वह दृश्य कितना अद्‌भुत रहता होगा? बा जो भी कुछ सीखना शुरू करतीं, बहुत श्रद्धाके साथ सीखतीं, और अितनी अुम्र हो जानेके बाद भी विनम्र विद्यार्थीकी तरह सीखने बैठतीं। अुन्हें कुछ लिखनेको दिया जाता, तो अुसे भी वे छोटे विद्यार्थी जिस तरह अपना सबक़ तैयार करके लाते हैं, अुसी तरह दूसरे दिन लिखकर लातीं और कितनी ही गलतियां क्यों न हुअी हों, अुन्हें सुधार कर दुबारा लिखनेमें वे अुकताती नहीं थीं।

अखबार और पढ़ाअीके कामसे फ़ुरसत पाकर वे कातने बैठतीं। हररोज़ ४०० से ५०० तार बराबर काततीं। कताअी अुनकी तभी रुकती थी, जब वे बीमारीकी वजहसे बिछौनेमें पड़ी हों। बीमारीसे अुठने पर कमज़ोर रहने पर भी वे कताअी शुरू कर देतीं। आश्रममें प्रार्थनाके बाद रोज़ किसने कितना सूत काता, अिसका लेखा लिखा जाता है। बा अुसमें ज़्यादा सूत कातनेवालोंमें होतीं।

अितना करते-करते चारका समय हो जाता और बा फिर रसोअीमें पहुँच जातीं। वहाँ बापूका खाना तैयार करतीं या करातीं और दूसरे कामोंको भी अेक निगाह देख जातीं। ५ बजे बापूजी खाने बैठते, तब अुनके पास बैठतीं। कअी सालोंसे बा ने शामका खाना छोड़ रखा था। सिर्फ़ कॉफी पी लेती थीं और पिछले कोअी चार सालोंसे तो कॉफी भी छोड़ दी थी। दूधमें तुलसी और काली मिर्च डालकर अुसे थोड़ा अुबालतीं और पी लेतीं।

शामको बापू घूमने जाते तब बा आश्रममे कोअी बीमार होता तो अुसके पास जाकर बैठतीं। और फिर दूसरी बहनोंके साथ वे भी घूमने निकलतीं और आश्रमसे कुछ दूर जाने पर जब बापू सामनेसे आते मिलते, तो अुनके साथ लौट आतीं।

घूमकर आनेके बाद शामकी प्रार्थना होती। अुसमे बा तो रहतीं ही। शामकी प्रार्थनामे रामायण गाअी जाती, और अुसमे भी बा बराबर शामिल होतीं।

प्रार्थनाके बाद कुछ देर तक बा सब बहनोंके साथ बातचीत करती और फिर अपने और बापूके सोनेकी तैयारीमे लग जातीं। सोनेसे पहले बापूके सिरमे तेल मलनेका काम क़रीब करीब अखीर तक वे ही नियमित रीतिसे करती रहीं। सुबह फिर ४ बजे अुठतीं और वही चक्र बराबर चलता रहता।

अिस तरह बा की दिनचर्यामे बापूकी परिचर्या अेक खास अंग थी। अिसके बारेमे मीराबहन लिखती है:

"मैंने भी कअी सालों तक बापूकी सेवा-चाकरी की है। अिस बीच मुझे बा के अद्‌भुत गुणोंका दर्शन हुआ है। अक्सर यह होता कि बापूकी निजी जरूरतोंकी खबरदारी रखनेका काम सिर्फ हम दोनों पर आ पड़ता। बापूके तूफानी दौरोंमे तो बहुतेरी अड़चनें और कठिनाअियाँ रहतीं, लेकिन बा अचूक नियमिततासे, बिना थके, अिस कामको बड़ी खूबीके साथ किया करतीं। बापूके लिअे खाना तैयार करने और अुनकी मालिश करनेका काम तो वे अपने ही हाथमे रखतीं। अुसमे जहाँ-तहाँ थोडी मदद मुझसे भी ले लेतीं। कपडे धोने और सामान बाँधने-खोलनेका काम मेरे जिम्मे था। लेकिन अुसमे भी बा की पैनी नजर बराबर मेरे काम पर बनी ही रहती। बा मानो कभी थकती ही नहीं थीं। सभाओं और मुलाकातोंमे बापूको रात कितनी ही देर क्यों न हो जाय, बा अुनके सिरमे तेल मलने और अुनके थके-माँदे शरीरको दबानेके लिअे अुनकी राह देखती बैठी ही रहतीं। और फिर सुबह चार बजे प्रार्थनामे हाजिर रहकर पुनः बापूकी सेवामे लग जातीं। वे गैरजरूरी

बातें करके बापूका वक़्त कभी खराब नहीं करतीं। बापूके आसपासके सभी लोगोंमें वे बापूको कम-से-कम तकलीफ़ देतीं और अुनकी ज़्यादा-से-ज़्यादा सेवा करतीं।

"अन्त-अन्तमें जब वे बीमार रहने लगीं, तो बापूका काम खुद नहीं कर पाती थीं, लेकिन अुस पर निगरानी रखनेका अपना काम तो अुन्होंने ठेठ आखिरी घड़ी तक नहीं छोड़ा था। जब आगाखान महलमें अुनकी तबियत बड़ी तेज़ीके साथ खराब हो रही थी, वे अेक कमरेसे दूसरे कमरेमें चलकर जा भी नहीं सकती थीं, तब अुन्हें पहियोंवाली कुर्सीमें बैठाकर घुमाना पड़ता था। अेक दिन वे बरामदेमें अपने बिछौने पर लेटी-लेटी बापूको शामका भोजन करते देख रही थीं। अन्दर कमरेमें जानेका वक़्त हो चुका था। अिसलिअे वह पहियेदार कुर्सी लेकर मैं बा के पास पहुँची और मैंने कहा: 'बा चलिये, अन्दर जानेका वक़्त हो गया है।' बा ने जवाब दिया: 'ज़रा ठहरो, बापूजी खा चुकें तो चलें।' अिस तरह बीमारीके बिछौने पर पड़े-पड़े भी अुनका जी बापूजीकी सेवामें रहता था।"

बा के समान निष्ठावान् परिचारिकाकी कमी बापूको आजकल कितनी खटकती है, अुसका कुछ खयाल नीचेकी दो घटनाओंसे आ सकेगा।

बिलकुल अभी-अभीकी बात है। अेक दिन मैं बापूके पास बैठी थी। अुनका खाना रोज़ ठीक ११॥ बजे आता है, लेकिन अुस दिन ११॥। को आया। अिस पर खाना लानेवाली बहनसे बापूने कहा: "हमें यह समझ लेना है, कि बा हमेशा यहाँ मौजूद ही हैं। बा ठहरे हुअे वक़्तसे अेक मिनटकी भी देर करके खाना नहीं लाती थीं, और अगर किसी दूसरेको यह काम सौंपा हो और अेक मिनटकी भी देर हो जाय, तो वे 'धड़फड़' करने लग जातीं। फ़ौरन अुठकर रसोअीमें जातीं और वहाँ होहल्ला मचा देतीं। आगाखान महलमें वे बीमार थीं और अुनसे कुछ हो नहीं पाता था, तब भी वे घड़ीके काँटे पर नज़र रखतीं और वक़्त पर मेरा खाना न आता, तो शोर मचा देतीं। मैं कहता कि यहाँ कौन वक़्तकी पाबन्दी करनी है? थोड़ी देर भी हो गअी, तो क्या हुआ? तो बा फ़ौरन ही जवाब देतीं — 'लेकिन मैं जानती हूँ न कि आप

यहाँ भी अपने वक्तका पूरा खयाल रखते है, तो फिर थोडी भी देर क्यों होनी चाहिये ? ’ ”

अिधर-अिधर दोपहरके भोजनके बाद बापू पैरोंमे घीकी मालिश करवानेसे अिनकार करते थे। सभी लडकियाँ घी मलनेका आग्रह करने लगीं, तब बहुत ग़मगीन आवाजमे बापूने कहा : “ मुझे घी मलवाना था, तो बा मर क्यो गअीं ? ”

बापूकी टहल करनेवाले तो बहुत है। अगरचे सबोंके आग्रह पर बापूने फिरसे घी मलवाना शुरू तो किया, लेकिन बा की-सी लगन और भावना दूसरे कहाँसे लावे ?

* * *

बा काफी नियमित रीतिसे अपनी डायरी लिखती थीं। अुनकी डायरीके कुछ नमूने नीचे दिये है।

१९३३की लडाअीके दिनोमे बा गाँवोंमे घूमती थी। अुस समयकी अुनकी डायरीसे :

सोजित्रा,

ता० २८–१–’३३

६ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। रावजीभाअीके घर गअी। सब बहनोंसे मिली। बातचीत। आराम। अखबार पढा। लिम्बासीके लिअे रवाना हुअी, वहाँके भाअी-बहनोंसे मिलकर अुनके सुख-दुःखकी बाते सुनीं। वापस लौटी। मलातज आकर सो गअी।

मलातज,

२९–१–’३३

६।।। प्रार्थना। नित्यकर्म। पत्रिका सुनी। बापूको पत्र लिखा। खाँधली और त्राणजा जाकर वापस आअी।

मलातज,

३०–१–’३३

६।। प्रार्थना। नित्यकर्म। कन्याशाला और अन्त्यजोंकी बस्तीमे जाकर हरिजनोंसे मिल आअी। वे धन्धा वग़ैरा क्या करते है, सो सब देखा। बादमे प्रार्थना की।

४–२–'३३

५ बजे अुठी । प्रार्थना । नित्यकर्म । ८ बजे परिषद्‌का प्रोग्राम था । अुसमें ७ बहनें पकड़ी गअीं । बादमें थाने पर ले जाअी गअीं । नाम लिख लिये । फिर भोजनके लिअे पूछा । गाँवसे खाना आया । भोजन किया । स्टेशनके लिअे रवाना हुअीं । १२ बजे कठाणा स्टेशन पर अुतरीं । फ़ौजदारने आकर पानी वग़ैराके लिअे पूछा । बादमें स्टेशन पर ही बैठाया । नाम लिखे और वारण्ट तैयार किये । फिर तीन बजे गाड़ीमें बैठीं । बोरसद जाते हुअे रास स्टेशन पर भाअी-बहन मिलने आये थे । ५ बजे बोरसद पहुँची । मुक़दमा चलाकर 'लॉक-अप' में लाये । मजिस्ट्रेटसे मिली । प्रार्थना ।

साबरमती जेलकी डायरीसे :

१६–२–'३३

जिस दिन मैं यहाँ आअी, मीराबहन अुसी दिन सवेरे आ गअी थीं, अिससे आनन्द हुआ । हम दोनों साथ रहती हैं । मैं और मीराबहन ठीक ४ की आवाज़ पर प्रार्थना करती हैं । अुसके बाद सो जाती हूँ । फिर नित्यकर्म । नहाना-धोना वग़ैरा । कॉफी पीना । १०–१०॥को सुपरिण्टेण्डेण्ट रोज़ आता है । सुबह डॉक्टर आता है । ११ बजे भोजन । १ घण्टा आराम । २ से ४॥ तक हिन्दी लिखना-पढ़ना और चरखा चलाना । ५॥ को भोजन । फिर घूमना । ७ बजे प्रार्थना । पढ़ना, बातचीत । और ९ बजे सो जाना ।

२१–२–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढ़ती हूँ, अनासक्तियोग । फिर थोड़ी देर सो जाती हूँ । नित्यकर्म । ६॥ बजे नहाने जाती हूँ । लौटकर कॉफी पीती हूँ, फिर पढ़ती हूँ । 'जामे जमशेद' पढ़ती हूँ । ११॥ भोजन । आराम । २ से ५ पढ़ना । कातना । भोजन । तार हमेशा ३०० काते ।

१६–४–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढ़ी । नित्यकर्म । ४०० तार काते । अखबार पढ़ा । ११॥ भोजन । काता । पढ़ा लिखा । मैं यहाँ भी अेकादशी

करती हूँ । आराम । फिर हिन्दी और गुजराती लिखना, पढ़ना । कॉफी पी । बातें कीं । यहाँ कोअी नयी बात नहीं है । शामको प्रार्थनाके बाद भागवत सुनती हूँ । आजकल मीराबहन चन्द्रमा, पृथ्वी, सूर्य, सबके बारेमें सिखाती है ।

३–५–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढ़ी । नित्यकर्म । कॉफी पी । अखबार पढ़ा । भोजन । कल अखबारसे पता चला कि बापूजी हरिजनोंके लिअे दूसरा अुपवास करनेवाले हैं । ८–५–'३३को सोमवारके दिनसे शुरू होगा । गांधीजीका अपने अनुयायियों परसे विश्वास अुठ गया है । बापूजीके पास जानेकी बहुत चिन्ता बनी रहती है । बापूजीका यह सवाल, यह तपश्चर्या, बहुत कठिन है ।

८–५–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढ़ी । आजसे बापूजीका महायज्ञ शुरू होता है । हमने यहाँ प्रार्थना की थी । आशा रखी थी कि मुझे बापूजीके पास ले जायँगे, लेकिन आज तीसरा अुपवास हो चुका है, मुझे बुलाया नहीं । आजकल तो अखबारकी राह देखती हूँ कि अुसमें क्या होगा ? 'हरिजन' पढ़ा । मन तो बेचैनका बेचैन ही रहता है ।

१०–५–'३३

कल रामदास मिलने आया था । अिस बार मेरे नसीब फूट गये हैं । नहीं तो मुझे क्यों न ले जाते ? क्या करूँ ? बहुत चिन्ता होती है । अिस बार भी मैं दूर हूँ । मैंने बापूजीको तार किया कि मुझे आपके पास आना है, यहाँ मेरा जी बहुत घबराता है । अुनका तार आया, धीरज रखो । फिर दूसरा तार आया कि हम सरकारसे अिजाजत नहीं माँग सकते, शान्ति रखो । फिर तो मैं कातती थी, प्रार्थना करती थी और कुछ अच्छा ही नहीं लगता था ।

बा को बापूजीके पास ले जानेके बादकी डायरीसे :—

१६–६–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीतापाठ होता है । फिर नित्यकर्म । ५॥ बजे बापूको खाना दिया । दूध वगैरा । ६॥ के बाद में नहाने जाती हूँ ।

लौटकर तुलसीको पानी सींचा । लालजीके दर्शन करके कॉफी पी । लाल दवाके कुल्ले किये । ९ बजे बापूजीको खाना दिया । फिर मिट्टीकी पट्टी बाँधी । ११ बजे भोजन । १२ बजे बापूजीको खाना दिया । फिर आराम । पैरोंमें घी मला । काता — तार २०० ।

९–७–'३२

४ बजे प्रार्थना । गीताजी । फिर नित्यकर्म । बापूको खाना दिया। यहाँ और क्या काम है? बापूजीके सिवाय दूसरा कोअी नहीं है। बालकृष्ण बापूजीका खूब काम करता है। और प्रभावती तो अुनके पाससे हटती ही नहीं । केशू भी खड़ा रहता है। फिर मैं क्या करूँ ? बापूजीके पास जाती हूँ और लौट आती हूँ । अुन सबके बीच बैठना मुझे अच्छा नहीं लगता । काता ।

१७

कर्मयोगी बा

गीताजीमें कहा है कि **योगः कर्मसु कौशलम्** । अिस अर्थमें बा सचमुच कर्मयोगी थीं। अेक मिनट भी बेकार बैठे रहना अुनके लिअे अस्वाभाविक हो गया था । तिस पर खुद जो काम करतीं, अुसे खूब कुशलतासे और व्यवस्थित रीतिसे करती थीं । अगर यह कहें कि व्यवस्थाकी तो वे मूर्ति ही थीं, तो गलत न होगा । कोअी चीज़ अपनी जगह पर न हो, तो बा की निगाह अुस पर गये बिना न रहती । "यह चीज़ यहाँ क्यों पड़ी है ? यहाँ कोअी झाड़ता-बुहारता नहीं क्या ?" वगैरा सवाल अुनके मुँहसे निकले बिना रहते ही नहीं, और वे खुद ही सारी चीज़ोंको क़रीनेसे जमाने लग जातीं । जब बापूकी कुटियामें जातीं, तो वहाँ भी अुनकी नज़र बापूके बरतनों, खड़ाअुँ, चप्पल, घड़ी, कपड़े, वगैरा पर गये बिना न रहती । घड़ी और चप्पलको पोंछकर अुनकी जगह रख देतीं। बरतन बिना मले पड़े रह गये हों, तो खुद जाकर माँज लातीं । बा की अिस पैनी दृष्टिके कारण अुनके आसपासवालोंको बहुत चौकन्ना रहना पड़ता।

आश्रमवासियोंमें भी किसीने कपडे ठीकसे न पहने हों, बाल ठीकसे न सँवारे हों, तो बा सहज भावसे कह अुठतीं : "कपडे ठीकसे क्यों नहीं पहने? यह क्या जैसे-तैसे — लथर-पथर — लपेट लिया है? बाल क्यों नही सँवारे?" वगैरा। बा खुद तो व्यवस्थित थीं ही, लेकिन दूसरोंसे भी वे अुतनी ही अुम्मीद रखती थीं। अिस वजहसे जब बा के लिअे रोटी या साग बनाना होता, तो बनानेवालेको खूब सावधान रहना पडता। लड़कियाँ तो अिस कारण बा से डरा भी करतीं। बा ज़्यादा तो कुछ कहती नहीं थीं, मगर टीकाका अेकाध शब्द जरूर कह दिया करतीं।

अिस अुम्रमे भी बा मे आलस्यका नाम नहीं था। बा को अल्साकर सोते तो किसीने शायद ही कभी देखा हो। अुनका अुद्यम आजकलके नौजवानोंको भी शरमानेवाला था। कभी रसोअीमे, तो कभी साग काटनेमे, और कभी कातनेमे, यों अेकके बाद अेक अुनका काम चलता ही रहता।

बा के लिअे पाखानेका जुदा बन्दोबस्त कर देनेका सबका बहुत आग्रह होने पर भी गरमी हो, सरदी हो या बारिश हो, वे हमेशा सार्वजनिक पाखानेका ही अुपयोग करतीं। रातका 'पॉट' भी खुद ही साफ कर लिया करतीं। बा के कमरेमे अुनके साथ हमेशा दो-तीन लडकियाँ तो होतीं ही, लेकिन बा अपना थोडा-सा भी काम अुन लडकियोंसे न करवातीं। अुल्टे, कभी किसी लडकीको देर हो जाती, तो खुद ही कमरा साफ करने लग जातीं। सुबह अुठकर दतौनके लिअे गरम पानी भी खुद रसोअीघरमे जाकर ले आतीं। दतौनको अपने हाथों ही कूट भी लेतीं। पिछले ५-६ सालसे तो बा की तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। बापू रोज बा से कहते : "तेरी अितनी सारी लडकियाँ है, फिर तू क्यों अितनी दौड़-धूप करती है?" जब बीमार होतीं, थोड़े दिनके लिअे बा दूसरोंसे काम ले लिया करतीं, लेकिन जरा अच्छा मालूम होते ही फिर खुद ही अुठकर करने लगतीं। जब वे देखतीं कि फलाँ आदमी सच्चे दिलसे काम करनेको तैयार है, तो अुसे कभी-कदास कोअी काम सौंपतीं, और वह काम भी अैसा होता कि जिसे वे खुद न कर पातीं।

बा बहुत ही स्पष्टवक्ता थीं। नये आनेवालोंको कभी-कभी अिससे बुरा लग जाता। लेकिन कुछ दिनोंके अन्दर बा के स्वभावको जान लेनेके

बाद अुनकी भाषामें मिठास मालूम होने लगती। बापूजीने कअी दफ़ा कहा है: "मेरे और बा के निकट सम्पर्कमें आनेवाले लोगोंमें अैसे लोगोंकी तादाद ही ज़्यादा है, कि जिन्हें जितनी श्रद्धा मुझ पर है, अुससे कअी गुनी ज़्यादा श्रद्धा बा पर है।" एक दिन घनश्यामदासजी बिड़लाने मेरे पिताजीसे विनोदपूर्वक कहा: "आपके आश्रममें सभी थोड़े-बहुत 'चक्रम' (खब्ती) तो हैं ही।"

मेरे पिताजीने पूछा: "क्या बापू भी?"

जवाबमें अुन्होंने कहा: "हाँ, हाँ, वे तो और सबसे बड़े। साबरमती आश्रमका--तो मुझे बहुत तजरबा नहीं है, लेकिन सेवाग्राममें मुझे तो अेक बा और दूसरी दुर्गाबहनको छोड़कर और कोअी समझदार आदमी नज़र नहीं आता!"

बा को अपने नाते-रिश्तेदारों और बेटों-पोतोंके लिअे सहज ही खूब प्रेम था। बा ने तो अपना जीवन बापूको, यानी आश्रमको, सौंप दिया था, अिसलिअे आश्रम ही अुनका घर था। कभी किसी लड़केके घर जाती ज़रूर थीं, लेकिन कुछ ही दिनोंमें वापस आ जाती थीं। आश्रम तो सार्वजनिक पैसोंसे चलता है, अैसी हालतमें बच्चोंको कुछ दिनके लिअे अपने पास बुलाना हो, या किसीके बीमार होने पर अुसे अपने पास रखकर अिलाज कराना हो, तो क्या किया जाये? बापूने अिसका रास्ता निकाला। बच्चे आयें, रहें और आश्रममेंसे किसीकी सेवा लें, तो आश्रमको अुसका खर्च दे दिया करें। यह तो हम आसानीसे सोच सकते हैं कि बा को यह चीज़ कितनी दुखदायी मालूम हुअी होगी। दादा-दादीके घर तो बच्चे मौज मनाने जाते हैं। बच्चोंको देखकर दादी तो अुन पर वारी-वारी जाती है। वहाँ ये दादा तो बच्चोंको अेक जून मुफ़्त खिलाते भी नहीं। लेकिन धन्य है बा को! अुन्होंने बापूकी अिस बातको भी मंजूर किया। जब बच्चे जानेको होते, बा खुद ही आश्रमके व्यवस्थापकसे कह देतीं: "देखिये, अब ये लोग जानेवाले हैं। अिन पर जो भी खर्च हुआ हो, अुसका बिल अिन्हें दे दीजियेगा।"

सन् १९२८ की बात है। साबरमती आश्रमकी ज़मीनसे कुछ दूर अेक बँगला था। वहाँ चर्मालयका प्रयोग शुरू किया गया और अेक

आश्रमवासी भाओी कुछ मजदूरोंके साथ वहाँ रहने गये। अेक दिन सुबह खबर आयी कि लुटेरोंकी अेक टोलीने वहाँ रहनेवाले लोगोंको मारपीटकर अुनका सारा सामान लूट लिया है। गरीब मजदूरोंके घरमें धन-दौलत तो क्या होती? लेकिन अिस घटनासे वे घबरा गये और अुस जगह रहनेसे अिनकार करने लगे। बापूने कहा: "तो हम बिना मजदूरोंसे ही अपना काम चलावेंगे।" सभी मजदूरोंको रुखसत दे दी गअी। शामकी प्रार्थनामें बापूने अित्तला दे दी कि कलसे हम सबको गोशालाका काम करना है।

दूसरे दिन निश्चित समय पर दूसरोंके साथ बा भी गोशालामें पहुँचीं। गोशालाके व्यवस्थापक सोचमें पड़ गये कि बा को क्या काम दें? बा समझ गअीं। अुन्होंने सरलतासे कहा "काम क्यों नहीं बताते? गायोंके लिअे 'गवार' नहीं दलनी है?"

व्यवस्थापक बोले. "लेकिन बा आपको —"

बा: "नहीं, नहीं, लाओ।"

और बा जाकर चक्कीपर बैठ गअीं। फिर गाती-गाती 'गवार' दलने लगीं।

१९३१ में अेक बार बा वेड्छी आश्रम गअी थीं। आश्रमके व्यवस्थापकने सोचा था कि बा आकर खटिया पर बैठेंगी और सभाका वक्त होनेपर सभामें आयेंगी। अिसीलिअे खटिया तैयार रखी थी। आते ही बा से कहा गया: "बैठिये।" लेकिन बा क्यों बैठने लगीं? वे तो सीधी रसोअीघरमें गअीं और रसोअी बनानेमें मदद करने लगीं। व्यवस्थापककी पत्नी दंग रह गअीं. 'अितनी बड़ी बा हमें रसोअीमें मदद करती हैं?' अुन्होंने कहा: "बा, आप रहने दें, मैं अभी बना लूँगी।" लेकिन बा क्यों छोड़ने लगीं? वे बोलीं. "सौ हाथ, सुहावनी बात। अभी रसोअी बना डालेंगी और फिर अेक साथ सभामें चलेंगी।" और सचमुच अुन्होंने अैसा ही किया।

कित्नी दिन सुबह या शामको रसोअीके वक्त आम सभाका या अैसा कोअी दूसरा कार्यक्रम होता, तो बा रसोअीघरमें काम करनेवालोंसे कहतीं: "तुम सब जाओ। तुम छोटे हो। तुम्हें देखने और घूमनेकी अिच्छा रहती है। रसोअीका काम मैं कर डालूँगी।"

१९४१ में बा मरोली गअी थीं। वहाँसे वे सेवाग्राम आनेवाली थीं। सब अुनकी राह देख रहे थे। अेक बहन तो बा से मिलनेके लिअे ही

खास तौर पर ठहरी हुअी थीं। सुबहकी गाड़ी निकल गअी। शामको बम्बअीसे गाड़ी आनेवाली थी। अुन बहनने बापूसे पूछा : "बा अिस गाड़ीसे तो आयेंगी न?" बापूने कहा : "अगर बा अमीरोंकी — पैसेदारोंकी — होंगी, तो अिस गाड़ीसे आयेंगी और गरीबोंकी बा होंगी तो सूरत होकर 'तातीवेली' से सुबह आयेंगी।" और सचमुच बा दूसरे दिन सुबह 'तातीवेली' से ही आअीं और अपने आप यह साबित हो गया कि बा खुद गरीबोंकी बा हैं।

सेवाग्राममें अेक दिन अेक लड़की बीमार पड़ी। बीमार बालिकाकी सेवा-चाकरीके लिअे अेक बहन थीं, जो अुसका कमोड वग़ैरा साफ़ करतीं और अुसे दवा देतीं। अेक दिन परिचारिका बहन अुस लड़कीका कमोड साफ़ करना भूल गअीं। शाम हुअी। शामको बा ने कमोड देखा। बिना कुछ बोले-चाले वे खुद कमोड साफ़ कर लाअीं। अेक स्नेहमयी माता अपने छोटेसे परिवारमें खपे-खटे और यों खपने-खटनेमें ही अपनेको सुखी माने, सो तो हमें कभी घरोंमें देखनेको मिलता है। लेकिन बा अपने अिस बहुत बड़े परिवारमें भी अुतनी ही स्वाभाविकतासे खपतीं-खटतीं और अुसमेंसे आत्म-सुख अनुभव करती थीं। कर्मयोगी नामके लिअे अुनसे ज़्यादा लायक और कौन हो सकता है?

१८

हरिलालभाअी

बा और बापूके समूचे जीवनमें हरिलालभाअीकी कथा बहुत करुण है। हरिलालभाअी अिनके जेठे लड़के हैं। १९ सालकी अुमरमें जब बापू बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत गये थे, तब हरिलालभाअीको बहुत छोटा छोड़कर गये थे। बापू अक्सर कहते हैं कि हरिलालका जन्म (सन् १८८८) तब हुआ था, जब कि मैं मोहवश या मूर्च्छित दशामें था।* और जिस समयको मैंने हर तरह अपना मूर्च्छा-काल, वैभव-काल माना है, अुसका वह साक्षी है। अुसे अुन सब बातोंकी याद रह जाय, अितनी

* देखिये परिशिष्टमें बा के नाम बापूका पाँचवाँ पत्र।

अुमर अुस वक्त अुसकी थी। अिसलिअे अुस समयके मेरे जीवनके संस्कार अुस पर पड़े हैं। संस्कारोंकी यह बात चाहे जैसी हो, मगर हरिलालभाअीने बापूके खिलाफ जो बगावत की, अुसकी खास वजह तो, जैसा कि हरिलालभाअी कहते हैं, यह है कि बापूने खुद अुनको और अुनके भाअियोंको न सिर्फ ठीक-ठीक तालीम ही नहीं दी, बल्कि अपने पास रहनेवाले दूसरोंको जब वे पढ़ाअीके अच्छेसे-अच्छे मौके देते थे, तब अुन्होंने जान-बूझकर अपने निजके लड़कोंको शिक्षाके अवसरोंसे वंचित रखा। हरिलालभाअीका खयाल है कि अुनकी बगावतकी जड़में यह अन्याय है। बा ने अपनी सादी किन्तु दूरतक पैठनेवाली व्यावहारिक समझदारीसे बहुत सी अुलझनोंको सुलझानेमें बापूकी मदद की है, लेकिन हरिलालभाअीके मामलेमें बा विशेष कुछ न कर सकीं।

सन् १८९७ की जनवरीमें जब बापू बा के साथ डरबन पहुँचे, तो अुनके साथ तीन बालक थे। १० सालकी अुम्रका अेक भांजा, ९ सालके हरिलालभाअी और ५ सालके मणिलालभाअी। बापूने खुद ही लिखा है कि अिन्हें कहाँ पढ़ाना, यह अुनके सामने अेक बड़ा विकट सवाल था। गोरोंके लिअे चलनेवाले मदरसोंमें गांधीके लड़कोंके नाते बतौर मेहरबानीके या अपवादके अुन्हें भरती किया जा सकता था। लेकिन दूसरे सब हिन्दुस्तानी बालक जहाँ न पढ़ सकें, वहाँ अपने बालकोंको भेजना बापूको पसन्द न था। अीसाअी मिशनके मदरसोंमें भेजनेके लिअे बापू तैयार न थे। तिसपर, गुजरातीके जरिये तालीम दिलानेका आग्रह था और अिसका कोअी अिन्तजाम किसी मदरसेमें नहीं था। घर पर पढ़ानेवाला कोअी अच्छा गुजराती शिक्षक मिल नहीं सका। बापू खुद पढ़ानेकी कोशिश करते, लेकिन कामकी वजहसे अुसमें बहुत अनियमितता आ जाती। बापूका अपना अेक खयाल यह भी था कि बच्चोंको मा-बापसे अलग नहीं रहना चाहिये। क्योंकि जो तालीम अच्छे, व्यवस्थित घरमें बालक सहज पा जाते हैं, वह छात्रालयोंमें नहीं मिल सकती। अिसीलिअे वे बच्चोंको वापस हिन्दुस्तान भेजना भी नहीं चाहते थे। फिर भी भांजेको और हरिलालभाअीको कुछ महीनोंके लिअे देशके अलग-अलग छात्रावासोंमें रखकर देखा। लेकिन कुछ ही समयमें अुन्हें वापस बुला लेना पड़ा।

हरिलालभाओीको अिस बातका बड़ा दुःख था कि अुनकी पढ़ाओीका कोओी पक्का अिन्तज़ाम नहीं हो सका। यही नहीं, बल्कि बड़ेपनमें भी अिसके लिअे अुनके मनमें बापूके प्रति रोष बना रहा। "बापूने अच्छी शिक्षा पाओी है, तो वे हमको अच्छी शिक्षा क्यों नहीं दिलाते? बापू सेवाभावकी, सादगी और चारित्र्यके निर्माणकी बातें करते हैं, लेकिन जो शिक्षा अुन्हें मिली है, वह न मिली होती, तो देश-सेवाके जो काम वे आज कर सकते हैं, अुन्हें कर सकते क्या? हम भी पढ़-लिखकर अिसी तरह देश-सेवाके काम करेंगे और अपनी शक्तियोंका विकास करनेके बाद सादगी वगैरा भी रखेंगे। सादा और सेवापरायण जीवन बितानेके खिलाफ़ हमें कुछ कहना नहीं है। लेकिन अनपढ़ रहकर हम किस तरह सेवा कर सकेंगे, सो हमारी समझमें नहीं आता।" यह हरिलालभाओीकी तमाम दलीलोंका निचोड़ था।

मि० पोलाक और मि० कैलनबेकका भी कुछ हद तक अैसा खयाल था कि बापू अपने बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें लापरवाह रहते हैं। मि० पोलाक बहुत चुभती भाषामें बापूसे कहते कि आप अपने बालकोंको अच्छी अंग्रेज़ी तालीम न देकर अुनका भविष्य बिगाड़ रहे हैं। मि० कैलनबेकका यह खयाल था कि टॉल्स्टाय आश्रममें और फिनिक्स आश्रममें दूसरे शरारती, गन्दे और आवारा लड़कोंके साथ बापू जो अपने लड़कोंको शामिल होने देते हैं, अुसका अेक ही नतीजा होगा कि अुन्हें आवारा लड़कोंकी छूत लगेगी और वे बिगड़े बिना न रहेंगे। बा को भी अिस बातका असन्तोष बना रहता था कि बापू लड़कोंकी शिक्षाकी कोओी चिन्ता नहीं करते। हरअेक माताकी यह महत्त्वाकांक्षा होती ही है कि अुसके बच्चे बड़े बनें और नाम कमायें, फिर भले वे कैसे ही क्यों न हों? तिसपर ये तो खूब चालाक और तेजस्वी बालक थे। अिसलिअे बा की महत्त्वाकांक्षा सकारण थी। अिन सब फरियादोंके जवाबमें बापू शिक्षाके सिद्धान्तोंकी और जीवनके ध्येयकी अपनी फिलॉसफी पेश करते। मि० पोलाक और मि० कैलनबेक सिर हिलाते और बा मन मारकर बैठी रहतीं।

सन् १९०४ से बापूने अपने जीवनमें जो क्रान्तिकारी परिवर्तन करने शुरू किये थे, वे भी शायद हरिलालभाओीको अच्छे न लगे हों।

लेकिन अिस बातकी अुन्हें ज्यादा परवाह नहीं थी। वे अैसे न थे कि बापूके धन न कमाने पर नाराज हों। अुन्हें अपने पिताकी कमाअी पर जिन्दगी नहीं गुजारनी थी। अुनको तो पढ-लिखकर अपनी निजकी मेहनतसे ही बड़े बननेकी हवस थी। आखिर जब अुन्होंने देखा कि बापूके ही ऑफिसमें मुंशीका काम करनेवाले मि० रिच और मि० पोलाक बापूकी मदद और अुनके बढ़ावेसे अिंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टर बन आये हैं, और दूसरे दो हिन्दुस्तानी सज्जन मि० जोसफ रॉयपन और मि० गॉडफ्रे भी बापूकी प्रेरणासे विलायत गये और बैरिस्टर बनकर अपने धन्धेसे लग गये, और अिसके बाद सत्याग्रहकी लडाअीमें शामिल होनेवाले अेक पारसी नौजवान श्री सोहराबजी अडालजाको बापूने खुद बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत भेजा, अिस खयालसे कि बापूकी गैरहाजिरीमें सोहराबजी कौमकी खिदमतका काम सँभाल लेंगे,— दुर्भाग्यसे अिस होनहार नौजवानका असमयमें अवसान हो गया — तब तो हरिलालभाअीसे नहीं रहा गया। अुस वक्त अुनकी अुम्र कोअी २०-२१ सालकी थी। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अुन्होंने खासा हिस्सा लिया था और तीन दफा जेल भी हो आये थे। वे सोचा करते थे कि दूसरे जिन नौजवानोंको बापू बैरिस्टर बनने देते हैं, या बननेमें मदद करते हैं, अुनकी-सी लियाकत मुझमें नहीं है क्या? आखिर अुन्होंने बगावत करके पिताका साथ छोड़ने और देशमें आकर पढ़नेका निश्चय किया। बेशक बापू अपने विचारोंमें दृढ थे, लेकिन पुत्रको यह सब समझाकर अुसे अपने साथ न रख सके, अिसका दुःख, अिसकी बेचैनी, अुन्हें कुछ कम न थी। अिस अवसर पर बा की क्या दशा हुअी होगी, अिसकी तो कल्पना करना भी कठिन है। बापूके सामने तो अेक बड़े सिद्धान्तका सवाल था और पुत्रने अुनका जो त्याग कर दिया था, अुसके दुःखको सह लेनेमें सिद्धान्तपालनका आश्वासन भी अुनके पास तो था। लेकिन बा के पास क्या था? बा तो चाहती थीं कि पुत्रको प्रचलित शिक्षा मिले। लेकिन बापूके सिद्धान्तके कारण वे पुत्रके लिअे अैसी शिक्षाकी कोअी व्यवस्था कर नहीं सकती थीं। पति और पुत्रके बीच अुनका दिल कितना टूटा होगा? अुन्होंने कितनी बेचैनीका अनुभव किया होगा? कितनी आकुल-व्याकुल वे रही होंगी?

हरिलालभाअीने हिन्दुस्तान आकर पढ़ाअी शुरू की। बापूने अुनके खर्चका सारा अिन्तज़ाम कर दिया। लेकिन हरिलालभाअी पढ़ाअी पूरी नहीं कर सके। पढ़ाअीके दिनोंमें काकाकी और दूसरे नाते-रिश्तेदारोंकी सलाह और मददसे अुन्होंने अपनी शादी की और अेक दो बार मैट्रिकमें नापास होनेके बाद पढ़ाअी छोड़ दी और काम-धन्धेसे लग गये। धन्धेमें अुन्होंने अच्छी कामयाबी पाअी। फिनिक्स आश्रमके अपने साथियोंको लेकर बापूके हिन्दुस्तान आने पर कुछ दिनों बाद अुन्होंने बापूके नाम अेक पत्र लिखा। "मेरे पिताजी, मि० अेम० के० गांधी, बार-अेट्-लॉके नाम खुला पत्र", अिस नामसे, अेक छोटी पुस्तिकाके रूपमें, अुन्होंने अपना वह पत्र छपवाया था। मेरा खयाल है कि अखबारोंमें वह पत्र नहीं छपा। लेकिन १९१७में मेरे पिताजीके आश्रममें दाखिल होनेके बाद हरिलालभाअीसे ही अुन्हें वह पढ़नेको मिला था। अुस पत्रका सार देते हुअे वे अिस प्रकार लिखते हैं:

"अुस पत्रकी लिखावट और अुसकी दलीलोंको पढ़कर हरिलालभाअीकी शक्तियोंके बारेमें मेरा अूँचा खयाल बन गया था। बापूके हाथों बा के साथ, अपने छोटे भाअियोंके साथ और खुद अपने साथ जो अन्याय हुआ था, अुसका वर्णन करके हरिलालभाअीने अुसमें अपना रोष व्यक्त किया है और बापूसे यह अनुरोध किया है कि 'आपने मुझे न पढ़ाया, न सही; लेकिन अब मेरे भाअियोंको पढ़ाअिये।' व्रतोंके लिअे बापूके शौक़को देखकर आश्रममें जो भी कोअी व्रत लेता — अलोना खाता, अेक बार खाता या फलाहार करता — वह किस तरह बापूका लाड़ला बन जाता, अैसोंको बापू किस तरह अेकदम ऋषि, मुनि, तपस्वीकी बड़ी-बड़ी अुपाधियाँ दे डालते और किस तरह अुन तपस्वियोंको और सबोंकी टीका करनेका परवाना मिल जाता, अिसका अुन्होंने दिलचस्प वर्णन किया है। आश्रम-जीवनके नये जोशमें आकर कठोर व्रतों और नियमोंका पालन करनेवाले और फिर कुछ ही समयमें अुन तमाम व्रतों और नियमोंको व आश्रमको भी छोड़कर चले जानेवाले लोग जब बा के बारेमें टीका करते और कहते कि 'बा तो चीनी ज़्यादा खाती हैं' या 'बाको तो कॉफी पीनेके लिअे चाहिये,' तो यह सब सुनकर अुन्हें कितना गुस्सा आता, अिसका भी अुन्होंने वर्णन

किया है। दूसरे, मणिलालभाओी या रामदासभाओीको जब अुनकी पढ़ाओीके समयमें दूसरोंके काम सौंपे जाते और वे अुस पर अपना कुछ असन्तोष प्रकट करते, तो बापू अुनसे कहते : 'तुम . . . की चाकरी करते हो, यही तुम्हारी अुत्तम पढ़ाओी है। जो आदमी अपना फर्ज अदा करता है, वह हमेशा ही पढ़ता है। तुम कहते हो कि पढ़ाओी छोड़नी पड़ती है, लेकिन दरअसल अैसा है ही नहीं। तुम सेवा करते हुअे भी अभ्यास ही करते हो। अक्षरज्ञान तो बादमें भी हासिल किया जा सकता है, लेकिन सेवाका अवसर बादमें आवेगा ही, अिसका कोओी निश्चय नहीं।' अिस तरहकी बातें कहकर नाहक अुन्हें बड़प्पन देते हैं, और अुनको अपनी पढ़ाओी आगे नहीं बढ़ाने देते। कहावत मशहूर है कि 'वर मरो, कन्या मरो, मेरी गोदका भाड़ा भरो'। बस ठीक अिसी तरह आश्रममें सब कोओी बरतते हैं — 'कुछ भी हो, मगर बापूजीको खुश करो।' वगैरा बातें लिखकर आश्रममें अुनको जिस दम्भके दर्शन हुअे थे, अुसको भी अुन्होंने खोला है।

"यह समूचा पत्र मैंने करीब २५ साल पहले अेक बार पढ़ा था। अुसमेंसे महत्त्वकी जो बातें याद रह गओी हैं, सो तुझे लिखी हैं। वैसे पत्र तो बहुत लम्बा है। अपने अिस पत्रमें अुन्होंने यह भी बताया है कि पढ़ाओीके दिनोंमें ही किस तरह अुन्होंने अपनी शादी कर ली और फिर पढ़ नहीं पाये।"

बापू पर यह आक्षेप किया जाता है कि अुन्होंने अपने बालकोंकी पढ़ाओीका ठीक-ठीक प्रबन्ध नहीं किया। अिसके बारेमें बापूने अपनी सफाओी और अिस सम्बन्धकी अपनी विचारधाराका 'आत्मकथा' में विस्तारसे वर्णन किया है, अिसलिअे यहाँ अुसे दोहराना जरूरी नहीं। लेकिन बा की विचारधारा कुछ बापूके जैसी नहीं थी, अिसलिअे बा के खयालसे तो यह बड़े दुःखकी ही बात थी।

जिन दिनों हरिलालभाओीने वह पत्र लिखा था, अुन दिनों बहुत करके वे कलकत्तेमें किसी तरहका कोओी व्यापार करते थे। सन् १९२०में अुनकी धर्मपत्नी सौ० गुलाबबहन गुजर गओीं। अुस वक्त तक हरिलालभाओीका जीवन कुछ ठीक रहा। १९१९के रौलट सत्याग्रहमें सैनिकके नाते अुन्होंने अपना नाम भी दर्ज कराया था। लेकिन गुलाबबहनके गुजर जानेके बाद हरिलालभाओी गैर रास्ते चल पड़े। बापूने और बा ने अुनको ठीक रास्ते

लनेकी बहुत कोशिशें कीं, लेकिन कोअी नतीजा न निकला। वे मुसलमान बन गये। फिर लौटकर आर्यसमाजी बने। ये सारी बातें तो दुनिया जानती ही है। हरिलालभाअीके दो पुत्रों (जिनमेंसे अेक गुज़र गये हैं) और दो पुत्रियोंको बा ने अपने पास रखकर ही पाला-पोसा और अपने मनको मनाया। लेकिन जब अुन्होंने हरिलालभाअीके मुसलमान होनेकी बात सुनी, तबके अुनके दुःख और दर्दका वर्णन करना सम्भव नहीं। हरिलाल-भाअीको लिखे गये अुनके नीचे लिखे पत्रमें वह कुछ-कुछ व्यक्त हुआ है।

"चि० हरिलाल,

"मेरे सुननेमें आया है कि कुछ समय पहले मद्रासमें, आधी रातको, आम रास्ते पर, शराबके नशेमें अूधम मचानेके कारण पुलिसने तुझे पकड़ा था और दूसरे दिन मजिस्ट्रेटके सामने पेश किये जाने पर अुन्होंने तुझे १ रुपयेके जुर्मानेकी सज़ा की थी। तुझपर अुन्होंने यह जो अितनी दया दिखाअी, अिससे पता चलता है कि वे बहुत ही भले आदमी होने चाहियें। तुझे अैसी नाममात्रकी सज़ा देकर मजिस्ट्रेटोंने भी तेरे पिताके लिअे अपने सद्भावको प्रकट किया है। लेकिन अिस घटनाका ब्योरा सुननेके बाद मुझे तो बहुत ही दुःख होता रहा है। मैं नहीं जानती कि अुस रातको तू अकेला था, या तेरे किन्हीं मित्रोंके साथ था। लेकिन तेरा यह आचरण तो सचमुच बहुत ही अनुचित था।

"मुझे सूझ नहीं पड़ता कि मैं तुझसे क्या कहूँ? पिछले कअी सालोंसे मैं तुझे बराबर मनाती रही हूँ कि तू अपने जीवन पर अंकुश रख। लेकिन तू तो दिन-ब-दिन ज्यादा ही ज्यादा बिगड़ता जाता है। अब तो मेरे लिअे जीना भी कठिन हो पड़ा है। अपने माता-पिताको तू अुनके जीवनकी सन्ध्याके दिनोंमें कितना दुःख पहुँचा रहा है, अिसका तो तनिक विचार कर।

"तेरे बापूजी अिस बारेमें कभी किसीसे बातचीत नहीं करते, लेकिन तेरे चाल-चलनसे लगनेवाले आघातोंके कारण अुनका दिल चूर-चूर हुआ जाता है। हमारी भावनाको यों बार-बार दुखाकर तू अेक बड़ा पाप कर रहा है। हमारे घर पुत्रकी तरह पैदा होकर तू दुश्मनकी तरह बरत रहा है।

"मेरे सुननेमें आया है कि अिधर-अुधर तू अपने बापूकी बहुत टीका और निन्दा करने लगा है। तेरे समान बुद्धिशाली पुत्रको यह शोभा नहीं देता। अपने बापूजीकी निन्दा करके तू अपनी ही पोल खोलता है, अिसका तुझे जरा भी खयाल नहीं है। अुनके दिलमें तेरे लिअे सिवा प्रेमके और कुछ भी नहीं है। तू जानता है कि चारित्र्यकी शुद्धताको वे बहुत ही महत्त्व देते हैं। लेकिन तूने अुनकी अिस सलाहको तनिक भी नहीं माना। अितना होने पर भी अुन्होंने तो तुझे अपने साथ रखनेकी, तेरे खाने-पीने और पहनने-ओढ़नेकी जरूरतोंको पूरा करनेकी, और तेरी सार-सँभाल रखनेकी भी अपनी तैयारी बताअी है। लेकिन तू तो सदा कृतघ्न ही रहा है। अिस दुनियामें अुनके सिर कितनी बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं। वे अिससे अधिक कुछ तेरे लिअे कर नहीं सकते। वे तो सिर्फ अपनी अिस कमनसीबीके लिअे शोक ही कर सकते हैं। भगवानने अुनको प्रबल अिच्छाशक्ति दी है। अुनके जीवनकी अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिअे अीश्वर अुनको आवश्यक दीर्घायु दे। लेकिन मैं तो अेक कमजोर व बूढ़ी स्त्री हूँ, और तू जो मानसिक व्यथा पैदा करता है, अुसे सहनेमें असमर्थ हूँ। तेरे बापूजीको हररोज कअी लोगोंकी तरफसे तेरे चाल-चलनके बारेमें शिकायती चिट्ठियाँ मिलती हैं। बदनामीके ये सारे कड़वे घूँट अुन्हें पी जाने पड़ते हैं। लेकिन मेरे लिअे तो तूने जाने लायक अेक भी जगह नहीं रखी। शरमकी मारी मैं मित्रों या अजनबियोंके बीच घूम-फिर भी नहीं सकती। तेरे बापूजी तो तुझे हमेशा माफ करते ही रहते हैं। लेकिन परमात्मा तेरे आचरणको सहन नहीं करेगा।

"मद्रासमें तो तू किन्हीं अिज्जतदार और जाने-माने सज्जनके घर मेहमानकी तरह ठहरा था, लेकिन अुनके घरको छोड़कर तूने आम रास्ते पर अैसा दुर्व्यवहार करके अुनकी मेहमानदारीका दुरुपयोग किया है। अपने अिस व्यवहारसे तूने अुनको कितना नीचा दिखाया होगा? हररोज सुबह जागती हूँ, तब दिलमें यही धुक-धुकी बनी रहती है कि कहीं तेरे किसी नये दुराचरणकी कोअी ताजा खबर तो नहीं आयी है। मैं अक्सर सोचती हूँ कि तू कहाँ रहता होगा? कहाँ सोता होगा? क्या खाता होगा? शायद तू अभक्ष्य चीजें भी खाता होगा। अैसे-अैसे

अनेक विचारोंके कारण कअी-कअी रात मुझे नींद भी नहीं आती। कअी बार दिल होता है कि तुझसे मिलूँ, लेकिन मुझे तो यह भी पता नहीं कि तू कहाँ मिल सकता है। तू मेरी पहली कोखका लड़का है, और तेरी अुमर भी ५० सालकी हो गअी है। कहीं तू मेरी भी बेअिज्ज़ती न कर दे, अिस आशंकासे तेरे पास आनेमें भी मैं डरती हूँ।

"मैं नहीं जानती कि तूने अपने पैदाअिशी धर्मको क्यों बदला है। यह तेरा अपना निजी सवाल है। लेकिन मैं सुनती हूँ कि तू निर्दोष और अज्ञान लोगोंको अपनी राह चलनेकी सलाह दे रहा है। तुझे अपनी मर्यादाका भान कब होगा? धर्मके बारेमें तू जानता क्या है? तेरे बापूजीके नामकी वजहसे लोग तेरे कहने पर गलत रास्ते बहक जायेंगे। तू धर्म-प्रचार करनेके योग्य नहीं। तू तो पैसेका गुलाम बन गया है। जो लोग तुझे पैसा देते हैं, वे तुझे अच्छे लगते हैं। लेकिन तू तो शराबखोरीमें सारा पैसा बरबाद कर डालता है। और फिर सभाके मंच पर खड़ा होकर भाषण करता है। तू अपने आपका और अपनी आत्माका हनन कर रहा है। अगर तू अैसा ही करता रहा, तो वक़्त आयेगा, जब सभी तुझसे दूर भागेंगे। अिसलिअे मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि तू शान्तिके साथ विचार करके अपनी अिस मूर्खताको छोड़ दे। तेरा धर्म-परिवर्तन मुझे अच्छा नहीं लगा था, तो भी तूने अपने जीवनको सुधार लेनेके अपने निश्चयके बारेमें जो बयान दिया था, अुससे मैंने संतोष माना था और आगे तू समझदारीके साथ अपना जीवन बितायेगा, अिस विचारसे मन-ही-मन में खुश भी हुअी थी। लेकिन मेरी यह आशा भी धूलमें मिल गअी है। कुछ ही वक़्त पहले बम्बअीके तेरे कुछ पुराने मित्रों और शुभचिन्तकोंने तुझे पहलेसे भी ज्यादा बुरी हालतमें देखा था। तू जानता है कि तेरे आचरणसे तेरे पुत्रको कितना दुःख होता है। साथ ही, तेरे अिस विचित्र व्यवहारसे अुत्पन्न होनेवाले शोकके भारको ढोना तेरी लड़कियों और दामादोंके लिअे दिन-ब-दिन ज्यादा मुश्किल होता जा रहा है।"

हरिलालभाअीके धर्म-परिवर्तनमें और अुसके बादकी अुनकी हलचलोंमें दिलचस्पी लेनेवाले मुसलमान भाअियोंको सम्बोधन करके बा लिखती है:

"मैं आपके कामको समझ नहीं पाती। जो मेरे पुत्रकी मौजूदा हलचलोंमे अमली तौरपर हाथ बँटा रहे हैं, अुन्हींको सम्बोधन करके मैं यह कहती हूँ। मैं जानती हूँ, और मुझको यह खयाल करके खुशी होती है कि विचारशील मुस्लिम जनताके बहुत बड़े हिस्सेने और हमारे जिन्दगी भरके मुसलमान दोस्तोंने अिस सारी घटनाकी निन्दा की है। आज अुस महापुरुष, डॉक्टर अनसारीकी कमी बहुत ज्यादा खटकती है। वे होते, तो अुन्होंने मेरे लडकेको और आप लोगोंको भी बहुत नेक सलाह दी होती। लेकिन अुनके जैसे दूसरे कअी प्रतिष्ठित और भले लोग आपमे मौजूद है, और मैं अुम्मीद करती हूँ कि वे आपको मुनासिब सलाह देंगे ही। अिस तथाकथित धर्म-परिवर्तनसे मेरा लडका सुधरनेके बदले बुरी आदतोंका और ज्यादा शिकार बन गया है। आपको चाहिये कि आप अुसे अुसकी बदफेलीके लिअे अुलाहना दे और अुसे अच्छी राह पर लाये। कुछ लोग तो मेरे लडकेको मौलवीका अुपनाम देनेकी हद तक बढ गये है। क्या यह वाजिब है? क्या आपका मजहब शराबीको मौलवी कहनेकी अिजाजत देता है? मद्रासमे अुसकी अुस तूफानी हरकतके बाद भी कुछ मुसलमान अुसे स्टेशन पर विदाअीकी अिज्जत बख्शनेको अिकट्ठा हुअे थे।

"अिस तरह अुसको अितना ज्यादा बड़प्पन देनेमे आपको क्या खुशी होती है, सो मैं समझ नहीं पाती। अगर आप अुसको अपना सच्चा भाअी ही मानते होते, तो अुसके साथ आपका बरताव अैसा न होता। क्योंकि आपका बरताव अुसके लिअे जरा भी फायदेमन्द नहीं है। अगर आपका अिरादा दुनियामे हमारी हँसी करानेका ही हो, तो मुझे आपसे कुछ भी कहना नहीं है। आपसे जो बन पड़े, आप कर सकते है। लेकिन अेक घायल माँ की कमजोर आवाज आप पर अपना असर रखनेवाले किन्हीं भाअीके अन्तःकरणको जाग्रत करेगी और मुमकिन है कि वे आपको समझा सकेंगे। लेकिन जो बात मै अपने लडकेसे कह रही हूँ, अुसीको दोहराकर आपसे कहना मै अपना फर्ज समझती हूँ, और कहती हूँ, कि आप जो कुछ कर रहे है, वह खुदाकी नजरोंमे वाजिब नहीं ठहरता।"

बा को अपने लड़केके लिअे दर्द और हमदर्दी होना स्वाभाविक है। यों, हरिलालभाओी बा और बापूको छोड़कर चले तो गये, लेकिन बा के लिअे तो अुनके दिलमें भी बहुत ही अिज़्जत और मुहब्बत रही। वे यह सोचा करते कि राजरानी बननेके लिअे जनमी हुओी बा से बापू नाहक अितनी तकलीफ़ें अुठवाते हैं। बा से मिलनेके लिअे वे कभी-कभी आश्रममें भी आते थे। जब अुनकी हालत बहुत ही खराब हो गओी, तब शायद अुन्हें आश्रममें आते हिचक मालूम होने लगी। लेकिन अिससे बा के लिअे अुनका प्रेम कम कैसे होता? अेक बार वे बहुत ही बुरी — बेहाल — हालतमें बा से मिले थे। अुस समयकी अेक बहुत ही करुण घटना है, जिससे बा के प्रति अुनके भावका साफ़ पता चलता है।

अेक बार बा और बापू ट्रेनका सफ़र कर रहे थे। जब जबलपुर मेल कटनी स्टेशन पर पहुँचा, तो वहाँ दूसरे स्टेशनोंसे बिल्कुल अलग अेक जयनाद सुनाओी पड़ा: "माता कस्तूरबाकी जय!" बा को सहज ही अिससे थोड़ा अचंभा हुआ। अुन्होंने खिड़कीकी राह मुँह बाहर निकालकर देखा, तो सामने हरिलालभाओी खड़े थे।

अेक समयका तन्दुरुस्त शरीर बिल्कुल जर्जर हो गया था। अगले दाँत सब गिर पड़े थे। कपड़े बिल्कुल फटे हुअे थे। खिड़कीके पास आकर अुन्होंने अपनी जेबसे झटपट अेक मोसंबी निकाली और कहा: "बा, यह तुम्हारे लिअे लाया हूँ।"

अिससे पहले कि बा जवाबमें कुछ कहें, बापूजी खिड़कीके पास आ पहुँचे। अुन्होंने पूछा: "मेरे लिअे कुछ नहीं लाया?"

हरिलालभाओीने कहा: "नहीं, यह तो बा के लिअे ही लाया हूँ। आपसे तो सिर्फ़ यही कहना है कि बा के प्रतापसे ही आप अितने बड़े बने हैं।"

"अिसमें तो कोओी शक ही नहीं। लेकिन क्या तू अब हमारे साथ चलेगा?"

"नहीं, मैं तो बा से मिलने आया हूँ।"

बापू वापस अपनी जगह पर जाकर बैठ गये। माँ-बेटेकी बातचीत आगे चली:

"लो बा, यह मोसम्बी।"

"कहाँसे लाया?"

"कहींसे भी लाया होअूँ। तुम्हारे लिअे प्रेमपूर्वक लाया हूँ। भीख माँग कर लाया हूँ।"

बा ने मोसम्बी अपने हाथमे ले ली। लेकिन हरिलालभाअीको अिससे पूरा संतोष नहीं हुआ। अुन्होंने कहा:

"बा, यह मोसम्बी तुम्हीं को खानी है। तुम न खाओ तो मुझे वापस दे दो।"

"रह, रह, यह मोसम्बी मै ही खाअूँगी।" कुछ देर तक अुनको अेकटक निरखनेके बाद बा फिर बोलीं: "तू अपने हाल तो देख! जरा यह तो सोच कि तू किनका लडका है! चल, हमारे साथ चल।"

लेकिन अिस अखीरी बातको खतम करना तो वे खूब जानते थे। बोले:

"अिसकी तो बात ही न करो, बा! मै अब अिस हालतसे अुबर नहीं सकता।"

बा की आँखे छलछला आअी। गार्डने सीटी दी। ट्रेन चली। चलते-चलते हरिलालभाअीने फिर कहा: "बा, मोसम्बी तो तुम ही खाना, भला!"

जब गाडी जरा आगे बढी, तो बा को अचानक याद आअी कि अुन्होंने तो अुनको कुछ भी नहीं दिया। बोली: "अरे, बेचारेको फल-बल कुछ भी नहीं दिया! भूखों मरता होगा। देखूँ, अब भी कुछ दे सकूँ तो!"

डलियामेसे फल निकालकर बाहर देखा, तो ट्रेन प्लेटफॉर्म पार कर चुकी थी।

दूरसे अेक क्षीण अवाज सुनाअी पडी:

"माता कस्तूरबाकी जय!"

१९

सार्वजनिक जीवनमें

दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेके सिवा बा वहाँके सार्वजनिक कामोंमें शरीक हुआी हों, सो मालूम नहीं होता। लेकिन हिन्दुस्तानमें आनेके बाद बापूजीने जितने भी काम अुठाये, अुन सबमें बा ने अेक अनुभवी सैनिककी अदासे हाथ बँटाया है। बा को आम सभाओं, जुलूसों और अिस तरहके दिखावोंका बिलकुल ही शौक़ नहीं था। लेकिन जहाँ रचनात्मक काम करना होता, अपनी हाज़िरी और हमदर्दीसे लोगोंमें हिम्मत और 'हूँफ' (गरमी) भरनी होती, वहाँ वैसे कामोंके लिअे बा तैयार रही हैं। बापूने हिन्दुस्तान आने पर सत्याग्रहकी पहली लड़ाअी चम्पारनमें छेड़ी। कहा जा सकता है कि अुसमें सविनयभंग करनेके साथ ही फतह मिली। लेकिन बापूजीने महसूस किया कि चम्पारनमें ठीकसे काम करना हो, तो कुछ सेवकोंको देहातमें लोगोंके बीच जाकर बैठना चाहिये और सुख-दुःखमें अुनके भागीदार बनकर अुन्हें तैयार करना चाहिये। बिहार जैसे गरीब सूबेमें तनख्वाह लेकर काम करनेवाले सेवक पुसा ही नहीं सकते। और जैसे-तैसे सेवकोंसे काम नहीं चल सकता। गाँववालोंके पास पैसे तो नहीं थे, लेकिन जिस गाँवमें लोग रहनेके लिअे मकान और कच्चा अनाज देना मंजूर करें, वहाँ सेवकोंको बैठा देनेकी बात बापूने तय की। अिस कामके लिअे बापूने सार्वजनिक रूपसे स्वयंसेवकोंकी माँग पेश की। महाराष्ट्र और गुजरातसे संस्कारी और कुशल सेवक मिल गये। और, बापूने आश्रमसे भी कुछ भाअी-बहनोंको वहाँ बुलवा लिया। गुजरातसे गअी हुअी बहनोंको गुजरातीका ही थोड़ा-बहुत ज्ञान था। वे बालकोंको हिन्दी कैसे सिखातीं? बापूने बहनोंको समझाया कि अुन्हें बच्चोंको व्याकरण नहीं, बल्कि सभ्य जीवन सिखाना है; पढ़ना-लिखना सिखानेके बजाय सफ़ाअीके नियम सिखाने हैं। आये हुअे भाअी-बहन दो-दो या तीन-तीनकी टुकड़ियोंमें बाँट दिये गये, और अुन्हें गाँवोंमें बैठा दिया गया। भीतिहरवा नामके गाँवमें अेक छोटे मन्दिरके महन्तकी मददसे मन्दिरकी अपनी थोड़ी धर्मादा ज़मीन पर अेक

झोंपड़ा तैयार करके वहाँ अेक मदरसा खोला गया था। बा और दूसरे दो भाअी वहाँ रहने लगे।

अिस मदरसेमें कम-से-कम सहूलियतें थीं। अुस हिस्सेकी हवा भी अच्छी नहीं थी, और हिमालयकी तलहटीके ज़्यादा नजदीक होनेसे वहाँ जाड़ोंमें सर्दी भी बहुत पड़ती थी। रहनेके झोंपड़ोंकी छत पर सुबह धुनी रुअीकी तरह ओस फैली और लदी नजर आती थी। अिन शारीरिक कष्टों और अड़चनोंके सिवा वहाँ पास ही जिस निलहे गोरेकी कोठी थी, वह सब गोरोंमें बदतर माना जाता था। अिसी वजहसे बापूने बा को वहाँ रखा था। बा गाँवमें घूमने और दवा तक़सीम करनेका काम करती थीं, जो अिस निलहे गोरेसे सहा नहीं गया। अुसने अखबारोंमें बेजा शिकायतें छपवाअीं और लिखा: "मि० गांधी नंगे पैर घूमकर और कपड़ोंमें सादगी बरतकर लोगोंमें अन्धश्रद्धा पैदा करते हैं और अुससे फायदा अुठाना चाहते हैं, यही नहीं, बल्कि जब वे दूसरी राजनीतिक हलचलोंको चलानेके लिअे बाहर चले जाते हैं, तब श्रीमती गांधी यहाँ लोगोंको भड़कानेका अपने पतिका काम जारी रखती हैं।" वगैरा-वगैरा।

राजनीतिक मामलोंसे बिलकुल दूर रहनेवाली, केवल भूतदयासे प्रेरित होकर ही बीमारोंमें दवा बाँटनेका काम करनेवाली, देहातकी भाषासे बिलकुल अनजान, टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल सकनेवाली, अंग्रेजी अखबारोंमें किये गये आक्षेपोंके बारेमें जबतक कोअी अुन्हें गुजरातीमें समझा न दे, बिलकुल अनजान रहनेवाली, यानी बहुत थोड़ी पढ़ी-लिखी बा, अुस घमंडी निलहेको लोगोंमें अुत्तेजना फैलानेवाली मालूम हुअी!

अेक बार बा और अुनके साथी गाँवोंमें घूमने गये। जब लौटे, तो देखा कि जिस झोंपड़ेमें वे रहते थे और जिसमें मदरसा लगता था, वे दोनों जलकर खाक हो गये हैं। सिवा राखके वहाँ अुनका कोअी निशान तक नहीं रह गया था। अिसमें शक नहीं कि काममें रुकावट पैदा करनेकी ग़रजसे किसी द्वेषीने आग लगा दी होगी। बा का और अुनके साथी श्री सोमणका तो आग्रह था कि मदरसा अेक दिन भी बन्द न रहना

चाहिये। चुनाँचे सारी रात जागकर बाँस और घासका अेक झोंपड़ा खड़ा कर लिया। बादमें पक्का मकान बनाया गया, जो अभी क़ायम है।

भीतिहरवाके पास ही अेक छोटा-सा गाँव है। बापूजी घूमते-फिरते अुस गाँवमें पहुँचे। वहाँ कुछ बहनोंके कपड़े बहुत ही गन्दे नज़र आये। बापूने बा से कहा कि वे अुन बहनोंको कपड़े धोनेके लिअे समझावें। बा ने बहनोंसे बातचीत की। अुनमेंसे अेक बहन बा को अपनी झोंपड़ीमें ले गअी और बोली: "आप देखिये, यहाँ कोअी पेटी या आल्मारी नहीं है, जिसमें कपड़े धरे हों। बदन पर यह जो साड़ी पहने हूँ, यही अेक साड़ी मेरे पास है। अिसे मैं किस तरह धोअूँ? महात्माजीसे कहिये, वे कपड़े दिलवें, तो मैं रोज़ नहाने और रोज़ कपड़े बदलनेको तैयार हूँ।"

बा ने बापूसे सारी हक़ीकत कही। भारतमाताकी अिस हालतको देखकर बापूका दिल तड़प अुठा।

* * *

खेड़ा सत्याग्रह

अभी चम्पारनका काम चल ही रहा था कि अितनेमें खेड़ा ज़िलेमें सत्याग्रह शुरू हुआ। अुस वक़्त बा भी बापूके साथ खेड़ा ज़िलेके गाँवोंमें घूमती थीं। कभी बापूके साथ रहतीं और कभी अकेली भी घूमतीं।

खेड़ा ज़िलेके तोरणा गाँवमें मामल्तदारने अेकाअेक छापा मारकर तेअीस घरोंमें ज़ब्तियाँ कीं। ज़ब्तीमें अुन्होंने औरतोंके ज़ेवर, हण्डे, घड़े, देग, दुधार भैंसें वगैरा चीज़ें ज़ब्त कीं। बा को अिसका पता चला और फ़ौरन ही वे तोरणावालोंके दुःखमें अुनको ढाढ़स बँधानेके लिअे वहाँ दौड़ी गअीं। अुनके जानेसे लोगोंकी खुशीका पार न रहा, और औरतोंने तो सचमुच फूलोंकी वर्षा की।

वहाँ औरतोंकी सभामें बा ने लड़ाअीके मर्म और धर्मको समझाते हुअे अेक छोटा मगर पुरअसर भाषण किया:

"हमारे मर्दोंने सत्यके लिअे सरकारके साथ जो लड़ाअी ठानी है, अुसमें हमें अुनको अुत्साह दिलाना चाहिये। सरकारके दिये दुःखको सहना चाहिये। वह हमारा माल-असबाब अुठाने आवे, तो अुसे अुठा ले जाने

देना चाहिये। वह हमारी जमीनें छीन ले, तो छीन लेने देना चाहिये। लेकिन सरकारको लगानकी अेक पाअी भी देकर झूठे नहीं बनना चाहिये। क्योंकि जब रिआया सरकारसे कहती है कि फसल नहीं हुअी, तो सरकारको अुस पर यकीन करना चाहिये। मगर वह न माने और सताये, तो हमें सब कुछ सह लेना चाहिये, लेकिन अपनी टेकसे डिगना न चाहिये। सरकारी नौकरोंसे मत डरिये, बल्कि धीरज रखिये और अपने भाअियों, पतियों और बेटोंको हिम्मत बँधाअिये।"

बा के अिन सादे लेकिन अुत्साह और प्रेरणा दिलानेवाले वचनोंसे लोगोंमें जोश आया और कअी बहादुर औरतोंने बा को वचन दिया:

"जब आप हमारे लिअे अितनी-अितनी तकलीफ अुठाती हैं, तो फिर हम किस लिअे डरें? हम हिम्मत रखेंगी और सरकारको पैसा देने नहीं देंगी।"

* * *

स्वराज्यकी पहली लड़ाअीमें

सन् १९२२ में बापूजीको गिरफ्तार किया गया और छह सालकी सजा सुनाअी गअी। अिस सजाकी बात सुनकर सारा देश संतप्त हो अुठा। अुस वक्तका बा का संदेश, अेक वीरांगनाको शोभा देने जैसा है:

"आज मेरे पतिको छह सालकी सजा हुअी है। अिस जबरदस्त सजासे मैं थोड़ी अस्थिर — बेचैन — हुअी हूँ, सो मुझे मंजूर करना चाहिये। लेकिन हम चाहें, तो सजाकी मुद्दत पूरी होनेसे पहले ही अुनको जेलसे छुड़ा सकते हैं।

"सफलता पाना हमारे हाथकी बात है। अगर हम असफल हुअे, तो अिसमें दोष हमारा ही होगा। और अिसीलिअे मैं मेरे दुःखमें हमदर्दी रखनेवाले और मेरे पतिके लिअे मुहब्बत रखनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंसे प्रार्थना करती हूँ कि वे रात-दिन लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रमको कामयाब बनायें। रचनात्मक कार्यक्रममें, यानी तामीरी काममें, चरखा चलाना और खादी पैदा करना दो खास चीजें हैं। गांधीजीको दी गअी सजाका जवाब हम अिस तरह दें:

१. सभी औरत-मर्द परदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दें और खुद खादी पहनें व दूसरोंको पहननेके लिअे समझायें।

२. सभी औरत-मर्द कताअीको अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझ लें, और दूसरोंको भी वैसा करनेके लिअे समझायें।

३. सभी व्यापारी परदेशी कपड़ेका व्यापार करना छोड़ दें।"

बा के सच्चे दिलसे निकले अिस पैगामका लोगों पर बहुत अच्छा असर हुआ। जगह-जगह परदेशी कपड़ेकी होलियाँ जलने लगीं। चरखे गूँजने लगे और कुछ लोगोंने शुद्ध खादी पहननी शुरू की।

बापूको साबरमतीसे यरवड़ा ले गये। बा को दुःख तो बहुत हुआ, लेकिन वे अपनेको सँभाले रहीं। अुस समय बा अपने सच्चे रूपमें प्रकट हो अुठती थीं। हमेशा कम बोलनेवाली और रसोअीघर सँभालनेवाली बा सार्वजनिक कामोंके लिअे अिस तरह निकल पड़ीं कि कोअी नौजवान भी क्या निकलेगा। वे कहतीं: "मुझे अब आश्रममें चैन नहीं पड़ता। अब तो मुझे, जितना बन पड़े, बापूका काम करना चाहिये। बापू कार्यकर्ताओंको गाँवोंमें और रानीपरज (आदिवासियों) के बीच बसनेको कह गये हैं। अिसलिअे मुझे भी गाँवमें ले चलो।" स्वर्गीय श्री दयालजीभाअीकी माँके साथ बा विद्यापीठके चन्देके लिअे सूरत ज़िलेमें और अुधर नंदुरबार तक घूमीं। और, बारडोलीमें चरखेके कामको गति देनेके लिअे बैलगाड़ीमें बैठकर गाँव-गाँव घूमीं। जब कांग्रेसके अन्दर स्वराज्यवादी दल पैदा हुआ और बापूके रचनात्मक कामके बारेमें अच्छे-अच्छोंकी श्रद्धा डिग चुकी थी, तब भी बा अनन्त निष्ठासे और अविचल भावसे बापूके कार्यक्रममें श्रद्धा रखती थीं और अपने थोड़े शब्दों द्वारा लोगोंको प्रेरणा देती थीं:

"अुमड़ते हुअे जोशके समय तो हर कोअी साथ देता है। लेकिन जोश अुतरनेके बाद भी जो टिके रहते हैं, वे पक्के हैं। दक्षिण अफ्रीकामें भी अैसी ही नाअुम्मेदी छा गअी थी, लेकिन बहनें और खानोंमें काम करनेवाले मज़दूर निकल पड़े और जीत हुअी। अुसी तरह मैं तो सचमुच मानती हूँ कि आखिर सत्यकी जीत होनेवाली है।"

बा के ये शब्द लच्छेदार लेक्चर देनेवालोंके लेक्चरोंसे कहीं गहरा असर करते थे। अुन्हीं दिनों बा ने सोनगढ तहसीलके जंगलमे डोसवाड़ा मुकाम पर रानीपरजकी दूसरी परिषद्की सदारत की और हज़ारों आदि-वासियोंसे शराब छुड़वाकर अुनको चरखा कातने और भजन करनेमे लगा दिया।

डॉडीकूच और धरासणा—'३०की लड़ाअीमे

अिस लड़ाअीमे बा ने जो हिस्सा लिया था, अुसका बयान श्रीमती मीठुबहनके शब्दोंमे ही यहॉ दिया है:

"१९३०मे डॉडीकूचके समय बहनोंने बापूसे पूछा कि अिस बार हमे क्या करना चाहिये?

"बापूने कहा: 'तुम्हारे लिअे मैंने अेक सुन्दर काम ढूँढ रखा है। बहनोंको जेल नहीं जाना है, बल्कि विदेशी कपड़ेके बहिष्कारका और शराब-बन्दीका काम करना है। और जरूरत पड़े तो अुसके लिअे धरना—पिकेटिंग—भी देना है।'

"छठी अप्रैलको दांडीमे नमक सत्याग्रहके बाद बापूने जो सभा की थी, अुसमे अिस चीजपर खास तौरसे जोर दिया था। नवसारीके पास बीजलपुरमे बहनोंकी अेक खास सभा बुलाअी गअी थी। अिस सभामे कोअी चार-पॉच हजार बहने हाजिर थीं। अहमदाबाद और बम्बअीसे भी कुछ अगुआ बहने आअी थीं। अुस सभामे बापूकी सलाहसे 'स्त्री-स्वराज्य-संघ'की स्थापना की गअी और सूरत शहर और जिलेमे विदेशी कपड़ेके बॉयकाट और शराब बन्दीके लिअे छावनियॉ डालनेकी अेक योजना तैयार की गअी। बहनोंकी मददके लिअे बापूने गुजरातके मशहूर नेता डॉक्टर सुमन्त महेताको चुना और कहा: 'आपको बहनोंकी रहनुमाअी नहीं करनी है, रहनुमाअी तो बा और मीठुबहन ही करेंगी। आपको तो सिर्फ मुनीमके नाते मददभर करनी है।'

"मुझे अिससे थोड़ा संकोच मालूम हुआ और मैंने बापूसे कहा: 'आप हमारी ताकतका बहुत ज़्यादा अंदाज लगाते है।' लेकिन बापू अपनी बात पर डटे रहे। क्योंकि बा की तत्त्वनिष्ठा और काम करनेकी

शक्तिसे वे परिचित थे। बा के नाममें कुछ अैसा खिंचाव था कि छावनीमें सैकड़ों बहनें भरती हो गयीं। सूरत शहरमें, पिछड़ी कही जानेवाली क़ौमोंसे भी, सैकड़ों बहनें ज़िन्दगीमें पहली बार सार्वजनिक कामके लिअे निकल पड़ीं। अुन सबको हिम्मत और प्रेरणा बा से ही मिलती थी। 'बा कौन अंग्रेज़ी पढ़ी हैं? अगर वे यह काम कर सकती हैं, तो हम अुनका साथ क्यों न दें?' बा के जीवनसे अुनमें आत्मश्रद्धा पैदा हुअी। नतीजा यह हुआ कि समूचे सूरत ज़िलेमें, जो अपनी शराबखोरीके लिअे मशहूर है, शराबकी दुकानों पर अेक चिड़िया तक नहीं फड़कती थी। सरकारको अपनी नीति और अपने क़ानून ताक़ पर रख देने पड़े और दारू-ताड़ीकी फेरी लगानेकी अिजाज़त देनी पड़ी। अब तक सभ्यताका स्वाँग रचकर बैठी हुअी सरकारने देहातमें अिस बातकी पेशबन्दी की कि बहनोंको वहाँ छावनीके लिअे कोअी अपने मकान न दें। लेकिन बहनें डिगीं नहीं। मँडवे बाँधकर अुन्होंने अुसमें अपनी छावनियाँ डालीं। जब मँडवे जलने लगे और बरतन-भाँडे ज़ब्त होने लगे, तो बा ने कहा: 'हम चटाअियोंकि झोंपड़ोंमें रहेंगी और मिट्टीके बरतन रखेंगी। फिर देखें, वे क्या ले जाते हैं?'

"बा छावनीमें थीं, तभी अुनको बापूकी गिरफ़्तारीकी खबर मिली। यह खबर सुनकर अुन्होंने देशवासियोंके नाम स्वदेशभक्तिसे छलकता हुआ यह संदेश दिया:

'आज सुबह चार बजे मैं प्रार्थना कर रही थी, तभी मुझे बापूका स्मरण हुआ। रात हमारी छावनीके नज़दीकसे मोटरोंकी भागादौड़ी बहुत सुनाअी पड़ती थी। अिसलिअे मनमें शक तो पैदा हो ही गया था। प्रार्थनाके बाद तुरन्त ही नवसारी छावनीसे खबर आअी कि गांधीजीको वे आधीरातके वक़्त ले गये हैं।

'सुबह मैं कराड़ीकी छावनीमें हो आअी। आश्रमवासियोंसे मिली। अुनसे सुना कि दो मोटरोंमें हथियारोंसे लैस सिपाहियोंके साथ कुछ अफ़सर आये थे। गांधीजीके चारों ओर सिपाहियोंका घेरा डाल दिया गया था और कुछ देर तक तो किसी आश्रमवासीको भी अुनके पास जाने नहीं दिया गया। कराड़ी गाँवके लोगोंको मालूम होते ही वे दौड़े आये, लेकिन कहते हैं, सिपाहियोंने अुन्हें छावनीमें घुसने नहीं दिया। ये सारी बातें सुनकर मुझे

बहुत अफसोस हुआ। सरकारके पागलपन पर मुझे हँसी आअी। गांधीजीको गिरफ्तार करनेके लिअे आधीरातके वक्त डाका डालनेकी क्या जरूरत? अुनको पकड़नेके लिअे अिस सारे लश्करी लवाजमेकी क्या जरूरत?

'अब गांधीजी तो गये। यह सरकारकी मेहरबानी है कि वह अुन्हें अितनी देरमें ले गअी। अिन पाँच हफ्तोंमें वे जितना कुछ हमें कहना चाहते थे, सब कह चुके हैं। अुन्होंने हमारे लिअे अेक रास्ता बता दिया है। भाअियोंको और बहनोंको अुनका काम अलग-अलग सुझा दिया है। अब तो गांधीजी जो काम हमें सौंप गये हैं, अुसे पूरा करना ही हमारा धर्म हो जाता है।

'मैं अीश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि अिस घटनाके कारण देशमें कहीं कोअी अशान्ति (बदअमनी) न हो! लोगोंसे भी मिन्नत करती हूँ कि वे अपनी भावनाओं और भक्तिकी बाढ़में बहकर पागल न बनें, बल्कि मर मिटनेकी अपनी साधको प्रबल बनाकर अिस लड़ाअीको जारी रखें।

'सरकारी नौकरी करनेवाले भाअियो, आप अब कब तक अपनी नौकरीसे चिपटे रहेंगे? सिपाही अपने देशभाअियों पर लाठियाँ चलाते और गोलियाँ दागते हैं। अुन्हें यह हिम्मत कैसे होती है? भाअियो, हिम्मतसे काम लो। भगवान् आपमेंसे किसीको भूखा नहीं रखेगा। पहले बेगुनाह और देशभक्तिमें पगे हुअे बच्चों पर हाथ अुठाना और फिर घर जानेके बाद आँखोंमें पानी भरकर लम्बी आहें छोड़ना, अिससे फायदा क्या? परमेश्वरका नाम लेकर हिम्मतसे काम लो और नौकरी छोड़ दो।

'आज अिसके सिवा और दूसरा संदेश मैं क्या दूँ? परमात्मा हम सबको शक्ति दे।'

"बापूजीकी गिरफ्तारीके बाद गुजरातके देशसेवक धरासणाकी ओर चल पड़े। सरकारने अुनके साथ बहुत बेरहमी बरती। लाठियाँ चलाअीं। नीचे गिराकर अूपर घोड़े दौड़ाये। मुँहमें कपड़ा ठूँसकर खारे पानीमें डुबाया। कँटीली और तारोंवाली बागुड़ोंमें फेंक दिया। निहत्थे सैनिकों पर जितना कहर बरपा किया जा सकता था, किया। बा को अिसका पता चला। वे गअीं। वहाँ जो कुछ देखा, अुससे अुनका दिल तड़प

अुठा। अेक पत्र-प्रतिनिधिको मुलाक़ात देते हुअे अुन्होंने जो करुण वर्णन किया है, अुससे अुनके अुस समयके दुःखका थोड़ा अंदाज़ लगेगा :

'घायल स्वयंसेवकोंको देखने और अुन्हें ढाढ़स बँधाने मैं वलसाड़के अस्पतालमें गअी। बिछौनों पर पड़े हुअे अुन भाअियोंकी मरहमपट्टी और बैण्डेज वग़ैराका वह करुण (दर्दनाक) दृश्य देखकर मेरा दिल फटने लगा — रो पड़ा। पुलिसने अुन पर जो जुल्म ढाये हैं, अुन्हें सुनकर मैं काँप अुठी। मुझे कहना चाहिये कि मुझको दुःख तो हुआ, फिर भी अैसी ज़बरदस्त तकलीफ़ें सहनेके बाद भी अुन नौजवानोंने जिस देशभक्ति, वीरता और अुत्साहका परिचय दिया था, अुसे देखकर मेरा दिल खुशीसे नाच अुठा। सत्यके लिअे अैसे बलिदानका दृष्टान्त तो अितिहासमें अकेले अेक हरिश्चन्द्रका ही मिलता है।

'चारों ओरसे अैसे जुल्मोंकी कहानियाँ आ रही हैं। अिसलिअे सबकोअी अिस काममें अेक-दूसरेकी सहायता करें और साथ दें, तभी हमारा काम सफल हो। मुझे यह देखकर बहुत ही खुशी हुअी कि अितनी बड़ी तादादमें डॉक्टर और बहनें बीमारोंकी सेवा कर रही हैं।

'मुझे अुम्मीद है कि मेरे जो देशभाअी धरासणाकी करुण कहानी सुनेंगे, वे वाअिसरायके नये काले क़ानूनोंकी मुखालिफ़त करनेके लिअे दुगने अुत्साहसे कर न देनेकी तहरीक चलायेंगे और साथ ही शराब-बन्दीका व परदेशी कपड़ेके बायकाटका काम ज़ारी रखेंगे।'

"अिस लड़ाअीके दिनोंमें बीजलपुरमें जलालपुर तहसीलकी जो परिषद् हुअी थी, अुसका अध्यक्षपद बा ने स्वीकार किया था। अुसमें भाषण करते हुअे अुन्होंने कहा था :

'अपने देशके अितिहासके अेक बहुत नाजुक मौक़े पर आज हम यहाँ अिकट्ठा हुअे हैं। अिस वक़्त हमारे पास लम्बे-चौड़े भाषण करनेका समय नहीं है। अिसलिअे आजकी सभाका अध्यक्षपद देनेके लिअे मैं बहुत थोड़ेमें आपका आभार माने लेती हूँ। अिस वक़्त मुझे तो आपसे अेक ही बात कहनी है, कि आपसके झगड़ोंको भूल जाअिये। अिस मौक़े पर सब अेक हो जाअिये। अगर अेकके घर ज़ब्ती हो, तो समझिये कि सबके घर हुअी है। कोअी ज़ब्तशुदा माल न खरीदे।

'अगर बहनें चाहे, तो वे अिस लडाअीमे पुरुषोंकी बहुत मदद कर सकती है। शराब, ताड़ी और परदेशी कपडेके बायकाटका काम तो बहनोंको ही करना है। हिम्मत दिलानेके मौकों पर बहने भाअियोंको हिम्मत तो दिलायेगी ही, लेकिन कभी स्वार्थवश कोअी भाअी सरकारकी मदद करने जाये, तो बहने अुन्हे चेताये और जरूरत पड़ने पर अुनके साथ असहयोग भी करे।

'बहनोंमे जितनी समझ होती है, अुतनी पुरुषोंमे नही होती। क्योंकि बहने दुःखकी भाषाको ज्यादा समझती है। धरासणाके अत्याचारोंसे बहनोंके दिलोंको चोट पहुँची है। जब-जब देशके हितके खिलाफ कोअी भी हलचल शुरू हो, तब धरासणाको याद रखिये।

'अिससे ज्यादा और मैं क्या कहूँ? मैने जो कुछ कहा है, अुस पर डट जानेकी और अुसका अमल करनेकी ताकत परमात्मा आपको दे और आप सबका कल्याण करे!'

"अिस लडाअीके सिलसिलेमे दौडधूपकी वजहसे बा की तन्दुरुस्ती गिर गअी। मैं बा के साथ मरोली गाँवमे रहती थी। अेक दिन सवेरेकी प्रार्थना समाप्त करके सब नाश्ता करने बैठे थे कि अितनेमे डाकिया आया और अेक तार दे गया। तारकी खबर जाननेको सभी बेताब हो अुठे थे।

"तार था: 'हमे कस्तूरबाके साथकी जरूरत है।'

"अिस छोटे-से संदेशेने सबको बेचैन कर दिया। बा तारका मर्म समझ गअीं और नाश्ता छोड़कर झटपट जानेकी तैयारी करनेमे जुट गअीं।

"यह तार बोरसदसे आया था। बोरसदके बहादुर किसानोंने देशके खातिर अपना वतन, घर-बार, ढोर वगैरा सब कुछ छोडकर हिजरत की थी। सरकारको लगान न देनेकी वजहसे अुन्हे जेल जाना पडा था और मारपीट सहनी पडी थी। किसानोंके गुजारेका जो अेक ही जरिया — जमीन — था, वह भी नीलाम किया जा चुका था।

"लगान न देनेकी सलाह देनेवाली कुछ बहनों पर सरकारने लाठी चलाअी थी। गाँवमे हाहाकार मच गया था। बहुतेरी बहने घायल होकर

अस्पतालमें पड़ी थीं। गाँववालोंको हिम्मत बँधानेके लिअे अिन बहनोंने बा को तारसे बुलाया था।

"'बा, आप यह क्या कर रही हैं?' मैं बा की अुतावली देखकर घबराअी, और अिस फ़िक्रसे कि अिसकी वजहसे बा की तबियत और खराब होगी, मैंने कहा: 'आपमें ताक़त कहाँ है? बदनमें खून नामको नहीं रहा, अिसीलिअे तो डॉक्टरोंने आपको आराम करनेकी सलाह दी है। आपकी ओरसे मैं बोरसद जाती हूँ। आप यहीं रहिये।'

"'बहादुरीके साथ पुलिसकी लाठियोंको सहन करनेवाली बहनोंके बीच मुझे पहुँचना ही चाहिये। बापू होते, तो अिस वक़्त अुनके पास रहते। लेकिन वे आज आज़ाद नहीं हैं।' कम्बल और दूसरी ज़रूरी चीज़ोंको अपनी झोलीमें रखते हुअे बा ने जवाब दिया, और क़दम बढ़ाती हुअीं वे बोरसद जानेवाली गाड़ीको पकड़नेके खयालसे स्टेशनकी ओर रवाना हो गअीं।

"बोरसद पहुँचकर बा ने न सिर्फ़ अस्पतालमें घायल होकर पड़ी हुअी बहनोंको अुत्साहित किया, बल्कि सारे गाँव पर छाये हुअे डर और आतंकको भी दूर किया। अपनी कमज़ोर तबियतका ज़रा भी खयाल न करके बा ने सुबहसे लेकर रात तक खड़े पैरों काम करना शुरू कर दिया।

"अिससे बा की सेहत और गिरी। नड़ियादसे डॉक्टर आये। अुन्होंने बा की जाँच की। कहा कि आरामकी बहुत ही ज़रूरत है और चेतावनी दी कि 'अगर आप हमारा कहना नहीं मानेंगी, तो तबियत ज्यादा खराब होगी और नतीजा अच्छा न निकलेगा।'

"'लेकिन मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं होता। मैं तो बापू के पदचिह्नों पर चलनेके सिवा और कोअी काम नहीं कर रही। बापू की गैरहाज़िरीमें मुझे काम करनेका यह मौक़ा मिला है। आराम तो मैं नहीं कर सकूँगी।'

"डॉक्टर निराश हुअे। और बा अेक सत्याग्रहीकी शानसे अपने कामको आगे बढ़ाती चली गअीं।"

* * *

सन् १९३२ और '३३का तो बा का बहुतेरा वक़्त जेल ही में बीता। '३२ में सौ० लासुबहन महेताको बा के स्वभावका जो परिचय मिला, अुसके बारेमें वे लिखती हैं:

"'यह कौन आया? अैसे नन्हे, नाजुक अुमरके बच्चोंको पकड़कर लानेमें सरकारको शरम भी नहीं आती?' मुझे देखकर अुनका कोमल हृदय कराह अुठा। दूसरे दिन अुन्हें मालूम हुआ कि मैं कुछ खाती नहीं हूँ, वहाँका वह रूखा-सूखा खाना मेरे गले नहीं अुतरता था। अुन्होंने अुसी वक्त मुझे बुलाया। 'बी' क्लासकी अपनी खुराकमेंसे मुझे जबरदस्ती खानेको दिया और सीखकी दो बातें कहीं: 'देखो, यों भूखी रहोगी, तो जेल कैसे काट सकोगी? सहन करने आओी हो, तो सहन तो करना ही चाहिये न?' मैं सब समझती तो थी ही, फिर भी मनको मजबूत करनेमें दो तीन दिन लग गये। और फिर तो मैंने अपनेको अुस खुराकके अनुकूल बना लिया। अिस बीच बा की सहानुभूति मुझे मिल गअी। जेलमें जो कोअी भी बहन बीमार पड़ती, कमजोर दिलकी होती, या घरमें आरामकी जिन्दगी बितानेवाली होती, अुसे बा की मदद, अुनका सहारा, हमेशा मिलता। बा की हमदर्दीके कारण जेल काटना आसान हो जाता। जेलमें हम करीब ८० बहनें अेक साथ थीं, लेकिन किसीको कभी कोअी तकलीफ नहीं हुअी। किसीने यह महसूस नहीं किया कि यहाँ हम अकेली पड़ गअी हैं, या कि यहाँ हमारा कोअी नहीं है। मानो हम सब अुनके घर ही में रहती हों, अिस तरह वे सबकी फिकर रखती थीं — सबको सँभालती थीं। सब पर समान प्रेम और सबकी समान चिन्ता, यह अुनके स्वभावकी खूबी थी।"

जब राजकोटमें सत्याग्रह छिड़ा, तो अिस खयालसे कि वह तो मेरा वतन है, बा बापूसे भी पहले वहाँ पहुँच गअी थीं। वहाँ अुन पर जो बीती, अुसका बहुत ही बढ़िया वर्णन सुशीला बहनने किया है, । पाठक अुसे वहीं पढ़ लें। लेकिन अुसके बारेमें खुद बापूजीने 'गांधीजी' नामक ग्रंथमें बा के निस्बत जो कुछ लिखा है, सो यहाँ देना जरूरी है।

"बा राजकोटकी लड़ाअीमें शामिल हुअीं, अिस पर कुछ न लिखनेका मेरा अिरादा था, लेकिन अुनके अुस लड़ाअीमें शामिल होने पर जो थोड़ी निष्ठुर टीकायें हुअी हैं, वे खुलासा चाहती हैं। मुझे तो कभी यह सूझा ही न था कि बा को अिस लड़ाअीमें शरीक होना चाहिये। अिसकी खास

वजह तो यह थी कि अिस तरहकी मुसीबतोंके लिअे वे बहुत बूढ़ी हो चुकी थीं। लेकिन बात कितनी ही अनोखी क्यों न मालूम हो, टीकाकारोंको मेरे अिस कथन पर अितना विश्वास तो रखना चाहिये कि अगरचे बा अनपढ़ थीं, फिर भी कअी सालोंसे अुन्हें अिस बातकी पूरी-पूरी आज़ादी थी कि वे जो करना चाहें, करें। क्या दक्षिण अफ्रीकामें और क्या हिन्दुस्तानमें, जब-जब भी वे किसी लड़ाअीमें शरीक हुअी हैं, अपने आप, अपनी आन्तरिक भावनासे ही। अिस बार भी अैसा ही हुआ था। जब अुन्होंने मणिबहनकी गिरफ़्तारीकी बात सुनी, तो अुनसे न रहा गया। और अुन्होंने मुझसे लड़ाअीमें शामिल होनेकी अिजाज़त माँगी। मैंने कहा, तुम अभी बहुत ही कमज़ोर हो। दिल्लीमें कुछ ही दिन पहले वह अपने नहानेके कमरेमें बेहोश हो गअी थीं। अुस वक़्त देवदासने हाजिरखयालीसे काम न लिया होता, तो वे अुसी समय स्वधाम पहुँच गअी होतीं। लेकिन बा ने जवाब दिया: 'शरीरकी मुझे परवाह नहीं।' अिस पर मैंने सरदारसे पुछवाया। वे भी अिजाजत देनेके लिअे बिल्कुल तैयार न थे।

"लेकिन फिर तो वे पसीजे। रेसीडेण्टकी सूचनासे ठाकुर साहबने जो वचन-भंग किया था, अुसके कारण मुझे होनेवाले क्लेशके वे साक्षी थे। कस्तूरबाअी राजकोटकी बेटी ठहरीं। अिसलिअे अुन्होंने अंतरकी आवाज़ सुनी। अुन्होंने महसूस किया कि जब राजकोटकी बेटियाँ राज्यके पुरुषों और स्त्रियोंकी आज़ादीके लिअे जूझ रही हों, तब वे चुप बैठ ही नहीं सकतीं।

* * *

"अुनमें अेक गुण बहुत बड़ा था। हरअेक हिन्दू पत्नीमें वह कमोबेश होता ही है। अिच्छासे या अनिच्छासे अथवा जाने-अनजाने भी वह मेरे पदचिह्नों पर चलनेमें धन्यता अनुभव करती थीं।

"बा हमेशासे बहुत दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थीं, जिनको अपनी नवविवाहित दशामें मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन अपनी दृढ़ अिच्छाशक्तिके कारण वे अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गअीं। वह कअी बार जेल जा चुकी थीं, फिर भी अिस बारके (१९४२-४४) अिस क़ैदखानेमें, जिसमें सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थीं, अुनको अच्छा नहीं लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही

अुनकी जो गिरफ्तारी हुअी, अुससे अुन्हे जोरका आघात पहुँचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वह मेरी गिरफ्तारीके लिअे बिलकुल तैयार नहीं थी। मैंने अुन्हे विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहूँ, वह मुझे पकड़ेगी नहीं। सचमुच अुनके ज्ञानतन्तुओंको अितने ज़ोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हे दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ० सुशीला नय्यरने, जो अुनके साथ ही पकड़ी गअी थीं, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमे आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हे आश्वासन मिला और बिना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था, सो खट्टा ही बना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमे चिड़चिड़ापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वह सतत वेदनासे छूट गअी है, अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दुःख होनेकी कल्पना मैंने की थी, अुससे अधिक दुःख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। हमारा जीवन सदा सतोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी था।"

अिस बारकी लडाअीमे बा की गिरफ्तारीके वक्तसे लेकर आगाखान महलकी सारी हकीकत सुशीलाबहनने दी है, अिसलिअे यहाँ अुसको भी दोहराया नही है।

बा के अिन सारे सार्वजनिक कामोंसे साफ मालूम होता है कि अैसे काम करनेके लिअे या लोकसेवाके लिअे सच्ची जरूरत विद्वत्ताकी नही, बल्कि आमजनताके लिअे प्रेमकी और असलमे कौन चीज करने जैसी है, अिसकी सीधी-सादी समझकी है। बा को गुजरातीमे या हिन्दीमे भाषण करनेके लिअे अक्षरज्ञानका अभाव कभी बाधक नही हुआ। अुल्टे, सीधी बात कहनेके कारण वे ज़्यादा असर पैदा कर सकी है। अूपर अुनके कुछ बयान दिये है। लेकिन अिन बयानोसे भी ज़्यादा असर बा के जबानी भाषणोका होता था।

बिदा

बा को अिस बातकी आगाही तो बहुत पहले हो गअी थी कि अुनकी मौत अब नज़दीक है। सन् '४२के जनवरी महीनेकी बात है। तब बापू और बा कुछ दिनोंके लिअे बारडोलीमें थे। वहाँसे मीठुबहनको मिलने और कुछ दिन अुनके साथ बितानेके खयालसे बा मरोली आश्रम गअीं। लेकिन वहाँ अुन्हें बुखारने आ घेरा। पिछले कअी सालोंसे बा का दिल तो कमज़ोर पड़ने ही लगा था, अिसलिअे वे बहुत कमज़ोर हो गअी थीं। बा को बापूजीके वर्धा जानेकी तारीख मालूम थी, चुनाँचे अैसी कमज़ोर हालतमें भी वे बारडोली आ ही पहुँचीं। बापूको पता चला कि बा मरोलीसे बीमार होकर आ रही हैं। वे यह भी जानते थे कि बा आते ही अुनसे मिलने आवेंगी। लेकिन अुन्हें ज़ीना चढ़नेकी तकलीफ़ न अुठानी पड़े, अिस खयालसे ज्यों ही बापूको बा के आनेकी खबर मिली, वे झट-पट नीचे अुतर आये। खुद ही अपने हाथका सहारा देकर अुन्हें मोटरसे नीचे अुतारा और पास ही सरदारके कमरेमें अेक खटिया पर लिटाकर और कुछ देर अुनके पास बैठकर फिर आप अूपर गये। बा जिस तरह बापूकी सेवामें तत्पर रहतीं, अुसी तरह बापू भी बा की बहुत ही चिन्ता रखते। जब भी बा कहीं बाहर जानेको होतीं, या बाहरसे आनेवाली होतीं, तब बापू कितने ही ज़रूरी काममें क्यों न हों, अुनका नियम ही था कि वे बा को बिदा करने या लिवाने आश्रमके दरवाज़े तक जायँ।

यह सब खतम हुआ और बा आरामसे सोअीं। फिर सरदार कल्याणजीभाअीसे कहने लगे: "बा को अैसी हालतमें क्यों ले आये? वहीं रख लेना था न?"

कल्याणजीभाअी बोले: "आप मानते हैं कि हमने आग्रह करनेमें कमी की होगी? लेकिन बा चुप बैठें तब न? वे तो बराबर कहती ही रहीं, 'अब रेलगाड़ियाँ बन्द हो जानेवाली हैं और बापूजी सेवाग्राम चले जायेंगे, तो अितने सालोंके बाद मैं अुनसे बिछुड़ जाअूँगी न? अब मैं कौन ज़्यादा जीनेवाली हूँ? अब तो यही चाहती हूँ कि मैं बापूकी गोदमें मरूँ।"

और, बा की यह अिच्छा सचमुच ही पूरी हुअी ।

'४२ के अगस्तमे महासमितिकी बैठकके लिअे बापू बम्बअी गये, तो बा भी साथ थीं । कुछ आश्रमवासी अुन्हे बिदा करनेके लिअे वर्धा स्टेशन तक गये थे। अुन्होंने बा से कहा : "बा, जल्दी वापस आअियेगा ।" अुस समयके बा के अुद्‌गार ये थे : "हॉ भाअी, आप सबके आशीर्वादसे वापस आ सकूँगी, तो खुशी तो होगी ही।" वापस आनेकी निराशाने ही बा के मुँहसे ये शब्द कहलवाये थे ।

और आगाखान महलमे महादेव काकाके गुज़र जानेके बाद तो बा हरदम यह कहा करतीं : "मुझे जाना था और महादेव क्यों गया ?" बापूके अुपवासके दिनोंमे अुनके दर्शनोंके लिअे हम सब तीन बार आगाखान महल गये थे । जब-जब हम वहॉसे चलते, बा कहतीं : "जिन्दा रहूँगी, तो फिर मिलेंगे ।" बापूके अुपवासोंकी समाप्तिके बाद जब हम चलने लगीं, तब मेरी मॉसे और आश्रमकी दूसरी बहनोंसे बा ने कहा : "यह हमारी आखिरी मुलाकात ही है । मै यहॉसे जीते जी बाहर नहीं निकलूँगी ।" आश्रमकी बहनोंकी प्रार्थनाका पहला श्लोक अिस प्रकार है :

'गोविन्द द्वारिकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय ।
कौरवैः परिभूता मां किं न जानासि केशव ॥'

अिस श्लोकको दोहराते हुअे बा बोलीं. "अब तो कृष्ण भगवान् अिन कौरवोंसे घिरे हुअे हमारे देशकी सुध ले तो अच्छा हो ।" फिर जेलके अपने सभी साथियोंका नाम ले-लेकर कहने लगीं : "हम दोनोंको चाहे जेलमे रखे, लेकिन और सबकी रिहाअी हो ।"

आगाखान महलकी दूसरी बाते, बापूके अुपवासके समयकी बा की मनोदशा, और अुनकी सार-सॅभाल वग़ैराके बारेमे सुशीलाबहनने अपने निबन्धमे सुन्दर ढगसे लिखा ही है। मै वहॉ अपनी देखी हुअी अेक ही बातका जिक्र करूँगी। बापूजीकी खटियाके सामने दीवार पर 'हे राम' शब्द लिखे हुअे थे । ठीक अुनके नीचे तुलसीका अेक गमला था। सवेरे नहा-धोकर बा तुलसी माताका पूजन करतीं और झुक झुककर नमन करतीं । बापू लेटे-लेटे श्रद्धासे युक्त, प्रेमसे छलकती आखोंसे बा की ओर देखा करते । कितना भव्य था वह दृश्य ! बापूके अुपवास सकुशल जो समाप्त हुअे,

अुसकी जड़में बा के अन्तरतमकी गहराअीसे निकली हुअी अिस प्रार्थनाका कितना हाथ रहा होगा? सत्यवानको मृत्युके मुँहसे वापस लानेके लिअे सावित्री यमराजसे अेक बार लड़ी थी, लेकिन बा को तो बापूको बचानेके लिअे यमराजके साथ कअी-कअी बार लड़ना पड़ा है। बापूका अेक-अेक अुपवास बापूसे भी अधिक बा के लिअे कड़ी तपश्चर्या बन जाता था। बापूका तो शरीर सूखता, लेकिन बा का तो मन भी सिक जाता। मगर बा की यह अटल श्रद्धा थी कि भगवान् अपने भक्तोंको सही-सलामत अुबार लेता है। अिसलिअे बापूके अुपवासके दिनोंमें मिलने गये हुअे आश्रमवासियोंसे बा कहतीं: "आप चिन्ता न करें। मैं बापूसे पहले ही जाअूँगी। बापू ज़रूर अुठ बैठेंगे। लेकिन मैं यहाँसे जीती बाहर नहीं निकलूँगी। यह तो महादेवका मंदिर है। जिस रास्ते महादेव गये, अुसी रास्ते मैं भी जाअूँगी।"

* * *

बा के अन्तिम समयके और अग्निसंस्कारके वर्णन बहुतेरे आये हैं। लेकिन यहाँ मैं अुस समय वहाँ हाजिर रही अेक बहनका आश्रममें आया अेक पत्र ही दे रही हूँ:

"अन्त-अन्तमें बा की आँखें अेकदम खुलीं और अुन्होंने बापूजीको बुलवाया। जयसुखलालभाअी पास थे। अुन्होंने बापूसे कहा: 'बा बुलाती हैं।' बापू हँसते-हँसते आये और बोले: 'क्यों बा, शायद तू सोचेगी कि सब रिश्तेदार आ गये, अिसलिअे बापूने मुझे छोड़ दिया। ले, यह मैं आया।' बापूजीने बा को गोदमें ले लिया। बापूकी ओर देखकर बा कहने लगीं: 'मैं अब जाती हूँ। हमने बहुत सुख भोगे, दुःख भी भोगे। मेरे बाद रोना मत। मेरे मरने पर तो मिठाअी खानी चाहिये।' यों कहते-कहते बा के प्राण बापूकी गोदमें ही निकल गये। बापू देख रहे थे। ज्यों ही बा के प्राण निकले, बापूने अपना सिर बा की देह पर डाल दिया और आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली। देवदासभाअी बा के पैर पकड़कर 'बा, बा' पुकारने लगे। जयसुखलालभाअीने बापूजीका चश्मा अुतार लिया। बापू फ़ौरन ही सँभल गये। अुन्होंने देवदासभाअीको अपनी गोदमें लेकर स्वस्थ किया। पूज्य बा के नज़दीक रामधुन शुरू हुअी। फिर बापू, मनु, प्रभावती और सुशीलाने मिलकर बा की मृतदेहको स्नान कराया, शरीर

पोंछा, और बापूके काते सूतकी साड़ीमे बा को लपेटा। माथे पर कुकुम लगाया। हाथमे और गलेमे बापूका कता सूत पहनाया। जमीन लीपकर अुसमे चौक पूरा और बा को वहाँ सुलाया। शामको साढ़े सात बजे शरीर छूटा था। रात १२ बजे तक प्रार्थना और गीताका पारायण किया। देवदासभाअी, मनु और सतोकबहनको छोड़कर शेष सब बाहर आ गये। अग्निसस्कारके समय बहुतोंको बाहरसे अदर जानेकी अिजाजत मिली। बा का चेहरा खूब दमकता था और अैसा मालूम होता था, मानो वे शान्त निद्रामे सोअी हों। अग्निदाह-सम्बन्धी विधि करानेके लिअे अेक ब्राह्मण अुपाध्याय बुलाये गये थे। जब शुरूकी विधियाँ पूरी हुअीं और शवको चिता पर लिटा दिया गया, तो बापूने अेक सक्षिप्त प्रार्थना करनेकी सूचना की। गीता, कुरान और बाअिबलके कुछ अश पढे गये। आश्रमवासियोंने अेक भजन गाया। डॉ० गिल्डरने जरथुस्त धर्मकी प्रार्थना की। मीराबहनने अेक अंग्रेजी भजन गाया।

"मृतदेह पर चदनकी लकड़ी रखी गअी और घी सींचा गया। अिसी समय बापू धीमे पैरों देवदासभाअीके पास गये और बोले: 'देवा, महादेवके अन्तिम सस्कार मैंने किये, बा के अन्तिम सस्कार तू करा।' अिसके बाद देवदासभाअीने हाथमे अग्नि लेकर बा के शवकी तीन बार प्रदक्षिणा की और जोरसे गोविन्द, गोविन्द, गोविन्दका रटन करते हुअे मृतदेहको आग दी। चिता धक्-धक् जल अुठी।

"अिस सारे समयमे बापूजी स्वस्थ रहे थे। लेकिन देवदासभाअीका दुःख देखा नहीं जाता था। बापूने कहा: 'अुसकी याद आती है, तब मैं भी धीरज नहीं रख पाता।' शामको पाँच बजे तक हम सब वहाँ थे। पूज्य बापूजीने मुझसे बहुत-सी बातें कीं। सबके समाचार पूछे। रामदासभाअी अग्निसस्कार समाप्त होनेके बाद आये। रामदासभाअी और देवदासभाअीको पूज्य बापूके साथ तीन दिन रहनेकी अिजाजत मिली है। महादेवभाअीकी समाधिके पास बा की समाधि भी बनेगी।"

महादेवभाअीकी समाधि पर बापूने अपने हाथों छोटे छोटे शखोंका ॐ बनाया है। बा की समाधि पर भी बापूने ही छोटे-छोटे शखोंसे 'हे राम' लिखा है।

श्रीमती सरोजिनीदेवीकी श्रद्धांजलिके साथ अिस जीवन-कथाको समाप्त करती हूँ :

"भारतीय स्त्रीत्वके जीते-जागते प्रतीक-सी, अुस नाज़ुक किन्तु वीर नारीकी आत्माको चिर शान्ति प्राप्त हो। जिस महापुरुषको वे चाहतीं, जिसकी वे सेवा करतीं, और अद्वितीय श्रद्धा, धैर्य और भक्तिके साथ जिसका वे अनुसरण करतीं अुसके लिअे बराबर कुरबानी करते रहनेका जो कठिन मार्ग अुन्होंने अपनाया था, अुस मार्ग पर चलते हुअे अुनके पैर अेक क्षणके लिअे भी लड़खड़ाये नहीं और न अुनके दिलने कभी कच्ची खाअी। वे मृतत्वसे अमरत्वमें गअीं और हमारी गाथाओं, हमारे गीतों, और हमारे अितिहासकी वीरांगनाओंकी मंडलीमें वे अपने हक़की जगह पा गअी हैं; अिसकी हम खुशी मनायें।"

परिशिष्ट

[बा को लिखे बापूके पत्रोंमेंसे लिये गये कुछ नमूनेके पत्र]

१

(राजकोट सत्याग्रहके समयके)

सेगाँव, ८-२-'३९

बा,

तू काफ़ी तकलीफ़ अुठा रही है। जो भी तकलीफ़ हो, अुसकी खबर मुझे ज़रूर देना। तू दुःख सहनेके लिअे जन्मी है। अिसलिअे तेरी तकलीफ़ोंसे मुझे कोअी आश्चर्य नहीं होता। मैंने राजकोट तार तो किया है। तेरी तकलीफ़ोंके बारेमें अखबारोंमें कुछ भी नहीं देना है। भगवान् तो वहाँ तेरे पास बैठा ही है। अुसे जो करना होगा, वह करेगा। 'कहानम' (कनु) मज़ेमें है। रातको तुझे याद ज़रूर करता है। लेकिन फ़िकर न करना। अमतुस्सलाम यहाँ है। वह कहानमको सँभालती है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणि, तू वहाँ है, यह कितनी अच्छी बात है!

२

सेगाँव, ९-२-'३९

बा,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार रहा करती है, यह अच्छा नहीं लगता। लेकिन अब तो हिम्मतके साथ रहना। सहूलियतें तो मिल जायेंगी। और, न मिले तो भी क्या? मणि ठीकसे गा न सके, तो भी रामायण सुनाये। राम-सीताके दुःखकी तुलनामें हमारे दुःखकी क्या बिसात है? तू घबराना मत। आजकल लड़कियोंसे सेवा लेना छोड़ रखा है। तू फिकर न करना। क्या करना चाहिये, सो मैं देख लूँगा। सुशीला तो सेवा करती ही है।

बापूके आशीर्वाद

३

सेगाँव, १०-२-'३९

बा,

डाक तेरे नाम रोज गअी है। वहाँ चिट्ठियाँ न मिलें, तो किया क्या जाय? मेरी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। लेकिन तबियत चिन्ता करने-जैसी हो जाय, तो भी मैं तुझसे तो अिस जवाबकी आशा रखता हूँ कि "वियोगमें अुनकी मृत्यु बदी होगी, तो होकर रहेगी। लेकिन मैं तो जहाँ मेरे बच्चे त्रास पा रहे हैं, वहाँ पड़ी हूँ। मुझे जेलमें रखोगे, तो अुससे भी मैं खुश होअूँगी। ठाकुर साहबसे वचन पलवानेमें आप सब मदद करें, मेरा अुपयोग करें, वरना मैं चाहती हूँ कि राजकोटके आँगनमें ही मेरी मृत्यु हो जाय।" तू अपने आप अपनी खास अिच्छासे गअी है। अिसलिअे तेरे दिलसे ये अुद्गार निकलें, तो निकालना। अपने मनमें यही धारणा रखना। तू रोज लिखती है कि लड़कियोंकी सेवा लिया करो। लेकिन फिलहाल तो वे आजाद ही हैं। सुशीला मालिश करती है, सो भी छोड़ना ही है न? लेकिन अपनी अैसी तबियतकी वजहसे अुसे अभी छोड़ नहीं सका हूँ। अिस बारेमें भी मेरी चिन्ता मत करना। मुझे निबाहनेवाला आखिर तो अीश्वर ही है न?

बापूके आशीर्वाद

२

चा,

पिछली बार तुझे प्रवचन भेजा था। अुसकी नक़ल भेजना। तेरा पत्र आज मिला। यह पत्र मौनवारके दिन लिख रहा हूँ। मणिलालकी चिन्ता मत कर। अुसे तेरा पत्र भेज रहा हूँ। परागजीके कहनेसे घबरा अुठनेका कोअी कारण नहीं। दोनों प्रौढ़ हैं। ग़लती हुअी होगी, तो सुधार लेंगे। 'जामे जमशेद' का प्रबन्ध तो किया ही है। मथुरादासके लिखनेसे हो गया है। अिसलिअे मैंने ज़्यादा कुछ नहीं किया। अब तो मिलता ही होगा। फिर पूछ-ताछ करता हूँ। रामायण और भागवतके लिअे तजवीज़ करता हूँ। प्रेमलीलाबहनसे मँगानेमें तनिक भी संकोच न करना। तुझे मँगाना ही क्यों है? जो थोड़ा-बहुत चाहिये, सो वे प्रेमसे भेजेंगी। लेकिन जिसकी जल्दी ही ज़रूरत न हो, वह तू मेरे मारफ़त मँगायेगी तो बस होगा। मैं तजवीज़ कर दूँगा। दाँत काममें ले सकती है? लालपानीके कुल्ले करती है? दूधाभाअीकी लक्ष्मीको भी छठा महीना चल रहा है, यह तो मारुतिका पत्र आज मिला। अिन सब खबरोंको सुनकर मुझे दुःख या आश्चर्य नहीं होता! होना भी नहीं चाहिये। ब्याहका यह नतीजा तो सबके लिअे है ही। अिसमें दुःख क्या और आश्चर्य क्या? रामदासको भी मैंने कोअी अुलाहना नहीं दिया। अैसे मामलोंमें अुलाहना क्या कर सकता है? सब अपनी शक्तिके अनुसार संयम पालें। संयमकी यह बात भी अभी अिधर-अिधरकी है। वरना लोग तो अपनी अिच्छाके अनुसार भोग भोगते ही आये हैं। ठक्करबापा अिस समय मेरे साथ नहीं हैं; १५वींको मिलेंगे। आजकल मल्कानी मेरे साथ हैं। वह तो खूब काम कर रहे हैं। और सब तो करते ही हैं। चंद्रशंकरकी तबियत ठीक ही रहती है। ओम, किसन बराबर अपनी तन्दुरुस्तीको सँभालते हैं। ओम भरसक मेहनत करती है। बहुत भोली और सरल है। किसन भी अैसा ही है। सुरेन्द्रको ताक़त आ गअी है। आन्ध्रदेशकी यात्रा ३री तारीखको पूरी होती है। अुसके बाद मैसूर जाना होगा। जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ धाँधली तो रहती ही है। परेशानी भी रहती है। मुझे तो सब सँभाल लेते हैं, अिसलिअे परेशानी कम मालूम होती है। छोटी-से-छोटी बातका

खयाल मीराबहन रख लेती है, अिसलिअे यात्रामें मुझे तकलीफ रहती ही नहीं। तू मुलाक़ात छोड़े तो मुझसे हर हफ्ते पत्र पायेगी। मैं हर हफ्ते प्रवचन भेजता रहूँगा। तू दूसरी बहनोंसे मिल सकती है, अिससे सतोष मानना। लेकिन जैसा तेरी मर्जीमें आये, करना। तू मुलाक़ात चाहेगी, तो मिलने आनेवाले तो बहुत तैयार हो जायँगे, चाहेंगे भी। जान-बूझकर मुलाकातें कम रखनेका रिवाज डाला है। लेकिन तू जो चाहे, सो बिना सकोचके लिखना। जानकीबहनकी तबियत ठीक है। अुनके रामकृष्णके टॉन्सिल कटवानेकी बात मैं शायद तुझे लिख चुका हूँ। कमला अब खाना लेने लगी है। किशोरलालको बुखारने अभी छोड़ा नहीं, लेकिन चिन्ताका कारण नहीं। मेरा मौन आजकल रविवारकी रातको शुरू होता है, अिसलिअे सोमवारकी रात तक बोलना नहीं रहता। आज रातको ९–१० बजे मौन टूटेगा। और अुस वक्त किसीसे बोलनेका शायद ही कोअी काम पड़े, क्योंकि फिर तो सोनेका समय हो जायगा। सुबह तीन बजे अुठना रहता है। ब्रजकृष्णका बुखार अब अुतर गया है। ताकत आनी बाकी है। हेमीबहन गुज़र गअी है।

अब प्रवचन :

पिछली बार भक्तके लक्षण लिखे थे। यह भी सूचित किया था कि सेवाके बिना भक्ति नहीं होती। अिस बार सेवा कैसे की जाय, सो लिखता हूँ। क्योंकि लोग अकसर यह सवाल पूछते हैं। कुछ कहते हैं, सेवा अमुक स्थितिमें ही हो सकती है। कुछ कहते है, अमुक अभ्यास करने पर ही सेवा हो सकती है। यह सब भ्रम है। अितना तो पिछले हफ्ते ही लिख चुका था। आदमी किसी भी हालतमें रहता हुआ सेवा कर सकता है। हमारे पास जितनी भी शक्ति हो, सो सब हम कृष्णार्पण कर दें, तो हमें पूरे गुण (नम्बर) मिल जायँ। जिसकी शक्ति करोड़ देनेकी है, पर जो आधा करोड देता है, अुसे ५० गुणसे ज्यादा नहीं मिलेंगे। लेकिन जिसके पास अेक पाअी है, और जो वह पाअी दे डालता है, अुसे सौमेंसे सौ नम्बर मिलेंगे। अिसलिअे तुम वहाँ रहनेवाली बहनों और तुम्हारे सम्पर्कमें आनेवाली बहनों या अफसरोंके साथ अच्छा व्यवहार करो, तो कहा जायगा कि तुमने सेवाधर्मका पालन किया। अफसरोंके साथ

सेवाभावसे बरतनेका मतलब है कि कभी अनका बुरा न चाहना, अनके साथ विनयका पालन करना, अन्हें धोखा न देना। नियमोंका पालन करना, और तुम्हारे सम्पर्कमें आनेवाली गुनाहोंके लिअे सज़ा पाअी हुअी बहनोंके साथ सगी बहनका-सा व्यवहार करना। अन पर तुम्हारे प्रेमकी छाप पड़े, वे तुम्हारी पवित्रताको पहचानें, तो वह भी सेवाधर्मका पालन कहा जायगा। दोनोंमें हेतु अच्छा होना चाहिये। स्वार्थके कारण या डरकी वजहसे जो अच्छा व्यवहार किया जाता है, वह सेवामें शुमार नहीं होता। अेक काम अेक आदमी स्वार्थ साधनेके लिअे करता है और दूसरा परमार्थकी दृष्टिसे करता है, सो तो हम भी अकसर देखते ही हैं। जहाँ अीश्वरार्पण भाव है, वहाँ स्वार्थको कोअी स्थान ही नहीं। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज़ अपनी शक्ति बढ़ाता जाता है। वह अभ्यास करता है, अुद्यम करता है, सो भी सेवाके विचारसे ही। अिस प्रकार जो सेवापरायण रहता है, अुसके हँसनेमें, खेलनेमें, खानेमें, पीनेमें भी सेवाभाव ही भरा रहता है। यानी अुसके सब कामोंमें निर्दोषता होती है। अैसे भक्तोंको परमात्मा सब आवश्यक शक्ति दे देता है। अिससे सम्बन्ध रखनेवाले तीन श्लोक स्त्रियोंकी प्रार्थनामें हैं, सो तुम्हें याद होंगे। ये रहे वे श्लोक :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

अिनका अर्थ 'अनासक्तियोग' में देख लेना। ये श्लोक ९वें, १०वें अध्यायोंमें मिलेंगे। याद रहे कि गीताजीको हम अपने अमलमें लानेके लिअे पढ़ते हैं। यह समझना कि अूपर मैंने जो लिखा है, सो सब गीताजीके आधार पर लिखा है।

बापूका सबको आशीर्वाद

५

१३-२-'३४

बा,

यह पत्र ट्रेनमें लिख रहा हूँ। तेरा पत्र मिला है। काम अितना था कि मंगलवारको लिख न सका। आज गुरुवार है। तू जो तेरी मर्जीमें आवे वह काम मुझे सौंपना। जो चाहे सो सवाल पूछना, मैं अुसे पूरा करूँगा: कोशिश तो करूँगा ही। तूने हरिलालके बारेमें पूछा है। वह पांडुचेरी गया था। वहाँ भी पैसोंकी भीख माँगकर खूब शराब पीता था। कुछ पैसे मिले भी। आजकल कहाँ है, पता नहीं। अुसका यों ही चलेगा। अीश्वर जब अुसे सुबुद्धि दे, तब सही। अिसमें हमारे पाप-पुण्य भी तो काम करते ही हैं न? हरिलालके गर्भके समय मैं कितना मूढ़ था? जैसा मैंने और तूने किया होगा, वैसा ही हमें भरना होगा। अिस तरह बच्चोंके आचरणके लिअे माँ-बाप जिम्मेदार हैं ही। अब तो हम यही कर सकते हैं कि हम शुद्ध बनें। सो वैसी कोशिश हम दोनों कर रहे हैं, और अुससे हम संतोष मानें। हमारी शुद्धिका प्रभाव जाने-अनजाने भी हरिलाल पर पड़ता ही होगा। अिधर मनुका पत्र नहीं, लेकिन जमनादासने अुसकी खबर दी थी। सुशीलाको लिखूँगा। पुरुषोत्तमकी सगाअी हरखचंदकी लड़कीके साथ हो गअी है। पुरुषोत्तमकी तबियत अभी अच्छी नहीं कही जा सकती। रणछोड़भाअीके भाअीकी पत्नी गुजर गअी हैं, अिससे मोतीबहन अुदास रहती हैं। अुनकी जबाबदारी बढ़ी है। अम्बालालभाअी और मृदुला मुझसे मिल गये। अम्बालालभाअी और सरलाबहन विलायत जा रहे हैं। तीन-चार महीने वहाँ रहेंगे। देवदास-लक्ष्मी ठीक हैं। क्या लक्ष्मीको बालकोंका बोझ अुठाना कठिन मालूम होता है? रामदास-नीमु ठीक है। अुन दोनोंको तेरे पत्रकी नकल भेजता हूँ। असल पत्र मणिलालको भेज रहा हूँ। नकल वल्लभभाअीको भी भेजी है। वे भी चिन्ता करते हैं। माधवदासका अभी तक कोअी जवाब नहीं आया। मथुरादास मेरे साथ हैं। अेक-दो दिन रहकर बम्बअी जायेंगे। अेस्थर मेनन विलायतसे आ गअी हैं। वह मुझे मिल गअीं। मिस लेस्टर लंका गअी हैं। कल मद्रासकी यात्रा समाप्त करके राजाजी चले गये। वे दिल्ली जायेंगे सही।

अमतुस्सलामको अभी कमज़ोरी बाक़ी है, अिसलिअे अुसे मद्रास छोड़ आया हूँ। राजाजी अुसे सँभालेंगे। तुझे पूनियाँ मिल गअी होंगी। जब खतम हो जायँ, तो फिर लिखना। भेज दूँगा। कुसुमका भाअी जंगबहारमें मर गया, अिसका अुसे काफ़ी दुःख हुआ है। प्यारेलाल कल छूटे। किशोरलाल देवलाली हैं। कुछ ठीक हैं। लक्ष्मीकी प्रसूति बारडोलीमें होगी। मंजुकेशा अुसकी सार-सँभाल रखेगी। मोती या लक्ष्मी भी वहाँ होंगी। नानीबहन झवेरीका ख़ुस तकलीफ़के लिअे ऑपरेशन हुआ है। अब तो काफ़ी खबरें दे दीं न? ९ वीं तारीखको हैदराबादसे चलकर मैं पटना जाअूँगा। राजेन्द्रबाबूने बुलाया है। प्रभावती वहीं है। मुमकिन है कि बिहारमें काफ़ी रहना पड़ जाय।

तुम सब बहनोंको बापूके आशीर्वाद।

६

पेशावर, ७-१०-'३८

बा,

तूने मुझे खूब फ़िकरमें डाल दिया है। तेरी तबियतके बारेमें जितनी फ़िकर मुझे अिस बार रही, अुतनी कभी नहीं रही। आज देवदासका तार मिलने पर मैं बेफ़िकर हुआ। मेरी चिन्ताका कारण तो यह था कि मैंने तुझको दुःखी हालतमें छोड़ा था। मैं अच्छा करने गया और तुझे दुःख हुआ। फिर तो तू भूली, लेकिन मैं कैसे भूलता? बीमार तो थी ही। मालूम होता है, अीश्वरने कृपा की। अब तबियत खूब सुधार लेना। लक्ष्मी, रामू, तारा, सब बिलकुल अच्छे हो गये होंगे? यहाँकी हवा तो बहुत अच्छी है। ठण्ड अभी तो सही जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद।

७

१८-१०-'३८

बा,

अब तो ९ दिन बाक़ी हैं और अीश्वरने चाहा तो मिलेंगे। अुसी दिन सेगाँव चलेंगे। तेरे पत्रमें अेक बात थी, जिसका जवाब देना रह गया है। तूने लिखा है, मैंने चलते समय तेरे सिर पर हाथ तक न

रखा। मोटर चली और मैंने भी महसूस किया। लेकिन तू दूर थी। अब भी तुझे बाहरकी निशानी चाहिये क्या? यह क्यों मान लेती है कि मैं बाहर दिखाता नहीं, अिसलिअे मेरा प्रेम सूख गया है? मैं तो तुझसे कहता हूँ कि मेरा प्रेम बढा है और बढता जाता है। अिसका यह मतलब नहीं कि पहले कम था। लेकिन जो था, वह रोज अधिक निर्मल बनता जाता है। मै तुझे केवल मिट्टीकी पुतली नहीं समझता। और क्या लिखूँ? अिसका मतलब न समझी हो तो देवदास समझायेगा। लेकिन जिस तरह अमतुल, लीलावती वगैरा बाहरी चिह्न चाहती है, अुसी तरह तू भी चाहे, तो मैं दूँगा।

बापूके आशीर्वाद।

*　　　*　　　*

[आगाखान महलसे लिखे गये बा के पत्रोंके कुछ नमूने]

१

२६–५–'४३, सोमवार

चि० काशी,

तुम्हारे दोनों कार्ड मिले। पढकर आनद हुआ। सबकी अपेक्षा अेक तुम्हारा पत्र नियमित आता है। पढकर खूब ही आनन्द होता है। ता० १४ का पत्र ठेठ आज मिला। यानी पत्र बहुत देरमे मिलते हे। वहाँ सब अच्छे है, जानकर खुशी हुअी। किशोरलालभाअीकी तबियत अच्छी है, यह अेक खुश होने जैसी बात है। अिससे पहले मेरी सहीवाला पत्र तुम्हे मिला है या नहीं? आर्यनायकमूजी नागपूरसे आ गये, अिसलिअे अुनको और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो, तो प्रभुको और अबाको मेरे आशीर्वाद लिखना। कल लक्ष्मीका पत्र था। लिखती है कि कभी-कभी अबाका पत्र आता है। और सब यहाँ मजेमे है। मेरी तबियत अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबियत अच्छी होगी? बचु मजेमे होगा? यहाँ प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हूँ। चि० कहाना क्या लिखता रहता है? शाक तो सभी थोड़ा-थोड़ा काटते है। कहना कि थोडा तू भी काट। भसालीभाअीके पास पढता है या नहीं? बढअीका काम करने जाता है या नहीं? वैसे,

मेरी राख तो आयेगी, पर मैं कैसे आअूँ? चि० कहानासे कहना, वह सबसे हिलमिलकर रहे। लीलावतीसे कहना, हमें अुसका संदेसा मिल गया है। कहते हैं कि जो तुझे अच्छा लगे, कर। वैसे, मुझे तो लगता है कि तू स्कूलमें भरती हो जा। यह तो लम्बा रास्ता है। छगनलालको आशीर्वाद। लीलावती, गोमतीबहन, आनंद, बचु वगैरा सबको और सब आश्रमवासियोंको मेरे आशीर्वाद। कृष्णचंद्रजी, जैसे बने वैसे कहानाको अच्छी तरह रखना। तिस पर अुसे अच्छा न लगे तो भेज देना। नागपुरमें सब बहनोंको आशीर्वाद लिखना।

बा के शुभ आशीर्वाद, बापूजीके शुभ आशीर्वाद।

२

२-८-'४३, सोमवार

चि० काशी,

तुम्हारा पत्र मिला था। पढ़कर आनन्द हुआ। वहाँ सब अच्छे हैं, जानकर खुशी हुअी। बचु, आनन्द, सब मौज करते होंगे? बारिश तो यहाँ खूब ही है, वहाँ भी होगी। काठियावाड़में तो अच्छी बारिश हुअी। पत्र लिखो तो दुर्गाको, बाबलाको और दूसरे सबको मेरे आशीर्वाद लिखना। छगनलालको आशीर्वाद। लोकी जैसे तुम्हारे वहाँ होती है, वैसे हमारे यहाँ भी खूब ही होती है। चि० मनु मज़ेमें है। मेरी और बापूजीकी तबियत अच्छी है। मुझे खाँसी है, और तो सब ठीक है। खंडू है या गया? मणिबाअी है या नहीं? कल शंकरन्‌का पत्र था। लीलावती गअी। रसोअी कौन सँभालता है? आज अमावस है। कलसे श्रावण महीना लगेगा। अब सब वार-त्योहार आयेंगे। अगले रविवारको 'वीरपसली'* है। जेलमें सबको आशीर्वाद। मनोज्ञा, कृष्णदास, प्रभुदास,

---

* वीरपसली - अेक त्यौहार है जो राखीसे पहले किसी रविवारको मनाया जाता है। तब भाअीकी तरफसे बहनको कुछ भेंट दी जाती है।

अंबादेवी सबको मेरा आशीर्वाद लिखना। अब तो लीलावतीके बिना सूना मालूम होता होगा?

विनोबाके पत्र कभी-कभी आते हैं। बालकोबाको आशीर्वाद। बस यही।

बा के और बापूजीके आशीर्वाद।

३

९-८-'४३, सोमवार

चि० काशी,

ता० २२-७-'४३का तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। बारिश और हवा वगैराको देखते हुअे मेरी तबियत अच्छी है। खाँसी आती है। दुर्गाके समाचार जाने। वहाँ सब मजेमें हैं, जानकर आनन्द हुआ। अुसको और बाबलाको और दूसरोंको भी मेरे शुभ आशीर्वाद। वैसे, मुझे तो लगता है कि अुसे सेवाग्राममें अच्छा नहीं लगेगा, अिसलिअे वहीं रहेगी। जहाँ रहे, वहाँ सुखी रहे, तो बस है। हमने सुना था कि सावित्री फिरसे मन्दिरमें गअी है। आश्रममें सबको आशीर्वाद। दूसरे, मेरी पेटी खोलना और अुसमें चार-पाँच साड़ियाँ हैं, अुनमेंसे दो काली किनारकी हैं, सो फूफीजीको और कोअी चार गज़का टुकड़ा है, वह भी फूफीजीको भिजवा देना। और दूसरी दो लाल किनारकी हैं, अुनमेंसे अेक रामीको और अेक मनुको भेज देना। और मेरी पेटीमें गोरखपुरकी बड़ी गीता है, और आल्मारीमें लाल किनारका चादरा है, सूती है, सो शान्तिकुमारके पास भिजवा देना, तो वह यहाँ भेज देंगे। अब बापूजीका जन्मदिन आयेगा। अिसलिअे फूफीजीको और लड़कियोंको कुछ देनेकी मेरी अिच्छा है। अिसीलिअे यह लिखा है। दूसरे, अेक खाकी रंगका टुकड़ा भी है, वह भी रामीको दे देना। अिनके सिवा मेरे कुछ जाकट हों, और तुम्हें देने-जैसे लगें, तो दे देना। लाल किनार और बड़ा अर्ज जिसका है, वह रामीको देना। मेरा बाँहोंवाला भूरे रंगका स्वेटर है, वह भी भेज देना। डॉ० मनुभाअी और हीराबहनको आशीर्वाद।

आज तो 'वीरपसली' है। तुमने भी मनाअी होगी?

बा के और बापूके आशीर्वाद।

हमारी बा

भाग दूसरा

वात्सल्यमूर्ति बा

१

प्रथम दर्शन

पूज्य कस्तूरबाका दर्शन मैंने पहली बार सन् १९२०में श्रीमती सरलादेवी चौधरानीके घर लाहौरमें किया था । मेरे भाअी (प्यारेलालजी) गांधीजीके साथ हो गये थे । अिससे मेरी माँ दुःखी थीं । वे अपने लड़केको वापस लाने गांधीजीके पास गअी थीं । गांधीजी बहुत काममें थे, अिसलिअे माताजी दुपहर-भर पूज्य कस्तूरबाके पास बैठी रहीं । जी भरकर बातें कीं । गांधीजीने अुन्हें शामका वक्त दिया था । लेकिन अिस बीच तो अुनका काफ़ी हृदय-परिवर्तन हो चुका था । अुस दिन दुपहर-भर पूज्य कस्तूरबाके साथ बातें करनेके बाद माताजीको लगने लगा था कि “आखिर ये भी तो मेरे जैसी ही अेक स्त्री हैं न? ये अितना त्याग कर सकती हैं, तो मेरा लड़का भी देशकी सेवामें भले ही अपना कुछ समय दे।” अिसलिअे अुन्होंने गांधीजीसे कह दिया: “आप चाहे चार-पाँच साल तक मेरे लड़केको अपनी सेवामें रखिये, लेकिन बादमें मुझे मेरा लड़का लौटा दीजिये। मेरे पति नहीं हैं । यह लड़का ही मेरा आधार है।”

अुन दिनों मैं पाँच-छह सालकी थी । माताजीके साथ बात करती हुअी बा का वह चित्र आज भी मेरी आँखोंके सामने खड़ा होता है । माताजी बा पर मुग्ध हो गअी थीं । गांधीजीने तो माताजीको खुद विदेशी कपड़े पहनने और मुझे भी पहनानेके लिअे और घर व दुनियाके प्रति अितनी ममता रखनेके लिअे अेक मीठा अुलाहना भी दिया था । मगर बा ने अुनके साथ पूरी हमदर्दी दिखाअी थी । आपबीती सुनाकर बदलते हुअे ज़मानेके साथ अुन्हें अपने विचारोंको भी बदलनेकी सलाह दी थी । माताजी कअी दिनों तक बा की ही बातें किया करती थीं । बा ने अितना

बडा त्याग सिर्फ बापूजीके प्रति अपनी वफादारी अदा करनेके लिअे ही किया था, अिसका माताजी पर गहरा असर पड़ा था। बा की सहानुभूतिसे अुनमें स्वय भी त्याग करनेकी शक्ति आ गअी थी। माताजीने यह भी देखा कि बा अुन्हींकी तरह 'माँ' थीं। अुनमे माँका अितना प्रेम देखकर माताजीको सतोष हुआ। अिस विचारसे कि मेरे लड़केकी सार-सँभाल अेक 'माँ' ही कर रही है, माताजीके लिअे अपने पुत्रके वियोगको सहना जरा आसान बन गया।

२

प्रथम परिचय

सन् १९२० और १९२९के अरसेमे मुझे कभी-कभी बा के और बापूजीके दर्शन हो जाया करते थे। बा हमेशा प्रेमसे पेश आती थीं। १९२९की गर्मियोंमे मुझे बा के कुछ अधिक निकट सपर्कमे आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे भाअी मुझे बहुत समयसे आश्रममे बुला रहे थे। मैं तो हमेशा तैयार ही थी, लेकिन माताजी अकेली लड़कीको घरसे बाहर भेजना पसन्द नहीं करती थीं। भाअीका आग्रह था कि अगर सचमुच ही मुझे कुछ सीखना हो, या नया अनुभव पाना हो, तो मुझको अकेले ही सफर करना चाहिये। आखिर मेरे कॉलेजमे दाखिल होनेके बाद माताजीने मुझे अकेले जानेकी अिजाजत दी। भाअी किसी कामसे बापूजीके साथ आगरा आये हुअे थे। वे दिल्ली आकर मुझे ले गये। रेलके चौबीस घंटेके सफरके बाद हम लोग अहमदाबाद पहुँचे। मै पहली ही दफा माताजीसे अलग हुअी थी, अिसलिअे मन कुछ अुदास था। मगर साथ ही नअी जगह और नये प्रकारके जीवनको देखनेकी अुत्सुकता भी खूब थी।

आश्रमके बारेमे मैने जो कुछ पढा और सुना था, अुसकी मुझ पर गहरी छाप पडी थी। मैं किसी देवलोकमे जा रही हूँ, और मेरे-जैसे तुच्छ व्यक्तिको बापूजीने वहाँ कुछ दिन रहनेकी अिजाजत दी है, अिस विचारसे मेरा हृदय कृतज्ञतासे गद्‌गद हो रहा था। जब भाअीने मुझे ट्रेनमेसे

साबरमती आश्रमकी दूर पर टिमटिमाती हुअी बत्तियाँ दिखाअीं, तो मैं रोमांचित हो अुठी।

ट्रेनसे अुतरकर हम घोड़ागाड़ी पर सवार हुअे और आश्रम पहुँचे। रात काफ़ी बीत चुकी थी। मैं थकी भी थी। अिसलिअे गाड़ीमें ही सो गअी। अेकाअेक गाड़ी अेक छोटेसे बरामदेके सामने आकर खड़ी हो गअी। हम आश्रममें पहुँच चुके थे। बादमें मुझे पता चला कि वह स्व० मगनलाल गांधीके घरका बरामदा था। जबसे मगनलालभाअीकी मृत्यु हुअी थी, बापू दिनमें अुनके घर बैठकर ही अपना सारा काम करते थे और रात 'हृदयकुंज' (बा का घर) में जाकर सोते थे। बापूजी हमसे अेक दिन पहले आश्रममें आ चुके थे। जब हम पहुँचे, सब लोग सो रहे थे। अकेले रामदासभाअी जागते थे। वे अुसी बरामदेमें सोते थे। मैं और भाअी भी वहीं बरामदेमें फ़र्श पर बिस्तर बिछा कर सो गये। ज़मीन पर सोनेका यह मेरा पहला ही तजरबा था। अुस रात कुतूहल और घबराहटके कारण मैं शायद ही कुछ देरको सो पाअी हूँगी।

सुबह चार बजे प्रार्थनाकी घंटी बजी। भाअी मुझे बापू और बा के पास ले गये। बापूजीने रास्तेका हाल पूछा और अगले दिनसे बा के पास ही अपने बरामदेमें सोनेकी सूचना की।

प्रार्थनाके बाद बा मुझे अपने कमरेमें ले गअीं। कमरेमें सामान बहुत कम था, मगर हरअेक चीज़ क़रीनेसे रखी थी। कहीं भी गन्दगी या कचरेका कोअी निशान न था। अेक छोटे-से स्टोव पर चाय-कॉफी बनानेके लिअे पानी अुबलनेको रखा था। बा ने बड़े प्रेमसे मुझको और भाअीको नाश्ता कराया। यहाँ मैंने पहली ही दफ़ा बा के हाथों कॉफी पी। जितने दिन मैं आश्रममें रही, बा मुझे अपने साथ ही नाश्ता कराती थीं। मुझे अपने घरकी और माताजीकी याद बहुत सताया करती थी। मैं माताजीके साथ ज़िद करके न आअी होती, तो शायद अेक ही दो दिनमें वापसी गाड़ीसे घर लौट जाती। लेकिन अब तो किसी भी तरह छुट्टियाँ यहाँ बितानी थीं। लोग सब नये थे। मैं अुनकी भाषा नहीं समझती थी। मुझे लगता था कि ये लोग मुझसे बहुत अूँचे हैं। अिसलिअे मारे भयके मैं किसीसे बात भी नहीं करती थी। लेकिन जब मैं बा के

पास जाती, मेरा डर बहुत कम हो जाता। वे माताजीकी भाँति ही मुझे प्रेमसे खिलातीं-पिलातीं और बात-चीत करती थीं। अुन्होंने कभी अैसी कोअी बात नहीं कही, जिससे मुझे लगता कि मै कितने महान् व्यक्तिके पास बैठी हूँ। वे माँ थीं और अुनके आसपास माताका प्रेमभरा वातावरण हमेशा ही बना रहता था। मैं सारा दिन नाश्तेके समयकी ही राह देखा करती थी।

आश्रममे सुबह सब बहने अनाज साफ करने, रोटी बनाने, और शाक वगैरा काटनेके लिअे जाती थीं। मैं भी वहाँ जाती। अकसर बा भी वहाँ मिलतीं। वे सबके साथ बैठकर बराबरीसे अपने हिस्सेका काम करतीं। अुनके चलने, फिरने और काम करनेमे आश्चर्यजनक स्फूर्ति थी, और लगभग अखीर तक अुनकी यह स्फूर्ति कायम रही। बीमारीके दिनोंमे मुझे अुनसे अुनकी अिस स्फूर्तिके लिअे और आराम न करनेके लिअे कितनी ही दफा झगड़ना पड़ा है।

मैंने देखा कि बा खूब काता करती थीं। वे बापूजीके पास बहुत कम बैठी नजर आती थीं। फिर भी वे सारा समय अिस बातकी निगरानी रखती थीं कि किस वक्त कौन बापूजीकी शारीरिक सेवा करनेवाला है, और वह वक्त पर पहुँचा है या नहीं। अेक रोज मैंने देखा कि दुपहरकी जलती धूपमे बा साबरमती आश्रमके रसोअीघरकी ओर जा रही है। यह जगह अुनके अपने घरसे काफी दूर थी। पूछने पर पता चला कि वे भाअीको बापूजीके पैरोंमे घी मल देनेके लिअे ढूँढ रही थीं। बापूजीके सोनेका वक्त हो चुका था और भाअी अभी पहुँचे नहीं थे। मैंने कहा: "मुझे काम बताअिये, मै कर दूँ।" अिस पर बा बोली: "नही, प्यारेलालको बापूकी सेवाका अवसर खोना अच्छा नहीं लगेगा। वही आकर करेगा। तुम अुसे ढूँढ लाओ। खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना!" यहाँ फिर माँ बोल रही थी: "खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना!"

अुन दिनों मुझे कपडे धोना नहीं आता था। कुअेसे पानी खींचनेकी मेहनत बचानेके लिअे मै नदी पर चली जाया करती थी और पानी साफ हो या मटमैला, अुसीमे जैसे-तैसे अपने कपड़े धो लाती थी। नतीजा यह हुआ कि मेरे सारे कपड़े मिट्टीके रंगके हो गये। और किसीको तो अिन बातोंकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत नहीं थी, मगर बा की आँखसे यह

छिपा न रहा। अुन्होंने मुझे समझाया और बताया कि कपड़े किस तरह धोने चाहियें। भाअीसे कहा कि वे मेरी मदद करें। बा मेरे कपड़े किसीसे धुलवा देनेको तैयार थीं, मगर मैं जानती थी कि आश्रममें तो सारा काम हाथ ही से करना चाहिये, अिसलिअे किसीसे नहीं धुलवाये। मैंने खुद ही कुअें पर जाकर धोना शुरू कर दिया। कुअें पर अक्सर मुझे कोअी न कोअी पानी खींच दिया करता था। मुमकिन है कि अिसमें भी बा का ही हाथ रहा हो।

मेरी छुट्टी पूरी होनेको आयी। अेक दिन बापूजी अपने बरामदेमें बैठे अकेले कुछ काम कर रहे थे। अुस वक़्त वहाँ बरामदेमें मेरे सिवा और कोअी नहीं था। अितनेमें कुछ दर्शक आये। अुन्होंने बापूजीको प्रणाम किया, कुछ भेंट भी दी और आश्रम देखनेकी अिच्छा जताअी। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा कि मैं अुनको आश्रम और आश्रमकी गोशाला वग़ैरा दिखा दूँ। फिर अेकाअेक अुन्हें कुछ खयाल आया और अुन्होंने मुझसे पूछा: "तूने खुद यह सब देखा है?" मुझे कहना पड़ा: "नहीं।" बापूने किसी औरको बुलाकर दर्शनार्थियोंको अुनके साथ भेज दिया। मुझे अेक भाषण सुननेको मिला: "कोअी अंग्रेज़ लड़की अितने दिनों तक यहाँ रहनेके बाद अिस तरह अपने आसपासकी चीज़ोंसे नावाक़िफ़ न रहती। मगर हमारे लड़कों और लड़कियोंको तो आजकल किताबोंकी ही पड़ी है। बी० अे० पास कर लिया, तो जीवन सफल हो गया; और कहीं दुर्भाग्यसे नापास हो गये, तो बस खतम! सामान्य ज्ञानकी तो अुन्हें कोअी परवाह ही नहीं है।" मैं बहुत शरमिन्दा हुअी। अक्सर मैं किताब लेकर बैठती थी। मगर अिसका कारण यह था कि मेरे पास दूसरा कुछ करनेको नहीं था। सब कुछ देखनेकी अिच्छा तो थी, लेकिन संकोचवश मैं किसीसे कुछ पूछती नहीं थी। और यों दिन बीत रहे थे। बा को पता चला। वे फ़ौरन अपने आप मेरी कठिनाअी समझ गअीं। अुन्होंने भाअीसे और बापूसे कहकर मुझे आश्रम और अहमदाबाद शहर दिखानेका बन्दोबस्त करवा दिया। अिस तरह आखिर मुझको सब जगहें देखनेका मौक़ा मिला।

कुछ दिन बाद बापूजीके दौरे पर जानेका समय आया। मेरी भी छुट्टियाँ खतम हो रही थीं। मुझे वापस भेज देनेकी बात हुअी, लेकिन

मैंने तो कभी अकेले सफर किया ही नहीं था। मुझको अकेले दिल्ली कैसे भेजा जाय? आखिर बापूजीने मुझे अपने साथ ले जानेका निश्चय किया। आगरा अुनके रास्तेमे पड़ता था। वहॉसे मुझे दिल्ली भेजना आसान था। अहमदाबादसे हम लोग बम्बअी गये। वहॉ मैंने ट्रेनमेसे पहली ही दफा समुद्रके दर्शन किये। आश्रममे मेरी चप्पले खो गअी थी। सोचा था, बम्बअीसे ले लूँगी। मगर वहॉ अुस दिन दूकाने बन्द थीं। बम्बअीसे बापूजी भोपाल गये। गाडीसे अुतरकर पुल पार करते समय बा ने देखा कि मैं नगे पॉव चल रही हूँ। मुकाम पर पहुँचते ही अुन्होंने अपने पासकी नअी चप्पलें, जो कुछ ही दिन पहले अुनके लिअे आयी थीं, निकालीं और मुझे पहनाअीं। अिस प्रकार बा के साथ रहते हुअे मुझे कदम-कदम पर अुनकी मृदुलताका और अुनके मातृ-प्रेमका अनुभव होता रहा। मुझे मुक्तकण्ठसे बा की स्तुति करते सुनकर किसीने कहा: "तुम बा के पास अधिक समय रहोगी, तो तुम्हे पता चलेगा कि वे गुस्सा भी कर सकती है।" लेकिन मैं अिसे मान नहीं सकी।

बा को अंग्रेजी बहुत नहीं आती थी। मगर अपनी थोड़ी-सी अंग्रेजीसे भी वे कितनी अच्छी तरह अपना काम चला लेती थीं, अिसका अुन दिनोंका अेक अुदाहरण मुझे याद आता है। भोपालमे बापूजी नवाब साहबके मेहमान थे। बा को शहदकी जरूरत थी। अुन्होंने अेक चुस्त-से अमलदारको, जो हम लोगोंके लिअे तैनातमे था, पूछा: "आप हिन्दी जानते है?" बा की मशा हिन्दीसे बोलचालकी हिन्दुस्तानीकी थी। मगर मुस्लिम रियासतके अेक मुसलमान अफसरको हिन्दीसे क्या वास्ता होता? अुन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानीमे जवाब दिया: "जी नहीं।" बा बोलीं. "अंग्रेजी जानते है?" जवाब मिला: "जी हॉ।"

अिस पर बा ने कहा: "Bees, flowers, honey" और वह अफसर झट जाकर शहदकी बोतल ले आया।

नवाब साहबकी मॉने बा को मिलनेके लिअे बुलाया था। मैं बा के साथ थी। बेगमोंसे मिलने और अुनके साथ बातचीत करनेमे बा को किसी क़िस्मका सकोच या कठिनाअी मालूम नहीं हुअी। धन-दौलतकी और राजपाटकी चमक-दमक अुन्हे ज़रा भी चकाचौंध नहीं कर पाती थी।

अुनके मन अिनकी कोअी क़ीमत न थी। वे अच्छी तरह जानती थीं कि अुनके पतिका दर्जा राजा-महाराजाओंसे कहीं बढ़-चढ़कर था। अुन्होंने बेगमोंको खादीका पैग़ाम सुनाया। अुनकी बातें सुननेवालेको यह कल्पना भी नहीं आ सकती थी कि वे लगभग अेक निरक्षर महिला थीं। अुनका अक्षरज्ञान चाहे कम रहा हो, मगर अुनका साधारण ज्ञान, मनुष्य-स्वभावका और मानव-जीवनका अुनका ज्ञान, बहुत गहरा था।

आगरेसे मैं वापस दिल्ली आअी। कॉलेज खुलनेका वक़्त हो चुका था, अिसलिअे मैं दिल्लीसे लाहौर गअी। लेकिन मेरे दिलमें तो बा का और आश्रमका चित्र खिंच चुका था। वहाँकी स्वतंत्रता और सादगीकी मेरे मन पर गहरी छाप पड़ी थी। अिसलिअे लाहौरका बनावटी जीवन मुझे बहुत चुभने लगा। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अपने बस भर सादा जीवन बिताअूँगी। जब मैं भाअीके साथ आश्रम जा रही थी, माताजीने मुझसे कहा था: "वहाँसे कोअी व्रत वग़ैरा लेकर न आना।" मैंने वचन दिया कि मैं अैसा कुछ नहीं करूँगी। माताजीका अिशारा खासकर खादी पहननेके व्रतकी ओर था। अुन्होंने अुसी साल मेरे कॉलेजमें भरती होने पर मुझे बहुतसे नये कपड़े बनवा दिये थे। वे अुनको ज़ाया करना नहीं चाहती थीं। मैंने आश्रममें खादी पहननेका व्रत तो नहीं लिया था, मगर वहाँसे लौटकर मैं खादीके सिवा दूसरा कपड़ा पहन ही न सकी। मैं खादीके तीन जोड़ कपड़े लेकर आश्रम गअी थी। वापस आने पर मैंने अुन्हींसे कोअी तीन महीने अपना काम चलाया। आश्रममें जाकर मैंने बा से यह सीख लिया था कि खादीके सादे कपड़ोंमें भी खासी अच्छी शोभा आ सकती है। बा हमेशा बहुत सफ़ाअी और सलीक़ेसे कपड़े पहनती थीं। वहाँ मैंने कपड़े धोना भी सीख लिया था। अिसीलिअे मैं रोज अपने हाथके धुले खादीके कपड़े पहनकर ही कॉलेज जाती थी। आखिर माताजीने मुझे मिलके कपड़े पहनानेका आग्रह छोड़ दिया और खादीके नये कपड़े बनवा दिये।

३

बापूसे सूने आश्रममें

सन् १९३०मे भाअीके कहने पर मै फिर आश्रम पहुँची । अुन दिनों गर्मीकी छुट्टियाँ थीं और भाअी और बापूजी दोनों जेलमे थे । आश्रम सूना था । बा अुन दिनों कुछ दिनके लिअे वहाँ आअी थीं । अुस समयकी बा दूसरी ही बा थीं । वे काफी थकी हुअी थीं । देशके दुःखसे दुःखी थीं । मैने सुना कि वे गाँव गाँव घूमकर कार्यकर्ताओं और सेवकोंका अुत्साह बढ़ानेमे लगी थीं । अुनके मुरझाये हुअे चेहरे पर अपूर्व दृढ़ता और आत्म-विश्वास झलकता था । वे अब सिर्फ अेक कोमलांगी माता ही नहीं थीं, बल्कि रणभूमिमे अुतरी हुअी वीरांगना भी थीं । अुनके मनमे हमारी लड़ाअीकी न्याय्यताके और हमारी अंतिम विजयके बारेमे जरा भी शका नहीं थी ।

बापूजीकी निर्णयात्मक बुद्धि पर अुन्हे अपूर्व श्रद्धा थी । वे राजनीति नहीं समझती थीं, मगर बापूको पहचानती थीं । अुनके लिअे यह काफी था । अुनमे हिन्दुस्तानके करोड़ों मूक लोगोंकी मनोवृत्ति प्रतिबिम्बित होती थी ।

आश्रममे आनेके बाद बा साबरमती जेलमे रामदासभाअी, मणिलाल-भाअी और दूसरे कुछ मित्रोंसे मिलने गअीं । जाते समय वे दूसरे कुछ आश्रमवासियोंको और मुझे भी अपने साथ ले गअी । जेलकी कठिनाअियाँ सहते-सहते अुन लोगोंके चेहरे सूख गये थे । यह सब देखकर मेरा जी भर आया — मुझे रुलाअी-सी आने लगी । लेकिन बा ने तो बहुत जेल देखे थे, बहुत कठिनाअियाँ सहन की थीं । वे बिलकुल शान्त रहीं । स्वतत्रताकी वेदी पर बलि चढ़ानेकी अुन्हे अितनी आदत हो गअी थी कि अुनको अपने पतिका, पुत्रोंका या अपना जेल जाना बलिदान-सा मालूम ही न होता था । हजारों लोग जेलोंमे बन्द थे न? अुनके अपने लड़के दूसरोंसे अनोखे थे क्या? यह था अुनका भाव! अुनकी हिम्मत और बहादुरी देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ ।

४

दिखावेसे नफ़रत

१९३०में देवदासभाअी गुजरात (पंजाब) जेलमें थे और भाअी (प्यारेलालजी) साबरमती जेलमें। सारी दुनियाको अपना परिवार बना लेनेके बापूजीके आदर्शको बा ने अपना लिया था। बरसोंसे वे अुस पर अमल करनेकी कोशिश कर रही थीं। देवदासभाअी अुनके लाड़ले लड़के थे, मगर बा साबरमती जेलमें भाअीसे और दूसरे कार्यकर्त्ताओंसे मिलकर अपने लड़केसे मिल लेनेका आनन्द और आश्वासन पा लेती थीं। वे जिन लोगोंको मिलने जाती थीं, अुन्हें अुनसे मिलकर कितना आनन्द होता और कितना आश्वासन व अुत्साह मिलता, सो तो कहनेकी बात नहीं। वे सिर्फ़ अेक बार देवदासभाअीसे मिलने गुजरात आअी थीं। मैं और माताजी अुनके साथ थीं। वहाँसे माताजीके कहने पर वे हमारे गाँवमें, जो गुजरात रेल्वे स्टेशनसे ४ मील आगे है, आअीं। अुस वक्त मैंने देखा कि अितना महान् व्यक्तित्व होने पर भी बा को अपने जुलूस वगैराके दिखावेसे कितनी नफ़रत थी! वे तो भाअीके प्रति अपने प्रेमके वश होकर अुनके घर आअी थीं। मगर लोगोंने अुनका जुलूस निकालनेकी कोशिश की। अुनका हेतु अिस बहाने जनताका अुत्साह बढ़ाना था। लेकिन बा को वह अखरा। अिसे लेकर वे अितनी परेशान हुअीं कि आखिर लोगोंको अपना हठ छोड़ ही देना पड़ा। जनताके प्रेम-प्रदर्शन और स्वागत-समारोहके प्रति बा की अितनी अरुचि देखकर पंजाबवालोंको बहुत आश्चर्य हुआ। हर आदमी अेक ही सवाल पूछता था: "लीडरोंको तो यह सब बहुत अच्छा लगता है। बा क्यों हमें जुलूस निकालनेसे रोकती हैं?"

१९३१की गर्मीकी छुट्टियोंमें मैं फिर आश्रम गअी। अिस बार भी बापूजी वहाँ नहीं थे। कुछ दिनों बाद वे वहाँ आये। मगर आश्रममें न रहे। दाँडी कूचके समय वे यह प्रण करके निकले थे कि जब तक स्वराज्य नहीं मिलेगा, वे वापस आश्रममें आकर नहीं रहेंगे। अिसलिअे

वे विद्यापीठमें ठहरे थे। कुछ दिनों बाद बा भी वहाँ आ पहुँची। अेक अरसेके बाद अुन्हें बापूजीके साथ रहनेका यह मौका मिला था। अिसके दो-चार दिन बाद ही बापू वहाँसे वाअिसरायको मिलने शिमला चले गये और शिमलासे सीधे अुन्हें गोलमेज परिषद्के लिअे विलायत जाना पड़ा। वे बम्बअीसे जहाज पर सवार हुअे। अुन दिनों बा साबरमतीमें ही थीं। अुनके मनमें बापूजीके साथ विलायत जानेका तो क्या, बम्बअी जानेका भी विचार नहीं अुठा। बरसों हुअे, वे अपने पतिको हिन्दुस्तानकी और मानवजातिकी सेवाके लिअे दे चुकी थीं। बापू पर जितना अुनका अधिकार था, अुतना ही दूसरोंका भी। अिस अुसूल पर अमल करनेकी कोशिशमें लगी हुअी बा को यह स्वाभाविक मालूम होने लगा था कि बापूजीके कामकी दृष्टिसे जिसका साथ रहना जरूरी हो, वही अुनके साथ रहे।

गोलमेज परिषद्से लौटनेके बाद बापूजी फिर तुरन्त ही सन् '३२में जेल चले गये। माताजी विलायतसे लौटे हुअे भाअीको मिलने बम्बअी गअी हुअी थीं। वहाँसे वापस लौटते समय जब वे बापूजीको प्रणाम करने गअीं, तो बापूने कहा: "अब वापस क्या जाती है? हमें जेल भेजकर आप भी जेल जाअिये।" बापूजीकी गिरफ्तारी माताजीके सामने ही हुअी। बादमें भाअी पकडे गये। अुसके बाद माताजी भी जेल गअीं। कुछ दिनों तक वे और बा अेक ही जेलमें थीं। माताजी मुझसे कहती थीं कि जेलमें बा बहुत प्रसन्न रहती थीं। जेलकी तकलीफें अुन्हें तकलीफें ही नहीं मालूम होती थीं। यही नहीं, बल्कि अुनकी छायामें रहनेवाले दूसरे कैदियोंका जीवन भी बहुत कुछ सरल और मधुर बन गया था।

१९३५की गर्मीकी छुट्टियोंमें मैं दो-तीन हफ्तोंके लिअे बापूजीके पास वर्धा गअी थी। बापू अुन दिनों मगनवाड़ीमें रहते थे। बा दिन भर अपने काममें लगी रहतीं। अुसी साल नवम्बरमें अपनी परीक्षाके बाद मैं भाअीके साथ फिर वर्धा गअी।

५

बा की सार-सँभाल

अुन दिनों देवदासभाअीकी तबियत अच्छी न थी। बा ने जिस धीरज और समझसे अुस बीमारीमें देवदासभाअीकी सेवा की, वह अद्भुत थी। १९३६की गर्मियोंमें बा और भाअी देवदासभाअीको लेकर शिमला गये। भाअी कहते थे कि किस तरह बा अपने साधारण ज्ञान और अपनी सहज बुद्धिके ज़रिये बड़े-बड़े डॉक्टरोंसे भी ज़्यादा काम कर लेती थीं। आखिर अुनकी मेहनत फली। देवदासभाअी अच्छे हो गये। बा वापस बापूके पास पहुँच गअीं।

१९३७के दिसंबरमें बापूजी कलकत्तेमें बीमार पड़े। मैं वहाँसे कुछ दिनोंके लिअे अुनके साथ वर्धा आअी। अिसके बाद कुछ अैसी घटनायें घटीं कि थोड़े दिनोंके बदले मैं बरसों अुन्हींके पास रह गअी। अब मुझे बा का और भी निकट परिचय हुआ। वहाँ पहुँचते ही बा ने मुझे अपने चार्जमें ले लिया। अुनके पास अेक छोटा सा कमरा, गुसलखाना और बरामदा था। वहीं अुन्होंने मेरा बिस्तर रखवाया। रात मुझे अपने पास बरामदेमें सुलातीं और सब प्रकारसे सगी माँकी तरह मेरी संभाल रखतीं। शुरूमें सुबह मैं अकसर अपना बिस्तर अुठाना भूल जाती और बा बिना कुछ कहे चुपचाप अपने हाथसे अुठाकर अुसे कमरेके अन्दर रख देतीं। जब मुझे अिसका पता चला, तो मैं बहुत शरमिन्दा हुअी और फिर बिना भूले नियमसे अपना बिस्तर अुठाने लगी। मैं बा का बिस्तर भी अुठानेकी कोशिश करती, लेकिन अकसर बा मेरे पहुँचनेसे पहले ही अपना बिस्तर वगैरा अुठाकर रख देती थीं। मैंने देखा कि बहुत बार वे दूसरोंके रखे हुअे बिस्तरोंको अुठाकर अुन्हें फिर क़रीनेसे रखती थीं। बड़े-बड़े वज़नी गदेलोंको भी अुठानेमें वे बिलकुल आलस नहीं करती थीं। अुन्हें सफ़ाअी और क़रीनेसे अितना प्रेम था कि अव्यवस्था और गन्दगी अुनसे सही नहीं जाती थी। अुनकी नियमितता भी अितनी ही आश्चर्यजनक थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि अेक भी अैसा अवसर आया हो, जब बा कोअी काम करना भूल गअी

हों। अेक बार मैंने अुनकी छोटी पेटी (अटैचीकेस) मेंसे कुछ निकाला। अुसे बन्द करनेकी अेक स्प्रिंग कुछ बिगड़ी हुअी थी। अिसलिअे मैंने अुसे अेक तरफसे ही बन्द करके दूसरीको खुला छोड़ दिया। बा ने देखा, और चुपचाप अुसे बन्द कर दिया। जब दुबारा अुसमेंसे कुछ निकालनेका मौका आया, तो बा कहने लगीं: "जरा यहाँ लाओ, मैं बन्द कर दूँ।" मैंने कहा: "मैं करती हूँ।" बा की आँखें हँस रही थीं — मानो कहती हों: "कहीं भूल तो न जाओगी?"

६

बा की दिनचर्या

बा की तबियत अच्छी नहीं रहती थी। बरसोंसे खाँसी और दमेके कारण अुनका हृदय और फेफड़े कमज़ोर पड़ गये थे। लेकिन अुनको अपने शरीरकी कोअी परवाह नहीं थी। अुनकी स्फूर्ति अद्भुत थी। धीमे-धीमे काम करना या चलना वे जानती ही न थीं।

बा सुबह चार बजे प्रार्थनाके लिअे अुठनेका आग्रह रखती थीं। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा-पौना घंटा फिर सो लेते, मगर बा अुनके अुठनेसे पहले अुनके लिअे नाश्ता तैयार करने या करवानेको चली जातीं। आश्रमवासियोंमें बापूजीकी सेवा करनेकी लालसा तो हमेशा रहती ही थी। अिसलिअे बा अकसर अुनकी सेवाके कामोंको बाँट दिया करतीं। लेकिन किसीको कोअी काम सौंपनेके बाद भी वे खुद सामने खड़ी होकर देखतीं कि सारा काम बराबर हो रहा है या नहीं। सफाअी बराबर रखी जा रही है या नहीं। नाश्ता तैयार करके वे अुसे बापूजीके कमरेमें ले जातीं और खुद पास बैठकर अुन्हें खिलातीं। अिसके बाद वे अिस बातका खयाल रखतीं कि बरतन वगैरा भलीभाँति साफ होते हैं या नहीं। अकसर मैंने देखा है कि किसी लड़कीके साफ किये हुअे बरतनोंको बा ने अपने हाथों फिर साफ किया है। अुनके बरतन हमेशा चमकते रहते थे।

जब बापूजी घूमनेको निकल जाते, बा स्नान वगैरासे निपटकर अपने पूजा-पाठमें लगतीं। वे रोज़ घंटा डेढ़ घंटा रामायण, गीताजी वगैराका पाठ करतीं। फिर रसोईघरमें पहुँच जातीं और बापूजीका खाना तैयार करवातीं; दूसरोंके लिअे बननेवाले खाने पर भी नज़र रखतीं। परोसनेके समय बापूजीको और आसपास बैठे दूसरे मेहमानोंको परोसकर वे बापूके पास ही खाने बैठ जातीं। अुस समय भी अुनकी अेक आँख बापूजी पर रहती। ज्यों ही कोअी मक्खी बापूजीके नजदीक आती, बा का बायाँ हाथ पंखे या रूमालसे अुसे अुड़ा दिया करता। खानेके बाद बा बापूजीके पास आकर बैठतीं और अुनके पैरोंमें घीकी मालिश करतीं। अिसके बाद वे अपने कमरेमें जाकर थोड़ा आराम करतीं और फिर कातने बैठ जातीं। वे रोज़के चारसौ-पाँचसौ तार कातती थीं। कअी बार बीमारीसे अुठनेके बाद कमज़ोरीकी हालतमें मुझे अुनको टोकना पड़ा था। मैं कहती: "बा, आप कातनेकी अितनी मेहनत न किया करें।" लेकिन बा हँसकर टाल देतीं। अुन्हें लगता था कि जो भी बापूजीके लिखने-पढ़नेके और राजनीतिके कामोंमें वे मदद नहीं कर सकतीं, तो भी कातकर वे अुनके कामको आगे तो बढ़ा ही सकती हैं न? और, बापूने ही कहा है न कि "सूतके धागेसे स्वराज्य बँधा है!" अिसलिअे कताअी छोड़ना अुनको हमेशा खटकता था।

शामको वे फिर रसोईघरमें पहुँच जातीं। बापूजीका खाना तैयार करवातीं। दूसरे कामोंकी देखभाल करतीं। फिर सुबहकी तरह बापूजीको भोजन करातीं। वे खुद तो बरसोंसे शामको खाना खाती ही न थीं। सिर्फ़ कॉफी पी लिया करती थीं। अिधर-अिधर अिन अखीरके दो-चार सालसे, अुन्होंने कॉफी भी छोड़ रखी थी, और अुसकी जगह वे दूधमें कुछ मसाले (तुलसी आदि) अुबालकर अुसे लिया करती थीं। शामको जब बापू घूमने निकलते, बा आश्रमके बीमारोंको देखनेके लिअे अुनके पास जातीं, और फिर आश्रमकी दूसरी बहनोंके साथ अकसर खुद भी थोड़ा घूम आतीं। आश्रमसे कोअी आधे फर्लांग पर बापूजी अुन्हें वापस आते हुअे मिलते और वे भी अुनके साथ हो लेतीं। घूमकर लौटनेके बाद शामकी प्रार्थना होती थी। बा पूरी प्रार्थनामें अच्छी तरह भाग लेतीं और रामयण भी गाती थीं। रामायणकी तैयारी वे सुबह नाणावटीजीके

साथ बैठकर पहलेसे ही कर लिया करती थीं। वे सुबह अितने प्रेम और रसके साथ गीता और रामायणका अभ्यास करती थीं कि कोअी विद्यार्थी भी अपनी परीक्षाके लिअे अुससे अधिक ध्यान-पूर्वक तैयारी न करता होगा। शामकी प्रार्थनाके बाद प्रार्थनाके स्थान पर ही बा का दरबार लगता। लगभग सभी बहनें बा के आसपास बैठ जातीं। कोअी पाँव दबातीं, कोअी पीठ। अुस समय वहाँ आश्रमकी सब खबरें कही-सुनी जातीं और अिधर-अुधरकी चर्चाअें होती। आधे-पौने घंटेके बाद दरबार बरखास्त करके बा अपने और बापूजीके सोनेकी तैयारीमें लग जातीं।

अुन दिनों बा के पास रामदासभाअीका छोटा लड़का कनु रहा करता था। बा अुसकी देख-भाल अेक नौजवान माँकी-से अुत्साहके साथ करती थीं और अुसके पीछे काफी मेहनत अुठाती थीं। वे बच्चोंके मनको खूब समझती थीं। नतीजा यह हुआ कि कनु अपनी माँको भूल ही गया। अुसके लिअे अुसकी 'मोटी बा' (बड़ी माँ) ही सब कुछ थी। १९३९में जब बा राजकोटके सत्याग्रहमें शरीक होनेके लिअे चली गअीं, तो बापूजीके लिअे कनुको शान्त रखना असंभव हो गया। अुन्हें आशा थी कि वे अुसे अच्छी तरह सँभाल सकेंगे, मगर वैसा कुछ हो नहीं सका। कनु सारे दिन अपनी 'मोटी बा'को याद करता रहता था। आखिर अेक दिन बापूजीने अुससे हँसते-हँसते कहा: "तू मोटी बा के नामकी माला जप, मोटी बा आकर तेरे सामने खड़ी हो जायँगी।" कनु खुश होकर बोला: "आपो माळा!" (माला दीजिये)। बापूजीने माला दी। वह माला लेकर और आँख बन्द करके 'मोटी बा', 'मोटी बा'के नामका जप करने लगा। कुछ देर बाद रोता-रोता आया और बोला: "मोटी बा तो नहीं आअीं।" आखिर बापूजीको हारकर अुसे अुसकी माँके पास भेज देना पड़ा।

७

बा का त्याग

कल्कत्तेसे बापूजी काफी बीमार होकर आये थे। अुनकी बीमारीकी चिन्ता करते-करते कओी आश्रमवासी तो बहुत घबरा गये थे। मगर बा के पास घबराहट नामकी कोओी चीज़ न थी। जब हम कल्कत्तेसे लौटे, दिसंबरका महीना चल रहा था। सेवाग्राममें खूब ठण्ड पड़ती थी। बापूको बरसोंसे आकाशके नीचे सोनेकी आदत थी, लेकिन अिस समय ठण्डकी वजहसे खूनका दबाव अितना बढ़ जाता था कि डॉक्टरी सलाहके कारण अुन्हें खुलेमें सोना छोड़ना पड़ा। कल्कत्ता जानेसे पहले बापूजी सेवाग्राममें सबके साथ अेक बड़े 'हॉल' के कोनेमें रहा करते थे। अुनकी बीमारीकी खबर सुनकर अुन्हें अेकान्त और शान्ति देनेके खयालसे मीरा बहनने अुनके लिअे अपना कमरा ठीक करवा कर रखा। मगर बापूको वहाँ रहना स्वीकार न था। वे बोले: "मीराने तो वह कमरा अपने लिअे और अपने खादी-कामके लिअे बनाया था। मैं वहाँ कैसे रह सकता हूँ? और मुझसे बिना पूछे अिस तरहका परिवर्तन क्यों किया गया? मैं तो अपने पुराने कोनेमें ही रहूँगा।"

मगर कोनेमें रातको सोया कैसे जा सकता था? दूसरे लोग वहाँ पहलेसे ही सोते थे। अगर बापू वहाँ सोने लगें, तो अुन्हें तकलीफ़ हो। बापू अिसे कभी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। मीरा बहनवाले कमरेमें सोनेके लिअे कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। आखिर बा आगे बढ़ीं। बोलीं: "मेरा कमरा है न?" और, बापू बा के कमरेमें सोने लगे। अुनका कमरा भी छोटा ही था। बापूके साथ अेक-दो जने और भी अुस कमरेमें सोनेको पहुँचे। बा, कनु और मैं बरामदेमें सोने लगे। बा ने अेकबार भी यह नहीं कहा कि "बापू सोयें, तो भले सोयें, लेकिन और किसीके लिअे मैं अपना कमरा क्यों खाली करूँ?" दूसरे दिन सवेरे नाश्ता करते समय बापू कहने लगे: "मैंने खास तौर पर यह घर बा के लिअे बनवाया था, और अब मैं अिस पर कब्ज़ा करके बैठ

गया हूँ। बा को आज तक कभी अलग कोठरी मिली ही नहीं। मेरा और बा का जो कुछ था, सो शुरूसे ही सबके लिअे था। लेकिन अिस खयालसे कि बा के अिस बुढापेमे अुनको थोडा अेकान्त मिल जाय तो अच्छा हो, मैंने अुनके लिअे यह घर बनवाया था। बा ने अिसका अुपयोग भी सिर्फ अपने लिअे कभी नहीं किया। अुन्होंने अिसमे कअी लडकियोंको अपने साथ रखा है। लेकिन मेरे आ जाने पर तो बा को यहाँसे बिलकुल निकल ही जाना पड़े न? मैं जहाँ जाता हूँ, वहीं मेरे रहनेकी जगह धर्मशाला बन जाती है। मुझको यह खटकता है, लेकिन मुझे कहना चाहिये कि बा ने कभी अिसकी शिकायत नहीं की। मैं जो चाहता हूँ, बा से ले लेता हूँ। हर किसीको बा के पास रहने भेज देता हूँ। अिसमे वह हमेशा रजामन्द रही हैं।" बा बापूके पास ही खाट पर बैठी थीं। बापू अुनसे सहज हँसकर बोले: "होना भी तो यही चाहिये न? अगर मियाँ अेक कहे, और बीबी दूसरा, तो जीवन खारा हो जाय। लेकिन यहाँ तो मियाँकी बातको बीबीने सदा माना ही है।" सब हँसने लगे।

अन्दर सोनेसे भी बापूजीके खूनका दबाव ठिकाने नहीं आया। सर्दीके वक्त बहुत बढ जाता था। आखिर डॉक्टरी सलाहसे बापूजीने जुहू जाना स्वीकार किया। अिस पर कुछ लोग तो रोने लगे। "क्या बापूजीकी हालत अितनी खराब है? वे वापस जिन्दा लौटेंगे तो सही न?" लेकिन बा के पास घबराहटका नाम नहीं था। वे आदर्श नर्स बनकर अुनकी सेवामे लगी हुअी थीं। अपना आराम वगैरा सब कुछ भूल बैठी थीं। वे सारा दिन बापूजीके आस-पास रहा करतीं और कहीं भी कोअी काम हो, तो करने या करवानेको तैयार रहतीं। बा जुहू आयीं।

जुहूमे बापू करीब दो महीने रहे। वहाँ अुनकी तबियत खूब सुधर गअी। वे समुद्र-किनारे घूमने जाते। बा अुन दिनों बराबर अुनके साथ घूमने निकलतीं। तबियत सुधरनेके बाद १९३९ के शुरूमे बापू वापस सेवाग्राम आये। वहाँसे वे राजबन्दियोंको छुड़वानेके कामसे कलकत्ता गये। मै, भाअी, महादेवभाअी और कनु सब अुनके साथ थे। बा ने खुशीसे अुनको बिदा किया। जब बापू अच्छे रहते थे, तब बा अुनके साथ रहनेका आग्रह नहीं रखती थीं।

८

जगन्नाथजीके दर्शनोंवाली घटना

कलकत्तेसे बापूजी गांधी-सेवा-संघकी बैठकके लिअे कटक गये। सेवाग्रामसे बा, दुर्गाबहन वगैरा भी वहाँ आ पहुँची थीं। अेक दिन कुछ लोगोंने जगन्नाथपुरी जानेका विचार किया। बा, दुर्गाबहन, लीलावतीबहन, नारायण और दूसरे कुछ लोग रवाना हुअे। देवालयोंके प्रति बा के मनमें हमेशासे ही अपूर्व भक्ति थी। अिसलिअे दुर्गाबहनने और बा ने अन्दर जाकर जगन्नाथजीको प्रणाम किया, प्रदक्षिणा दी और शामको सब लोग वापस आये। जब बापूजीने सुना कि बा और दुर्गाबहन मन्दिरमें गअी थीं, तो अुन्हें बहुत दुःख हुआ। वे बहुत नाराज़ हुअे: "जिस मन्दिरमें हरिजनोंको नहीं जाने दिया जाता, अुसमें हम कैसे जा सकते हैं?" शामको घूमते समय बापूजी बा के कंधे पर हाथ रख कर चले और अुनसे अिस बारेमें बात की। बा ने अेक छोटे बालककी तरह अत्यन्त सरलतासे अपनी भूल स्वीकार कर ली और बापूजीसे क्षमा माँगी। बापूजीका रोष गायब हो गया। अुन्होंने बा से कहा: "अिसमें कसूर तो मेरा ही है। मैं तेरा शिक्षक ठहरा, और मैंने तेरे शिक्षणको अधूरा रहने दिया। फिर तू क्या करे?" कुछ देर बाद महादेवभाअीसे बातें करते हुअे बापूजीने कहा: "बा ने अितनी सरलतासे मेरे सामने अपनी भूल क़बूल की है कि मैं मुग्ध हूँ। अिस घटनासे मुझे ज़बरदस्त आघात पहुँचा है। लेकिन मुझे लगता है कि अिसकी ज़िम्मेदारी बा या दुर्गाकी नहीं, मेरी और तुम्हारी है। अपना दोष तो मैंने कअी बार क़बूल किया है। लेकिन अिस वक़्त तो मुझे तुम्हारी बात करनी है। तुम्हारी और दुर्गाकी तो अेक असाधारण जोड़ी है। तुम परस्पर मित्र हो। तुमने दुर्गाको अपनेसे अितना पीछे क्यों रहने दिया? जिस तरह तुम बाबलाकी शिक्षाके बारेमें सोचते रहते हो, अुसी तरह दुर्गाके बारेमें क्यों नहीं सोचा?" महादेवभाअी बेचारे क्या कहते! अुन्हें अपनी भूल अितनी साफ़ दिखाअी पड़ी कि अुन्होंने बापूको अेक पत्र

लिखा : “मैं आपके पास रहनेके लायक नहीं हूँ। अिसलिअे आप मुझे अपने पाससे चले जानेकी अिजाज़त दें।” मगर बापू यों अुनको छोड़नेवाले थोड़े ही थे। भूले-भटकोंको रास्ते पर लाना ही तो बापूका काम रहा है। फिर अपने निकटतम व्यक्तिकी छोटी-सी भूलके लिअे वे अुसे छोड़ कैसे सकते थे? लम्बी-चौडी चर्चा हुअी। पत्रव्यवहार हुआ। बापूजी और अुनकी पार्टी डेलॉगसे वापस कलकत्ता आयी। बा वगैरा सेवाग्राम लौट गये थे। कलकत्तेमें भी कुछ समय तक अिसकी चर्चा चलती रही। बापूजी महादेवभाअीको समझाते रहे। आखिर महादेवभाअीने यह सारा किस्सा अेक लेखके रूपमें ‘हरिजन’में छपाया और खुद शान्त हुअे।

९

सेवाग्राममें हैजा

१९३८ या ’३९की गर्मियोंमें सेवाग्राममें हैजा फैला। मैंने सब आश्रमवासियोंसे हैजेका टीका लगवा लेनेको कहा। बापूजीने प्रार्थनामें कह दिया कि सब लोग सूअी लगवा लें तो अच्छा है, क्योंकि गाँवके लोग आश्रममें आते-जाते रहते हैं और छूत फैलनेका काफी डर है। वर्धामें काका साहब वगैरा हैजेसे बीमार थे। हम लोग आश्रममें हैज़ेको न्योतनेका खतरा अुठाना नहीं चाहते थे। कअियोंके दिलमें अिंजेक्शनके प्रति अश्रद्धा थी। वे अुससे बचना चाहते थे। लेकिन किसीकी बोलनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। आखिर बा ने कहा : “मैं तो अिंजेक्शन नहीं लूँगी, जो होना हो, सो हो।” बापू बोले : “जो अिंजेक्शन नहीं लेंगे, अुन्हें बालकोबावाली झोंपडीमें जाकर रहना पड़ेगा।” बा को यह स्वीकार था, लेकिन अिंजेक्शन लगाना स्वीकार न था। नतीजा यह हुआ कि बहुत थोड़े लोगोंने टीका लगवाया। गाँवमें तो करीब सभीको टीका लगाया गया था। दूसरी खबरदारी और सार-सँभालके कारण सेवाग्रामसे हैज़ा जल्दी ही दूर किया जा सका और आश्रम बिलकुल बच गया।

१०

राजकोट सत्याग्रह

१९३९के शुरूमें सरदार वल्लभभाअीके आग्रह करने पर बापूजी बारडोली गये। अुसी समय राजकोटमें सत्याग्रह शुरू हुआ। वहाँके ठाकुर साहबने प्रजाको कअी हक्क देने स्वीकार किये थे। मगर बादमें वे बदल गये। अुन्होंने वचनभंग किया। जनताने अिसके खिलाफ़ अपना विरोध प्रकट करनेके लिअे सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बा ने सुना, तो वे झट बापूजीके पास पहुँचीं। राजकोट तो अुनका अपना घर था। राजकोटमें सत्याग्रह हो, तो अुसमें अुन्हें भाग लेना ही चाहिये। बापूजीने अुन्हें अिजाज़त दे दी, और बा राजकोटमें सविनयभंगके कसूरके लिअे नज़रबन्द कर ली गअीं। पहले तो अुन्हें अेक बिलकुल अकेले गाँवमें रखा गया। देवदासभाअी वहाँ अुनसे मिलने गये। वहाँका वातावरण अिस क़दर खराब था कि आज भी अुसका वर्णन करते हुअे देवदासभाअीकी आँखें डबडबा आती हैं। लेकिन बा ने अपने किसी पत्रमें अिसकी कोअी शिकायत नहीं की। वे स्वतंत्रताकी सिपाही बनकर गअी थीं और मानती थीं कि सिपाहियोंको कठिनाअियाँ सहन करनेसे घबराना नहीं चाहिये। लेकिन जनतामें अिसको लेकर बहुत हलचल मची। बा की सेहत अितनी खराब थी कि अुन्हें डॉक्टरी मददसे अितनी दूर रखना पाप था। आखिर राजकोट सरकार अुनको राजकोटसे १०–१५ मील दूर अपने अेक महलमें ले आअी। वहाँ अुनके साथ मणिबहन और मृदुलाबहन थीं। अुन दिनोंके बा के पत्र बहुत दिलचस्प होते थे। अुन्हें सिर्फ़ बापूजीकी तबियतकी और चि० कनुकी चिन्ता रहा करती थी।

बा के जानेके कुछ ही दिनों बाद बापूजीने खुद राजकोटके जंगमें कूदनेका निश्चय किया। बापू, भाअी, कनु और मैं राजकोट पहुँचे। बापूजीके साथ हम बा से अुस जगह मिलने गये, जहाँ वे नज़रबन्द थीं। सरकारने अुन्हें सब तरहका आराम दिया था, तो भी अुनका चेहरा

मुरझाया-सा था। बा बापूजीके वियोगको बहुत दिनों तक सह ही नहीं सकती थीं। मनसे भले वे हिम्मत रख ले, मगर अुनके शरीर पर अुसका असर हुअे बिना न रहता था।

फिर तो बापूजीके राजकोटवाले अुपवास शुरू हुअे। जब बा को यह खबर मिली, अुन्हे आघात तो पहुँचा, लेकिन वे अिस तरहके सदमोंको सहनेकी आदी हो चुकी थीं। बा के पास अुपवासकी खबर लेकर मै ही गअी थी। बा कहने लगीं: "मुझे खबर तो देनी थी कि बापूजी अुपवासका विचार कर रहे है।" मैने कहा: "लेकिन बा, हममेसे कोअी यह जानता ही नहीं था कि बापू अुपवासका विचार कर रहे हैं। अेकाअेक सुबह अुठकर बापूने अेक पत्र लिखा और अुससे सबको पता चला। दलील करनेका अुन्होंने मौका ही नहीं दिया।"

अिस पर बा ने कोअी अुत्तर नहीं दिया। तुरन्त ही खाना बनानेवालीको कहलवाया कि जब तक बापूजीका अुपवास चलेगा, वे अेक बार खायेंगी और सो भी सिर्फ फलाहार। बापूके अुपवासोंमे वे हमेशा अैसा ही करती थीं, जिससे सेवा भी कर सकें और बापूके साथ तपस्या भी।

दूसरे या तीसरे दिन अेकाअेक बा बापूके सामने आकर खड़ी हो गअी। बापूने पूछा: "क्यों आअी?" सरकारकी तरफसे बा को कहा गया था कि वे गांधीजीसे मिलने जाना चाहे, तो जा सकती है। अिसीलिअे वे आअी थी। मगर रात तक बा को कोअी लेने नही आया। सरकारने अिस बहाने अुन्हे छोड़ दिया था। लेकिन बापू अिसे क्यों सहन करने लगे? अुन्होंने कहा: "छोड़ना हो, तो सबको छोड़े। मृदुला और मणिको भी छोड़े, और बाकायदा छोड़े।" यों बापूजीने रातके अेक बजे बा को वापस जेल भेजा। किसीने कहा: "वह रास्ता तो बन्द है। बगैर खास पासके वहाँ किसीको जाने नही देते। बा को रास्तेमे ही रोक लिया जायगा।" बापूजीने बा से कहा: "तुझे रास्तेमे रोकें, तो तू वही सत्याग्रह करना। जहाँ रोकें, वहीं पड़ी रहना। चाहे सडक पर ही सारी रात क्यों न पडा रहना पडे!" बा बिना किसी तरहकी दलील किये चली गअी। अुस समय अुनके मनकी क्या दशा रही होगी? बापूजीको अुस हालतमे छोड़कर जाना कैसा लगा होगा? लेकिन अिन बातोंमे बापूजीके साथ दलील

करनेका विचार तक अुनके मनमें नहीं अुठता था। बापूजीने सरकारको भी पत्र लिखा। राजकोट दरबारकी हिम्मत न हुअी कि वह बा को सारी रात सड़क पर रहने दे। बा वापस महलमें ले जाअी गअीं। दूसरे दिन अच्छी तरह लिखा-पढ़ी करके सरकारने बा, मणिबहन और मृदुलाबहनको छोड़ दिया। दुपहरको तीनों बापूके पास पहुँच गअीं। अुस दिन बापूजीकी हालत थोड़ी गंभीर थी। बा अुनकी सेवामें लीन हो गअीं। अपनी थकान, बीमारी, सब भूल गअीं।

११

पहली सख्त बीमारी

राजकोटसे बापूजी कलकत्ता गये और वहाँसे गांधी-सेवा-संघके वार्षिक सम्मेलनके लिअे वृन्दावन पहुँचे। वृन्दावनसे वे वापस राजकोट गये। रास्तेमें दिल्ली अुतरे। वहाँ बा को बुखार आ गया। मैंने बापूजीसे कहा कि वे बा को दो-चार रोज़ सफ़रमें न रखें। मगर बापूजी माने नहीं। रास्तेमें ट्रेन ही में बा को १०५ डिग्री बुखार हो आया। लेकिन बापूजी पास थे, अिसलिअे अुनको अपनी बीमारीकी कोअी चिन्ता न थी। राजकोट पहुँचने पर दवा वग़ैरा देनेसे बा अच्छी हो गअीं। अिसके कुछ समय बाद जब बापूजी सरहद जानेके लिअे बंबअी गये, तब बा बहुत बीमार हो गअीं। अुनकी सेहत गिरी-सी तो थी ही, रास्तेकी तकलीफ़के असरसे बम्बअी लौटने पर अुन्हें निमोनिया हो गया। लेकिन बा में स्वस्थ होनेकी शक्ति भी अद्‌भुत थी। अुनका बुखार अुतरने पर बापूजी सरहदी सूबेके लिअे रवाना हुअे। बा को भी वहाँ जाना था। मगर कमज़ोरीके कारण ८-१० दिन बाद जानेका निश्चय हुआ। मैं और भाअी बा के साथ बंबअीमें रहे। अुस समयका बा का सहवास और बादमें सरहदी सूबेकी यात्राके स्मरण बहुत मधुर हैं। मेरे पास अिन दिनों बा की सार-सँभालके सिवा दूसरा कोअी काम नहीं था। मैं सारा समय अुनकी सेवामें रहती।

बा भी हम दोनों भाअी-बहनोंके साथ बराबरीके अेक मित्रकी तरह रहने लगी। तब मैंने देखा कि अुनका मन कितना ताजा था और नये-नये दृश्योंमे और दूसरी कअी चीजोंमे वे कितना रस ले सकती थी। बा मुझ पर अपनी लड़कीकी तरह प्रेम रखती थी। माँ हमेशा यह सोचती है कि अुसके बच्चेके समान बुद्धिशाली दुनियामे दूसरा कोअी नही। अिसी तरह बा भी मानने लगी थी कि अुनकी सुशीलाका डॉक्टरी ज्ञान गहरा है। मुझे अिससे घबराहट होती। मै अपनी अपूर्णताको जानती थी। लेकिन बा को बड़े-से-बड़े डॉक्टरके नुस्खेसे भी तब तक सतोष न होता था, जब तक वे मुझसे अुसके बारेमे सम्मति न ले ले। बा के अिस प्रेम और विश्वासने डॉक्टरी ज्ञानको बढानेकी मेरी अिच्छाको खूब अुत्तेजित किया।

१२

दूसरी सख्त बीमारी

सरहदी सूबेसे लौटने पर मै कुछ दिन दिल्ली ठहर गअी। मुझे अपना अभ्यास पूरा करना था। अेम० डी० की परीक्षा देनी थी। अुसके बारेमे सब जानकारी हासिल की। मगर अुस साल मै अभ्यासके लिअे दिल्ली ठहर नही सकी। सेवाग्राममे कअी बीमार अिकट्ठा हो गये थे। बापूजीको मेरी हाजिरीकी ज़रूरत थी। अिसलिअे मै वापस सेवाग्राम आअी। लेकिन १९४०के जूनमे फिर दिल्ली गअी और अभ्यास शुरू किया। १९४१के शुरूमे बापूजीका पत्र मिला: "बा बीमार रहती है। रोज कहती है,—'मुझे सुशीलाके पास भेज दो'। तू मुझे तारसे जवाब दे कि मै अुन्हें भेजूँ या नहीं।" मैंने तुरन्त तार किया कि बा खुशीसे आवे। मार्चमे बा दिल्ली आ पहुँचीं। बिलकुल अकेली थीं। मैंने अिस बारेमे बहुत शिकायत की कि अिस हालतमे, अितनी कमज़ोर सेहतके रहते, बा को यों अकेले नहीं भेजना चाहिये था। महादेवभाअीने लिखा:

"बापूने कहा था कि अकेली ही भेज दो। बा को भी लगा कि वे अकेली जा सकती हैं, सो मैं अुन्हें गाड़ीमें बैठा आया। साथके मुसाफिरोंसे कह दिया था कि ध्यान रखें"। बा कहने लगीं: "अिसमें हुआ क्या! तुम तो व्यर्थ चिन्ता करती हो। सीधा सफ़र था। गाड़ीमें ही बैठे रहना था। महादेवभाअीने वहाँ बैठा दिया, और यहाँ तुम लोगोंने अुतार लिया। अितना बस नहीं है क्या?" मैं चुप हो गअी। अिस दृढ़ता और आत्मविश्वासके सामने कोअी क्या कह सकता है?

बा देवदासभाअीके यहाँ ठहरीं। मैं दिनमें दो-तीन बार अुन्हें देखने जाती और दवा वगैरा लगानेका काम कर आती। अिसी बीच अीस्टरकी छुट्टियाँ आअीं। बापूजीने मुझे सेवाग्राम बुलाया। मैंने अपने अभ्यासके लिअे बंबअी जानेका कार्यक्रम पहले ही से बना रखा था। बा खास तौर पर सेवाग्रामसे मेरे पास आअी थीं। जो भी अुन्होंने तो बिना संकोचके मुझसे कह दिया: "तू जाकर आ, मैं आठ दिन यहाँ रहूँगी," लेकिन मुझको यह अच्छा नहीं लगा। बापूजीको तार करके बा के पास ही रहनेकी अिजाज़त ले ली। बंबअी जानेका कार्यक्रम रद कर दिया। अच्छा ही हुआ। बा को बवासीरका अिंजेक्शन दिलाना पड़ा। अिसके लिअे मैं अुन्हें अस्पताल ले गअी। दुपहरको अुन्हें अपने कमरेमें लाअी। बा ने कहा कि वे दो-चार दिन मेरे पास ही रहना पसंद करेंगी। मेरे लिअे अिससे बढ़कर खुशीकी बात और क्या हो सकती थी? मगर मुझे डर था कि मैं बा को पूरा आराम नहीं पहुँचा सकूँगी। जब मैं अस्पताल जाअूँगी, बा अकेली कैसे रहेंगी? मगर बा को दूसरी परवाह न थी। अुन्होंने कहा: "तू सवेरे-शाम प्रार्थना सुनायेगी, तो मुझे अच्छा लगेगा। अिसीलिअे मैं यहाँ ठहरना चाहती हूँ।" मैं देवदासभाअीके घर जाकर भी बा को प्रार्थना सुनानेके लिअे तैयार थी, लेकिन मैंने अिस बारेमें आग्रह नहीं किया। कहीं बा यह न समझ लें कि मैं अुन्हें रखना नहीं चाहती। मुझे जो संकोच था, सो सिर्फ़ अुनके आरामके खयालसे था। अिसलिअे मैं अुनके आग्रहके वशमें हो गअी और बा मेरे पास ही रह गअीं।

बा को आराम पहुँचानेके खयालसे मैंने दुपहरमें अुनके कमरेको पानीसे तर करके खूब ठंडा कर दिया। बिजलीका पंखा तो था ही। बा को

बहुत अच्छा मालूम हुआ। वे खूब सोओीं, मगर सर्दी बरदाश्त न कर सकीं। दूसरे दिन अुन्हे थोड़ा बुखार हो आया। तीसरे दिन लक्ष्मी भाभी अुन्हे अपने घर ले गओीं, क्योंकि बीमारीमे वे बा के पास आये बिना रह नहीं सकती थीं, और धूपमे आने-जानेसे बच्चे बीमार पड़ने लगे थे। बा की बीमारी बढ गओी। अुन्हे पेशावमे भी थोड़ी तकलीफ रहने लगी। निमोनियाका भी असर था। बस, मै तो अपनी परीक्षाको भूलकर दिन-रात बा की सेवामे ही लगी रहती थी, और अीश्वरसे सतत प्रार्थना करती थी कि हे भगवान्, बा अच्छी हो जायँ! वही मेरी अेम० डी० की डिग्री होगी। मुझे चिन्ता खाये जाती थी। सेवाग्रामसे चलकर बा मेरे पास आओीं; अब बा को कुछ हो गया, तो मै बापू को क्या मुँह दिखाअूँगी? आखिर भगवान्ने मेरी लाज रख ली। बा की तबियत धीरे-धीरे सुधरने लगी। अुन दिनों बापूजी बा को हर रोज पत्र लिखा करते थे। बहुत दफा पत्र मेरे अस्पतालके पते आता। जब मै बापूजीका पत्र लेकर बा के पास जाती, तो अुनके चेहरे पर निराली ही रोशनी दिखाओी देने लगती थी। मुझे ज़रा भी शक नहीं कि बा के अच्छा होनेमे अुन पत्रोंका बहुत बड़ा हाथ था। आखिर अप्रैलके अन्तमे देवदासभाओी अपने परिवारके साथ बा को सेवाग्राम छोड़ने गये। बा अच्छी हो कर गओीं। जिस तकलीफका अिलाज करवाने आओी थीं, वह भी मिट गओी थी और थोड़ी कमजोरीको छोड़कर सब तरहसे अुनकी सेहत खासी अच्छी हो गओी थी।

१३

अन्तिम कारावासकी तैयारी

मअी, १९४२के अन्तमें मैंने अेम० डी० की परीक्षा पास की। लेकिन अस्पतालमें काम करनेका मेरा समय अगस्तके दूसरे हफ़्तेमें खतम होता था। अगस्तके शुरूमें माताजी भाअीसे मिलने सेवाग्राम गअीं। मैंने सोचा था कि अे० आअी० सी० सी० की बैठकके बाद जब बापू बंबअीसे सेवाग्राम लौटेंगे, तभी मैं वहाँ जाअूँगी। मगर ५ या ६ अगस्तको मुझे पता चला कि बापूजी तो सेवाग्राम पहुँचनेसे पहले ही गिरफ़्तार हो जानेवाले हैं। मैंने अपने प्रिंसिपालसे चार-पाँच दिनकी ज़्यादा छुट्टी माँगी और बा, बापू, भाअी वग़ैरासे मिलनेके लिअे मैं बंबअीकी गाड़ीमें सवार हुअी। ८ अगस्तकी शामको मैं बंबअी पहुँची। अे० आअी० सी० सी०के पंडालमें गअी, तो देखा, बापूजीका भाषण होनेको था। भाषण सुना। मुझे अिस बातकी बहुत खुशी थी कि मैं वह भाषण सुन सकी। मुझे देखकर बापूजीको और भाअी वग़ैरा सबको आश्चर्य ही हुआ। मेरा तार अुन्हें मिला नहीं था। किसीको पता नहीं था कि मैं आ रही हूँ। बा अे० आअी० सी० सी०में नहीं आअी थीं। वे बिड़ला हाअुसमें थीं और हमेशाकी तरह बापूकी सेवामें लीन थीं। अे० आअी० सी० सी०से लौटनेके बाद प्रार्थना करके क़रीब १२ बजे हम लोग सोये।

सुबह चार बजेकी प्रार्थनाके समय महादेवभाअीने बापूजीसे कहा कि रात अेक बजेतक टेलीफ़ोन आते रहे कि बापूजीको पकड़ने आ रहे हैं, वग़ैरा। बापू कहने लगे: "मुझे कोअी नहीं पकड़ेगा। सरकार अितनी मूर्ख नहीं कि मेरे-जैसे मित्रको पकड़े; और आजके मेरे भाषणके बाद तो पकड़ ही कैसे सकती है?"

बापूजीका यह आत्मविश्वास बापूके दलके सभी लोगों पर असर डाल रहा था। बा ने मुझसे कहा: "तू क्यों अिस तरह भाग-दौड़ मचाकर आअी? बापूके सेवाग्राम लौटने तक तेरा काम भी हो जाता। तभी आना था न?" लेकिन यह आत्मविश्वास झूठा साबित हुआ। नौ अगस्तको सुबह ५॥ बजे महादेवभाअी दौड़ते हुअे आये और बोले: "बापू! पकड़ने

आये है।" बापूजी झट तैयार हुअे। पुलिस अफसरने तैयारीके लिअे आध घटा दिया था। सबने मिलकर प्रार्थना की:

"हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे।"

६ बजे बापू, महादेवभाअी और मीराबहनको लेकर पुलिस चली गअी। बा और भाअी भी चाहते, तो साथ जा सकते थे; मगर बापूजीने समझाया: "तू न रह सके, तो भले चल, लेकिन मैं चाहता तो यह हूँ कि तू मेरे साथ आनेके बदले मेरा काम कर।" बा के लिअे अितना काफी था। अुन्होंने बिना दलील किये बापूका काम करनेका निश्चय कर लिया। बापू शामको शिवाजीपार्ककी आम सभामें भाषण करनेवाले थे। बा ने अैलान किया कि अुस सभामें वे भाषण देंगी।

बापूजीके जानेके बाद शहरमें अेक बिजली-सी दौड़ गअी। कार्यकर्त्ताओंके झुण्डके झुण्ड बिड़ला हाअुस आने लगे। बा का दरबार दिनभर भरा रहा। वे थककर चूर हो गअी थीं। बापूकी गिरफ्तारीके लिअे वे बिलकुल तैयार न थीं। अुसका अुन्हें बहुत सदमा पहुँचा था। फिर भी वे बडी हिम्मतके साथ तन-मनकी थकानकी परवाह किये बिना बैठी रहीं।

खबर मिली कि बहुत करके बा को सभामें जाते हुअे रास्तेमें ही पकड़ लिया जायगा। अगर बा पकड़ ली जायँ, तो अुनकी अिस कमजोर हालतमें अुनके साथ मेरा जाना जरूरी माना गया। सो मैंने अपना और बा का सामान बाँधा। अिसके बाद बा ने मुझसे बहनों और भाअियोंके नाम अेक-अेक संदेश लिखवाया। बस, वाणीका अेक प्रवाह-सा चल निकला। बा के हृदयसे जो अुद्गार अुमड रहे थे, वे अुन्होंने लिखवा डाले। संदेश लिखवाते समय अुन्हें न तो किसी किस्मका विचार करना पडा, और न कोअी मेहनत पडी। बहनोंके लिअे बा ने नीचे लिखे मतलबका संदेश लिखवाया था:

"महात्माजी तो आपसे बहुत-कुछ कह गये है। कल अुन्होंने ढाअी घंटे तक अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें अपने दिलकी बातें कही है। अुससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो अुनकी सूचनाओंपर अमल ही करना है। बहनोंके लिअे अपना तेज दिखानेका अवसर आया है। सब क़ौमोंकी बहनें मिलकर अिस लडाअीको सफल बनावें। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोडें।"

१४

गिरफ़्तारी

पौने पाँच बजे मैं और बा सभाके लिअे रवाना हुअीं। पुलिस अफ़सर दरवाज़े पर ही खड़ा था। हाथ जोड़कर बोला: "माताजी, आपकी अुम्र घरमें बैठकर आराम करने की है। आप सभामें न जायँ!" लेकिन बा क्यों मानने लगीं? अिसपर अुसने हम दोनोंको गिरफ़्तार कर लिया; क्योंकि मुझे बा के साथ रखनेके लिअे पुलिससे यह कह दिया गया था कि बा के बाद मैं सभामें भाषण करनेवाली हूँ। पुलिसको यह भी पता चल गया था कि हमारे बाद भाअी सभामें भाषण करेंगे, अिसलिअे अुनको भी हमारे साथ ही गिरफ़्तार कर लिया गया। गिरफ़्तारीके समय बापू कह गये थे कि आज़ादीका हर सिपाही 'करेंगे या मरेंगे'का बिल्ला अपने कपड़ोंपर सी ले। कनुने कागज़के अेक टुकड़ेपर यह मंत्र लिखकर दिया। जब बा को देने लगे, तो अुन्होंने लेनेसे अिनकार किया। बोलीं: "मुझे अिसकी क्या ज़रूरत है?" यह मंत्र तो अुनके मनमें भरा ही था। बाहर लिखनेसे क्या फ़ायदा?

मोटर हम तीनोंको लेकर चली। बा के चेहरे पर खेद था। अुनकी आँखोंमें आँसू थे। मैंने पूछा: "बा, आप घबरा क्यों गअीं?" वे कुछ बोली नहीं। अुनका शरीर गरम था। मैंने आश्वासन देनेकी कोशिश की। अिस पर बा कहने लगीं: "अिस बार ये ज़िन्दा नहीं निकलने देंगे। बहन, यह सरकार तो पापी है।"

मैंने कहा: "हाँ बा, पापी तो है ही। अिसलिअे अिसका पाप ही अिसे खा जायगा और बापू फ़तह पाकर बाहर निकलेंगे।"

मोटर ऑर्थररोड जेलके सामने जाकर खड़ी हो गअी। कुछ लोग रास्ते पर आ-जा रहे थे। वे बग़ैर कोअी ध्यान दिये आगे बढ़ गये। मुझे आश्चर्य हुआ। क्या ये लोग बा को नहीं पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

फाटक खुला । हमे ऑफिसमे ले गये । थोड़ी देरमे स्त्री-विभागकी मैट्रन बा को और मुझे स्त्री-विभागमे ले गअी । अन्दर जाकर मैंने बा का और अपना बिस्तर खोला । लकड़ीके दो पटे आ गये थे । अुन पर बिस्तर बिछाये । अुस समय बा को ९९.६ बुखार था । अुन्हे कुछ खाना नहीं था । वे खूब थकी हुअी थीं, सो लेट गअीं और लेटते ही सो गअीं । मुझे भी तीन दिनसे पूरी नींद नहीं मिली थी ।

१५
ऑर्थररोड जेलमें

ता० १०-८-'४२

रातके क़रीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मै अुठ बैठी । देखा, तो बा पायखानेसे आ रही थीं । अुन्हे रातमे पतले दस्त होने लगे थे, और वे कअी बार पायखाने जा चुकी थीं । मैने अुठकर मदद की । अुन्हे बिस्तरमे सुलाया । दूसरे दिन जब डॉक्टर आये, मैने बीमारीकी बिना पर बा के लिअे खास खुराक मॉगी । वह कहने लगे : "खरीद सकती है ।" मैंने कहा : "तो आप हमारे मित्रोंको फोन कर दीजिये, ताकि वे रुपये भेज सकें । हमारे पास खरीदनेके लिअे पैसा नहीं है ।" मगर जेलर वग़ैराने कहा : "फोन नहीं हो सकता, क्योंकि सरकारका हुक्म है कि बाहरकी दुनियाके साथ आप लोगोंका कोअी सपर्क नहीं रहना चाहिये ।" यह अेक अजीब हालत थी। मैने डॉक्टरसे कहा : "तो आप या तो अस्पतालसे बा के लिअे सब कुछ भेजिये या अपनी जेबसे । कभी मौका मिलने पर मैं आपको पैसे लौटा दूँगी ।" बहुत कहा-सुनी करने पर शामको दो सेव आये । लेकिन साथमे अुनका रस निकालनेका कोअी साधन नहीं था । अिधर बा को दिनभर दस्त आते रहे । मुझे चिन्ता होने लगी कि अब क्या होगा । दवाके लिअे कहा, मगर दवाका प्रबन्ध करनेके लिअे भी कोअी नहीं आया ।

बा का चेहरा मुरझाया हुआ था । मैने दो-चार बार अिधर-अुधरकी बाते करनेकी कोशिश की, मगर कुछ चला नही । बा को आज भी थोड़ा

बुखार था। दस्तोंके कारण कमज़ोरी बढ़ रही थी। जिस कमरेमें हमें रखा गया था, अुसकी हवा अितनी खराब थी कि बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मैट्रनने हमसे कहा कि हम अुसके कमरेमें जाकर बैठें। मैंने बा के लिअे गादी बिछाअी। बा वहाँ कुछ देर तक लेटीं। मगर फिर जल्दी ही अुनको पायखाने जाना पड़ा। बार-बार वहाँसे आना-जाना बा की शक्तिके बाहर था। अिसीलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गअीं। बा ने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मैं थोड़ी देर बाद ही भीतर चली आअी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लाअी गअीं। वह तीन-चार छोटे-छोटे बच्चे छोड़ कर आअी थीं। बा ने बहुत प्रेमसे अुनका सब हाल पूछा। अुनका दुःख और चिन्ता देखकर बा अपना दुःख भूल गअीं। आखिर वे हिन्दुस्तानकी माँ जो थीं! जब सारा हिन्दुस्तान दुःखी हो रहा था, अैसे समय अेक-अेक व्यक्तिके दुःखका क्या खयाल करना था? लेकिन बा के मन पर व्यक्तिगत दुःख और चिन्ताका बोझ नहीं था। अुन्हें तो अेक दूसरी ही चिन्ता सता रही थी। क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दुःख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? मैंने समझानेकी कोशिश की: "बा, आप क्यों चिन्ता करती हैं? आखिर बापूने तो भगवान्‌का आश्रय लिया है न? और, जो कुछ किया है, शुभ हेतुसे ही किया है। अुन्हें सफलता देनेवाला भगवान् है।" बा चुप हो गअीं, मगर अुनकी आँखोंमें और चेहरेके भावमें वेदना भरी थी।

कल रात हमारे सो जानेके बाद हमें बाहरसे बन्द कर दिया गया था। अिसलिअे आज शामको ही हम तीनोंने बाहर बरामदेमें अपने बिस्तर लगा लिये। मैट्रन जेलरके पास गअी। जेलरने अुसे हमारे साथ छेड़-छाड़ करनेसे मना किया। बाहर सोनेका अेक कारण तो यह था कि कमरेकी हवा बन्द थी। हवाअी हमलेसे बचनेके लिअे सब खिड़कियोंका तीन चौथाअी भाग अींटोंसे चुन दिया गया था। अिस कारण अन्दर हवा आ नहीं सकती थी। पायखानेकी नाली टूटी लगती थी, और अुससे खूब ही बदबू आती थी। तिस पर कमरेकी फ़र्शमें बहुत नमी थी। बरामदोंमें भी अूँची-अूँची दीवारें चुनवाअी गअी थीं। मगर वहाँ कमरेसे ज़्यादा हवा आती थी।

बा थकी थीं। अिसलिअे तुरन्त ही सो गअीं। हम दोनों भी

अपने-अपने बिस्तरों पर लेटी हुअी बा के अुठनेकी राह देख रही थीं। वे अुठे, तो प्रार्थना करें। नौ बजे मैट्रन आयी। कहने लगी: "ग्यारह बजे तुम दोनोंको (बा को और मुझे) यहाँसे ले जायेंगे।" मैंने अुठकर सामान बाँधा। दस बजे बा को जगाया। अुन्हे दूसरी बहनके बिस्तर पर बैठाकर अुनका बिस्तर बाँधा। फिर बैठकर प्रार्थना शुरू की। राम-धुन चल रही थी, कि अितनेमे जेलर वगैरा आ गये। आज सुबहके अनुभवकी यह बात सुनकर कि मेरे पास बा के लिअे फल वगैरा मँगानेको पैसे नहीं थे, नअी बहनने मुझे अपना बटुआ दे दिया। अुनके पास भी ज्यादा पैसे नहीं थे। शायद सब मिला कर क़रीब बीस रुपये रहे होंगे। मैंने पाँच रुपयेका नोट अुनसे ले लिया। वह अपने लिअे रंगीन साड़ी लाना भूल गअी थीं। सो मैंने अुनको अपनी अेक रंगीन साडी दे दी। मनमे खयाल यह भी रहा कि कौन जाने, कहीं मैं जेलमे मर जाअूँ, तो मेरे सिर किसीका क़र्ज तो न रहेगा?

सुपरिण्टेण्डेण्टके ऑफिसमे पहुँचने पर बा ने अुनसे पूछा: "कहाँ ले जायेंगे? यरवड़ा या बापूजीके पास?" मैट्रनसे भी पूछा था, मगर अुसने जवाब नहीं दिया था। अबकी जवाब मिला: "बापूजीके पास।" अिस अुत्तरसे हमारा मन काफी हलका हो गया। स्टेशन ले जाकर हमे अेक वेटिंग रूममे बैठाया गया। दरवाजा आधा खुला था और हमारे साथका पुलिस अफसर दरवाजेके सामने आरामकुर्सी लगाकर यों बैठा था, मानो अुसे हमारे भाग जानेका डर हो! मुझे नींद आ रही थी। मगर बा भली-भाँति जाग रही थीं। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड-भडक्का और शोर-गुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। अेकाअेक वे बोल अुठीं: "सुशीला! देख, यह दुनिया तो अैसे चल रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?" अुनकी वाणीमे अितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आँखे डबडबा आयीं। मैंने कहा: "बा, अीश्वर बापूजीकी मदद पर है न? सब ठीक ही होगा।"

पुलिस अफसर आया। गाडीका समय हो चुका था। हमे पहले दर्जेके अेक छोटे डब्बेमे चढ़ाया गया, और गाड़ी पूनाकी तरफ रवाना हुअी।

१६

आगाखान महलमें प्रवेश

ता० ११-८-'४२

सुबह क़रीब सात बजे गाड़ी अेक छोटेसे स्टेशन पर खड़ी हुअी। बादमें पता चला कि वह चिचवड़ स्टेशन था। अेक पुलिस अफ़सर हमें ल्विानेके लिअे आया हुआ था। लेकिन बा अुस वक़्त पायखानेमें थीं। सारी रात अुन्हें दस्त आते रहे थे। वे बिल्कुल कमज़ोर हो गअी थीं। गाड़ी कोअी पाँच मिनट रोकनी पड़ी। बा निकलीं। स्टेशन पर अुनके लिअे कुरसी तैयार रखी गअी थी, मगर अुन्होंने कुरसी पर बैठनेसे अिनकार किया। बा का स्वभाव ही था कि जब तक शरीर चल सके, अुसे चलाना; दूसरों पर अुसका बोझ न डालना। वे चलकर बाहर आयीं। अेक मिनट भी नहीं चलना पड़ा। मोटर तैयार थी। हम दोनों अुसमें बैठीं। क़रीब आध घंटेमें मोटर आगाखान महलके फाटक पर पहुँची। पहरेदारोंने अेक बड़ा फाटक खोला। कुछ दूर जाने पर तारका अेक दरवाज़ा खुला। मोटर 'पोर्च'में जाकर खड़ी हो गअी। बा मेरा सहारा लेकर धीमे-धीमे सीढ़ियाँ चढ़ीं। बरामदेमें कुछ क़ैदी झाड़ू लगा रहे थे। हमने अुनसे पूछा: "बापूजीका कमरा कौनसा है?" किसीने जवाब दिया: "अखीरका।" बा मेरे सहारे धीमे-धीमे चलकर बापूजीके कमरेमें पहुँचीं। बापू अेक अूँची गद्दी पर बैठे थे। हाथमें कुछ काग़ज़ थे। पेन्सिल हाथमें लेकर वे ध्यानपूर्वक कोअी लेख सुधार रहे थे। महादेवभाअी पास खड़े अुनके कंधेके पीछेसे अुन काग़ज़ोंको देख रहे थे। कुछ चर्चा चल रही थी। जब हम अुनके काफ़ी नज़दीक पहुँच गअीं, तो महादेवभाअीने हमें देखा। बहुत खुश हुअे। मगर बापूकी त्यौरियाँ चढ़ने लगीं। अुन्हें लगा, "कहीं बा दुर्बलताके कारण, मेरा वियोग असह्य लगनेकी वजहसे तो यहाँ मेरे पीछे-पीछे नहीं चली आअी? वह अपना कर्त्तव्य तो नहीं भूल गअी!" बापूजीने तनिक तीखे स्वरमें पूछा: "तूने यहाँ आनेकी

अिच्छा प्रकट की थी या अुन लोगोंने तुझे पकडा?" बा अेक पलको चुप रही। वे कुछ समझ ही न पाअीं कि बापू क्या पूछ रहे थे। मैंने जवाब दिया: "नहीं बापूजी, गिरफ्तार होकर आअी है।" अिस पर बा समझीं कि बापू क्या कह रहे थे। बोलीं: "नहीं, नही, मैंने कोअी मॉग नही की थी। अुन्होंने हमे पकडा।" अितनेमे हमारे साथका पुलिस अफसर आ पहुँचा। बोला: "जरा बाहर चल कर अपना सामान देख लीजिये"। मैंने बा से बैठनेको कहा, मगर वे तो सामान देखनेके लिअे अुस लम्बे बरामदेको पार कर वापस 'पोर्च' तक आअीं। अुनके स्वभावमे फुर्ती और सुघड़ता कूट-कूट कर भरी थी। आराम लेना वे जानती ही न थीं, और बापूजीसे मिलकर तो अुनके शरीरमे मानो नया जीवन ही आ गया था। बहुत रोकने पर भी वे सामान देखनेके लिअे आनेसे रुकी नहीं।

मैंने कहा था कि बा बीमार है, सो महादेवभाअी अुनके लिअे खाट वगैराका प्रबन्ध करने लगे। हम लोग सामान देखकर लौट रही थीं कि रास्तेमे अुस जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेलो हमे मिले। वे बहुत आदरके साथ बा को भीतर लिवा गये। अुन्हें पता भी नहीं था कि हम अेक बार अन्दर हो आअी थीं। बा को खाटमे सुलाकर मैंने अुनके लिअे दवाका नुस्खा लिखा, मगर बा के दस्त तो बापूजीके दर्शनसे और अुनके अपने मनके बोझके हलके हो जानेसे यों ही बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हे दी गअी। दूसरी देनेकी जरूरत ही नही पड़ी। शायद अेक भी न देते तो भी काम चल जाता।

दूसरे रोजसे ही बा खटिया छोड़कर थोडा-थोडा घूमने-फिरने लगीं। बापूजीके खानेके समय वे अुठकर अुनके पास जा बैठतीं और अुनका खाना परोस देती। बा का खाना भी मै वहीं ले आती थी। हमेशाकी तरह खाते समय भी बा अेक हाथमे पखा लेकर मच्छरों और मक्खियोंसे बापूजीकी रक्षा किया करती थीं। अुन दिनों आगाखान महलमे मक्खियों और छोटे-छोटे जन्तुओंकी भरमार थी; मालिशके समय भी मच्छर वगैरा अुडानेकी जरूरत रहती थी। नहीं तो मालिशके वक्त बापूजी सो नहीं पाते थे। शुरूमे अेक-दो दिन महादेवभाअी मच्छर वगैरा अुड़ाते रहे।

फिर बा ने यह काम भी अपने हाथमें ले लिया। क़रीब डेढ़ घंटा कुरसीपर बैठे-बैठे वे यह काम करती थीं। हम लोग तो किसी मच्छर या मक्खीके दीखने पर ही पंखा हिलाते थे, मगर बा का पंखा सारे समय बराबर चलता ही रहता था, ताकि कोअी जीव-जन्तु आने ही न पाये।

१७

गवर्नर और वाअिसरायको पत्र

बा और मैं मंगलवार ता० ११ अगस्तको सुबह आगाखान महलमें पहुँची थीं। बापूजीने अुसी रोज़ बम्बअीके गवर्नर लॉर्ड लुम्लीको लिखे अपने पत्रका मसविदा पूरा किया था। महादेवभाअीके हाथों अुसकी साफ़ नक़ल हुअी। पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टको डाकमें डालनेके लिअे दिया गया। अिस पत्रमें बापूजीने चिंचवड़ स्टेशनवाली अुस घटनाका ज़िक्र किया था, जिसमें पुलिसने अेक सत्याग्रही युवकके साथ बुरा सलूक किया था। साथ ही, अखबार माँगे थे और सरदार और मणिबहनको आगाखान महलमें रखनेकी दरख़ास्त की थी। पत्रके चले जानेपर हम लोग बैठकर सोचने लगे कि सरदार आवेंगे, तो अुन्हें कौनसा कमरा देंगे। महादेवभाअी यह सोचकर बहुत खुश थे कि सरदार आ जायँगे तो अपने हँसी-मज़ाकसे वे बापूको खुश रखेंगे। बा भी अुनके आनेके विचारसे ख़ुश थीं।

बापूजी वाअिसरायके नाम पत्र लिखनेमें लगे थे। अुसमें हम सबकी मददकी ज़रूरत पड़ती थी। पत्रकी दो तीन कच्ची नक़लें तैयार हुयीं। बापूजीने हमसे कहा कि हम सब पत्रको ध्यान-पूर्वक पढ़ जायँ और अपनी सूचनायें दें। महादेवभाअी पर सबसे ज़्यादा बोझ था। आख़िर शुक्रवारको पत्र तैयार हुआ। आख़िरी नक़ल फिर महादेवभाअीने ही की। जब वे बापूजीके पास अुसे हस्ताक्षरके लिअे लाये, तो बोले: "नक़ल करनेमें मुझे पूरे दो घंटे लगे।" अक्षर मोतीके दानों-जैसे थे। बापूजी क्षणभर महादेवभाअीके सुंदर अक्षरोंको देखते रहे। फिर दस्तख़त

१९

ब्राह्मणकी मृत्यु

बा कहती थीं : “ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है।” बापू कहते : “हॉं, सरकारके लिअे।” लेकिन बा के मनसे यह शका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर मुझसे कहने लगीं. “सुशीला, ब्राह्मणकी यह मौत तो हमारे ही सिर रही न? बापूजीने लडाअी छेड़ी, महादेव जेलमे आया और यहॉं अुसकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो अपने ही मत्थे चढा न?” मैने समझाया : नहीं बा, आप अैसा क्यों सोचती है? महादेवभाअी तो देशकी सेवामे बलि चढे है। अुनकी मृत्युका पाप कैसा! और अगर हो भी, तो वह सरकारके सिर हो सकता है। सरकारने नाहक अुन्हे पकड़ा। बापूजीने लडाअी शुरू ही कब की थी?” अिस पर बा बोलीं : “हॉं, बात तो सच है। बापूजीने लड़ाअी शुरू नहीं की थी। वे तो अभी सरकारके साथ समझौतेकी चर्चा करने जा रहे थे। लेकिन यह सरकार बड़ी पापी है। अिसने कुछ करने ही नहीं दिया।”

२०

शंकरका मंदिर

बा मे गहरी धर्म-भावना थी। दुनियाकी कोअी भी ताकत अुनकी धार्मिक भावनाको डिगा नहीं सकती थी। बा हमेशा तुलसीमाताकी पूजा करती थीं। मीराबहनने अपने कमरेमे बालकृष्णकी अेक मूर्ति रखी थी। बा अुसे फूल चढाती थीं। वह बा का दूसरा मन्दिर था। और महादेवभाअीका चितास्थान बा के लिअे तीसरा मन्दिर — शकर महादेवका मन्दिर — बन गया था। जब तक बा मे ताक़त रही, वे बापूजीके साथ

चितास्थान पर जाती रहीं और समाधिकी प्रदक्षिणा करके अुसे नमस्कार करती रहीं। दूसरी अक्तूबरको बापूजीका जन्मदिन आया। अुस दिन श्रीमती नायडूने छोटी-सी दीपमालिकाका प्रबन्ध किया था। बा ने मुझे पुकारा और कहा: "सुशीला, शंकरके वहाँ दीया ज़रूर रख आना।" पहले तो मैं कुछ समझी ही नहीं कि बा क्या करना चाहती थीं। हमारे अेक सिपाहीका नाम शंकर था। मगर बा अुसके वहाँ दीया क्यों भिजवाने लगीं? अेकाअेक मुझे ध्यान आया। मैंने पूछा: "बा, आप महादेवभाअीकी समाधि पर दीपक रखनेको कह रही हैं न?"

"हाँ, हाँ, वही तो महादेवका — शंकरका — मंदिर है न!" बा ने जवाब दिया।

२१

बा विद्यार्थीके रूपमें

महादेवभाअीकी मृत्युसे वातावरण बहुत ग़मगीन हो गया था। अिस तरहकी मौत कहीं भी हिलानेवाली होती। मगर जेलमें तो अिसका असर बहुत लम्बे अरसे तक बना रहता है। आखिर बापूजीने अुपाय सोचा: "हम सब अपने अेक-अेक मिनटका हिसाब रखें, सारा समय काममें ही लगे रहें, ताकि अिधर-अुधरके विचार मनमें आ ही न सकें। हिंसासे भरी अिस दुनियामें अहिंसाको अपना स्थान ढूँढ़ना है, तो अुसका भी यही रास्ता है।" बापूजी खुद तो सारा समय काममें लगे ही रहते थे। अब अुन्होंने दूसरोंका भी कार्यक्रम तय कर दिया। मेरा समय तो पहले ही से भरा हुआ था। बापूजीने मुझे आग्रहभरी सलाह दी कि मैं अपने कार्यक्रमको ध्यान-पूर्वक पूरा करूँ। अुन्होंने मेरे साथ थोड़े समय तक बाअिबल और गीताजी पढ़ना शुरू किया। बा को वे गुजराती सिखाने लगे। गीताजी भी सिखाते थे। गुजराती किताबमें कोअी भजन आ जाता, तो बापू अुसे बाको सस्वर गाना सिखाने बैठ जाते। भूगोल शुरू किया। कभी-कभी अितिहास भी पढ़ा दिया करते। दुपहरको खाना खाकर लेटने पर सोनेसे

पहले बापू बा को कुछ-न-कुछ पढ़कर सुनाते और अुस पर आलोचना करते। बा बहुत खुश होतीं। वे बड़ी दिलचस्पीके साथ सब कुछ सीखनेकी कोशिश करतीं। कभी-कभी अुन्हें अफसोस भी होता कि अुन्होंने यह सब बहुत देरमें सीखना शुरू किया। वे कहतीं: "मैंने पहले ही से सीखनेकी कोशिश की होती, तो कितना अच्छा होता।"

बा सीखती तो बहुत दिलचस्पीके साथ थीं, लेकिन अुनका मन और मस्तिष्क बापूजीकी तरह जवान नहीं था। अुनके लिअे अब नअी चीज सीखना कठिन था। शुरू-शुरूमें बापूजी अुनसे प्रश्न पूछते, यह जाननेकी कोशिश करते कि अुन्हें पहले दिनका पाठ याद है या नहीं। अकसर बा को वह याद नहीं रहता था। बापू बा पर नाराज़ तो नहीं होते थे, फिर भी प्रश्नका अुत्तर न दे सकनेके कारण बा को बुरा लगता था। वे पाठ याद करनेके लिअे मेहनत भी खूब करती थीं। अेक दिन बापूजीने अुन्हें पजाबकी नदियोंके नाम सिखाये। बापूके सो जाने पर बा मेरे पास आअी और बोलीं: "सुशीला, वे नाम तू मुझे अेक कागज़ पर लिख दे।" मैंने लिख दिये। बा अुस कागजको सामने रख कर सारा दिन चलते-फिरते नदियोंके नाम रटती रहीं। मगर ७४ सालकी अुम्रमें नअी चीजें सीखनेकी शक्ति किसी विरलेमें ही पाअी जाती है। दूसरे दिन वे फिर अुन नदियोंके नाम बापूजीको नहीं बता पाअीं। बापूजीने बा को प्राकृतिक भूगोल सिखाना शुरू किया। रेखांश और अक्षांश, भूमध्य रेखा या विषुवत रेखा क्या है, सो सब समझाया। लेकिन याद रखना कठिन था। हर रोज दुपहरको खानेके बाद बापू अेक नारंगी मँगवाते और अुससे बा को विषुवत रेखा वगैरा समझाते। आखिर बा को वे याद हो गये। अिसके कअी दिन बाद अेक रोज भाअी मनुको भूगोल पढ़ा रहे थे। बा खड़ी होकर सुनने लगीं। भाअीको अंग्रेजी नाम आते थे, अुर्दू नाम आते थे, मगर हिन्दी नाम याद करनेमें कुछ गोलमाल हो गया था। बा मुझसे आकर कहने लगीं: "सुशीला, प्यारेलाल जिसे रेखांश बता रहा है, बापूजीने अुसे अक्षांश बताया था।" और अुनकी बात सच थी। भाअीने अपनी भूल सुधारी।

बापूजीने बा के साथ गुजरातीकी पाँचवीं किताब पढ़नी शुरू की। अुसमें कवितायें आयीं। अुनके शुरूमें रागका नाम लिखा रहता। बापूजी

बा को अुनका राग सिखाने लगे। आठ दस दिन तक शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी और बा अुन कविताओंको गाया करते। हमारी अम्माजान (श्रीमती नायडू) अक्सर मज़ाक करतीं। बापू हँस देते और फिर बा के साथ गाने लगते।

बापूजीने बा को हिन्दुस्तानके प्रान्तोंके नाम सिखाये। फिर हरअेक प्रान्तकी राजधानीका नाम सिखाया। बा ने अुन्हें सीखनेकी मेहनत तो बहुत की, मगर फिर भी जब बापू पूछते, तो बा के मुँहसे "कलकत्तेकी राजधानी लाहौर है," या अैसा ही कोअी दूसरा जवाब निकल जाता।

धीरे-धीरे बा का अुत्साह मन्द पड़ने लगा। वे अक्सर कहतीं: "मैं बीमार रहती हूँ। अिसलिअे मेरा दिमाग़ कमज़ोर पड़ गया है। मैं कुछ याद नहीं रख सकती।" फिर भी बा ने अभ्यास नहीं छोड़ा। वे गीताजीके अभ्यासमें अधिक समय देने लगीं। बापूजीके साथ गीता पढ़तीं। फिर शामकी प्रार्थनाके बाद मेरे साथ पढ़तीं। कहा जा सकता है कि गीताजीका अुनका अभ्यास तो लगभग मृत्युके समय तक चलता रहा।

महादेवभाअीकी मृत्युके बाद बा सुबह-शाम नियमसे बापूजीके साथ घूमने निकलने लगीं। बापू कभी बार अुन्हें काफ़ी तेज़ चला ले जाते, लेकिन यह सिलसिला अेक महीनेसे ज्यादा नहीं चल सका। अेक दिन वे बापूजीके साथ ५५ मिनट तेज़ीसे घूमीं। अुसी रोज़से अुनकी छातीमें दर्द शुरू हो गया। बस, अुसके बाद बा बापूजीके साथ अच्छी तरह घूम ही नहीं सकीं। सुबह जब बापूजी नीचे बगीचेमें घूमने जाते, तो बा अूपर बरामदेमें थोड़े चक्कर लगाकर कुर्सीपर बैठ जातीं। हम घूमकर लौटते, तो बा को हाथमें 'आश्रम-भजनावलि' और 'अनासक्तियोग' लिये बरामदेमें कुर्सी पर बैठी पाते। वे रोज़ क़रीब अेक घंटा अिन दोनों पुस्तकोंके साथ बिताती थीं। भजन गातीं, 'अनासक्तियोग' पढ़तीं और फिर मालिश वग़ैरा करवानेके लिअे अुठतीं।

बा के पढ़नेका ढंग बच्चोंका-सा था। बापूजीने अुन्हें समझाया कि अुनको अपने पढ़नेका ढंग सुधारना चाहिये। अक्सर बा सुबह 'अनासक्तियोग' और दोपहरमें अखबार अूँचे स्वरसे पढ़ा करती थीं। बापूजीने अुनके पढ़नेके ढंगकी टीका की, तो अुन्होंने ज़ोरसे पढ़ना ही

छोड दिया, और दोपहरको अखबार लेकर भाअीके या मेरे पास सुननेको आने लगीं। बादमे जब मनु आ गअी, तो वह सुनाने लगी। 'अनासक्तियोग' भी बा अब मन ही मन पढ लिया करती थीं।

बा के लिखनेका ढग भी बच्चोंका-सा था। वे अक्षरोंको अलग-अलग करके लिखती थीं। बापूजीने अुन्हे अच्छी तरह लिखना सिखानेकी कोशिश की। अुन्हे लिखनेका अभ्यास करनेको कहा। बा मे ७४ सालके अनुभव और बुद्धिमत्ताके साथ ही बालककी-सी सरलता थी। किसीको कोअी नया काम करते देखतीं, तो अुससे वह सीख लेनेकी अुनकी अिच्छा हो जाती। हाल ही अचानक बा की १९३१-'३३ की डायरियॉ मेरे हाथ पड गअीं। अुन्हें देखनेसे पता चला कि अुन दिनों भी जेलमे बा की अभ्यास-वृत्ति आजके समान ही थी। वे मीराबहनसे हिन्दी सीखती थीं और दूसरी किसी बहनके साथ गुजराती पढती-लिखती थीं। अिसी तरह कुछ बहनोंको 'नैपकिन' बनाते देख कर अुन्होंने जेलमे वह काम भी शुरू कर दिया था। सेवाग्राममे छोटे कनुको अितिहास-भूगोल सीखते देखकर बा ने भी अितिहास-भूगाल सीखना शुरू किया था।

आगाखान महलमे हम सबको नोटबुक मँगाते देख कर अुन्होंने अेक दिन बापूजीसे अपने लिअे भी नोटबुक मॅंगा देनेको कहा। बापूजीने अुनके हाथमे दो-चार कागज दे दिये और कहा: "अिन पर लिखनेका अभ्यास कर, जब कुछ प्रगति कर लेगी, तो नोटबुक मॅंगा दूँगा।" बा को अिससे बहुत आघात पहुँचा। बापूजीने भी अपनी भूल तो महसूस की, लेकिन अब क्या हो सकता था? श्रीमती नायडूने चुपचाप बा के लिअे अेक नोटबुक मॅंगवा ली। मै अुसे बा के पास ले गअी। बा ने अुसे बापूजीकी किताबोंमे रख दिया। बहुत कहने पर भी अुन्होंने अुसका अिस्तेमाल नहीं किया। बल्कि बापूजीके दिये कागजों पर ही लिखना पसन्द किया, बापूजीने भी समझाया, लेकिन बा तो स्वाभिमानिनी महिला थीं। अुन्होंने शान्तिके साथ अुत्तर दिया: "मुझे नोटबुककी आवश्यकता ही क्या है?" अन्त तक वह नोटबुक बापूकी किताबोंमे ही पडी रही।

२२

रामायण और भागवतमें श्रद्धा

बा की पुरानी डायरियोंसे पता चलता है कि सन् १९३१-'३३में वे तीन बार जेल गओीं और हर बार वे वहाँ नियमित रूपसे रामायण और भागवत सुनती रहीं। आगाखान महलमें शामकी प्रार्थनाके साथ तुलसी-रामायणकी दो चौपाअियाँ हमेशा गाअी जाती थीं। बा बड़ी दिलचस्पीके साथ दोपहरको रामायण अुठा कर ले जातीं और शामको पढ़ी जानेवाली चौपाअियोंको पहलेसे पढ़ लेतीं और अुनका हिन्दी अर्थ समझनेकी कोशिश करतीं। सेवाग्राममें भी अुनका यही कार्यक्रम रहा करता। वहाँ वे किसी न किसीसे अुनका अर्थ समझ लिया करती थीं। आगाखान महलमें प्रार्थनाके बाद बापूजीने बा को खुद अर्थ समझाना शुरू किया। बा की श्रद्धा अन्धश्रद्धा नहीं थीं। जहाँ कहीं बहुत अतिशयोक्ति आती, बा कह अुठतीं: "यह तो सब निरी गप मालूम होती है!" अिसी तरह बालकाण्डमें दशरथ और जनकके वैभवके लम्बे-लम्बे वर्णन सुनकर और यह देखकर कि स्वयंवरके मण्डपकी रचनाका वर्णन करनेमें तुलसीदासजीने पन्नेके पन्ने भर दिये हैं, बा बोल अुठतीं: "क्या तुलसीदासजीको और कोअी काम ही न था, कि बैठे-बैठे अैसे लम्बे वर्णन लिखते रहे?" बापूजीको खयाल आया कि रामायणमेंसे अिस तरहके वर्णन, अुपाख्यान वग़ैरा निकाल कर अेक संक्षिप्त तुलसी-रामायण तैयार कर ली जाय, तो वह बा के बहुत काम आये। सो अुन्होंने रामायणमें निशान लगाना शुरू किया। बालकाण्डमें और अयोध्याकाण्डके कुछ हिस्सेमें निशान लगा भी लिये। प्रार्थनामें भी संक्षिप्त रामायण पढ़नेका सिलसिला शुरू किया। भाअीसे अुसका गुजराती अनुवाद करनेको कहा। बोले: "हररोज़ दो चौपाअीका अनुवाद करके अुसे सुन्दर अक्षरोंमें लिख लिया करो और बा को दे दिया करो। अिससे बा को बहुत अच्छा लगेगा और मुझे भी बहुत संतोष होगा।" भाअीने अनुवाद शुरू

किया । बापू खुद अुस अनुवादको सुधारने लगे । लेकिन आगे चल कर बापूका अुपवास आया और दूसरी भी कअी बाते पैदा हुअीं । नतीजा यह हुआ कि बापूजीका बा के लिअे रामायणमे निशान लगाना और भाअीका अनुवाद करना सब अधूरा रह गया ।

बापूजीके अुपवासके दिनोंमे शामकी प्रार्थनाके बाद बा को रामायणकी चौपाअियोका अर्थ सुनाना मेरे जिम्मे आया और बादमे भी यह काम मुझ पर ही रहा । बा बहुत ध्यानके साथ अर्थ सुनती थीं और जहॉ कहीं गहरी धर्म-भावनासे भरी चौपाअियॉ आ जातीं या बहुत करुण-रस आ जाता, वहॉ वे आलोचना भी किया करती थीं । यह सिलसिला लगभग बा की मृत्युके समय तक जारी रहा । मृत्युके दो अेक रोज पहले बा बहुत थकी दीखती थीं । ऑख बन्द करके पडी थीं । मैंने पूछा : "बा, रामायणका अर्थ सुनेंगी क्या?" बा ने ऑखे खोलीं । "पूछती क्यो है कि सुनेंगी क्या? रामायण ला कर अर्थ करना शुरू क्यों नहीं कर देती?" बा ने जरा चिढकर कहा । मै बोली : "बा आप थकी-सी लगती थीं, अिसलिअे मैंने पूछ लिया ।" बा ने शान्तिके साथ अुत्तर दिया : "लेकिन लेटे-लेटे रामायणका अर्थ सुननेमे मुझे कौन थकान लगनेवाली है? लाओ, सुनाओ अर्थ ।"

तुलसी-रामायणके बाद बापूजीने दोपहरके समयमे बा को बाल-रामायण पढकर सुनाअी । बादमे अुन्होने वाल्मीकि-रामायणका गुजराती अनुवाद पढा । शुरूमे बा अुसे भी बापूके पास बैठकर सुना करती थीं । लेकिन बापूजी अुसे जल्दी पूरा करना चाहते थे, और बा सारा समय बैठकर सुन नहीं सकती थीं, अिसलिअे अुसको भी बा ने मुझसे सुनना शुरू किया । बादमे जब मनु आ गअी, तो यह काम अुसने सभाल लिया । बा ने मनुसे सारी वाल्मीकि-रामायण सुनी ।

दोपहरमे भोजनके समय मै बापूजीके पास सस्कृतमे वाल्मीकि-रामायण पढा करती थी । बा अुस समय भी बापूजीके पास आकर बैठ जातीं और बहुत रसके साथ सब सुनतीं । बा की बीमारीके बढने पर सस्कृत वाल्मीकि-रामायणका अभ्यास बन्द कर देना पड़ा, नहीं तो बापूजीका

अिरादा अुसमेंसे भी अेक संक्षिप्त रामायण तैयार करनेका था। बालकाण्ड और अयोध्याकाण्डका कुछ हिस्सा तैयार हो भी चुका था।

गुजराती वाल्मीकि-रामायण पूरी होने पर मनुने बा को "बारडोली सत्याग्रहका अितिहास" पढ़कर सुनाना शुरू किया। लेकिन बा ने अुसे यह कहकर बन्द करवा दिया कि यह सब तो मैं जानती हूँ। अुन्हें धार्मिक पुस्तकोंमें अधिक दिलचस्पी थी। अिसलिअे 'भागवत' मँगाअी और समूची भागवत सुनी। अिसके बाद भी खास-खास दिनोंमें (जैसे, अेकादशी वगैरा) बा भागवत सुना करती थीं। अपने अंतिम दिनोंमें बा ने फिर नियमित रूपसे भागवत सुनना शुरू किया था। अुन दिनों वे शामको चारसे साढ़े चार तक भागवत सुना करती थीं। लेकिन कोअी मिलनेवाले आ जाते, तो भागवत बन्द रहती थी। अेक बार पाँच-छह रोज़ तक लगातार मुलाक़ाती आते रहे। आखिर जिस दिन कोअी नहीं आया, अुस दिन भी मैं भागवत सुनाने नहीं पहुँची। सिलसिला टूट चुका था। और बा की बीमारी बढ़ जानेके कारण मुझे रातमें भी काफ़ी काम रहता था। अिसलिअे अुस दिन मैं दोपहरमें सो गअी। भागवतके समय नींद तो खुल गअी थी। मगर थकी थी, सो सुस्ती कर गअी। मनको मना लिया कि आज बा को शायद ही भागवतकी याद आये। मगर बा यों भूलनेवाली नहीं थीं। अुन्होंने मनुको बुलाकर अुससे भागवत सुनी; अिसके बाद जो कुछ दिन अुन्होंने भागवत सुनी, सो मनुसे ही सुनी। मेरी फिर सुनाने जानेकी हिम्मत ही नहीं हुअी। लेकिन मनमें तो आज भी अिसका पछतावा बना हुआ है। मैं जानती थी कि बा को मुझसे भागवत सुनना अच्छा लगता था, क्योंकि मैं अुन्हें थोड़ा-बहुत अर्थ भी समझा सकती थी। मगर मैं अेक दिनका आलस्य कर गअी। दूसरे दिनसे जाने लगी होती, तो शायद अेकाध बार बा कोअी तीखी बात कहतीं, लेकिन मनमें तो खुश ही होतीं। मगर मुझसे यह न हो सका। कुछ देरके लिअे मैं यह भूल ही गअी कि जीवन क्षण-भंगुर है, अिसका कोअी भरोसा नहीं। अिसलिअे सेवाका मौक़ा मिलने पर तो अुसे किसी हालतमें भी खोना न चाहिये।

२३

व्रत-अुपवास वगैरामें श्रद्धा

आगाखान महलमे पहुँचनेके कुछ दिन बाद बा ने बापूसे पूछा . " अेकादशी कब है? " बापूजीने मि० कटेलीसे अेक पचांग मँगवा देनेको कहा। लेकिन बाहरकी कोअी भी चीज़ मँगवानेके लिअे सरकारी अिजाज़तकी ज़रूरत थी और अुसके मिलनेमे देर लग सकती थी। अिसलिअे बापूजीने मुझे अेक जत्री (कैलेंडर) बनानेको कहा। अुसका तरीका भी बताया। जिस दिन बापू पकड़े गये थे, अुस दिनकी तिथि, वार वगैरा हम जानते थे। अुस परसे सारे सालका हिसाब लगाया। मेरा अेक पूरा दिन अिसमे खर्च हुआ। कैलेंडरमे बापूजीने पूनोंके दिन पर लाल पेंसिलका और अमावस पर नीलीका निशान लगवाया। अुस परसे अुन्होंने बा को तिथियाँ समझाअीं और अेकादशी किस दिन पड़ेगी, सो बताया। करीब अेक महीने तक हमारे पास वही अेक कैलेंडर था। बादमे पचांग आ गया और कैलेंडर भी।

अेकादशीके दिन बा हमेशा फलाहार किया करती थीं। मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी अेकादशीको वे अुपवास करना भूली हों। अिसी तरह हर सोमवारके दिन, सोमवती अमावसके दिन, और अक़सर पूनों, जन्माष्टमी, शिवरात्रि वगैरा पवित्र तिथियों पर वे अुपवास करना चूकती न थीं। कभी-कभी सोमवार, अेकादशी और दूसरी कोअी तिथि अेक साथ आ जाती, तो बा तीन-चार दिन तक लगातार अुपवास रखतीं। बीमार हों या अच्छी, अिनमेंसे किसी भी अुपवासको छोड़नेका अुन्हें कभी विचार तक नहीं आता था। राष्ट्रीय सप्ताह, स्वतन्त्रतादिन और 'हिन्दुस्तान छोड़ो' दिनके अुपवास अिन अुपवासोंके अलावा होते थे, और बा अिन्हें भी कभी चूकती न थीं।

२४

पतिव्रता सती

बा बहुत पढ़ी-लिखी न थीं। लेकिन अुनकी बुद्धिका खासा अच्छा विकास हो चुका था। देशमें क्या हो रहा है, अिसे वे अच्छी तरह समझती थीं। बापूजीमें अुनकी अपूर्व श्रद्धा थी। हिन्दू स्त्री पातिव्रत धर्मको सबसे पहला स्थान देती है। अतअेव बा भी बापूजीके पीछे-पीछे चलना ही अपना धर्म समझती थीं।

जेलमें सुबह-शाम घूमते समय मनु अक्सर बापूजीसे कहानी सुनानेको कहती। बापूजीने अुसे दो-चार छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाअीं भी। अेक दिन मैंने कहा: "कहानी कहना हो, तो हमें अपनी ही कहानी कहिये न!" बापू मान गये। अुनके मुँहसे अुनकी आत्मकथा सुननेमें और 'आत्मकथा' पढ़ जानेमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ था। बापूजीने हमें अपने बचपनकी, बा के साथ खेलनेकी, विवाहकी, विलायत जानेकी, और दक्षिण अफ्रीकाकी कहानियाँ सुनाअीं। लेकिन बादमें बाकी बीमारी बढ़ जानेके कारण कहानी सुनानेका यह सिलसिला टूट गया। बापूजीने बताया कि किस तरह बा ने हिन्दूधर्मके अपने पुराने संस्कारों पर विजय पाकर बापूजीके पीछे-पीछे चलनेकी कोशिश की थी। अुन्होंने कहा: "मुझे कहना चाहिये कि अिस काममें मेरे परिवारकी सब स्त्रियोंकी मदद मुझे मिली। वे सब बा से कहती थीं: 'दूसरे लोग चाहे खुद पुराने रीति-रिवाजोंका पालन करें, अछूतोंको घरमें न आने दें, मुसलमानोंका छुआ पानी तक न पीयें, मगर तुझे तो ये सब विचार छोड़ ही देने चाहियें। अपने पतिके पीछे चलना ही तेरा धर्म है। अुनके पीछे चलते हुअे तू कुछ भी क्यों न करे, तुझे अुसका पाप लग ही नहीं सकता। अुसका तो शुभ परिणाम ही हो सकता है।' और, बा ने हमेशा अुनकी सलाह पर अमल करनेकी कोशिश की है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अुसने हरअेक क़दम अपनी बुद्धिसे समझ कर अुठाया है, लेकिन मैं तो हमेशासे यह मानता

आया हूँ कि बुद्धि हृदयके पीछे चलनेवाली चीज है। बा ने जो कुछ किया है, श्रद्धासे किया है, हृदयसे किया है, और बादमे बुद्धिसे भी वह अुन चीजोंको बहुत हद तक समझ सकी है।"

बा रोज नियमसे कातती थीं। अकसर वे तीन सौसे पॉच सौ तार हररोज कात लेती थी। रचनात्मक कार्यक्रमके महत्त्वको वे अच्छी तरह समझती थी। लेकिन आगाखान महलमे आनेके बाद वे बहुत कात नही सकी। हृदयका दर्द शुरू हो जानेके कारण अुनको कातनेसे रोकना पड़ा। अिसमे मुझे कितनी कठिनाअीका सामना करना पड़ा, सो कहना मुश्किल है। बा कहती: "भला, कातनेसे मेरे हृदयको क्या श्रम पहुँचेगा?" अिसी तरह अुन्हे घरमे घूमने-फिरनेसे रोकना भी कठिन था। आखिर कर्नल भण्डारीने अुनको डराया: "देखिये, आप आराम नही करेंगी, तो मुझे आपको यरवडा ले जाना पड़ेगा।" बा अितनी भोली थीं कि धमकी काम कर गअी। अुन्होने खाट पर रहना शुरू किय और दो ही चार दिनोंमे तबियत सुधरने लगी। मगर चरखा तो जे छूटा, सो छूटा ही। बा के मनमे यह खयाल जम गया कि चरखा चलानेसे हृदयका दर्द बढ़ता है। अिसलिअे बादमे हम लोग अुनसे चरखा चलानेको कहते भी थे, तो वे चलाती नही थीं। हमे लगता था कि अुनके लिअे अपनी बीमारीके विचारको भूलकर दिल बहलानेके लिअे चरखा अच्छा साधन होगा। अेक दो बार बा ने चरखा निकाला भी, मगर वह सिलसिला फिर चल नही सका।

२५

छुआछूत

मैंने बा में छुआछूतकी भावना कभी नहीं देखी। १९३० में, जब मैं पहली बार गर्मीकी छुट्टियोंमें आश्रम गयी थी, वहाँ लक्ष्मी नामकी अेक लड़की थी, जिसे सब बा और बापूकी लड़की कहा करते थे। वह बा के पास ही रहती थी। बा माँकी तरह अुसकी सँभाल रखती थीं। जब मैं आश्रमसे लौटकर घर पहुँची, तो वहाँ किसी बहनने कटाक्ष करते हुअे पूछा: "आश्रममें भंगीकी वह लड़की तेरी सहेली बनी थी या नहीं?" मैं ज़रा चक्करमें पड़ गअी; पूछा: "भंगीकी लड़की कौन?"

"वही, जिसे महात्माजी अपनी लड़की बनाये हुअे हैं।"

तब मुझे पता चला कि लक्ष्मी बा की अपनी लड़की नहीं थी; वह हरिजन लड़की थी, जिसे बा और बापू अपनी लड़कीकी तरह रखते थे।

अिसी तरह सेवाग्राम आश्रममें काम करनेवाले हरिजनोंके प्रति बा बहुत ही अुदारताका और प्रेमका भाव रखती थीं। अुन्हें खुद कभी कोअी सेवा लेनी ही पड़ती, तो हरिजन सेविका मणिबाअीसे ही लेना पसन्द करती थीं। आगाखान महलमें वे अक्सर मणिबाअी, खंडू मामा वग़ैरा हरिजन सेवकोंको याद किया करती थीं। कअी बार चर्चा चलने पर वे कहतीं: "आखिर तो अीश्वर ही ने सबको बनाया है न! फिर अूँच क्या और नीच क्या? यह तो भावना ही ग़लत है।"

२६

पुराने संस्कार

लेकिन साथ ही वे अपने पुराने संस्कारोंको बिल्कुल भूल नहीं सकी थीं। ब्राह्मणके प्रति अुनके मनमें विशेष श्रद्धा थी। आगाखान महलमें वहाँके सिपाही हम लोगोंकी बहुत-सी सेवा कर दिया करते थे। अुनमें अेक ब्राह्मण था। अुसे रसोअीघरके काम पर रखा गया था। बा अुस पर विशेष प्रेम रखतीं और अुसे दूध-फल वग़ैरा देती रहतीं। कभी

अुससे कोअी भूल भी हो जाती तो माफ कर देतीं। वे अकसर कहती: "बेचारा ब्राह्मणका लड़का है। यहाँ और तो कोअी धर्म हो ही नहीं सकता, अिसे कुछ दे सकें, तो अच्छा ही है।"

लेकिन अिसकी वजहसे दूसरे सिपाही अुसकी अीर्ष्या करने लगे, और आखिर सुपरिण्टेण्डेण्ट तक शिकायत पहुँची। अुन्होंने बा से कहा कि वे किसीको कुछ न दिया करें। मगर बा क्यों मानने लगीं? वे तो चुपचाप जो देना होता, दे आतीं और कहतीं: "मैं अपने हिस्सेमेंसे देती हूँ। किसीको क्या?"

अेक रोज बा अुससे पूछने लगी: "महाराज, तुम ब्राह्मण हो। कहो तो, हम घर कब जायँगे?" वह बेचारा क्या अुत्तर देता? बोला: "अच्छा बा, किताब देखकर बताअूँगा।" बादमें अुसने कुछ बताया या नहीं, मैं नहीं जानती।

२७

हिन्दू-मुसलमानके प्रति समभाव

यह सब होते हुअे भी बा के दिलमें दूसरी कौमके लोगोंके लिअे कोअी अप्रेम या अरुचि नहीं थी। आगाखान महलमें अेक-दो मुसलमान सिपाही भी थे। बा अुनके साथ भी अच्छी तरह हिलती-मिलती और बातचीत करती थीं। अुनसे रसोअीघरका काम भी करातीं। अीद वगैरा त्यौहारोंके दिन वे अुन्हें फल और मिठाअी भी देतीं। सिपाहियोंमें हिन्दू या मुसलमानका कोअी भेदभाव वे नहीं रखती थीं, हालाँकि अितिहासकी किताबोंमें मुसलमानी हुकूमतके ज़मानेके जुल्मोंकी बात पढकर वे बेचैन हो अुठती थीं। डॉक्टर अन्सारी, हकीम साहब अजमल खान, खान अब्दुल गफ्फार खान, डॉ० खान साहब, और मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब-जैसे तमाम मुसलमान मित्रोंको देखकर अुनके मनमें अकसर यह सवाल पैदा होता कि आखिर अितिहासमें यह सब अैसा क्यों लिखा है? अिन मुसलमान मित्रोंके लिअे अुनके मनमें सरदार वल्लभभाअी या

जमनालालजीके जितना ही प्रेम और मित्रभाव था। अुनके दिलमें कभी यह खयाल तक नहीं आता था कि अिनमें कुछ हिन्दू हैं और कुछ मुसलमान। अिसी तरह आश्रममें रहनेवाले मुसलमान भाअी-बहनोंके प्रति भी अुनके बरतावमें कभी कोअी भेद-भाव मैंने नहीं देखा। हाँ, बा यह जरूर ताड़ जाती थीं कि कौन अुनकी सेवा मनसे करता है, और कौन सिर्फ़ बापूजीको खुश करनेके लिअे करता है। अैसे लोगोंसे सेवा कराना अुन्हें अच्छा नहीं लगता था, फिर भले वे हिन्दू हों या मुसलमान। अिसी तरह जो भी कोअी बापूजी तक अुनकी शिकायत लेकर जाता था, अुसे वे आसानीसे माफ़ नहीं कर सकती थीं। मुसलमानोंके मनमें हिन्दुओंके प्रति जो अविश्वास पैदा हो गया है, अुसे दूर करनेके लिअे मुसलमानोंके साथ खास अुदारता दिखानेकी ज़रूरत है, अिस चीजको वे समझ नहीं सकती थीं। अुनके पास सबके लिअे समभाव था, और अितना अुनके लिअे बस था।

हिन्दू-मुस्लिम अैक्यकी आवश्यकता और अुसके महत्त्वको भी वे समझती थीं। अेक दिन अखबारमें मि० अेमरीका यह बयान पढ़कर कि गांधी और जिन्ना अेक दूसरेसे मिलना तक क़बूल नहीं करते हैं, बा बहुत नाराज़ हो गअीं। कहने लगीं: "यह बिलकुल झूठ है। गांधी तो जिन्नाके घर अुनसे मिलने गया था। महादेवने यह सब लिखकर रखा है। अेमरी ज़रा मेरे सामने तो आवे। मैं अुसे लिखा हुआ दिखाअूँगी और पूछूँगी कि गांधी जिन्नासे मिलने अुनके घर गया था या नहीं?" अखबारोंमें बापूजीकी टीका पढ़कर बा को बहुत दुःख होता था। अुनके लिअे यह अेक नअी चीज़ थी। अेक तो वे बाहर अितने ध्यानके साथ अखबार पढ़ती ही नहीं थीं, अुन्हें अितना समय ही नहीं मिलता था; दूसरे गांधीजीके खिलाफ़ जितना ज़हर अिस बार अुगला गया था, अुतना शायद ही पहले कभी अुगला गया हो। बा अकसर कहतीं: "देखो न, ये लोग कितना झूठ बोलते हैं? अिनके पापका घड़ा भी कभी तो भरेगा न? अीश्वर कब तक अिनके पापको सहता रहेगा?" खास तौरपर जब बापूजीकी अहिंसापर कोअी हमला करता था, तो बा से वह बिलकुल नहीं सहा जाता था।

२८

अिस बारके जेलका बा पर असर

बा कअी बार जेल जा चुकी थीं। दक्षिण अफ्रीकाके जेलखानोंमे तो अुन्हे बहुत ही कष्ट सहने पड़े थे। कभी-कभी बा मुझको अपने अनुभवोंकी बाते सुनाया करती थी। हिन्दुस्तानमे भी वे काफी बार जेल जा चुकी थी। कम-से-कम तीन बार तो वे सन् १९३१–'३३के आन्दोलनमे ही गिरफ्तार हुअी थीं। लेकिन बा को अिस बारका जेल-जीवन पहलेके-मुकाबले बहुत खटकता था। वे महसूस करती थीं कि अिस दफा सरकारने सबको बिला वजह पकड़ लिया है। जनतापर सरकारकी सख्तीकी जो थोडी-बहुत खबरे अखबारोंमे आती थीं, अुन्हे पढ़कर वे बहुत दुःखी होती थीं। अिस बारका बेमियाद जेल-जीवन अुन्हे बहुत खटकता था। महादेवभाअीकी मृत्युके बाद अुनके मनमे यह खटका पैदा हो गया था कि शायद वे अिस जेलसे जीते जी बाहर न जायेंगी। ता० १९–९–'४२ के दिन पहली बार अुन्होने अपना यह भय प्रकट किया था। चर्चा चल रही थी कि बाहर जाने पर कौन क्या करेगा? अिस पर बा कह अुठीं: "मेरा क्या ठिकाना है? मै बाहर जाअू भी, न भी जाअू। यह भी हो सकता है कि मै अभी हूँ, और शाम तक न रहूँ।" बापूने यह बात सुन ली। बोले: "अैसा क्यों कहती हो? वैसे देखा जाय, तो तुम जो कहती हो, सो सब पर लागू हो सकता है। यह सुशीला अभी अेम० डी० होकर आअी है। हो सकता है कि यह अभी है, और शामको न रहे। महादेवका अैसा ही हुआ न? तू और मै, जो बीमार-से थे, अभी बैठे है। अिसलिअे तुझे तो अच्छा होना ही है। जितनी सेवाकी जरूरत हो, ले और मनसे सब तरहकी चिन्ताको निकाल डाल।"

लेकिन बा के लिअे चिन्ता छोडना कठिन था। दूसरे जेलोंमे बा के पास दूसरी बहुतेरी बहने रहती थी। अुनसे बातचीत करनेमे, बीमारोंको देखनेमे, कातनेमे और भजन-कीर्तनमे अुनका समय निकल जाता था।

लेकिन यहाँ तो अिस वार हरअेक अपने-अपने काममें लगा हुआ था। जव वा को कुछ पढ़कर सुनाना होता, या अुनकी दूसरी कोअी सेवा करनी होती, तभी लोग अुनके साथ रहते। वादमें तो वातें करनेके लिअे भी कोअी अुनके पास वैठनेवाला नहीं था। और वा को तो हमेशा दरवार लगाकर वैठना अच्छा लगता था, खास करके शामके वक़्त। सो वा अक़सर विचार-सागरमें डूव जाया करती थीं। अेक दिन कहने लगीं: "वापूजी अितनी वड़ी सल्तनतके साथ लड़ रहे हैं। अुसके पास साधनोंका पार नहीं है। वापूजी कैसे जीतेंगे?"

मैंने कहा: "वा, आखिर अीश्वर तो है न? वापूने तो अुसीके भरोसे यह लड़ाअी ठानी है। वही अिसे पार भी लगायेगा।"

वा वोलीं: "लेकिन आज तो अीश्वर भी हमारे ही विरुद्ध जा रहा है। देखो न, महादेवको किस तरह ले गया?"

वापूजीने सुना तो वोले: "महादेवका जाना अेक शुद्धतम वलिदान है। अुससे आज़ादीकी लड़ाअीको लाभ ही होनेवाला है।"

मगर वा के मनसे शंका गअी नहीं। अेक दिन अुनकी तवियत कुछ ज़्यादा खराव थी। चिढ़कर वापूजीसे कहने लगीं: "देखिये, मैं आपसे कहती थी कि अितनी वड़ी सल्तनतके साथ छेड़छाड़ न कीजिये; मगर आपने अेक न सुनी। अव अुसका फल सवको भुगतना पड़ रहा है। सरकारकी ताक़तका पार नहीं है। वह लोगोंको कुचल रही है। लोग वेचारे कहाँ तक सहेंगे? अिसका परिणाम क्या होगा?"

पहले तो वापूने वा को दलीलोंसे समझानेकी कोशिश की, लेकिन अुस दिन वे अिस तरह समझनेको तैयार न थीं। आखिर वापूने कहा: "तो तू क्या चाहती है? चल, तू और मैं सरकारसे माफ़ी माँगें।"

वा चिढ़ वैठी थीं। वोलीं: "मैं क्यों किसीसे माफ़ी माँगूँ?"

"तो तू कहे, तो मैं वाअिसरायको माफ़ीके लिअे पत्र लिखूँ?"

वापूकी मानहानिको वा किसी भी हालतमें सह नहीं सकती थीं। वे ज़रा गुस्सेमें आकर वोलीं: "सुकुमार (कमसिन) लड़कियाँ जेलोंमें पड़ी हैं। वे माफ़ी नहीं माँगतीं और आप माँगेंगे? अव किया है, तो अुसका फल भुगतिये। आपके साथ हम भी भुगतेंगे। महादेव जेलमें

खतम हो गया है, अब मेरी बारी आ रही है।" बापूजी चुपचाप सुनते रहे। बा जब गुस्सा होती, बापू आम तौर पर मौन धारण कर लिया करते थे।

कुछ दिनों बाद बा ने बापूसे कहा: "मैं तो यह कहती हूँ कि आप अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानसे जानेके लिअे क्यों कहते है? भले वे यहाँ रहे। हमारा देश बहुत बड़ा है। अुसमे हम सब समा सकते है। आप अुनसे कहिये कि वे यहाँ हमारे भाअी बनकर रहे।"

बापूने कहा: "तो मै और कहता ही क्या हूँ? मैं भी तो अुनसे यही कहता हूँ कि आप हमारे भाअी बनकर रहे, सरदार बनकर नही। आप अपनी सरदारी हटा ले, तो आपके साथ हमारा कोअी झगड़ा ही नहीं।"

बा बोलीं: "सो तो ठीक ही है। हम अंग्रेजोंको अपना सरदार बनाकर नहीं रख सकते, भाअी बनकर वे खुशीसे रहे।"

दूसरे दिन मै बा की मालिश कर रही थी। वे मुझसे कहने लगीं: "सुशीला, ये लोग बहुत बदमाश है। बापूजी कहते है, हमारे देशमे हमारे भाअी बनकर रहो, लेकिन अुन्हे तो हमारी सरदारी करनी है। हिन्दुस्तानको लूटना है। अिसीलिअे बापूजीको और दूसरे सब नेताओंको पकड़कर जेलमे बन्द कर दिया है।"

बा बापूजीसे कुछ भी नया सुनतीं, तो दूसरे दिन मालिशके समय अक्सर मुझसे अुसका जिक्र किये बिना न रहती। किताबमे भी कुछ नया-नया पढती, तो प्रायः हम सबसे अुसकी चर्चा करतीं। अेक रोज अुन्होंने किताबमे पारसियोका अितिहास पढा। शामको हमारी छावनीके पारसी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेली बा को देखने आये। बा अुनसे कहने लगीं: "कटेली साहब, आप जानते है, पारसी किस तरह हिन्दुस्तानमे आये?" और, किताबमे पढा हुआ सारा अितिहास वे अुन्हें सुना गअी। मि० कटेली बहुत ही सज्जन पुरुष थे। बा को देखकर अुन्हे अपनी बूढी माँकी याद हो आती थी। अुन्होंने अत्यन्त सज्जनताके साथ बैठकर बा से सारी कहानी सुनी।

२९

बापूके अपवासकी तैयारी

सत्याग्रहमें अपवासका क्या स्थान है, अिसकी चर्चा तो बहुत समयसे चलती थी। बहुतोंको डर था कि अिस बार जेलमें जाते ही बापू अपवास शुरू कर देंगे। महादेवभाअीने जेलमें जो ६ दिन बिताये, सो तो सारा समय अिसी चिन्तामें बीते कि बापू अपवास करेंगे, तो क्या होगा? लेकिन महादेवभाअीकी मृत्युके बाद कुछ समय तक अपवासकी बात ठण्डी पड़ गअी। बापूजीने महादेवभाअीकी मृत्युको आज़ादीकी वेदी पर चढ़ा हुआ शुद्धतम बलिदान कहा है। शायद अुस बलिदानका असर देखनेके लिअे भी अुन्होंने अुस समय तो अपवासका विचार छोड़ दिया हो।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतने लगा, वैसे-वैसे देशकी दुर्दशा, दुष्काल और सरकारके जुल्म वगैराके समाचार पढ़कर बापूजीकी शान्ति चायब होने लगी और वे बहुत ही गंभीर दीखने लगे। अपवासका विचार फिर अुनके मन पर अपना प्रभुत्व जमाने लगा था। वे बराबर यह सोचने लगे कि सरकारके जुल्मोंके खिलाफ़ वे अपना विरोध किस तरह प्रकट कर सकते हैं? जनताके दुःखमें खुद किस तरह हिस्सा बँटा सकते हैं?

२८ दिसंबरको सोमवारका मौन था। अुस दिन बापूजीने वाअिसरायके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया। दूसरे दिन बा को पता चला, तो कहने लगीं: "पत्र आप भले लिखें, लेकिन अपवासकी कोअी बात न निकालें।" बापू हँस दिये। अुस पत्रमें अपवासका ज़िक्र तो था ही। हम सबने बापूजीसे आग्रह किया: "अपवासकी बात निकाल दीजिये। मुमकिन है, आपके पत्र ही से वाअिसरायकी सद्बुद्धि जाग्रत हो जाय। कम-से-कम अुन्हें यह कहनेका मौक़ा तो हरगिज़ न मिलना चाहिये कि गांधीने अपवासकी धमकी दी थी, अिसलिअे मैंने अुसकी बात नहीं सुनी।"

बापू मान गये। ३१ दिसम्बरको बापूजीका अेक छोटा-सा सुन्दर खत, अुनके अपने हाथों लिखा, भेजा गया। जवाबकी राह देखते हुअे बापू बहुत ध्यान-मग्न रहने लगे। अिस पर मीराबहनने कहा: "बापूको अेकान्तकी जरूरत है। आमके पेडके नीचे अेक झोंपड़ी बना दी जाय, तो अच्छा हो।" बा ने मना किया। बोलीं . "झोंपड़ीकी क्या जरूरत है? बापू तो हर जगह अेकान्त सेवन कर सकते हैं।" बापूने भी कहा: "मेरा अेकान्त दूसरी तरहका है। बा को मे अपनेसे दूर नहीं रख सकता, रखना भी नहीं चाहता।"

ज्यों-ज्यों वाअिसरायके साथका पत्र-व्यवहार बढ़ा, अुपवास नजदीक आने लगा। मदसे चूर सरकार बापूकी क्यों सुनने लगी? लेकिन हम सब तो अुपवासके विचारसे ही घबराते थे। अेक दिन भाअीने (प्यारेलालजीने) मुझसे पूछा: "तुम्हारे खयालसे बापू कितने दिनोंका अुपवास सहन कर सकते हैं?"

मैंने कहा: "निश्चित रूपसे कहना कठिन है, लेकिन राजकोटके अुपवासके वक्त तो पाँचवे दिन ही हालत गभीर हो गअी थी। अुस हिसाबसे देखें, तो बापू अिस बार बहुत दिन तक टिक नहीं सकेंगे।"

श्रीमती नायडू कहने लगीं: "बापूको अुपवास करना ही न चाहिये। अिस अुमरमे वे अुपवासके बाद बच नहीं सकेंगे, और अभी अतिम बलिदानका समय आया नहीं है।"

बा चिन्तित रहने लगीं। सरोजिनी देवीने अुनसे कहा: "आप चिन्ता न करें। बापू तो कहते है कि जब तक अीश्वरकी आज्ञा न होगी, अन्तरात्माकी आवाज सुनाअी न पडेगी, वे अुपवास करेंगे ही नहीं। और भगवान् अुन्हे कभी अुपवास करनेको कहेगा ही नहीं।"

बा ने जवाब दिया: "यह तो मै जानती हूँ कि भगवान् अुपवासके लिअे नहीं कहेगा। लेकिन बापूजी मान लेगे कि भगवान् ही कह रहा है तो?"

बापूजी दोपहरको आधा घटा ध्यानमे बैठते थे। वे अीश्वरसे मार्ग-दर्शनके लिअे प्रार्थना करते थे। बा सुबह स्नान करके आधा-पौना घटा

तुलसी माताकी पूजामें बैठती थीं। वे अीश्वरसे अपने पतिकी दीर्घायुके लिअे, प्राण-दानके लिअे, प्रार्थना करती थीं।

अिस चिन्ताके कारण बा की कमज़ोरी बढ़ने लगी। बा, सरोजिनी देवी और मीराबहन हर शनीचरको महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढ़ाने जाया करती थीं। लेकिन अब बा का जाना छूट गया। अुनमें अितना चलनेका भी अुत्साह नहीं रह गया था। अिससे हम सब बा के लिअे चिन्तित हुअे। सबके मनमें यह सवाल अुठता था कि अुपवासके दिनोंमें बा की क्या हालत होगी? हमें लगता था कि आजकी हालतमें वे अैसी कड़ी परीक्षाके लायक़ नहीं हैं। सरोजिनी देवीने तो ज़ोरदार शब्दोंमें बापूसे कहा: "बापू, आपका अुपवास बा को खतम कर डालेगा।" बापू हँस दिये और बोले: "मैं बा को तुम लोगोंसे ज़्यादा पहचानता हूँ। तुम लोग बा की बहादुरीका अन्दाज़ भी नहीं लगा सकते। अुसे तुम पहचानते ही नहीं हो। आखिर मैंने बा के साथ बासठ साल बिताये हैं। मैं तुमसे कहता हूँ कि बा तुम सबसे अधिक हिम्मत रखनेवाली है। मेरे हरिजन-अुपवासके दिनोंमें, जब मैंने जीवनकी आशा छोड़कर अपना सब सामान अस्पतालवालोंको बाँट देनेका निश्चय कर डाला था, तब बा ने दृढ़तापूर्वक, अपने हाथों, सारा सामान दूसरोंको बाँट दिया था और अुस वक़्त अुनकी पलक तक नहीं भीगी थी।"

सन् १९३३ की बा की डायरीके पन्नोंको अुलटनेसे अुसमें नीचे लिखा अुल्लेख मिलता है:

"नहाकर अस्पताल गअी। मथुरादास मेरे साथ थे। मैंने सामानकी बँधी टोकरी छोड़ी। फिर बापूजीने कहा: 'सारा सामान अस्पतालमें दे दो।' मैंने दे दिया। कल रात बापूजीको अुल्टी हुअी थी। सुबह बहुत कमज़ोरी आ गअी थी। बोले: 'अब मैं अिस बिछौनेसे नहीं अुठूँगा। तू कोअी फ़िकर न करना। तुझे तो अिसका अभिमान रखना चाहिये। सत्य अिसीका नाम है।' लेकिन अीश्वर दयालु है। अुसने अपने भक्तोंको तारा है। फिर जो होना हो, सो हो।"

और बा का अीश्वरके प्रति यह विश्वास निरर्थक नहीं ठहरा। सरकारने अुसी दिन बापूजीको छोड़ दिया। जिस दिन अुपवास पूरा हुआ,

अुस दिनकी अपनी डायरीमे बा ने लिखा है : "तीन बजे पर्णकुटी आये।" अिस प्रकार बा की श्रद्धा सफल हुअी।

बा की हिम्मतके बारेमे बापूजीका विश्वास सच्चा साबित हुआ। अुसी शामको अुन्होंने अुपवासके बारेमे बा से बातें कीं। दूसरे रोज़ बा कहने लगीं : "जहाँ अितनी ज्यादा झुठाअी चल रही हो, वहाँ बापू चुप कैसे बैठ सकते है? सरकारके अत्याचारोंके प्रति अपना विरोध जतानेके लिअे बापूके पास अुपवासको छोडकर दूसरा और साधन भी क्या है?" हम सब दंग होकर चुपचाप सुनते ही रहे।

मानसिक निश्चयके साथ बा की शारीरिक शक्ति भी बढी। अुपवासके दिनोंमे अुन्होंने सारा समय हिम्मतके साथ बापूजीकी सेवा की। अुन दिनों अेक दिनके लिअे भी अुनकी अपनी तबियत नहीं बिगड़ी।

३०

अुपवास

१० फरवरी, १९४३को सुबह नाश्तेके बाद प्रार्थना करके बापूजीने अुपवास शुरू किया। अुस रोज वे सुबह-शाम घूमे। महादेवभाअीकी समाधि पर भी गये। बा भी अुनके साथ घूमीं। हमेशाकी तरह बा ने फलाहार शुरू कर दिया। और अिक्कीस दिन तक अन्न नहीं छुआ। बापूजीके पहलेके अुपवासोंमे वे फलाहार भी दिनमे अेक ही बार किया करती थीं। अिस बार अुनकी दुर्बल स्थितिको देखकर हम सबने अुनसे आग्रह किया कि वे अेक ही समय खानेका नियम न रखे। बड़ी अनिच्छाके साथ वे हमारे आग्रहके वश हुअीं।

दिनमे दो-तीन बार बा गरम पानी और शहद पिया करती थीं। अुपवासके दिनोंमे बराबर बापूके पास ही रहनेकी अुनकी अिच्छा स्वाभाविक थी। वे शहदके पानीका गिलास लेकर बापूकी खाटके पास आ जातीं। कुछ काम रहता, तो गिलासको बापूजीके पास मेज़ पर रखकर काम कर लेतीं और फिर पानी पीने लगतीं। अेक दिन डॉक्टर गिल्डरने

कहा: "यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि सरकारी आदमियोंके मनमें शक पैदा हो और वे समझें कि बा बापूको पिलानेके लिअे ही पानीका यह गिलास लिअे घूमा करती हैं।" अुन्होंने बा से भी यह चीज़ कही। बा ने दृढ़ताके साथ अुत्तर दिया: "बापूजीके बारेमें कोअी अैसी शंका कर ही नहीं सकता।"

अुपवासके तीसरे दिन बापूजीको मतली आनी शुरू हुअी। बा ने कहा: "पानीमें थोड़ा मोसंबीका रस लीजिये न?" बापूने अिनकार किया। बोले: "मैं यों जल्दी-जल्दी रस नहीं लूँगा।" अुसके बाद तो अुबकाअीकी तकलीफ़ बढ़ गअी। बापू पानी बिल्कुल पी ही नहीं पाते थे। खून गाढ़ा हो गया। गुर्दोंका काम ढीला पड़ गया, लेकिन बा ने दुबारा अुन्हें रस लेनेको नहीं कहा। वे बड़ी स्वाभिमानिनी थीं। वे यह भी महसूस करती थीं कि बापू करेंगे तो अपने मनकी ही, फिर बार-बार अेक ही चीज़ कहकर अुनकी शक्तिका दुर्व्यय क्यों किया जाय?

जैसे-जैसे अुपवासके दिन आगे बढ़े, बा की तुलसी-पूजाका और बालकृष्णकी पूजाका समय भी बढ़ता गया। बापूजीकी हालत ज्यों-ज्यों गंभीर होती गअी, बा की पूजा अधिक लम्बी और अधिक अनन्य बनती गअी। २२ फरवरीके दिन बापू जीवन और मरणके बीच झूल रहे थे। मीराबहन मुझे चुपकेसे बाहर बरामदेमें बुलाकर ले गअीं। वहाँ बा तुलसी माताके सामने घुटने टेककर बैठी प्रार्थना कर रही थीं। अुनके मुखका भाव अितना करुण और अितना दीन था कि देखनेवालेकी आँखें डबडबा आती थीं। बा अपने ध्यानमें लीन थीं। अुनको अिस बातका कोअी पता नहीं था कि कौन अुनके पास खड़ा है या अुधरसे गुज़र रहा है!

अुपवासके तेरहवें दिन यानी २२ फरवरीको बापू दस मिनटके प्रयत्नसे आधा औंस पानी भी नहीं पी सके। थककर बेहोश हो गये, और खाटमें पड़ गये। नाड़ी कमज़ोर पड़ गअी। बदन पसीनेसे तर हो गया। बोलना तो ठीक, अुनमें अिशारा तक करनेकी ताक़त न रह गअी। बा प्रार्थनामें लीन थीं। बापूके कमरेमें अकेली मैं ही थी। मैंने डरते-डरते कहा: "बापूजी, क्या मोसंबीका रस लेनेका समय नहीं आया?"

सात मिनट तक विचार करनेके बाद बापूने अिशारेसे मंजूरी दी। मैं फौरन ही दो औंस रस और पानी मिलाकर लाअी और बापूजीको पिलाया। चार औंस प्रवाहीके शरीरमें पहुँचते ही बापूजीके निस्तेज चेहरे पर जीवनकी किरण झलकने लगी। अितनेमें बा आ पहुँचीं। भगवान्ने अुनकी प्रार्थना सुन ली थी।

२२ फरवरी १९४४ को बा का देहान्त हुआ। किसीने कहा, "पिछले साल अिसी दिन बापू यमराजके मुँहमें पड़े हुअे थे। बा ने सावित्रीकी तरह अुन्हें छुड़ाया होगा और शर्त की होगी कि अगले साल अिसी दिन मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।"

बापूजीके अुपवासने आगाखान महलके दरवाजे खोल दिये थे। दिन भर मुलाकातियोंका तॉता लगा रहता था। लोग बापूको तो सिर्फ प्रणाम करके ही बाहर निकल आते। बादमें वे बा से बातें करते। बा हिम्मतके साथ दिनभर काम करतीं। लड़कों-बच्चोंको देखकर वह बहुत खुश हुअीं। वे मॉ थीं। सारी दुनियाको अपना चुकी थीं। लेकिन अिसके कारण अुनके नजदीक अपने लड़कोंका स्थान घटा नहीं था। बापूने नियम बना दिया था कि अुपवासके दिनोंमें किसी मुलाकातीको खानेपीनेके बारेमें न पूछा जाय। बा के लिअे अिस नियमका पालन बहुत कठिन था। लेकिन अुन्होंने अिसे अक्षरशः पाला।

२१ दिन पूरे हुअे। सरकारने अुपवास छोड़नेके समय सिर्फ पुत्रोंको ही पास रहनेकी अिजाजत दी, मित्रोंको नहीं। बापूके नजदीक मित्र और पुत्रमें कभी फर्क नहीं रहा। अिसलिअे अुन्होंने पुत्रोंको आनेसे रोक दिया। दो मार्चकी शामको जब मुलाकाती लौट रहे थे, बा की ऑखें सजल हो आयी थीं। लक्ष्मीबहन खरेको और दूसरे मित्रोंको बिदा देते हुअे अुन्होंने कहा: "बहन, यह आखिरकी राम-राम है।" मैंने कहा: "बा अैसा क्यों कहती हैं? हम सब जल्दी ही बाहर जानेवाले हैं।" बा ने अुत्तर दिया: 'हॉ, तुम सब जाओगे।"

३१

अुपवासके बाद

तीन मार्च, १९४३ को बापूके अुपवास पूरे हुअे। बादमें तीन-चार रोज़ तक सरकारने देवदासभाअी और रामदासभाअीको मिलने आनेकी अिजाज़त दी। मगर जब देखा कि बापूजीको ताक़त आ रही है, और खतरेका समय निकल गया है, तो मुलाक़ात बन्द कर दी। लड़कोंका आना बा के लिअे 'टॉनिक' का काम करता था। जेलके दरवाज़ोंके बन्द होनेके साथ ही बा की शक्ति भी क्षीण होने लगी। अपनी संकल्प-शक्तिके बलपर ही बा अुपवासके दिनोंमें अितना काम कर सकी थीं, और शरीरको भी टिका सकी थीं। लेकिन वही शरीर अब क्षीण होने लगा। बा सहज ही थकने लगीं। अुदास भी रहने लगीं। १६ मार्चको हृदयकी धड़कनका दौरा हुआ, जो क़रीब दो घण्टे रहा; अुसके बाद २५ मार्चको, ९ दिन बाद, फिर वही दौरा हुआ और क़रीब चार घण्टे रहा। बस, तभीसे दवाअियाँ शुरू हुअीं, और आखिरी दम तक साथ चलीं।

अुपवाससे पहले बापूजी अक्सर कहा करते थे कि ६ महीनोंमें कुछ-न-कुछ फ़ैसला हो ही जायगा। अुपवासके बाद अुन्होंने कहना शुरू किया कि अब कम-से-कम सात साल जेलमें रहना होगा। बा को अिस चीज़का बहुत धक्का लगा। अुन्होंने बार-बार कहना शुरू किया: "मुझे तो महादेवके पास ही रह जाना है न? मैं कौन सात साल जीनेवाली हूँ?" लेकिन साथ ही बा बालककी तरह सरल भी थीं। अन्दरसे आशा बिल्कुल नष्ट नहीं हो गअी थी। वे कअी बार बालकृष्णकी मूर्तिके सामने अेकान्तमें प्रार्थना करती सुनी गअीं: "हे बालकृष्ण, हमें जल्दी जेलसे बाहर ले चलो!"

अेक रोज़ यों ही सिनेमाकी चर्चा चल पड़ी। अखबारमें 'भरत-मिलाप' का अिश्तिहार था। बा को रामायणमें 'भरत-मिलाप' का प्रसंग बहुत प्रिय था। मैंने कहा: "बा, आप जब दिल्ली आयेंगी, तो आपको

'भरत-मिलाप' दिखा लायेंगे ।" बा को यह विचार अच्छा लगा। कुछ देरके लिअे वे भूल गअी कि वे जेलमे बैठी थीं और दिल्लीसे बहुत दूर थी। कहने लगी: "लेकिन बापूजी न जायॅ, तो मैं कैसे जा सकती हूँ?" मैंने कहा: "नही बा, वह तो धार्मिक खेल है। रामायणकी कहानी है। बापू खुद चाहे न जायॅ, लेकिन आपको नही रोकेंगे। हम तारा, रामू, मोहन* सबको साथ ले चलेंगे।" तारा, रामू, मोहन वगैराका नाम सुनकर बा मुसकराने लगीं और 'अच्छा' कहकर दूसरी बातोंमे लग गअीं।

बापूके अुपवासके दिनोमे श्री जयसुखलाल गांधी बा से मिले। अुन्होंने बताया कि अुनकी लड़की मनु, जो १९४२ की लडाअीसे पहले बा की देखरेखमे थी, अब नागपुर जेलमे है, और वहॉ अुसकी ऑखे बहुत खराब हो रही है। अुन्होंने बा से कहा: "अगर मनु आपके साथ रहे, तो अुसकी ऑखें भी सुधर जायॅ और आपकी सेवाका लाभ भी अुसे मिले।" बा के मातृ-हृदयको लड़कीकी ऑखोंको बिगड़नेसे बचा लेनेका विचार बहुत महत्त्वका मालूम हुआ, और अुन्होंने बापूजीसे कहा: "मुझे अेक नर्सकी जरूरत तो है ही। हम मनुको बुला ले तो कैसा हो?" बापूजीने बातको टालनेकी कुछ कोशिश की। अुन्हे डर था कि सरकार अिनकार कर देगी, और वे सरकारको अैसा कोअी मौका देना नहीं चाहते थे। लेकिन बा अपनी बात पर डटी रहीं। अुन्होंने खुद कर्नल शाह और कर्नल भडारीसे कहा: "मुझे अपने लिअे अेक नर्सकी जरूरत है।" अिसी दरमियान बा को फिर हृदयकी धड़कनका अेक सख्त दौरा हुआ। डॉ० गिल्डरने और मैंने अेक पत्रमे अपनी डॉक्टरी राय देते हुअे लिखा कि बा को नर्सके रूपमे अेक साथीकी आवश्यकता है। सरकार चौंकी। सवाल अुठा कि मनु न आ सके, तो कौन आये? बा ने मणिबहन पटेल और प्रेमाबहन कटकके नाम दिये। सरकारको ये क्योंकर रुचते? बबअीकी सरकारने मध्यप्रान्तकी सरकारके साथ पत्र-व्यवहार किया और २३ मार्च '४३को मनु आगाखान महलमे आ पहुँची। अुसी दिन हमारी

---

* तारा श्री देवदासभाअीको लड़की और रामू व मोहन अुनके लडके हैं।

अम्माजान — श्रीमती सरोजिनी नायडू — मलेरियाके जन्तुओंके प्रतापसे रिहा हुआीं ।

मार्चके अन्तमें बा को निमोनियाका हल्का-सा हमला हो गया । अप्रैलके शुरूमें अुनके पेशाबमें 'बी० कोलाअी' (B. Coli) की पुरानी तकलीफ़ जाग अुठी । अुचित अिलाजसे ये सब तकलीफ़ें दूर हो गअीं ।

मनुने बा की सेवामें खूब मदद की । कुछ दिनके लिअे बा की तबियत खासी अच्छी लगने लगी । खानेके समय वे खानेके कमरेमें आकर बैठतीं । डॉक्टर गिल्डर और मि० कटेली मांसाहारी थे । अिसलिअे वे अलग अेक टेबल पर बैठते थे । मीराबहन ज़मीन पर आसन बिछाकर बैठतीं । मनु, भाअी और मैं अेक दूसरी मेज़ पर बैठते । बा सबके पास जातीं, सबके खानेका ध्यान रखतीं, और बातचीत करतीं । रसोअी पीछे-वाले बरामदेमें बनती थी । बा वहाँ जाकर बैठतीं, पकानेवालेके साथ बातचीत करतीं और पकानेके बारेमें सूचनायें देतीं । मतलब यह कि अुन्होंने वहाँ अच्छी तरहसे माताका स्थान ग्रहण कर लिया था । वे सारे हिन्दुस्तानकी माँ थीं । और अिस छोटेसे परिवारकी माँ तो थीं ही । माँकी ही तरह वे सबकी सँभाल रखती थीं ।

बापूजीको जैसे-जैसे ताक़त आती गअी, वे अपना ज़्यादा समय सरकारके साथ पत्र-व्यवहारमें लगाने लगे । बा को सिखानेका काम और दूसरे सब काम ढीले पड़ गये । बा नियमित रूपसे अपने आप अकेली बैठकर रामायण, गीताजी वग़ैरा पढ़तीं या मनुसे सुनतीं । मनुने अुन्हें सारी वाल्मीकि-रामायण पढ़ सुनाअी । बादमें पूरी भागवत सुना दी । बा को भागवत अितनी प्रिय थी कि अेक बार समाप्त करके अुसे फिर सुनना शुरू किया था ।

३२

खेलका शौक

अिन सब कामोंके अलावा बा खेलोंमे भी काफी रस लेने लगीं। सुबह-शाम जब हम लोग 'बैडमिण्टन' या 'टेनीकॉअिट' खेलते, वे कुर्सी पर बैठकर देखा करती और अुनमे खूब दिलचस्पी लेतीं। अगर खेलमे कोअी शैतानी या चालाकी करता, तो वे अुसे डॉटतीं। रातमे मीराबहन और डॉ० गिल्डर वगैरा कैरम खेलते थे। बा कैरमका खेल देखने भी जातीं। धीरे-धीरे अुन्होंने खुद भी कैरम खेलना शुरू किया। अुसमे अुनको अितना रस आने लगा कि रोज दोपहरको वे आधा घंटा कैरमका अभ्यास करने लगीं। मीराबहन कैरममें सबसे होशियार थीं। बा हमेशा अुनके साथ रहतीं और अिसलिअे हमेशा जीत कर आतीं। अिससे अुन्हें बहुत खुशी होती थी। अगर किसी दिन अकस्मात हार जातीं, तो अुदास हो जाती। आखिर यह तय हुआ कि कुछ भी क्यों न हो, आखिरी खेलमे बा को जिताना ही चाहिये। बा को कैरमके खेलमे रानी ले लेनेका बहुत शौक था। रानी आ जाती, तो वे हारको हार न मानतीं। कैरममे बा अितनी लीन हो जाती थी कि अपना दुःख, रोग सब भूल जातीं। आखिरी बीमारीमे जब अुनमे खुद खेलनेकी ताक़त न रह गअी, तब अुनके पलंगके पास कैरम बोर्ड रखकर दूसरे लोग खेलते थे और यह अुन्हे बहुत अच्छा लगता था। अिस प्रकार मृत्युके दो-तीन दिन पहले तक वे खाट पर पडी-पड़ी कैरमका खेल देखती और अुसमे रस लेती थीं। मीराबहन अुनकी हमेशाकी साथिन थीं। अिसलिअे अुनकी जीतको वे अपनी जीत और अुनकी हारको अपनी हार मानती थीं। वे हम लोगोंसे आग्रह करती थीं कि हम लोगोंमेसे कोअी मीराबहनके साथ खेले, ताकि डॉ० गिल्डर और अुनके साथी अकेली मीराबहनको हरा न सकें। जब 'पिंगपॉग' शुरू हुआ, तो बा ने अुसे भी खेलना शुरू किया। लेकिन अुससे सॉस फूलती थी, अिसलिअे वह बन्द करवा दिया गया। अुनका शरीर बूढा हो गया था, लेकिन मन कअी चीजोंके लिअे बिलकुल ताजा था।

३३

वात्सल्य

बच्चोंके साथ खेलना और अुन्हें खिलाना-पिलाना बा को बहुत अच्छा लगता था। आश्रममें बा के पास दो-चार लड़के-बच्चे रहते ही थे। जेलमें यह सब कहाँसे आते? अेक रोज़ बकरीने बच्चे दिये। मनु अेक बच्चेको बा के पास अुठा लाअी। बा अुसे गोदमें लेकर प्यार करने लगीं। अुसको खिलाती रहीं। वे मानो यह भूल ही गअीं कि वह बकरीका बच्चा था! वे अुससे बातें करने लगीं: "भाअी, तू हर रोज़ मेरे साथ खेलने आना।" कुछ दिनों तक मनु हर रोज़ अुसे बा के पास लाती रही। अेक दिन अुसने बा के कपड़े बिगाड़ दिये। तबसे अुसका आना बन्द हुआ।

३४

बा का दुशाला

जब बा के साथ मैं बिड़ला हाअुसमें गिरफ़्तार हुअी, मेरे पास कोअी गरम कपड़ा न था। मैं तो चन्द रोज़के लिअे बंबअी आअी थी। गर्मीके मौसिममें गरम कपड़े कौन साथ रखता है? बा ने अपना सामान बाँधते समय अेक दुशाला वापस भेजनेके खयालसे अलग निकालकर रख दिया था। अुन्हें अुसको अपने साथ लेनेकी ज़रूरत नहीं मालूम हुअी। मुझे खयाल आया कि न जाने जेलमें कितने दिन लग जायँ,। शायद कहीं गरम कपड़ेकी ज़रूरत पड़ ही जाय, अिसलिअे बा से पूछकर वह दुशाला मैंने साथमें रख लिया। जेलमें वह मेरे बहुत ही काम आया। पूनामें खासी ठण्ड थी। सरकारका हुक्म था कि बाहरकी दुनियाके साथ हमारा कोअी संपर्क न रहे। अैसी दशामें वह दुशाला न होता, तो मुझे बहुत तकलीफ़ होती। बापूके अुपवासके दिनोंमें माताजी (मेरी माँ) वहाँ आअी थीं। बा ने सोचा कि कहीं सुशीला गरम कपड़े मँगवाना भूल

न जाय, अिसलिअे अुन्होंने खुद ही माताजीसे कहा: "सुशीलाके पास शाल नहीं है। मेरा अिस्तेमाल करती है। अुसके लिअे शाल वगैरा भेज दें।" माताजीने सोचा होगा कि बा को अपने दुशालेकी ज़रूरत है, अिसलिअे वह अुसी रोज अपनी शाल वहाँ मेरे लिअे छोड़ गअीं। दूसरे रोज बा ने अुसे देखा और पूछने लगीं: "यह किसकी है?" मैंने कहा: "माताजी मेरे लिअे छोड़ गअी है।" बा अिसे सह न सकीं। बोलीं: "माताजीका दुशाला अुन्हें लौटा देना। तेरे पास तो मेरा है न?" मैंने कहा: "बा, आपको अुसकी ज़रूरत पड़ेगी न?" अिस पर बा बोलीं: "नहीं, नहीं, बहन मुझे जरूरत नहीं है। मैंने माताजीसे कह दिया है कि वे तेरे लिअे दुशाला और गरम कपड़े भेज दें। जब वे आ जायँ, तो तू मेरा दुशाला भले मुझे लौटा देना," और अुन्होंने आग्रहके साथ माताजीका दुशाला वापस करवाया। बा के दुशालेको मैंने सँभालकर अुनकी आलमारीमें रख दिया। बा की मृत्युके बाद देवदासभाअीने बा की स्मृतिके रूपमें वह दुशाला मुझे साग्रह वापस दिया।

दीवालीके दूसरे दिन बहुतसे प्रान्तोंमें नया साल मनाया जाता है। अिस रोज लोग अेक दूसरेको भेंट वगैरा भी देते हैं। जेलमें भी पहली दीवालीके बाद नये सालके दिन श्रीमती नायडूने बा को अेक साडी भेंट की। बा ने अुसे बखुशी पहना। बादमें बा मेरे लिअे अपनी आलमारीसे अेक साडी ढूँढ लाअीं। राजकुमारी अमृतकुँवरने अपने हाथकते सूतकी अेक साडी बुनवाकर बा को दी थी। अुसकी किनार नीले रेशमकी थी। बा वही साड़ी लाअीं और मुझसे कहने लगीं: "सुशीला, अिसे तू पहनना। नअी नहीं है बहन, अेक दो बार मेरी पहनी हुअी है। यहाँ मेरे पास नअी साड़ी नहीं है।" मैंने कहा: "बा, नअीकी तो आवश्यकता ही नहीं। आपके पहननेसे अिसकी कीमत घटी नहीं, बढी है। लेकिन आपके पास यहाँ साडियाँ कम हैं, अिसलिअे आप अिसे रखिये। बाहर चलने पर दीजियेगा।" मगर बा बाहर न आअीं। अुनकी मृत्युके बाद देवदासभाअीने मुझसे अुनकी अेक साड़ी ले लेनेको कहा। मैंने वही साड़ी अुठा ली। बा की वह साड़ी और अुनका वह दुशाला, ये दो आज मेरी क़ीमतीसे कीमती चीजें हैं।

३५

खिलाने और खानेका शौक

बा बहुत अच्छा खाना पकाना जानती थीं। लेकिन बापूजीने जबसे अस्वादव्रत दाखिल किया, बा की यह कला निकम्मी-सी हो गअी थी। तो भी कभी-कभी वे कुछ बना या बनवा लेती थीं। अुन्हें अच्छा खाना खाने और खिलानेका शौक था। जेलमें वे डॉ० गिल्डर वगैराके नाश्तेके लिअे अकसर मनुसे कुछ-न-कुछ तैयार करवाती। अेक रोज़ अुन्होंने 'पूरण पोली' बनवाअी। कहने लगीं: "आज तो मैं भी खाअूँगी। बापूजीसे पूछ आ, वे खायँगे क्या?" भारी चीज़के खानेसे बा को हृदयकी धड़कनका दौरा हो आता था। मनु बापूजीसे पूछने गअी, तो बापूने जवाब दिया: "बा न खाये, तो मैं खाअूँ।" बा को निश्चय करनेमें अेक पलकी भी देर न लगी। बोलीं: "तो मैं नहीं खाअूँगी।" फिर पास बैठकर अुन्होंने बापूजीके लिअे और दूसरे सबके लिअे 'पूरण पोली' बनवाअी, सबको खिलाअी, और खुदने चखी तक नहीं!

अेक दिन बा को फिर हृदयकी धड़कनका हमला हुआ। बड़ी देर तक रहा। दूसरे दिन अुन्होंने मनुसे कहा कि वह अुनके लिअे घीमें बैंगन पका दे। मनु मुझसे पूछने आअी। मैंने मना किया। कहा: "किसी तरह अिसे टाल दो। अभी कल ही तो दौरा हुआ था। अैसी चीज़ खाकर कहीं फिर बीमार न हो जायँ!" मनुने जाकर बा से कहा: "सुशीला बहनने बैंगनका शाक बनानेसे मना किया है।" बा चिढ़ गअीं और बापूजीसे शिकायत की। बापू काममें थे। धीरजके साथ समझानेका समय न था। अिसलिअे अुन्होंने कह दिया: "तुम्हें अपनी तबियतके खातिर अितना संयम पालना ही चाहिये।" लेकिन बा यों थोड़े ही समझनेवाली थीं। वे नाराज़ हो गअीं। बोलीं: "बस मुझे कुछ खाना ही नहीं है।" मैंने और मनुने बहुत मिन्नत की। कहा: "बा, आपकी तबियतके लिअे ही अिनकार करना पड़ा। नहीं तो आप

जो कहें, सो बना दें।" लेकिन बा यों माननेवाली न थीं। "मुझे कुछ बनवाना ही नहीं है," अुन्होंने कहा, और फिर तो क़रीब दस-पन्द्रह दिन तक वे सिर्फ दूध, फल और शहदका पानी लेती रहीं। मुझे और मनुको बहुत दुःख हुआ। बापूजीने हमे समझाया: "चिन्ता न करो। अिससे बा को कोअी नुकसान नही होगा, फायदा ही होगा।" सचमुच अिस अरसेमे बा की तबियत बहुत अच्छी रही। हम लोग बा को समझानेका प्रयत्न तो करते ही रहते थे। धीरे-धीरे बा बैंगनवाली बात भूल गअीं और मामूली खुराक लेने लगीं।

३६

बा की जिद

अन्तिम बीमारीमे, मृत्युसे दो रोज पहले, बा को खयाल आया कि अुन्हे रेडीका तेल लेना चाहिये। अुस समय वे अितनी कमजोर हो गअी थीं कि मुझे और डॉ० गिल्डरको लगा कि जुलाब देना ठीक न होगा। सुबह ही बा ने मुझसे रेडीका तेल माँगा। मैने पहले तो समझानेकी कोशिश की। मगर जब बा नहीं मानीं, तो अुन्हे टालकर चली गअी। थोड़ी देरमे बापूजी आये। बा ने अुनसे भी रेडीका तेल माँगा। बापूजीने भी अुन्हे समझाया कि अैसी हालतमे रेडीका तेल लेना ठीक नही, और कहा: "बीमारको कभी अपनी दवा खुद न करनी चाहिये। और, मै तो तुझसे कहता हूँ कि अब तू दवा छोड दे, सब भूल जा, मुझे भी भूल जा। राममे ही मनको पिरो दे।" मुझसे कह दिया: "बा समझ गअी है। अब रेडीका तेल नही माँगेगी।" मगर बा अितनी आसानीसे अपनी जिद छोडनेवाली नही थीं। कुछ समय बाद डॉ० गिल्डर आये। बा ने अुनसे फिर रेडीका तेल माँगा। अुन्होंने भी अिनकार किया। बा को बहुत दुःख हुआ। दुपहरमे जयसुखलालभाअी मिलने आये, तो बा अुनसे शिकायत करने लगीं: "ये लोग अपने कानून चलाते है। मुझे रेडीका तेल भी नही देते!"

मैं सुबहके बादसे बा के पास गओी नहीं थी! कहीं फिर रेंडीका तेल माँग बैठें तो! दो बजेके क़रीब गओी। तब तर्जनी दिखा-दिखा कर बा मुझसे कहने लगीं: “तूने मुझे रेंडीका तेल नहीं दिया न? अब तो मैं कुछ भी नहीं लूँगी। तेरी कोओी भी दवा नहीं लूँगी। मुझ पर भी अस्पतालका क़ानून चलाती है क्यों?” अिस बालहठका क्या अुपाय करना, यह अेक समस्या ही थी। अुनके दिलको दुखाना भी अखरता था। कहा: “बा, मुझे तो पता चला था कि आप अब समझ गओी हैं कि रेंडीका तेल नहीं लिया जा सकता।” “नहीं, नहीं, मुझे तो वह लेना ही है,” बा की आवाज़में और अुनके चेहरे पर अेक तरहकी दीनता दीखती थी। मैंने सोचा, अन्तिम समयमें अिन्हें क्यों आघात पहुँचाया जाय? और कहा: “आप आग्रह छोड़ ही न सकेंगी, तो मैं लाचार होकर आपको रेंडीका तेल दूँगी।” बा ने कहा: “तो ला।” किसीने युक्ति सुझाओी कि ‘लिक्विड पैराफीन’में थोड़ा रेंडीका तेल डालकर दे दो। अैसा ही किया गया। बा अुसे पीकर शान्त हो गओीं।

३७

‘ पीड़ पराओी जाणे रे ’

अिस बारका जेल-जीवन अनोखा था। सरकार अितनी डर गओी थी कि मानो निहत्थे स्त्री-पुरुष अुसे मिटा देंगे और कहीं जेलके अन्दर रहनेवालोंका बाहरवालोंके साथ किसी भी तरहका कोओी संपर्क कायम हो गया, तो शायद आसमान ही फट पड़ेगा! अगस्त ’४२की ‘पकड़-धकड़’के दिनोंमें सरकारका हुक्म था कि क़ैदियोंको न तो अखबार दिये जायँ, न पत्र लिखनेकी अिजाज़त दी जाय और न किसीसे मिलने दिया जाय। सरोजिनी देवी अपनी लड़कीको बीमार छोड़कर आओी थीं। अुन्होंने सरकारको लिखा: “मेरी लड़कीके समाचार तो मुझे भेजे जायँगे न?” बा को भी हर रोज़ अपने लड़कों-बच्चोंकी चिन्ता बनी रहती। मीराबहनके पास कपड़े कम थे। अुन्होंने आओी० जी० पी० से कहा: “मेरे कपड़े

तो मँगवा देंगे न ?" आखिर कोओी तीन हफ्ते बाद आओी०जी०पी०ने खबर दी कि घरेलू मामलोंके बारेमे सगे रिश्तेदारोंको पत्र लिखना हो, तो लिख सकते हैं। लिखकर पत्र सरकारके हवाले करने होंगे। वह अुन्हें आगे भेज देगी। रिश्तेदार भी लिखना चाहे, तो पत्र सरकारके पास भेजे। सरकारको ठीक मालूम हुआ, तो क़ैदियोंको पत्र दिये जायँगे। कपडे वग़ैरा मँगानेके बारेमे भी अैसा ही नियम था। सरोजिनी देवीने अपने घर पत्र लिखा। मीराबहनने कुछ मित्रोंको पत्र लिखनेकी अिजाजत माँगी। अुनके घरके लोग तो समुद्र पार थे। अुन सबको छोडकर वे यहाँ आओी थीं। यहाँ मित्र ही अुनके सगे-सम्बन्धी थे। बापूजीने लिखा. "मैने तो आश्रम-जीवन अपनाया है। मेरे लिअे घरका कौन और बाहरका कौन? महादेवभाओीके लडकोंको और पत्नीको न लिख सकूँ, तो और किसे लिखूँ? फिर, मेरे कोओी घरेलू मामले तो है ही नही। राजनीतिक विषयों पर न लिखूँ, लेकिन अगर दूसरे सार्वजनिक कार्योंके बारेमे भी न लिख सकूँ, तो पत्र लिखनेकी अिजाज़त मेरे लिअे कोओी मतलब नहीं रखती।"

सरोजिनी देवीने और बा ने मुझसे पूछा: "तूने माताजीको लिखा?" बापूजीने मुझसे कहा था: "मेरे पत्रका अुत्तर आने दे, फिर देखेंगे कि तुझे क्या करना चाहिये?" बापूजीके पत्रके अुत्तरमे सरकारने अुन्हे रिश्तेदारोंके अलावा आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी अिजाज़त दे दी। लेकिन घरेलू बातोंके सिवा दूसरी बातोंके बारेमे लिखनेकी मनाही थी। अिस पर बापूजीने किसीको भी पत्र न लिखनेका निश्चय किया और सरकारको अपना निश्चय लिख भेजा। अिस बीच भाओी (प्यारेलालजी) भी वहाँ आ गये थे। बापूने हमसे कहा: "मुझे लगता है कि अिन शर्तों पर हममेसे किसीको भी पत्र नहीं लिखना चाहिये।" सरकारकी ओरसे हमे यह कहा गया था कि जिन्हे पत्र लिखना चाहें, अुनके नाम और पते दे दे। भाओीने और मैंने जवाबमे लिख भेजा कि "जब तक सरकार गांधीजीके लिअे पत्र लिखना शक्य नहीं करती, तब तक हम कैसे लिख सकते है?" मुझसे कहा गया: "बापू तो महात्मा हैं, तुम्हें तो 'माँ' को पत्र लिखना ही चाहिये। अिस तरह पत्र न लिखनेसे

तुम कुछ महात्मा नहीं बन जाओगी।" मैंने जवाब दिया: "महात्मा बननेके लिअे मैंने अैसा नहीं किया।" मैंने बापूजीसे कहा: "बापूजी, मैंने तो आपकी सलाहसे सरकारको लिखा है। तब फिर मुझे अिस तरहकी बातें क्यों सुनाओ जाती हैं?" बापूजीने अुत्तर दिया: "मैंने तो तुझे तेरा धर्म बताया है। बा, तू, प्यारेलाल, मुझमें समा जाते हो। मैं न लिखूँ, तो तुम कैसे लिख सकते हो? लेकिन वैसा करनेकी शक्ति न हो, या स्वतंत्र रीतिसे विचार करने पर तुझे लगे कि धर्म तो अिससे अुलटा ही है, तो तू सरकारको लिखा अपना पत्र लौटा ले और घर पत्र लिखना शुरू कर दे।" मुझे अैसा करनेकी कोअी आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

कुछ दिनों बाद बा ने पत्र लिखना शुरू कर दिया। जेलमें किसीसे मिलना भी नहीं होता था, और पत्र भी न मिलें, तो बा को बहुत कष्ट होता था। तिस पर वे खुद पत्र न लिखें, तो अुन्हें पत्र मिलें कैसे? अिस विचारसे बा ने पत्र लिखना शुरू किया। मुझे भी समझाने लगीं: "बापूजी तो साधु हैं। अुन्होंने तो सब माया-ममता छोड़ दी है। मगर हम लोगोंने तो अैसा नहीं किया। तुझे भी माँको पत्र लिखना चाहिये।" बापूजीसे भी कहा: "सुशीलासे कहिये न, अपनी माँको पत्र लिखे।" बापू बोले: "मैंने अुसे कब रोका है?" बा अेक माँ थीं। वे समझती थीं कि जिस तरह अुनके बच्चोंके पत्र न आनेसे वे व्याकुल हो अुठती हैं अुसी तरह माताजी भी हमारे पत्र न पाकर दुःखी होती होंगी।

३८

जेलमें बापूजीका दूसरा जन्मदिन

२ अक्तूबर, १९४३ को फिर बापूजीका जन्मदिन आया। बा की तबियत नरम थी। तिस पर अिस साल हमारी 'अम्माजान' नहीं थीं। सारी तैयारी हमीं लोगोंने की। बा ने अपने हाथों कैदियोंको खाना बाँटा और भरसक काममे मदद की। बा के पास बापूजीके सूतकी अेक साड़ी थी। सेवाग्राम छोड़ते समय बा ने वह मनुको सौंपी थी। "लोग कहते है, आश्रम जब्त हो जानेवाला है। यह साडी सँभाल कर रखना। कहीं यह खो न जाय। मेरे मरने पर मुझे अिसी साड़ीमे जलाना," अुन्होंने कहा था। जेलमे आकर बा ने अुस साड़ीकी तलाश करवाअी। मगर कुछ पता न चला। जब मनु आगाखान महलमे पहुँची, तो अुसने साड़ीका ठिकाना बताया और बा ने साड़ी मँगवाअी। अबकी बापूजीके जन्मदिन पर बा ने वही साड़ी पहनी।

३९

सहृदयता

अक्तूबरके अन्तमे मेरी भाभी शकुन्तलाके शस्त्रक्रिया द्वारा प्रसूति कराअी गअी और अुन्हे लड़की हुअी। नवबरके शुरूमे अेक हफ्तेकी बच्चीको छोड़कर वे चल बसीं। जेलके ढग अितने निराले होते है कि ऑपरेशनका और मरनेका तार अेक ही साथ मिला। वह भी मृत्युके आठ-दस दिन बाद! अितनेमे पत्र भी आ गया। बीमारीमे वे सारा समय मुझे पुकारती रही थीं। माताजीने और मेरे भाअीने सरकारसे मुझे पैरोल पर छोड़नेकी अर्ज की थी। लेकिन चूँकि मैं गांधीजीके साथ थी, सरकारने मुझे पैरोल पर बाहर भेजनेसे अिनकार किया। बा का

कोमल हृदय द्रवित हो अुठा। बापूजीसे कहने लगीं: "सुशीलाको माँके पास जाना ही चाहिये।"

बापू हँस दिये: "सुशीला जायेगी, तो तेरी सेवा कौन करेगा?"

"मैं जानती हूँ कि मुझे तकलीफ़ होगी; मगर मैं अितनी स्वार्थी नहीं हूँ कि अुसकी माँके दुःखको न समझ सकूँ।" फिर मुझसे बोलीं: "सुशीला, तुझे माताजीको और मोहनलालको पत्र लिखना चाहिये।"

मैंने कहा: "बा, मैं सरकारको अेक बार लिख चुकी हूँ कि पत्र नहीं लिखूँगी। अब मैं कैसे लिख सकती हूँ?"

बा बापूजीके पास पहुँची: "सुशीलाको समझाअिये कि सरकारको लिख चुकी है तो क्या हुआ? अुस समय थोड़े ही किसीको कल्पना थी कि अैसी आपत्ति आयेगी? भाअी-बहन दोनोंको घर पत्र लिखना ही चाहिये।"

बापूजीने हमें बुलाकर कहा: "पत्र न लिखनेकी सलाह तो मेरी ही थी न? मुझे लगता है कि विशेष परिस्थितिमें पत्र लिखनेमें हर्ज़ नहीं है। माताजीकी और मोहनलालकी शान्तिके लिअे तुम्हें घर पत्र लिखना चाहिये।"

अुसी रातको हम लोगोंने घर पत्र लिखे। मेरे भाअीने जवाबमें लिखा कि माताजी खुद बीमार रहती हैं। अैसी हालतमें शकुन्तलाकी आठ दिनकी बच्चीको कैसे सँभालना, यह अेक सवाल है। बापूजीने बा से कहा: "बेबीको यहाँ बुला लें। तू सँभाल लेगी न?" बा ने कहा: "मैं क्या सँभालूँगी? मुझसे क्या होगा? मैं तो खुद बीमार हूँ। लेकिन सरकार अुसे आने दे, तो मुझसे जो बन पड़ेगा, करूँगी।" बापूजीने सरकारको पत्र लिखा: "घरमें अुस बच्चीको सँभालने लायक़ कोअी नहीं है। या तो सुशीलाको पैरोल पर जाने दिया जाय, ताकि वह बच्चीके लिअे मुनासिब बन्दोबस्त कर सके, या बच्चीको यहाँ भेज दिया जाय। सुशीला डॉक्टर है, लेकिन साथ ही हमारी लड़की भी है। कुछ दिनके लिअे भी अुसके जानेसे हमें तकलीफ़ तो होगी ही, अिसलिअे अगर बच्चीको ही यहाँ भेज दिया जाय, तो ज़्यादा अच्छा हो। अैसा न हो, तो भले हमें तकलीफ़ सहनी पड़े, मगर सरकार सुशीलाको पैरोल पर

वक्त अुसका अिस्तेमाल करते है। बा भोजनके समय हमेशा बापूजीके पास आकर बैठा करती थी। अब बा की जगह अुनकी मेज़ रहती है।

हालत और खराब हुअी। 'ऑक्सीजन' मँगाकर रखा। पहले तो बा नलीको जल्दी ही नाकसे हटा लेती थी, मगर बादमे तो खुद माँग-कर 'ऑक्सीजन' लेने लगी। मैने और डॉक्टर गिल्डरने सरकारको पत्र लिखा कि डॉ० जीवराज मेहताको और डॉ० विधानचन्द्र रायको सलाहके लिअे भेजा जाय। डॉ० जीवराज तो पूनामे ही थे। अेक दिन शामको चन्द मिनटोंके लिअे वे लाये गये। अुस वक्त बापूजीको बा के पाससे हटा दिया गया था। सिर्फ डॉ० गिल्डरके साथ मैं हाजिर थी। डॉ० विधानचन्द्र रायको नही भेजा गया। दुबारा याद दिलवायी, मगर कोअी जवाब नही मिला।

जैसे-जैसे बीमारी बढी, नर्सिंगका—तीमारदारीका—काम भी बढा। दूसरी नर्सोंके लिअे लिखा गया, तो सरकारकी तरफसे अेक आया भेजी गअी। वह अेक हफ्तेके अन्दर ही भाग गअी। अिसके आधार पर बा की मृत्युके बाद बडी धारासभामे यह कहा गया था कि बा की सेवाके लिअे तालीम-याफ़्ता नर्सें रखी गअी थीं। फिरसे नर्सोंकी माँग की गअी, तब सरकारने बाहरसे किसी रिश्तेदारको बुला लेनेके लिअे कहा। बा ने कनु गांधी और प्रभावतीबहनके नाम दिये। लम्बे पत्र-व्यवहारके फलस्वरूप, पहली माँगके हफ्तों बाद, सरकारने १२ जनवरीके दिन प्रभावतीबहनको भेजा और पहली फरवरीको कनुको आने दिया।

बापूजीने सरकारको लिखा था कि बा को और अुनके साथ रहनेवाले दूसरोंको मुलाक़ाते मिलनी चाहियें। पहले तो अुस पत्रका कोअी असर न हुआ, मगर बा की बीमारी बढने पर सरकारने अुनके दो लड़कोंको—रामदास गांधी और देवदास गाँधीको—तार करके बुलाया। बा अुन्हे मिलकर बहुत खुश हुअी। हमे अैसा लगा कि अगर बा को हर हफ्ते कोअी मिलने आ जाया करे, तो सभव है, अुनको फायदा हो। जेल अुनकी बीमारीका अेक बडा कारण था। वे अनेक बार जेल गअी थी। लेकिन अिस बारकी यह अनिश्चित समयकी नज़रबन्दी अुनको बहुत खटकती थी। फिर, दूसरे जेलोंमे अुनके साथ बहुत-सी बहने रहा करती

थीं। लोग समय-समय पर मिलने भी आते थे। जिससे वे खुश रहती थीं। अिस बार यह सब कुछ न था। तिस पर सबसे बड़ा बोझ अबकी अुनके मन पर अिस बातका था कि सरकारने अिस बार बापूजीको और अुनके साथ दूसरोंको बिना कारण पकड़ा है। बा के लड़कोंके लिअे हर हफ़्ते वहाँ आना मुश्किल था। अिसलिअे दूसरे रिश्तेदारोंको भी आनेकी अिजाज़त मिली। हुक्म आया कि मुलाक़ातके वक़्त बा के पास बापूजीके सिवा और कोअी नहीं रह सकेगा। लेकिन बीमारीकी हालतमें नर्सके बिना काम कैसे चले? आखिर अेक नर्सको वहाँ हाज़िर रहनेकी अिजाज़त मिली। मगर जैसे-जैसे बीमारी आगे बढ़ी, अेक नर्ससे भी काम चलाना कठिन हो गया। बापूजीने फिर जेलके अफ़सरोंसे शिकायत की। फलतः हुक्म आया कि जेल सुपरिण्टेण्डेण्टको जितनी नर्सोंकी ज़रूरत मालूम हो, अुतनी को रहने दें।

दिसम्बरमें ही बा ने किसी वैद्यको बुलानेकी माँग की थी और नैसर्गिक अुपचारक डॉ० दीनशा मेहताको भी बुलवाया था। मगर सरकारको अेक दफ़ा कहनेसे काम थोड़े ही हो सकता है? बापूजीको फिर लम्बा पत्र-व्यवहार करना पड़ा और सरकारी अफ़सरोंसे यहाँ तक कहना पड़ा कि "अपनी पत्नीके अिलाजके लिअे मैं आवश्यक प्रबन्ध न कर सकूँ, तो कृपा कर आप लोग मुझे किसी दूसरे जेलमें ले जायँ, जिससे मुझे अपनी पत्नीकी वेदनाका मूक साक्षी न बनना पड़े।"

आखिर ५ फरवरी, १९४४ को सरकारने डॉ० दीनशा मेहताको आने दिया। ज़बानी हुक्म सुनाया गया कि जब वे आवें, तब दो डॉक्टरोंके सिवा बा के पास कोअी न रहे। बापूको बहुत दुःख हुआ। जिस समय यह हुक्म सुनाया गया, बापू स्नानको जा रहे थे। आम तौर पर मालिश और स्नानके समय बापू आराम करते थे, सो भी जाते थे। मगर अुस दिन अुस हुक्मको सुननेके बाद आराम करना असंभव हो गया। स्नानके टबमें पड़े-पड़े अुन्होंने प्यारेलालजीसे सरकारके नाम पत्र लिखवाया। लिखवाते समय अुनके हाथ और होंठ काँप रहे थे: "मृत्युशय्या पर पड़ी स्त्रीके बारेमें अिस तरहकी शर्तें लगाना शोभास्पद नहीं है। अुसको पाखाने या पेशाबकी हाजत हो, तो क्या महज़ अिसलिअे कि डॉ० दीनशा मेहता वहाँ हैं, नर्सें अुसके पास नहीं जा सकेंगी? मुझे डॉक्टरसे पूछना

अुन्होंने फोन पर वैद्यजीसे बात की। वैद्यजी आये। अेक गोली दे गये और फिर बा को नींद आ गअी।

बा की हालत अितनी नाजुक थी कि जिनका अिलाज चल रहा हो, अुन्हे रात अुनके पास ही रहना चाहिये था। मगर सरकार वैद्यजीको रात महलमे रहनेकी अिजाजत नहीं दे रही थी। आखिर वैद्यजीने कहा: "मै बाहर दरवाजे पर मोटरमे सो रहूँगा, ताकि जब जरूरत पड़े, तुरत आ सकूँ।" सब पर अुनकी अिस कर्त्तव्य-परायणताकी गहरी छाप पड़ी। तीन दिन तक वैद्य शिवशर्माजी आगाखान महलके दरवाजेके बाहर मोटरमे सोये। तो भी जब-जब अुन्हे बुलानेकी जरूरत पड़ती, पहले अेक सिपाहीको जगाना पड़ता, सिपाही जमादारको जगाता, जमादार सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबसे चाबी लेकर बाहर वैद्यजीको बुलाने जाता और फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब वैद्यजीको लेकर भीतर आते। जब तक वैद्यजी अन्दर बा के पास रहते, तब तक सुपरिण्टेण्डेण्ट अुनके साथ रहते। बादमे अुन्हे बाहर पहुँचाकर खुद सोने जाते। यह सब बापूजीको बहुत अखरता था। १६ फरवरीके दिन मोटरमे वैद्यजीकी तीसरी रात थी। अुस रात करीब १२॥ बजे अुन्हे बुलाना पड़ा। १॥ बजेके क़रीब वे वापस मोटरमे सोने गये। बापू अपनी खटियामे पड़े-पड़े यह सब देख रहे थे। रात दो बजे अुठकर अुन्होंने अधिकारियोंको पत्र लिखा: "वैद्यजीको महलमे सोनेकी अिजाज़त मिलनी ही चाहिये। अुन्हे यह बिलकुल पसन्द नहीं कि अिस तरह हर रोज अितने आदमियोंको जागना पड़े। अगर कल रात तक, यानी १७ तारीखकी रात तक, अिजाजत नहीं मिली, तो वे वैद्यजीकी दवा बन्द कर देंगे। डॉक्टरोंकी तो बन्द हो ही चुकी थी, चुनांचे बीमार बिना अिलाजके पड़ा रहेगा।"

पत्रका असर हुआ। १७के दिन वैद्यजीको महलमे सोनेकी अिजाजत मिल गअी। वैद्यजीने रातमे दो तीन-बार बा को देखा। नीदकी दवा दी, और रात दूसरे दिनोंसे अच्छी बीती।

१८ फरवरीको फिर बेचैनी शुरू हुअी। वैद्यजी दिनभर शहरसे नअी-नअी दवाअियाँ ढूँढ़कर लाते और देते रहे, मगर बा बेचैनीकी वजहसे

सारी रात सो नहीं सकीं। वैद्यजीकी दवासे दस्त तो हुअे, मगर पेशाब नहीं अुतरा। रात थोड़ा बुखार भी था।

सुबह प्रार्थनाके बाद वैद्यजीने बापूजीसे कहा: "मुझसे जो हो सकता था, मैं सब कर चुका हूँ। मगर बा की हालत सुधर नहीं रही; बिगड़ती ही जाती है। अैसी हालतमें मैं समझता हूँ कि डॉक्टरोंको अपना अिलाज आज़मानेका मौक़ा मिलना चाहिये।" अगले दिन बापूजीने मुझसे कहा था: "कल तक वैद्यजीकी दवासे फ़ायदा न हुआ, तो शायद वे चले जायँगे। अुसके बाद केस तुम्हारे हाथमें आये, तो मेरी वृत्ति तो यह है कि दवा बन्द कर दी जाय। मगर यह तभी हो सकता है कि जब तुम लोग मेरी बातको दिलसे समझो और स्वीकार करो।" लेकिन हम लोगोंके लिअे यह स्वीकार करना जरा कठिन था। सुबह डॉ० गिल्डरने और मैंने बा की जाँच की और अिलाज तय किया। दोपहरमें पेशाब लानेके लिअे ½ सी० सी० 'सॅलिर्गेन'का अिजेक्शन दिया। अिस आज़माअिशी खुराकसे भी शामको बा के क़रीब ५ औंस पेशाब अुतरा। हम सब खुश हो गये। तीन-चार दिनके बाद अितना पेशाब हुआ था। वैद्यजी कहने लगे कि अिजेक्शनोंसे पेशाब आता रहे, तो अेक दफ़ा फिर मुझे मेरी दवा आज़माने दीजिये।

मगर दूसरे दिन १९ फरवरीको 'सॅलिर्गेन'की पूरी मात्राका अिजेक्शन दे देने पर भी कोअी खास असर नहीं हुआ। फेफड़ोंमें निमोनियाके चिह्न थे। अुससे लहूका दबाव और भी गिर गया था। अैसी हालतमें बेचारे गुर्दे क्या काम करते? निमोनियाके लिअे अधिकारियोंसे पेनिसिलिन मँगवानेको कहा गया।

१७ फरवरीको दोपहरके वक़्त हरिलालभाअी आये थे। बा अुन्हें देखकर बहुत खुश हुअीं। बादमें पता चला कि अुनको सिर्फ़ अेक ही बार आनेकी अिजाज़त मिली थी। यह सुनकर बा नाराज हो गअीं। बोलीं: "यह क्या बात है? देवदासको तो हर रोज़ आने देते हैं, और हरिलाल अेक ही बार आ सकता है? भंडारी मेरे सामने आयें, तो मैं अुनसे कहूँ कि दो भाअियोंमें अितना फ़र्क़ क्यों करते हो? यह बेचारा गरीब है, तो क्या अपनी माँसे भी नहीं मिल सकता?"

बापूजीने अुन्हें शान्त किया और कहा : "मै अिसके लिअे अिजाजत मँगवा लूँगा।" दूसरे दिन सरकारकी ओरसे तो अिजाजत आ गअी, मगर हरिलालभाअीका कहीं पता न चला। बा हर रोज पूछतीं और जवाब मिलता कि अुनका कही पता नही है। जब बा की हालत गभीर हो गअी, तो सरकारने अुनके दोनों लड़कोंको खबर भेजी। हमे सँदेसा मिला कि देवदास और रामदासको खबर दे दी गअी है, और हरिलालको सरकार ढूँढ रही है।

४१

रामनाम ही दवा है

१९ को बा रात भर 'ऑक्सीजन'की नली नाकमे डालकर पडी रहीं। अच्छी तरह सोअी। लेकिन २० फरवरीको सुबह ५ बजेसे बेचैनी शुरू हो गअी। मुँहसे बार-बार 'राम, हे राम' पुकारती थीं। सॅलिगॅनका पेशाब पर कोअी असर न होनेसे वातावरणमे बडी निराशा छा गअी थी। तिस पर बा की बेचैनी सबको बेचैन बना रही थी। बापूजी आकर बा की खाट पर बैठे। अुनके कन्धे पर सिर रखकर बा कुछ शान्त हुअीं। अुसी तरह बैठे-बैठे बापूजीने सुबहकी प्रार्थना की। बारी-बारीसे सब लोग बा के पास बैठ कर रामधुन और भजन गाते थे। जब कोअी गानेवाला न होता, तो ग्रामोफोन पर रेकार्ड बजाने लगते थे। 'श्रीराम भजो दुःखमे, सुखमे', यह भजन बा को बहुत प्रिय था। अिसे सुनते समय वे क्षणभरके लिअे अपनी वेदना भूल जाती थी। ९। बजे 'क्लोराल' और 'ब्रोमाअिड'की अेक खुराक दी। अुसके बाद बा करीब डेढ घंटा सोअीं। अुठी, तो तबियत अच्छी थी। बैठकर अच्छी तरह दतौन किया, मसूढ़ोंको जोरसे घिसा, नाकमे पानी चढाया। सबको आश्चर्य होने लगा कि बा मे अितनी ताकत कहाँसे आ गअी! फिर वे चाय पीकर आरामसे लेट गअीं। दवा लेनेसे अिनकार कर दिया। दिनमे अेक बजे फिर बेचैनी शुरू

हुअी। 'राम, हे राम' पुकारने लगीं। अुनकी आवाज़ अितनी करुण थी कि सुनी नहीं जाती थी। जब वे बोलती थीं, तब अैसा लगता था, मानो गले पर छुरी चलते समय बकरी मिमिया रही हो! गीतापाठ, रामधुन, भजन वग़ैराका सिलसिला तो जारी ही था। अिसके कारण बीच-बीचमें कुछ देरके लिअे बा थोड़ी शान्त हो जाती थीं।

बापूजी दिनमें भी काफ़ी देर तक बा की खाट पर बैठने लगे। अुनके बैठनेसे बा को थोड़ी शान्ति मिलती थी। बापूजीने हमसे कहा: "अब बा की दवा सिर्फ़ रामनाम ही है। दूसरे सब अिलाज छोड़ दो। मेरी वृत्ति तो यह है कि शहद और पानीके सिवा दूसरी कोअी खुराक भी मत दो। बा खुद माँगे, तो बात दूसरी है। मैं दवामें नहीं मानता। अपने लड़कोंकी सख्त बीमारियोंमें भी मैंने अुन्हें दवा नहीं दी। लेकिन बा के लिअे मैंने वह नियम नहीं रखा। आज तो खुद बा को भी दवासे अरुचि हो गअी है। रामनामके सिवा अुसे चैन नहीं पड़ता। यह दृश्य करुण है। किन्तु मुझे बहुत प्रिय है। रामके सिवा मैंने आज अुसके मुँहसे कुछ सुना ही नहीं। अैसे समय तो मैं दवाको छोड़ ही दूँ। अीश्वरको जिलाना हो, जिलाये; ले जाना हो, ले जाये। अुसे बचाना होगा, तो वह यों ही बचा लेगा, नहीं तो मैं बा को जाने दूँगा।"

शामको बा ने अेनीमा माँगा। बापूजीने टालना चाहा: "अब रामनाम ही तेरी दवा है।" मगर बा नहीं मानीं। मैंने बापूजीसे कहा: "माँगती हैं, तो ले लेने दीजिये न। अन्त-अन्तमें जितना संतोष दे सकें, दें।" बापू मान गये। अेनीमा लेनेसे मल खूब निकला। अुसके बाद बा दो घंटे आरामसे सोअीं। अुनकी हालत अितनी अच्छी लगने लगी कि मैंने बापूजीसे कहा: "बापूजी, दवा देनेकी अिजाज़त दीजिये न? जब तक प्राण हैं, प्रयत्न क्यों न किया जाय?" लेकिन बापू मेरी क्यों सुनने लगे?

४२

सबकी माँ

रातको डॉ० दीनशा मेहताको भी वहीं सोनेकी अिजाजत मिली। जबसे स्थिति गभीर हुअी थी, मैं आधीसे भी ज़्यादा रात तक बा के पास बैठती थी। कनु, प्रभावती, मनु, भाअी, सभी बारी-बारीसे बैठते थे। हमेशा अेक साथ दो आदमियोंके बैठनेकी जरूरत रहती थी। जब मैं न होती, तब डॉ० गिल्डर अपने बिस्तरसे अुठकर बीच-बीचमे बा को देख जाते थे। अुनकी तबियत बहुत अच्छी नहीं थी, अिसलिअे अुनको ज़्यादा तकलीफ देना ठीक नहीं मालूम होता था। लेकिन डॉक्टर दीनशाको जगानेमें सकोच रखनेकी ज़रूरत न थी। अिसलिअे अुनको बा के पास बैठाकर मैं रात दो बजे सोने चली गअी। सुबह अुठने पर पता चला कि चार बजेके करीब बा की नाडी बहुत खराब हो गअी थी, और डॉ० गिल्डरको जगाया गया था। बादमे जब मै बा के पास पहुँची, तो देखा कि डॉ० गिल्डर बा के पास कुर्सी लगाये बैठे थे। अुस समय बा की नाडी ठीक थी। बा रेंडीका तेल माँग रही थी, जिसका जिक्र पहले आ चुका है।* डॉक्टर साहबने कहा: "बा, रेंडीके तेलसे कमजोरी बढेगी। वह नहीं लेना चाहिये।" बा ने कहा: "बढने दीजिये न! मुझे तो अब मसानमे ही जाना है न?"

डॉक्टर साहबने कहा: "बा, आप अैसा क्यों कहती है? अभी तो आपके लड़के आनेवाले हैं, आज देवदास आयेंगे, रामदास आयेंगे। अिन सबसे मिलना है न?"

बा मुसकराने लगीं। फिर गभीर होकर कहने लगीं: "अुन्हे क्यो बुलाते है? आप सब मेरे लड़के ही है न? मर जाअूँ, तो जला देना। रामदासको तो आनेसे रोक ही देना। किराया बहुत लगता है और गाडियोंमे भीड बेहद रहती है।"

---

* देखिये पृष्ठ १८०

बा हर रोज़ हरिलालभाअीके बारेमें पूछा करतीं। सब अुनकी तलाशमें भी रहते थे, मगर वे कहीं मिलते न थे। तारीख बीसको स्वामी आनन्दने अुन्हें ढूँढ़ निकाला। हरिलालभाअीने फोन पर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबसे कहा कि वे दिनमें आना चाहते थे मगर सो गये थे, अिसलिअे आ न सके। हम लोग समझ गये कि अिस तरह 'सो' जानेका मतलब क्या था। बा को गुस्सा आ गया। बापूने अुन्हें समझाकर शान्त किया। २१ फरवरीको दुपहरमें हरिलालभाअी आये। अुनकी हालत देखकर बा बहुत दुःखी हुअीं, और मारे दुःखके अपना सिर पीटने लगीं। हरिलाल-भाअीको अुनके सामनेसे हटा दिया गया।

अितने श्रमसे बा की छातीमें दर्द होने लगा था। सुबह बा ने रेंडीका तेल लेनेका आग्रह किया था। अुस परसे मैंने बापूजीसे पूछा: "क्या अैसी हालतमें आप बा को दूसरी दवा देनेकी अिजाज़त न देंगे?" बापूजीने कहा: "बा ने रेंडीका तेल आग्रहपूर्वक लिया है, अिसलिअे मैं विरोध कर ही नहीं सकता। जो मुनासिब समझो, दो।" अिस पर मैंने बा को हृदयके रोगकी दवा दी और रामधुन शुरू की। बा शान्त होकर सुनने लगीं।

४३

बापूजीकी पत्नी-भक्ति

बापू रातमें कअी बार बा के पास आते थे। बा अुन्हें ज़्यादा देर तक बैठने नहीं देती थीं। दिनमें भी बापू काफ़ी देर तक बा की खाट पर बैठते थे। बा खाटका सहारा लेनेके बदले हम लोगोंमेंसे किसीका सहारा लेकर बैठना ज़्यादा पसन्द करती थीं। जब बापूजी अुनके पास बैठते, तो अुनका सहारा लेतीं। डॉ० गिल्डरने मुझसे कहा: "ज़रा ध्यान रखना चाहिये। निमोनियाके जन्तु काफ़ी ज़हरीले होते हैं। बापूका मुँह बा के मुँहके बहुत नज़दीक रहता है। यह अच्छा नहीं है। अुन्हें बा के पास ज़रा कम ही बैठने देना अच्छा होगा।" लेकिन अिस बारेमें बापूजीसे कुछ कहना आसान न था।

कमज़ोरी बढ जानेके कारण बा जब-जब भी थूकती थीं, तब-तब पास बैठी नर्सको अुनका मुँह पोंछना पडता था। हम लोग कपडेके टुकड़ेसे मुँह पोंछकर अुसे फेंक देते थे। बा की मृत्युसे तीन-चार दिन पहले बापूजी रातको अुनके पास आये। अुस समय अुन्होंने हमसे कुछ छोटे-छोटे नये रूमाल बना लेनेको कहा। दूसरे दिन मैंने और मनुने चार रूमाल बनाये। बापूजी जब रातमें या दिनमें बा के पाससे गुज़रते, तो मैला रूमाल अुठाकर धोनेको ले जाते। पहले दिन मैंने कहा: "बापूजी आप रहने दें। हम धो लेंगे।" बापूने जवाब दिया: "मुझे करने दो। मुझे यह सब करना अच्छा लगता है।" अुस दिनके बाद फिर मैंने कभी बापूजीसे बा की सेवाका काम नहीं माँगा।

'अिसी तरह अेक दिन दुपहरको खानेके बाद बापूजी बा के पास जाकर बैठ गये। बा सोनेकी तैयारीमें थीं। अगर वे बापूजीका सहारा लेकर सो जाती हैं, तो फिर जब तक जागे नहीं, बापू अुठ नहीं सकते थे। बापूजीका अपना भी वही सोनेका समय था। वे काफी थके हुअे भी थे। मैंने कहा: "बापूजी, अभी आप मुझे बा के पास बैठने दें। सो लेनेके बाद आप आ जाअिये।" बापूजी चले तो गये। मगर अपनी गद्दी पर जाकर कहने लगे: "मुझे थोडी देर और बैठने दिया होता, तो क्या बिगडता?" मैंने बताया कि क्यों मुझे अुनको अुस समय बा के पाससे अुठनेकी सूचना करनी पडी थी। लेकिन बात खुद मुझको ही अखरी। भले कुछ दिनके लिअे बापूका आराम कम हो, लेकिन जिस कामसे अुनके मनको शान्ति मिलती है, अुसमें मैं बाधा क्यों डालूँ? बा का यह अन्तिम समय था। अैसे समय अुन्हें चाहे निमोनिया हो या और कुछ, किसकी हिम्मत चल सकती थी कि वह बापूसे कहे कि वे बा के नजदीक कम बैठा करें? अिस पर डॉ० गिल्डर बोले: "बापू पास चाहे बैठें, मगर मुँह बा के मुँहके पास न रखें।" लेकिन अुस वक़्त तो अुनसे अितना कहनेकी भी किसीकी हिम्मत न थी। बापू तो छूत वग़ैराका बहुत मानते भी नहीं। अिसलिअे चुप रहना ही मुनासिब समझा। डॉ० साहब भी समझ गये। बोले: "हाँ, ठीक है। अेक साथ ६२ वर्ष बितानेके बाद आज जुदाअीकी घड़ीको सामने देखते हुअे बापू

किस तरह बा से दूर रह सकते हैं, और कैसे हम अिस विषयमें अुनसे कुछ कह सकते हैं ?" कहते-कहते अुनकी आँखें सजल हो आयीं।

अपनी अन्तिम बीमारीके शुरू होनेसे कअी दिन पहले बा को पाखाने और पेशाबमें जलन होती थी। अुन्होंने बापूजीसे कहा : "मैं तो पानीका अिलाज करूँगी।" बापूने मंजूर किया और दूसरे दिनसे अुन्हें ठण्डा और गरम 'टब-बाथ' देने लगे। अिसमें बापूजीका क़रीब अेक घंटा चला जाता था। काफ़ी थक भी जाते थे। अेक दिन बा ने कहा : "आप जाअिये। सुशीला मुझे बाथ दे देगी। आपको बहुत काम है।" बापू बोले : "तुम अिसकी फ़िकर न करो।" और वे बाथ देते रहे। अेक दिन मैंने भी कहा : "बापूजी, आपको वक़्तकी अितनी ज़्यादा तंगी रहती है, और मैं तो आप जब कहें तभी बा की सेवा करनेके लिअे तैयार ही रहती हूँ। अिसलिअे आप जब चाहें तभी बाथ वग़ैरा देनेका अेक घंटा बचा सकते हैं।" बापूजीने अिस तरह घंटा बचानेसे अिनकार किया। बोले : "तू बा की सेवा करनेको तैयार है, सो तो मैं जानता हूँ। लेकिन अुत्तरावस्थामें अीश्वरने मुझे अिस तरह बा की सेवा करनेका यह जो अवसर दिया है, अुसे मैं अमूल्य मानता हूँ। जब तक बा मेरी सेवा लेगी, मैं खुशी-खुशी अुसके लिअे अेक घंटा निकालता रहूँगा।"

बा की मृत्युके दो-तीन दिन पहले ही बापू अिस बातकी चर्चा कर रहे थे कि बा किसकी गोदमें आखिरी साँस लेगी! अुन्होंने कहा था : "किस भाग्यशालीकी सेवा अितनी अेकनिष्ठ होगी कि बा अुसकी गोदमें देह छोड़े? अिसे तो अेक भगवान् ही जानता है।" और यह भाग्य अुनके सिवा दूसरे किसका हो सकता था?

अंतिम रात

शामको ६॥ बजेके करीब देवदासभाअी, मनु (हरिलालभाअीकी लड़की) और सतोकबहन आ पहुँचीं। बा अुन्हें मिलकर रो पड़ीं। हरिलालभाअी पर अुनका रोष अभी तक बना हुआ था। देवदासभाअीको देखकर बोलीं: "अब तू सबको सँभालना। बापूजी तो साधु है। अुन्हें तो सारी दुनियाकी चिन्ता है। हरिलालको तो तू जानता ही है। अिसलिअे अब परिवार तुझीको सँभालना है।"

मनुने बा को भजन सुनाये। बा की अिच्छा थी कि सतोकबहन और मनु रात अुनके पास रहें। मगर सरकारने अिजाजत नहीं दी। देवदासभाअीको रहनेकी अिजाजत थी। वे अिन लोगोंको छोड़ने बाहर गये। बा मेरी गोदमें सो गअीं। मगर आजकी नींदसे मुझे खुशी नहीं थी। पेशाब न अुतरनेके कारण अब नशा-सा रहने लगा था। यह नींद ताजगी लानेवाली नींद न थी। रात साढ़े ग्यारह बजे मैं अुठी। प्रभावतीबहन बा के पास आकर बैठीं। बा ने अुनसे कहा: "चलो, हम दोनों सो जायँ। अितनेमें अुन्हें जोरकी खाँसी आअी। मैं दवाकी खुराक लेकर बा के पास पहुँची। बा ने दवा तो नहीं ली, लेकिन मुझे खाटके पाससे बदबू आअी। बत्ती जलाकर देखा, तो खाटमें दस्त हो गया था। बा को अिसका पता भी न था। मुझे लगा, यह जानेकी तैयारी है। खाटके कपड़े बदले और बा को लिटाया। अितनेमें देवदासभाअी आ गये। वे खड़े पैरों बा की चाकरीमें लग गये। मैं बत्तीके पास जमीन पर बैठकर बा के स्वास्थ्यकी डायरी लिखने लगी। देवदासभाअी धीरे-धीरे बा का सिर दबा रहे थे। अुन्होंने समझा कि बा सो गअी है, सो दबाना बन्द कर दिया। बा ने मुझे पुकारा: "सुशीला, तू भी थक गअी क्या?" मैंने कहा: "बा, मैं क्यों थकने लगी?" और मैंने सिर दबाना शुरू कर दिया। बा के सिरमें दर्द हो रहा था। चक्कर आ रहे थे। विचारोंमें कुछ अस्पष्टता आ गअी थी। 'यूरीमिया' के चिह्न प्रकट होने लगे थे।

दो बजे बा सो गईं। पौने तीन बजे मैं सोनेके लिअे अुठी। देवदासभाअी पाँच बजे तक बा के पास खड़े रहे थे। अुनके चेहरेसे करुणा और प्रेम टपक रहा था। अिस आशंकासे कि माँ जानेकी तैयारीमें हैं, अुनका दिल बालककी तरह रो रहा था। वहाँ खड़े हुअे वे माँके प्रति पुत्रके प्रेमकी मूर्ति से दिखाअी पड़ते थे।

४५

२२ फरवरी, १९४४

तारीख २२को सुबह ७ बजे मैं अुठकर भीतर आअी। मुँह-हाथ धो रही थी, कि बा ने पुकारा : "सुशीला!"

मैंने पास जाकर पूछा : "क्या है बा?"

बा बोलीं : "सुशीला, मुझे घरमें ले चल। मेरी सार-सँभाल कर।"

मैंने अुनकी खाटके पास ही लटकता हुआ 'हे राम' का चित्र अुन्हें दिखाया और कहा : "बा, आप तो घर ही में हैं। यह देखिये, यह रहा आपका प्यारा चित्र!"

कुछ देर बाद बा फिर बोलीं : "मुझे घरमें ले चल। बापूजीके कमरेमें ले चल।"

मैंने कहा : "लेकिन बा आप तो बापूजीके कमरेमें ही हैं।" फिर मुझे खयाल आया कि शायद बा बापूजीको बुलाना चाहती हैं। वे पासके कमरेमें नाश्ता कर रहे थे। मैंने अुन्हें कहलवाया कि घूमने जानेसे पहले ज़रा बा के पास हो जायँ।

बा मेरी गोदमें पड़ी थीं। अेकाअेक बोल अुठीं : "सुशीला, कहाँ जायँगे? क्या मर जायँगे?" पहले जब कभी बा अैसी बातें करतीं, तो मैं अुनसे कहती थी : "बा, आप अैसा क्यों कहती हैं? हम सब साथ ही घर जायँगे।" लेकिन आज अैसा कुछ कहनेकी हिम्मत न हुअी। मैंने कहा : "बा, अेक दिन तो हम सबको मरना ही है न! आगे पीछे सबको जाना है। अिसमें है क्या?" बा ने सिर हिलाया, मानो 'हाँ'

कहती हों। फिर शान्त होकर आँखे बन्द कर लीं और मेरे सहारे आधी लेट-सी गअी।

कुछ देर बाद बापूजी आ पहुँचे। थोड़ी देर बा के पास खड़े रहे और फिर बोले "अब मै घूमने जाअूँ?" हमेशा जब बापू बा के पास बैठना चाहते थे, तो बा कहती थीं, 'नहीं, आप घूमने जाअिये' या कहती, 'सो जाअिये।' लेकिन आज बापूजीने घूमने जानेको पूछा, तो बा ने मना किया। बापू अुनके पास खाट पर बैठ गये। बा अुनकी छाती पर सिर रखे, अुनका सहारा लिये, आँख बन्द करके पड़ी थीं। अुस समय दोनोंके चेहरे पर अपूर्व शान्ति और सतोष दिखाअी दे रहा था। वह दृश्य अितना पवित्र और अितना दिव्य था कि हम लोग दूरसे ही देखकर दबे पाँव पीछे हट गये। बापूजी दस बजे तक वहीं बैठे रहे। बीच-बीचमे बा को रामनामका सहारा लेनेके लिअे कहते थे। अुन्हे खाँसी वगैरा आती, तो अुनको सहलाते थे।

भाअी, मै और देवदासभाअी खानेके कमरेमे बैठे बातें कर रहे थे। देवदासभाअीने कहा कि अेक सरकारी अफसरने अुन्हे साफ़-साफ बताया था कि सरकार बा को क्यो नहीं छोड़ रही है। अुसने कहा: "अगर हम अुन्हे छोडते है, और बाहर आने पर अुनकी हालत ज़्यादा गभीर होती है, तो लोग तुम्हारे पिताजीको छोडनेकी माँग करेंगे और अुस वक्त हमने अुन्हे न छोडा, तो हमे राक्षस कहेंगे।"

दस बजे बा ने बापूजीको जानेकी अिजाजत दी। अुनकी जगह मै बैठ गअी। अकेली बैठी थी। मनमे खयाल आया: "बा से अपनी जाने-अजानेकी सब भूलोंके लिअे क्षमा तो माँग लूँ।" मगर बोलनेकी कोशिश करने पर गला रुँध गया और मुँहसे शब्द न निकला। सुबह सात बजे बा ने कहा था: 'क्या मर जायँगे?' अुन्हे फिरसे अिस विचारकी याद दिलाना भी मुझे ठीक नहीं मालूम हुआ। बीच-बीचमे बा कुछ गाफिल हो जाती थीं। आज पहला ही दिन था, कि अुन्होंने दतौन वगैरा नहीं किया था। मैने 'बोरो ग्लिसरीन' से मुँह साफ करनेके लिअे पूछा, तो, अुन्होंने मना कर दिया।

पेनिसिलिन कलकत्तेसे हवाओी जहाज़में भेजी गओी थी। कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी खबर लाये कि पेनिसिलिन आ गओी है। बापूजीने तो सब दवा ही बन्द करवा रखी थी। बा को भी दवा लेनेकी कोओी अिच्छा नहीं थी। अैसी हालतमें सवाल यह था कि किया क्या जाय? देवदासभाओी चाहते थे कि पेनिसिलिनका अुपयोग किया जाय। डॉ० गिल्डरसे और मुझसे अिस बारेमें बातें करके वे बाहर किसी मिलिटरी डॉक्टरसे चर्चा करने जा रहे थे। डॉक्टर दीनशा मेहता अुनके साथ जानेवाले थे। अितनेमें बा ने पुकारा: "मेहता कहाँ हैं? मेरी मालिश वगैरा करें!" डॉ० दीनशा अभी सीढ़ी पर ही थे। अुन्हें बुलाया गया। अैसी हालतमें बा की मालिश करनेका कोओी अुत्साह अुनमें न था, मगर बा का आग्रह देखकर १५ मिनट तक पाअुडरसे थोड़ी मालिश कर दी और फिर चले गये। बा आधी बेहोशीकी हालतमें मेरी गोदमें पड़ी थीं। कुछ देरके बाद फिर बोलीं: "मेहता कहाँ हैं? वे सब करेंगे।" अपने अंतिम समयमें बा का अिस तरह डॉ० मेहताको याद करना, अुनके प्रति बा की श्रद्धाका अेक प्रमाण था। मैंने गीले कपड़ेसे बा का मुँह वगैरा साफ़ कर दिया। अितनेमें कर्नल भण्डारी आये। देवदासभाओीने बा का फोटो लेनेकी अिजाज़त माँगी थी। कर्नल भण्डारी यह जानने आये थे कि अिस बारेमें बापूजीकी क्या अिच्छा थी। बापूजीने कहा: "मुझे तो अिन चीजोंकी परवाह नहीं है। मगर लड़के और रिश्तेदार वगैरा चाहते हैं, तो सरकारको अिजाज़त देनी चाहिये।"

प्रभावतीबहनको बा के पास बैठाकर मैं स्नान करने गओी। मेरी गैरहाज़िरीमें डॉक्टर गिल्डर बा के पास थे। बा की नाड़ी बहुत अनियमित चल रही थी। कभी बिल्कुल गायब हो जाती और कभी फिर चलने लगती। कल रातसे बीच-बीचमें नाड़ीकी यही हालत हो रही थी। सबको लगता था कि अब बात दिनोंकी नहीं, घंटोंकी ही है। बापूजीने मुझसे कहा था: "तुझे ज़्यादा नहीं, तो कम-से-कम १५ मिनट तो घूम ही आना चाहिये।" अिसलिअे नहानेके बाद मैं १५ मिनट घूमने निकल गओी। घूमते समय मैं प्रार्थना कर रही थी:

"मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥"

आज हृदयसे बार-बार यही श्लोक निकल रहा था। क्या वह माधव अब भी बा को बचा नहीं सकता? लेकिन मनुष्यकी अपेक्षा भगवान् ही अधिक अच्छी तरह जानता है कि मनुष्यके लिअे क्या अच्छा है और क्या नहीं! और वह वैसा ही करता है। फिर बा को किसी-न-किसी रोज तो जाना ही है न? स्वतन्त्रताके अहिंसक युद्धमे जेलके अन्दर मृत्यु पाना और स्वतन्त्रताकी वेदी पर बलि होकर शहीद बनना विरलोंके ही नसीबमे होता है। बा की आजीवन तपस्याके बाद अुन्हे यह सौभाग्य प्राप्त न होता, तो और किसे होता? भगवान्ने अुनको जिस महान् पदके योग्य पाया था, अुसे वह मेरे समान मोहग्रस्त व्यक्तिकी प्रार्थनाके कारण थोड़े ही बदल देनेवाला था?

अिधर कअी दिनोंसे बापू अपनी खुराकमे सिर्फ प्रवाही पदार्थ (पतली चीजे) ही लेते थे। अुन पर बा की बीमारीका अितना बोझ था कि खाना कम किये बिना वे अपनी तबियतको ठीक नहीं रख सकते थे। दूसरे, अुन दिनों खानेमे आध-पौन घंटा खर्च करना अुन्हें अखरता था। स्नानके बाद १० मिनटमे खाना पूरा करके वे बा के पास आ बैठते थे। अेक दफा बैठनेके बाद फिर अुठनेकी अिच्छा नहीं होती थी। अिसलिअे आम तौरपर अपने सब कामोंसे निपटकर ही वे बा के पास आते थे। जब मै पास आयी, तो बापूजी बा के पास बैठे थे। अेकाअेक बा खाट पर सीधी लेट गयीं। दमेकी वजहसे अिधर महीनों हुअे, वे चित सो नहीं पाती थीं। पीठकी तरफ मनुष्यका या खटियाका सहारा लेकर बैठती थीं, या सामने टेबल पर सिर रखकर पड जाती थीं। आज अुन्हे अचानक अिस तरह लेटते देखकर सब चौंक अुठे। देवदासभाअीको संदेसा भेजा गया। वे लेडी ठाकरसीके घर सोने जानेकी तैयारी कर रहे थे। खबर पाते ही मनुके साथ आ पहुँचे। डॉक्टर दीनशा मेहता भी आ गये। बापूजीने बा से पूछा: "रामधुन या भजन सुनोगी?" बा ने अिनकार किया। बादमे बापूजीने पासके कमरेमे धीमे स्वरसे गीता पाठ शुरू करवाया। कनु, देवदासभाअी, प्यारेलालजी वगैरा सब बारी-बारीसे गीतापाठ करने लगे, ताकि बा के कानोंमे गीताजीकी ध्वनि रह जाय।

रातसे ही बा को कुछ निगलनेमें कष्ट होता था। पानी पीनेकी भी अिच्छा नहीं होती थी। दुपहरको देवदासभाअी गंगाजल लाये। अुसमें तुलसीके टुकड़े डाले। बापूजीने कहा: "देवदास गंगाजल लाया है।" बा ने मुँह खोल दिया। बापूजीने चम्मच भरकर डाला। बा झटसे पी गअीं। अुन्होंने फिर मुँह खोला। बापूने अेक चम्मच और डाला। फिर बोले: "अब थोड़ी देर बाद लेना।" बा शान्तिसे आँखें बन्द करके लेट गअीं। बेचैनीमें वे 'हे गंगाजी' भी पुकारती थीं। गंगाजलका पान करके अुन्हें अपूर्व शान्ति मिली थी। दूसरे रिश्तेदारोंको बा के पास बैठनेका मौक़ा देनेके लिअे बापूजी बा के पाससे अुठकर नज़दीक ही अपनी गादी पर जा बैठे। थोड़ी देरमें संतोकबहन, केशुभाअी और रामीबहन (हरिलालभाअीकी बड़ी लड़की) आ पहुँचीं। न जाने कहाँसे बा में शक्ति आ गअी। वे अुठकर अिन सबसे बातें करने लगीं। संतोकबहनसे कहने लगीं: "देवदासने मेरे लिअे बहुत चक्कर खाये हैं; मेरी बहुत सेवा की है।" फिर देवदासभाअीसे बोलीं: "तूने मेरी बहुत सेवा की है। अब तू सबको सँभालना और अपना कर्त्तव्य पूरा करना।" देवदासभाअीने कहा: "बा मैंने क्या सेवा की है? मैं तो कल ही रातको आया हूँ। सेवा तो तुम्हारे अिन साथियोंने की है।" किन्तु अंतिम समयमें देवदासभाअीको देखकर बा परम संतुष्ट हुअी थीं। अुनकी अेक रातकी सेवा बा के निकट सबसे ज़्यादा मूल्यवान थी। देवदासभाअीने कहा: "बा रामदासभाअी आ रहे हैं।" बा बोलीं: "क्या काम है?" रामदासभाअीको तकलीफ़ देना, अुन्हें बहुत अखरता था।

बा बापूजीकी ओर देखकर कहने लगीं: "मेरे मरनेका दुःख क्या? मेरी मौत पर तो लड्डू झड़ने चाहियें।" अिसके बाद आँखें बन्द करके और हाथ जोड़कर वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगीं: "हे भगवन्, ढोरकी तरह पेट भर-भरकर खाया है। माफ़ करना। अब तो तेरी ही भक्ति चाहिये। तेरा ही प्रेम चाहिये।" अुनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी। अुन्होंने अुस समय सब मोह-माया छोड़ दी थी। अुनकी वृत्ति पूर्णतया सात्त्विक हो गअी थीं।

कनुने बाके कुछ फोटो लिये। सब चाहते थे कि बा के साथ बैठे हुअे बापूजीका फोटो लिया जा सके, तो अच्छा हो। मुझसे कहा गया कि मै बापूको बा के पास बैठाअूँ। मेरे सामने सवाल था कि मे अुनसे कैसे कहूँ। बापूजीको फोटोसे चिढ़ है। अचानक कोअी अुनका फोटो ले ले, तो बात अलग है। मगर फोटोके लिअे वे कभी बैठते नहीं।

बापूजी आग्रह करते थे कि सबको थोडा-थोडा आराम लेना चाहिये। अिसकी बिना पर मैने चार बजे अुनसे कहा : "बापूजी, मै थोड़ा आराम करने जाती हूँ। आप बा का 'चार्ज' ले।" कनुको आशा थी कि जब बापू 'चार्ज' लेकर बा के पास बैठेंगे, तब वह फोटो ले लेगा। मगर बापूजीने कहा: "चार्ज तो मै लेता हूँ, पर यहीं बैठे बैठे। दूसरे सब बा के पास बैठे हैं; अुन्हें बैठने दो। बा मुझे बुलावेगी, तब मैं अुसके पास चला जाअूँगा।"

साढ़े पाँच बजे कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी पेनिसिलिन लाये। बापूजीसे पूछा। अुन्होंने कहा, "डॉ० गिल्डर और सुशीला देना चाहे, तो दीजिये।" डॉ० गिल्डर बापूजीके विचारोंको जानते थे। अिसलिअे वे पेनिसिलिन देनेसे झिझकते थे। देवदासभाअीसे बातें हुअीं। दो सवाल सामने थे। अेक तो यह कि मृत्यु-शय्या पर पडी हुअी बा को अब अिंजेक्शन देनेसे क्या फायदा? अीश्वरके भरोसे पड़ी रहने दो और शांतिसे जाने दो। यह था बापूजीका मत। अुसमे काफी सचाअी थी। दूसरा यह कि जब तक प्राण है, आशा क्यों छोडी जाय? प्रयत्न क्यों छोडा जाय? यह था साधारण, तटस्थ, डॉक्टरी मत। देवदासभाअी दूसरे मतके थे। डॉ० गिल्डरने अुनसे कहा "आप चाहते है, तो हम बा को पेनिसिलिन देनेको तैयार है।" अुन्होंने मुझे अिशारा किया और मैने पिचकारी अुबालनेको रखी। अितनेमे बापूजीने मुझे देखा और पूछा: "तुम लोगोने क्या तय किया है?" मैने कहा "पेनिसिलिन देंगे।" बापूने पूछा: "तुम दोनो मानते हो कि देना चाहिये? अिससे फायदा होगा?" अिसका अुत्तर मैं 'हॉं' मे कैसे दे सकती थी? मैने कहा: "आप डॉक्टर गिल्डरसे बात कर ले।"

बा की हालत कुछ अच्छी मालूम होती थी। शायद पेनिसिलिनसे फ़ायदा हो; आशाकी अिस किरणसे मेरे मनका बोझ कुछ हलका हुआ। सुबहसे खाना नहीं खाया था। अिसलिअे मैं खाने गअी। क़रीब-क़रीब सभी खाने बैठे। बापू डॉ० गिल्डरको समझाकर देवदासभाअीको समझाने गये। डॉ० गिल्डरने मुझको कहा: "बापूको पता न था कि कअी अिंजेक्शन देने होंगे। अब पता चला है, तो पेनिसिलिन देनेसे मना किया है।" मैंने पिचकारी अुठाकर बन्द कर दी। मनमें थोड़ी निराशा हुअी। साथ ही अिस विचारसे थोड़ी शान्ति भी हुअी कि अैसी हालतमें मुझे बा को सुअी नहीं टोचनी पड़ेगी।

बापू देवदासभाअीको समझा रहे थे: "तू अीश्वर पर विश्वास क्यों नहीं रखता? मृत्यु-शय्या पर पड़ी माँको भी दवा क्यों देना चाहता है?" वगैरा। अिस चर्चाके कारण अुन्हें घूमने जानेमें देर हो गअी। हर रोज़ वे ६॥ बजे नीचे घूमने चले जाते थे। अुस रोज़ क़रीब ७। बज रहे थे। बात पूरी करके वे नीचे जानेके लिअे तैयार होनेके खयालसे गुसलखानेमें आये। अितनेमें बा बोलीं: "बापूजी!"

प्रभावतीबहन पास बैठी थीं। अुन्होंने बापूजीको बुलाया। वे आकर बा के पास बैठ गये। मगर कनुको फोटो लेनेसे मना कर दिया।

बा को बहुत बेचैनी थी। दो बार अुठकर सीधी बैठीं। फिर लेट गअीं। बापूजीने पूछा: "क्या होता है?" नये देशके किनारे खड़े भोले बालककी तरह अुन्होंने अत्यन्त करुण स्वरसे तुतलाते हुअे कहा: "कुछ समझ नहीं पड़ता।" मैंने नाड़ी देखी। वह बहुत कमज़ोर थी। लेकिन दिनमें कअी दफ़ा कमज़ोर हो चुकी थी। अिसलिअे मेरी समझमें नहीं आया कि अब सिर्फ़ मिनटोंका खेल बाक़ी है। बा के दरवाज़ेके पास बरामदेमें कनु और मैं बात कर रहे थे: "बापूजीने मना न किया होता, तो कितना अच्छा फोटो मिल सकता था! हमेशा तो कोअी बिना बताये फोटो ले लेता, तो बापू रोकते नहीं थे। आज क्यों रोका?" अुस समय हम यह नहीं समझ सके थे कि बापूजीके लिअे बा के पासकी वे अन्तिम घड़ियाँ अत्यन्त पवित्र थीं। फोटोसे वे अुनकी पवित्रताको कम

नहीं करना चाहते थे। बापूने पेनिसिलिन देनेसे रोका, अुसका भी हमे अफसोस हो रहा था।

अितनेमे बा के भाअी माधवदासजी आये। बा ने अुन्हे पहचाना। आँखे भर आअीं। पर बात नहीं कर सकीं। मैं अदर आअी। बा ने अन्त-अन्तमे अुठनेकी कोशिश की, किन्तु बापूजीने कहा: "अब तुम पड़ी रहो।" बा ने बापूजीकी गोदमे सिर डाल दिया। अुनकी आँखे पथराने लगीं। अुन्होंने दो-चार हिचकियाँ ली। गलेसे मौतके समयकी घरघराहट भरी आवाज़ निकलने लगी। मुँह खुल गया। दो-चार श्वास लिये, और बा की आत्मा अिस दुनियाके बन्धनसे मुक्त हो गअी। बापूने कहा था: 'बा किसकी गोदमे देह छोड़ेगी? वह सौभाग्य किसका होगा?' बापूजीके सिवा वह और किसका हो सकता था? अुस दिन अचानक घूमने जानेमे अुन्हे देर न हो गअी होती, तो वे अतिम समयमे बा के पास पहुँच ही न पाते। लेकिन अीश्वर अुन्हे बा के प्रतिकी अुनकी वफादारी और भक्तिका फल देना क्योंकर भूलता?

बापूजीने बा के सिरके नीचेसे तकिये निकाल लिये। खाटको भी सीधा किया। मीराबहनने दोपहरसे ही खाटकी दिशा अुत्तर-दक्षिण कर दी थी। सब लोग रामधुन गाने लगे। मैं जडकी तरह खड़ी देख रही थी। डॉक्टर होते हुअे भी, और कअी मौते देखनेके बाद भी, अैसी मृत्युको तटस्थताके साथ देखना मैं अभी सीखी न थी।

ठीक ७ बजकर ३५ मिनट पर बा की आत्मा मुक्त हुअी। देवदासभाअी बा की खाट पर सिर रखकर बालककी तरह 'बा-बा' पुकारते हुअे फूट-फूट कर रोने लगे। बापूजीकी आँखोंके कोनोंसे भी दो मोती चू पडे। आखिर बापू अुठे। अुन्होंने कमरा खाली करनेको कहा। जेलके फाटक पर मथुरादासभाअी अपने परिवारके साथ खडे थे। अुन्हे अंतिम दर्शनके लिअे अन्दर आनेकी अिजाजत नहीं मिली थी। सरकारको डर था कि बाहर बा की मृत्युके समाचार पहुँचते ही कहीं कोअी दगा वगैरा न हो जाय। आखिर बापूजीने अुनके लिअे अिस शर्त पर अन्दर आनेकी अिजाज़त हासिल की कि जब तक सरकार मजूरी न दे, तब तक हममेसे कोअी बाहर न जायगा।

बापूजीने, मैंने, मनुने और संतोकबहन वगैराने मिलकर बा को स्नान कराया। बाल धोकर कंघी की। शबको पोंछकर सुखा किया और बापूजीके हाथके सूतकी जिस साड़ीको बा ने अपनी अंतिम यात्रामें पहननेके लिये सँभाल कर रखा था, अुसमें अुसे लपेटा। लेडी ठाकरसीने गंगाजलमें भिगोअी हुअी अेक दूसरी साड़ी भेजी थी, वह बापूजीवाली साड़ीके अूपर डाली गअी। संतोकबहनने बापूजीके सूतकी बनी चूड़ियाँ बा को पहनाअीं। गलेमें तुलसीकी कंठी डाली और माथे पर चन्दन और कुंकुमका लेप किया।

मनु और कनुने बापूजीवाले कमरेको, जहाँ बा ने प्राण छोड़े थे, साफ़ किया। मीराबहनने शबके लिये चूनेका अेक लंब-चौरस चौक पूरा और सिरकी तरफ़ सुन्दर ॐ और पैरोंके पास सुन्दर स्वस्तिक बनाया। बादमें शबको वहाँ लाकर रखा गया। मीराबहनने बा के बालोंमें फूल सजाये। बा के चेहरे पर मन्द मुसकानके साथ-साथ अपूर्व शान्ति थी। वे सोअी हुअी मालूम पड़ती थीं। सबने बैठकर प्रार्थना की। गीताजीका पारायण किया। डेढ़ घंटेमें यह सारी विधि पूरी हुअी।

शान्तिकुमारभाअीने दाह-क्रियाके लिये चन्दनकी लकड़ी लानेका प्रस्ताव किया। बापूने अिनकार करते हुअे कहा: "बा गरीबकी पत्नी थी। गरीब आदमी चन्दन कहाँसे लाये?" हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बोल अुठे: "मेरे पास चन्दनकी लकड़ी है।" बापूने जवाब दिया: "आप (यानी सरकार) तो जिस चीज़का भी चाहें, अुपयोग कर सकते हैं। आपसे चन्दनकी लकड़ी लेनेमें मुझे कोअी अेतराज़ हो ही नहीं सकता।" फिर तो अेक समूचे चन्दनके झाड़की लकड़ी वहाँ आ पहुँची।

मृत्युके बाद तुरंत ही कर्नल भण्डारी सरकारकी तरफ़से बापूजीको यह पूछने आये कि शबके अग्निसंस्कारके बारेमें अुनकी क्या अिच्छा है। बापूजीने तीन रास्ते सुझाये:

१. शव अुनके लड़कों और रिश्तेदारोंको सौंप दिया जाय। अिसका मतलब यह होगा कि सार्वजनिक रीतिसे, आम जनताके बीच, अग्निसंस्कारकी क्रिया की जायगी और सरकार अुसमें किसी तरहकी दस्तंदाज़ी नहीं करेगी।

यह न हो सके तो,

२. महादेवभाअीकी तरह महलके सामने ही अग्निसंस्कार किया जाय और रिश्तेदारों व मित्रोंको हाज़िर रहनेकी अिजाज़त दी जाय।

३. अगर सरकार सिर्फ रिश्तेदारोंको ही आने देना चाहती हो, और मित्रोंको आनेकी अिजाजत न दे, तो वे चाहेंगे कि कोअी भी हाज़िर न रहे। जेलके अपने साथियोंकी मददसे वे अकेले ही अग्निसंस्कार कर लेंगे।

बापूने खास तौर पर यह विनती की थी कि सरकार जो भी कुछ करे, ढंगसे करे, ताकि अुसमें संघर्षकी कोअी गुंजाअिश न रहे। यदि अन्त्येष्टि संस्कार आम जनताकी अुपस्थितिमें किया जाय, तो वे अितना कहनेको तैयार थे कि सरकारको अशान्ति या अुपद्रवका डर रखनेकी कोअी जरूरत नहीं। "मेरे लड़के वहाँ मर जायेंगे, मगर कोअी अुपद्रव नहीं होने देंगे।"

अुनसे पूछा गया: "यदि बाहर अग्नि-दाह किया जाय, तो क्या आप खुद वहाँ जाना चाहेंगे?"

बापूने जवाब दिया: "नहीं, मेरे लड़के, मित्र और रिश्तेदार सब कर लेंगे। मैं बाहर नहीं जाअूँगा।"

लेकिन सरकार अेक बड़े जुलूसका जोखिम अुठानेको तैयार न थी। अिस बहाने भी लोगोंमें जाग्रति आये और जोश पैदा हो, यह सरकारको स्वीकार न था। अिसलिअे अुसने दूसरी शर्त मंजूर की और मित्रों व सगे-सम्बन्धियोंकी हाजिरीमें महलके सामने ही अग्निसंस्कार करनेकी अिजाजत दी।

गीतापाठके समाप्त होने पर यानी रातके कोअी ग्यारह बजे, देवदासभाअी, मनु और संतोकबहनको छोड़कर बाकी सबको बाहर जानेका हुक्म मिला। हम सब बारी-बारीसे शवके पास बैठे। सुबह शवके पास ही सबने प्रार्थना की। बापूजीने शवके सिरहाने ही अपना आसन लगाया था।

२३ फरवरीको सवेरे ७ बजेसे लोग आने शुरू हो गये। करीब डेढ़ सौ मित्र और सगे-सम्बन्धी आ पहुँचे थे। मनुने शवकी आरती अुतारी। और सबोंने शवको प्रणाम किये। फूलोंका अेक बड़ा-सा ढेर लग गया था। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, अंग्रेज, सभी कौमोंके दोस्त हाजिर थे। जिन ब्राह्मणोंने महादेवभाअीकी क्रिया करवाअी थी, वे भी आ पहुँचे थे। सारी क्रिया देवदासभाअीके हाथों करवाअी गअी।

शवको चिता पर रख देनेके बाद बापूजीने अेक छोटी-सी प्रार्थना करवाअी, जिसमें हिन्दू, अीसाअी, पारसी, अिस्लाम सभी धर्मोंकी प्रार्थना शामिल थी। देवदासभाअीने आग दी। कुछ ही मिनटोंमें ज्वालायें भड़क अुठीं।

बा ने 'करेंगे या मरेंगे' मंत्रका पूरी तरह पालन करके दिखाया था। अब वे स्वतंत्र थीं। कौनसी सल्तनत अब अुन्हें बन्धनमें रख सकती थी?

चिता महादेवभाअीकी समाधिके बाजूमें ही रची गअी थी। माँ ने सोचा होगा कि बेटेको अकेला छोड़कर कैसे जाअूँ, अिसलिअे वे अुसके पास ही रह गअीं!

शान्तिकुमारभाअीने दिनभर पुत्रकी तरह काम करके देवदासभाअीका बोझ हल्का किया। शवके नीचेकी लकड़ियाँ कुछ कम पड़ीं। जलती चितामें अूपरसे लकड़ियाँ डालते समय कनुकी पलकें थोड़ी झुलस गअीं।

बा के शरीरसे पानी बहुत निकला। अिसलिअे दहनक्रिया शामको चार बजे पूरी हुअी। तब तक बापूजी चिता-स्थान पर ही हाज़िर रहे। कअी बार मित्रोंने कहा: "आप थक जायँगे।" लेकिन बापूने वहाँसे हटनेसे अिनकार ही किया। अुन्होंने हँसकर जवाब दिया: "६२ वर्षके साथीको क्या अब अिस तरह छोड़ सकता हूँ? अिसके लिअे तो बा भी माफ़ न करेगी!" किन्तु अुनके हृदयमें तीव्र वेदना हो रही थी। वे ज्ञानी हैं, मगर साथ ही मनुष्य भी हैं। सबके चले जानेके बाद रातको खाट पर पड़े-पड़े कहने लगे: "बा के बिना मैं जीवनकी कल्पना ही नहीं कर सकता। मैं चाहता था कि बा मेरे रहते चली जाय, ताकि मुझे चिन्ता न रहे कि मेरे बाद अुसका क्या होगा। लेकिन वह मेरे जीवनका अविभाज्य अंग थी। अुसके जानेसे जो सूनापन पैदा हो गया है, वह कभी भर नहीं सकता।" फिर कहने लगे: "अीश्वरने भी मेरी कैसी कसौटी की? मैं तुम लोगोंको पेनिसिलिन देने देता, तो भी वह तो जाने ही वाली थी। लेकिन वैसा करनेसे अीश्वरके प्रतिकी मेरी श्रद्धामें न्यूनता आ जाती। मैं देवदासको समझाकर आता ही हूँ, पेनिसिलिन न देनेकी बात पक्की होती है, और बा चलनेकी तैयारी कर देती है, यह भी अेक योग ही है। और बा मेरी ही गोदमें गअी, अिससे तो मेरे हर्षका पार न रहा।"

रामदासभाअी शामको पहुँच पाये। चिता अभी जल ही रही थी। देवदासभाअी और रामदासभाअीको तीन दिन तक महलमें रहनेकी अिजाज़त मिली। चौथे दिन चिताकी राख और फूल अिकट्ठा करके वे विदा हुअे। नर्सें भी अेक-अेक करके विदा हो गअीं। किसीने कहा: "बा ने अपने

प्राण देकर अेक बार तो जेलका दरवाज़ा खुलवा ही दिया। वे त्यागमूर्ति थीं। अपना जीवन देकर अुन्होंने अितने लोगोंको बापूके दर्शनोंका सुवर्ण अवसर प्रदान किया।"

बा के चितास्थान पर अेक कच्ची समाधि बनाअी गअी। महादेवभाअीकी समाधि पर छोटे-छोटे शखोंसे ॐ लिखा गया था। बा की समाधि पर शखोंसे 'हे राम' लिखा गया। रोज सुबह-शाम हम सब समाधिकी यात्रा करते और फूल चढ़ाते थे। सवेरे गीताजीके बारहवें अध्यायका पाठ भी किया जाता था। बापूजीने महादेवभाअीकी समाधि पर फूलोंका क्रॉस (सूली) बनाना शुरू किया था। बा की समाधि पर स्वस्तिक बनानेका निश्चय हुआ। यह कुछ मरे हुओंकी मूर्तिपूजा नहीं थी; बल्कि अुनके गुणोंका स्मरण था। अुन गुणोंके प्रति श्रद्धांजलि थी। अीश्वरसे प्रार्थना थी कि अुन दो महान् व्यक्तियोंके — मॉ-बेटेके — गुणोंका हम भी अनुसरण कर सकें।

बा की बीमारीके दिनोंमें बापूजीको बहुत श्रम पहुँचा था। वे काफी दुर्बल हो गये थे। आखिर वे मलेरियासे बीमार पड़े। सरकार नहीं चाहती थी कि आगाखान महलमें तीसरी मृत्यु हो। ६ मअीको हमारे जेलके फाटक खुल गये और बापूजी और अुनके सब साथी रिहा कर दिये गये।

रिहाअीसे पहले बापूजीने सरकारको पत्र लिखा कि समाधिका स्थान पवित्र स्थान है, अुसका दूसरा कोअी अुपयोग नहीं होना चाहिये, और लोगोंको समाधिके पास जानेकी अिजाजत होनी चाहिये।

आखिरी दिन सुबह सात बजे हम सब दोनों समाधियोंसे विदा लेने गये। पूरे ९३ हफ्ते बापूजी अुस जेलमें रहे थे। वह हमारा घर-सा बन गया था, और अपने दो साथियोंको वहीं छोड़कर जाना सबको अखरता था। लेकिन वे दो तो देशके और बापूके सच्चे सेवक थे। देशकी और बापूकी सेवामें अुन्होंने अपने प्राण अर्पण किये थे। और, क्या जेलके दरवाजे खुलवानेमें भी अुनका हाथ न था? जीवनकी तरह मृत्युमें भी अुन दोनोंने बापूजीकी अर्थात् देशकी ही सेवा की थी। कौन कह सकता है कि आज भी वे दो आत्मायें बापूजीकी रक्षा और सेवा नहीं कर रहीं?

हमारी बा

पूर्ति

अन्त्येष्टि

मेरे नाम, और नज़रबन्दोंकी छावनीके पतेपर मेरे पिताजीके नाम सीधे भेजे गये भ्रातृभाव और समवेदना व्यक्त करनेवाले असंख्य सन्देश, सार्वजनिक रीतिसे कृतज्ञता प्रकट करनेके अुपरान्त भी कुछ अधिककी अपेक्षा रखते हैं। अुनमेंसे कुछ तो बहुत परिश्रमपूर्वक और विस्तारसे लिखे गये हैं, फिर भी वे अुनके लेखक जो कुछ कहना चाहते हैं, सो सब व्यक्त नहीं करते। जो शोक प्रकट किया गया है, वह अितना तो हृदय-द्रावक है कि वह शोककर्ताओंकी और प्रत्यक्ष रीतिसे वियोगके दुःखमें डूबे हुओंकी सहानुभूतिको पारस्परिक बना देता है। मेरे लिअे यह अुचित न होगा कि मैं अपनी माताके अंतिम क्षणोंके अमूल्य और पवित्र संस्मरणोंको अपने ही पास रख छोड़ूँ और मेरे साथ दुःखी बने हुअे अेक बड़े जनसमूहको सार्वजनिक रीतिसे, जिस हद तक संभव हो, अुस हद तक अुसमें अपना भागीदार न बनाअूँ। मेरे शोकका आवेग अभी शान्त नहीं हुआ है, और मैं मानो दैव परका अपना विश्वास खो बैठा होअूँ, अैसी अेक विचित्र भावना मुझे व्यथित कर रही है। मुझे विश्वास है कि यह थोड़े समयकी ही चीज़ है। मैं अचानक मातृहीन बन गया हूँ। लेकिन अपनी अिस मानसिक स्थितिसे झगड़कर मैं अिससे अुबरनेकी आशा रखता हूँ।

वे (बा) अंतिम क्षण तक पूरी तरह बेहोश तो कभी हुअी ही नहीं। शनिवारके दिन सरकारी वक्तव्यमें अुनकी स्थितिके गंभीर होनेकी बात कही गअी थी। तब भी, बिलकुल निराशाजनक परिस्थितिमें भी, यह आशा रखी जा रही थी कि अुनकी बीमारीकी अिस अंतिम हालतमेंसे भी सहीसलामत पार हुआ जा सकेगा। हृदयकी क्रियाके मन्द हो जानेके कारण पिछले कुछ दिनोंसे अुनके गुर्दोंने काम करना छोड़ दिया था, और बिना बुखारके त्रिदोष (निमोनिया) के कारण हालत और भी नाज़ुक

हो गअी थी। खूनका दबाव घटकर ठेठ ७५—५२ पर जा टिका था। अब डॉक्टरोंने अुनके बचनेकी आशा छोड दी थी, और अिलाज बन्द कर दिया था। सोमवारकी शामको जब मै वहॉ पहुॅचा, वे बहुत ही कष्टमे थीं। अुनके साथी नजरबन्दोंकी प्रेमपूर्ण शुश्रूषा ही अुनके अिस कष्टको अूपर-अूपरसे कुछ हलका बना सकती थी। डॉक्टरोंका खयाल नहीं था कि वे रात निकाल सकेंगी। अुनके पार्थिव जीवनकी वह अंतिम रात थी। सारी रात अुन्हे प्रतिपल अपने साथियोंकी और गांधीजीकी अखड सेवा-शुश्रूषा मिलती रही।

आधी बेहोशीकी हालतमे वे सवालोंके जवाब 'हॉ'—'ना' से अथवा धीरेसे अपना सिर हिलाकर देती थी। अेक बार जब गांधीजी अुनके पास आये, तो अुन्होंने अपना हाथ अुठाकर अुनसे पूछा : "ये कौन है?" और जब गांधीजी करीब अेक घंटे तक अुनकी सेवामे बैठे रहे, तो अैसा लगा कि बा को अुससे बहुत ही राहत मिली। अुनके पास बैठे हुअे गांधीजी अुनके मुकाबिले अुमरमे बहुत छोटे दीखते थे, यद्यपि अुनके हाथ कॉप रहे थे। अिस दृश्यको देखकर मुझे बत्तीस साल पहलेकी अफ्रीकाकी अेक घटना याद हो आअी। अुस समय बा तीन महीनोंकी सजा काटकर बाहर आअी थीं। और वे बहुत ही कमजोर हो गअी थी। अेक रेलवे स्टेशन पर मेरे माता-पिताको देखकर अेक परिचित युरोपियन सज्जनने पूछा था : "मि० गांधी, क्या ये आपकी मॉ है?"

सुबह अुनकी हालत ज्यादा खराब मालूम होती थी। लेकिन वे शान्त और स्वस्थ थीं। सोमवारको अुन्हे अपने जीवनकी कुछ आशा थी। मगलवारको मुझे अैसा लगा कि वे अुस आशाके बन्धनसे मुक्त हो गअी है। यूरेमियाका प्रभाव बढता जाता था, फिर भी अुनका मन अधिक शान्त और स्पष्ट था।

सोमवारसे अुन्होने किसी भी तरहकी दवा और पानी तक लेना बन्द कर दिया था। लेकिन मगलवारको दोपहरके समय गगाजलकी अेक बूॅद लेनेके लिअे अुन्होंने अपना मुॅह खोला था। अिससे अुन्हे कुछ समयके लिअे शान्ति मिली। बादमे तीन बजे अुन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा : "मै जाती हूॅ। अेक-न-अेक दिन तो मुझे जाना ही है, तो

फिर आज ही क्यों न जाऊँ?" मैं अुनका सबसे छोटा लड़का ठहरा। स्पष्ट ही अुनका जी मुझमें लगा हुआ था, लेकिन अूपरके शब्द कहकर और दूसरे मीठे और प्यारभरे शब्दोंका अुच्चारण करके अन्य सबोंकी अुपस्थितिमें अुन्होंने बलपूर्वक मेरे प्रतिकी अपनी आसक्तिको खींच लिया। अुनकी वाणी अितनी स्पष्ट मैंने पहले कभी सुनी नहीं थी, और अुनके शब्द मुझे कभी अितने मीठे और चुनकर कहे हुअे नहीं लगे थे।

अिसके बाद तुरंत ही अुन्होंने अपने हाथ जोड़े और बिना किसीकी मददके वे अुठ बैठीं। फिर अपना सिर झुकाकर जितने अुच्च स्वरसे वे बोल सकती थीं, अुतने अुच्च स्वरसे अुन्होंने कुछ मिनट तक प्रार्थना की: 'हे अीश्वर, हे मेरे आधार, मैं तेरी दया चाहती हूँ।" ये हृदय-वेधक शब्द बार-बार अुनके मुँहसे निकलते रहे। मैं अपने आँसू पोंछनेके लिअे कमरेसे बाहर निकला और अुसी समय आग्राखान महलके ओसारेमें पेनिसिलिन आ पहुँचा। डॉक्टर अिस दवाकी आज़माअिश करना नहीं चाहते थे। त्रिदोष (निमोनिया) तो केवल अेक पूरक वस्तु थी। मूत्र-पिण्डकी (गुर्दोंकी) काम करनेकी अंतिम अक्षमता पेनिसिलिनसे दूर नहीं की जा सकती थी। और अब तो अिसका समय भी बीत चुका था। फिर भी निमोनियाकी अिस चमत्कारिक दवाको देनेकी तैयारी की गअी।

क़रीब पाँच बजे मैंने फिर बा के पास जानेकी हिम्मत की। अिस बार वे तनिक मुसकराअीं। यह वह मुसकान थी, जिसने ४३ वर्षों तक मेरे लाड़ लड़ाये थे। लेकिन साथ ही, वह मरनेवाली माताका अपने पुत्रको आश्वस्त करनेवाला विषादपूर्ण अंतिम हास्य भी था।

मेरी माँ मानवताकी प्रतिमूर्ति थीं। अुन्होंने मेरे प्रति जो विशेष प्रेम दिखाया था, अुसके लिअे मैं अुनके निकट परिचयमें आये हुअे सब किसीसे अुनकी ओरसे क्षमा माँगता हूँ। जिस माँने अन्य प्रकारसे अीश्वरकी सृष्टिको अुज्ज्वल बनाया है, अुस माँकी त्रुटियोंको वे अवश्य ही क्षमा कर देंगे।

लेकिन अुस हास्यने पेनिसिलिन-विषयक मेरी दिलचस्पीको फिरसे जगा दिया और अुसके बारेमें आगेकी कार्रवाअी करनेके लिअे डॉक्टरोंके साथ सलाह-मशविरा करना मुझे अपना फ़र्ज़ मालूम हुआ। डॉक्टर अुसका प्रयोग करनेके लिअे तैयार थे। लेकिन अुन्होंने अुसके सफल होनेकी कोअी

आशा नहीं बँधवाअी। जब गांधीजीको पता चला कि बा को तकलीफ पहुँचानेवाले अिजेक्शन देनेके विचारसे मै सहमत हुआ हूँ, तो अुन्होने शामको बगीचेमे घूमने जानेका विचार छोड़ दिया और वे मुझसे अिसकी चर्चा करनेके लिअे आये: "तू कैसी ही चमत्कारिक औषधि क्यों न लाये, अब तू अपनी मॉको चगा नहीं कर सकेगा। तू आग्रह करेगा, तो मैं अपनी बात छोड़ दूँगा, लेकिन तेरा आग्रह बिलकुल गलत है। अिन दो दिनोंमे अुसने किसी भी तरहकी दवा या पानी लेनेसे अिनकार किया है। अब तो वह अीश्वरके हाथमे है। तेरी अिच्छा हो, तो तू अुसमे दखल दे, लेकिन तू जो रास्ता लेना चाहता है, मेरी सलाह है कि अुस रास्ते तू मत जा। और, याद रखना कि चार-चार या छह-छह घटेसे अिजेक्शन दिलाकर तू अपनी मरती हुअी माताको शारीरिक पीड़ा पहुँचानेका काम कर रहा है।" अब मेरे लिअे दलीलकी गुजाअिश नहीं रह गअी थी। डॉक्टरोने भी छुटकारेकी सॉस ली। अपने पिताजीके साथकी मेरी यह सबसे मीठी चख-चख ज्यो ही खतम हुअी, त्यों ही सदेसा आया कि बा अुन्हे बुला रही है। वे फौरन ही वहॉ पहुँचे। और जो लोग बा को आराम पहुँचानेके लिअे अुन्हे अपना सहारा देकर अुनके पास बैठे थे, अुनकी जगह खुद बैठ गये। अुन्होने बा को अपने कधे पर टिका लिया और जितना आराम वे अुन्हे पहुँचा सकते थे, पहुँचानेकी कोशिश की। दूसरोंकी तरह मै भी बा पर निगाह रखता हुआ सामने खड़ा था। अितनेमे मैंने देखा कि बा के मुँह परकी छाया ज्यादा घनी होती जा रही थी। लेकिन अिसी समय वे बोलीं और ज्यादा आराम पानेके लिअे अुन्होंने अपना हाथ अिधरसें अुधर बदला।

अितनेमे अचानक अुनका अंत समय आ पहुँचा। अनेक ऑखोसे ऑसू बहने लगे। गांधीजीने तो अपने ऑसू रोक रखे। सब अुनके आसपास गोलाकारमे खड़े हो गये और आज तक अुनके साथ जिन भजनोंको गाते आये थे, अुन्हे गाने लगे। दो मिनटमे वे निश्चेष्ट हो गअीं। जैसा कि हममेसे अेक भाअीने मुझसे कहा था, बा मानो हमारे ब्यालू कर चुकनेकी राह ही देख रही थीं। नज़रबन्दोंकी छावनीमे छह बजे ब्यालू किया जाता है। सात बजकर पैंतीस मिनट पर बा ने अपनी देह छोड़ी।

अुनके फूलके साथ अिलाहाबाद जाते हुअे रास्तेमें मैं यह लिख रहा हूँ। सोमवारको त्रिवेणीमें वे प्रवाहित किये जायँगे। माँकी ये अस्थियाँ अितनी छोटी-छोटी हैं कि अेक मुट्ठीमें समा जायँ। नज़रबन्दोंकी छावनीमें रहनेवालोंने शुक्रवारके दिन चिताकी भस्ममेंसे अिन अस्थियोंको विधिपूर्वक चुना था। ये केलके पत्ते पर रखी गअीं और अिन पर फूल, सिंदूर और दूसरे सुगंधी द्रव्य चढ़ाये गये। बादमें पवित्र संस्कारकी विधि की गअी और फिर अिन्हें अन्तिम यात्राके लिअे तैयार किया गया। अिस तरह मैं अपनी माताके साथ यात्रा कर रहा हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि कलके बाद मैं फिर कभी अुनके साथ यात्रा नहीं कर सकूँगा।

गांधीजीका यह स्पष्ट निर्णय था कि अिन फूलोंको ठंडा करनेकी क्रिया दो महान् नदियोंके संगम-स्थान पर की जाय। अुन्होंने मुझसे कहा: "करोड़ों हिन्दू जो धार्मिक विधि करते हैं, वह तेरी माताको भी प्रिय होगी।" अिस निर्णयको तब और भी बल मिला, जब पूज्य मालवीयजीने भी अपने तार द्वारा अैसा ही करनेकी अपनी अिच्छा व्यक्त की। अधिकांश भस्म तो, जैसी कि अुधर प्रथा है, पूनाके पास अिन्द्रायणी नदीमें प्रवाहित कर दी गअी थी। विज्ञानकी दृष्टिसे अिस दूसरी चीज़के औचित्यके बारेमें मुझे शंका है। अुसके विनियोगकी दूसरी किसी रीतिका मैं स्वागत करता, लेकिन दूसरा कोअी अुचित मार्ग सोचा नहीं गया था, अिसलिअे रूढ़िकी ही विजय हुअी।

मुझे और शुक्रवारको सूर्योदयसे पहले मेरे साथ नदी पर आनेवाले अेक छोटे-से जन-समूहको, यह क्रिया अूपर अुठानेवाली थी।

अग्निसंस्कारके बाद दूसरे दिन अिकट्ठी की गअी भस्मका थोड़ा हिस्सा नज़रबन्दोंकी छावनीमें सँभालकर रखा गया है। अुसमें चिताके साथ जलने पर भी अखंडित रही हुअी और बादमें मिली हुअी पाँच चूड़ियाँ भी शामिल हैं।

मेरी माताजीकी बीमारी नज़रबन्दोंकी छावनीमें सितम्बर, १९४२ से शुरू हुअी थी। अुसी समय पहली बार हृदय-रोगके चिह्न प्रकट हुअे थे। यद्यपि पिछले चार-पाँच सालसे अुनकी तबियत खराब रहने लगी थी, तो भी अिससे पहले हृदय-रोगका आक्रमण कभी नहीं हुआ था। यह कहनेमें

जरा भी अतिशयोक्ति नहीं हो रही, कि कारावासके कष्ट सहनेकी शारीरिक या मानसिक ताक़त अुनमे नहीं रह गअी थी। अिससे पहले वे कअी बार जेल जा चुकी थीं। विशेषतः राजकोट राज्यके अेक अैसे गाँवमे, जो राज्यके अदरके हिस्सेमे है, अुनको अेकांत कैदकी भी सजा दी गअी थी, और तब अेक बार तो वे मरते-मरते बची थीं। लेकिन यह अन्तिम कारावास तो शुरूसे आखिर तक अुनके लिअे सबसे कठिन कसौटी बन गया था। और वहाँ रहते हुअे अुनकी आत्मा और देह दोनो मुरझाने लगे थे। महलका और महलके आसपासका वातावरण अुस वातावरणसे बिलकुल ही अुलटा था, जिसकी वे आदी थीं। कँटीले तारोंके अहातेने और चौकी-पहरेने अिस चीजको और भी असह्य बना दिया। पिछले साल अुन्होने मुझसे सेवाग्रामके नीचे छप्परोंवाली झोपडीके रूपमे जिन घरोंका वर्णन किया था, अुनमे वापस जानेके लिअे वे तरसा करती थीं। सर्व-साधारणके सामने आज अिस बातको प्रकट करके मै अपनी प्रिय माताकी स्मृतिको कोअी हानि पहुँचा रहा हूँ, अैसा मुझे नहीं लगता। अपनी बेमियाद नजरबन्दीका तो अुन पर अिससे भी ज्यादा असर हुआ और वहाँ अुनको मिलनेवाले सभी शारीरिक सुख अुनके मन या अुनकी आत्माको शांति न दे सके। अुनकी तरह दूसरे भी हजारों लोग — जिनमेसे कअीके साथ अुनका निकट परिचय था — नज़रबन्दोके अैसे ही कष्ट अुठा रहे थे, अिस हकीकतने अुनके दुःखको अधिक तीव्र बना दिया, और पिछले डेढ सालसे तो वे हमेशा मन-ही-मन यह प्रार्थना किया करती थीं कि अुन्हे और बापूजीको हमेशाके लिअे नजरबन्द रखकर और सबोंको छोड दिया जाय।

जिस समय अुनकी बीमारीने गभीर स्वरूप धारण किया, अुस समय यदि अुन्हे कैदसे छोड दिया जाता, तो क्या वह हितकारक होता? छोडनेके साथ ही, अुनकी अिच्छा हो तब फिर जेलमे वापस आ सकनेकी आजादी भी अुन्हे दी जाती, तो अुससे अुन्हे जरूर फायदा होता। यदि अैसा किया जाता, तो वह अेक सपूर्ण अुदारताका काम होता। लेकिन हकीक़त तो यह है कि अपने सरजनहारकी तरफसे किये गये अन्तिम करुणापूर्ण प्रस्तावके सिवा मुक्तिके दूसरे किसी भी प्रस्तावका अुन्हे अितना भी लाभ नहीं

मिले कि जिससे अुनके मनका समाधान होता। अिसलिअे जब मैंने भारत-सरकारके अमेरिका-स्थित अेजेण्टका यह वक्तव्य पढ़ा कि भारत सरकारने तो अुन्हें कअी बार छोड़ना चाहा था, लेकिन अुन्होंने अिस 'ऑफर'से लाभ अुठाना स्वीकार नहीं किया, तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और आघात पहुँचा। अिस विषयमें हिन्दुस्तानमें सरकारकी ओरसे जो घोषणायें अधिकृतरूपसे निकली हैं, अुनसे भी यह भिन्न है। और अमेरिकामें यह चीज़ अलग ढंगसे क्यों पेश की गअी, अिसका कोअी खुलासा अभी तक मेरे देखनेमें नहीं आया।

जिन्होंने हमें आश्वासनके सन्देश भेजे हैं, और जो मूकभावसे हमारे शोकमें शामिल हुअे हैं, अुन सबका मैं अपने तीनों भाअियों और दूसरे रिश्तेदारोंकी ओरसे हार्दिक आभार मानता हूँ। अिस वियोग-दुःखमें जो करोड़ों स्वजन हमारे ही समान दुःखी बने हैं, अुनके सिवाय हमारे दूसरे भाअी-बहन नहीं हैं।

जिन्हें यह लगता हो कि अिस सार्वजनिक वक्तव्य पर मैंने ज़रूरतसे ज़्यादा समय बरबाद किया है, और अखबारोंकी भी ज़रूरतसे ज़्यादा जगह रोकी है, अुनसे मैं नम्रतापूर्वक क्षमा चाहता हूँ। यह अवसर सहिष्णुताके योग्य है। मैं अिस भावनाको रोक नहीं सकता कि आश्वासन और संमवेदनाके सन्देशों द्वारा और दूसरी तरह हमारे प्रति प्रकट की गअी सहानुभूतिको सार्वजनिक रीतिसे साभार स्वीकार करनेमें मैं चूका होता, तो हमारे दुःखमें हिस्सा बँटानेवाले अपने करोड़ों देशबन्धुओंके अुचित अुलाहनेका मैं पात्र बनता।

गांधीजीने अिस कसौटीको किस तरह पार किया, अिस सम्बन्धमें मुझे दो शब्द कहने चाहियें। अपने जीवनकी यह करुण क्षति अुनको खटकती है, क्योंकि अुनके निर्माणमें बा का बड़ा हाथ था। किन्तु वे तत्त्वज्ञकी-सी शांति रखे हुअे हैं, और जैसी कि हम अुनसे अपेक्षा रखते हैं, वे अपनी भावनाको सचेत बनाये हुअे हैं। अुनके आसपासका वातावरण खिन्नताहीन अुदासीका था, और जब शुक्रवारको मेरे भाअी और मैं अुनसे विदा हुअे, तब आँसूके बदले अुन्होंने अपनी हमेशाकी आदतके अनुसार विनोद ही किया। मैं मानता हूँ कि अुनकी तबियत अच्छी है।

बा

बा के बारेमे कुछ कहना या लिखना बहुत कठिन है। वे मानव-हृदय और मानव-चित्तकी शुचिता और सरलताकी प्रतीक-सी थी। जिस व्यक्तिको खुद ही पता न हो कि वह किस भूमिका पर विचर रहा है, अुसका वर्णन करनेमे वाणी असमर्थ है। बा तो बा ही थीं। बिलकुल सीधी-सादी, लेकिन धीर और वीर। दूसरेका दोष तो अुनके मनमे कभी स्थान पाता ही न था। आश्रममे या बाहर किसीने कुछ बुरा किया हो, और अुसकी चर्चा चले, तो बा बोल अुठती थीं: "लेकिन अुसने अैसा किया क्यों?"

बा के बारेमे बहुतोंका यह खयाल है कि वे नरम स्वभावकी गरीब हिन्दू पत्नी थी — अपने पतिकी छाया-मात्र। किन्तु यह बात जरा भी सच नहीं। बा का भी बापूके समान ही स्वतंत्र व्यक्तित्व था। सिर्फ बुद्धिसे ही नही, बल्कि आन्तरिक प्रेरणासे भी वे सचाअीको पहचान लेतीं, और स्वतंत्र रीतिसे अपने निर्णय करती थी। अपने बल पर ही वे अपनी अुच्च कक्षाको पहुँची थीं। बापू स्वयं अितने महान् है और स्त्रीत्वके भी अितने बडे पुजारी है कि वे किसीको भी जबरदस्ती अपने साथ घसीटेंगे नही। सैकडो बरसोकी रूढ परम्पराओको छोडते हुअे बा को सहज ही कठिनाअी तो मालूम हुअी होगी। साबरमती आश्रममे अस्पृश्यताके महान् कलंकके बारेमे बा को समझानेमे बापूको भी वक्त लग गया था। लेकिन अेक बार बा को यकीन हो गया और वे समझ गअीं, अुसके बाद तो हरिजन अुनके लाडले बन गये।

अपनी मृत्युसे दो साल पहले सेवाग्रामकी अपनी झोपडीके पश्चिमवाले चबूतरे पर बैठी हुअी बा का चित्र मेरी ऑखोके सामने खडा हो जाता है। देशके कोने-कोनेसे बापूको मिलने आनेवालोंको बापूकी कुटिया तक जानेके लिअे अिस चबूतरेके सामनेसे गुजरना पड़ता था। अुनमेसे कअी बा को भी प्रणाम करने जाते, और अुनके हॅसते हुअे चेहरेके दर्शनोका

आनन्द लूटते। बा सबसे प्रेम और ममताके दो मीठे शब्द कहे बिना न रहतीं। अुनके अुस शान्त और मधुर दर्शनको कोअी भी नहीं भूल सकता। मैं तो बा की आवाज़ कभी भूल ही नहीं सकती। अुस आवाज़में अेक विलक्षण मार्दव था — पक्षीके मधुर कूजन-सा कुछ था। बा जब किसी पर चिढ़तीं या नाराज़ होती थीं, तब भी अुनके स्वरकी मृदुता नष्ट नहीं होती थी। कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य गांधीजीके साथ घंटों चर्चा करके कितने ही क्यों न थक गये हों, फिर भी अुस चबूतरे पर बा से मिले बिना वे कभी जाते न थे। बा से मिलनेका हरअेकका ढंग जुदा होता था। वल्लभभाअी तो नन्हे नटखट 'कहाना' को ही चिढ़ाते और अुसके साथ 'धूमा-मस्ती' करने लगते। कहाना भी वल्लभभाअीको चपलता भरे जवाब देकर हँसाता। मौलाना साहब तो गंभीर भावसे बा के पास आकर बैठते और अुनकी तबियतके समाचार पूछकर व सलाम करके चले जाते। जवाहर-लाल जब मौजमें होते, तो कोअी क्रान्तिकारी बात कहकर बा को चिढ़ानेकी कोशिश करते। वे सोचते कि बा गुस्सा होकर विरोध करेंगी। लेकिन बा तो अपनी मीठी हँसी हँसकर धीमेसे कहतीं: "नहीं, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। तुम कुछ भूले हो।" अगर जवाहरलाल थके होते, तो बा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते, और कुशल-समाचार पूछकर चले जाते। लेकिन बा को यह अच्छा न लगता। अुस दिन वे बापू पर सवालोंकी झड़ी लगा देतीं: "आज जवाहार अुदास क्यों दीखता था? आपने अुसे कुछ कहा तो नहीं?" बापू हँसकर जवाब देते: "तू भी जवाहरकी तरह मौजी तो नहीं बन गअी है? आज तो हमारे बीच कोअी मतभेद ही नहीं हुआ!" राजेन्द्रबाबूके साथ तो कभी कोअी चखचख होती ही नहीं थी। शायद अिसलिअे कि दोनोंके स्वभाव अेक ही-से थे। दोनोंके दिलमें कड़ुवाहट नामकी तो कोअी चीज़ थी ही नहीं। और, विलक्षण व्यक्तित्ववाले वे महान् पठान खान अब्दुल गफ़्फार खां! अुनके दिलमें तो युद्ध और हिंसाके प्रति गांधीजीके समान ही तीव्र अरुचि है। वे बा के पास ही जाकर बैठते और पश्चिमके अस्त होते हुअे प्रकाशको देखा करते। कार्यकारिणीके दूसरे सब सदस्य शामको वर्धा जाते, लेकिन खान साहब तो सेवाग्राममें ही रहते।

—

बा को और सरोजिनी देवीको देखकर ही हमे अिस बातका अन्दाज हो सकता है कि नारीत्वमें कितना गौरव और कितना वैभव रहा है: कितनी विविधता, कितनी तेजस्विता और कितना सनातन यौवन! अपने माने हुअे आदर्शोंके लिअे, दिलमे लेशमात्र भी कड़ुवाहट न रखते हुअे, कष्ट सहनेकी कितनी तैयारी, कितना धैर्य, कितनी अटल श्रद्धा और कितनी शक्ति! अिन दो स्त्रियोंको देखनेसे क्या हमे अिस बातका दिव्य दर्शन नही होता कि हमारी भारतभूमि नारियोकी भूमि है। ये नारियॉ ही मानवप्रेम और मानवसेवाके गांधीजीके महान् आदर्श पर डटी रहेगी और बाजारोकी, फौजोकी और हुकूमतकी होडमे कभी शामिल नहीं होंगी।

-बापूकी भॉति दूसरे भी कअी होगे, जो बा की शान्त हुअी आवाजको सुननेके लिअे तरसते होगे। लेकिन अिस शोकके पीछे अेक अमर आशा यह रही है कि बा-जैसे व्यक्ति कभी मरते ही नहीं। अमरत्वके सच्चे अुत्तराधिकारी (वारिस) वे ही है।

क्या कभी यह सभव था कि हिन्दुस्तानको छोडकर दूसरे किसी देशमे बा का और बापूका जन्म होता? मुझे तो अिस सवालका जवाब साफ 'ना' मे मिलता है। मै मानती हूँ कि अिस देशमे अुनको जितना प्रेम और जितनी पूजा मिली है, अुतनी दूसरे किसी देशमे न मिलती। अिस विचारसे हमे आश्वासन मिलता है। हमारी जो प्राचीन सस्कृति पुराणोंके कालसे चली आ रही है, मानवके रूपमे बा और बापू अुसके अवतार-समान है। हो सकता है कि आज हमारी अुस सस्कृति पर विकृतिकी कुछ लकीरे खिच गअी हो। फिर भी मूलतः हमारी सस्कृति शान्ति और ज्योतिकी सस्कृति है। वह मनुष्यको अीश्वरका ही अग मानती है। दूसरी कोअी सस्कृति मनुष्यके सामने अितनी शक्ति और अितनी स्वतन्त्रताकी आशा अुपस्थित नहीं करती। यद्यपि आजकी दुनियाकी करतूतोंको देखते हुअे तो शक्तिका अर्थ भी बहुत-कुछ बदल जाता है। आज तो जो अपने विरोधियोंको ज्यादा-से-ज्यादा नुकसान पहुँचा सकते है, वे अपनेको अधिक-से-अधिक शक्तिशाली समझते है। लेकिन शक्तिके सबधमे गांधीजीकी

और हमारे देशकी व्याख्या अिससे बिलकुल भिन्न है: दिलमें किसी तरहका द्वेष न रखकर जो अधिक-से-अधिक कष्ट सहनेके लिअे तैयार होता है, शक्ति अुसके चरणोंमें आकर बैठती है। भौतिक सत्ता प्राप्त करनेके लिअे महान् युद्ध शुरू करके आज दुनिया अपनी विरासतमें आग और अंगारे ही छोड़े जा रही है, यह कितना करुण और कितना मूर्खता-पूर्ण है! दुनियाके विचारशील लोगोंके दिलमें तो तनिक भी शंका नहीं है कि जो लोग आज मदसे चूर हैं, अुनको पीछे हटना ही पड़ेगा, और आधुनिक जगत्का पुरुषोत्तम अपनी जिस शान्ति-वीणाको पत्थरकी दीवारोंके पीछे बैठा बजा रहा है, अुसे सारी दुनियाको सुनना ही होगा। अिस मदोन्मत्त दुनियाके सामने खड़े होकर यह कहना कि "तुम सब गलती पर हो, और अकेला मैं ही सचाओी पर हूँ; संभव है कि तुम्हारा हृदय-परिवर्तन होने तक मैं ज़िन्दा न रहूँ, तो भी आनेवाला समय और आनेवाली पीढ़ियाँ मेरे अिन वचनोंकी साक्षी देंगी," किसी साधारण हिम्मतवाले आदमीका काम नहीं! हमारी बा अैसे अेक पुरुषकी जीवन-संगिनी थीं। वे जीवन-भर अुनके साथ रही हैं। आज बापूकी विरह-वेदनाका अंदाज़ कौन लगा सकता है? किसीको अुसका पता भी नहीं चलेगा, क्योंकि बापू तो अपने जीवनकी गहन वेदनाओंको मौन रहकर ओीश्वरके सान्निध्यमें ही भोगते हैं।

बहुत साल पहले जब बापूने अस्पृश्यताके कलंकके विरुद्ध युद्ध छेड़ा था, तब बा के विचारोंको बदलनेमें अुनको बड़ी कठिनाओीका सामना करना पड़ा था। अथाह धैर्यके साथ बापू बा को समझाते रहते। रोज़ घंटों चर्चा करते। अेक दिन तो हरिजनोंको रसोओीघरमें दाखिल करके रसोओी बनाने देनेके लिअे बा को समझाते-समझाते वे थक गये और बोले: "बा को यह चीज़ समझाना बहुत मुश्किल है।" लेकिन अिन शब्दोंके अुच्चारणके साथ ही वे बहुत गंभीर हो गये और फिर दूरकी कोओी बात सोच रहे हों, अिस तरह कहने लगे: "अितने पर भी यदि मुझे जन्म-जन्मान्तरके लिअे अपना साथी पसन्द करना हो, तो मैं बा को ही पसन्द करूँगा।" बापूके अिन शब्दोंसे बढ़कर और कौनसे शब्द होंगे, जिनसे बा के सच्चे स्वरूपका वर्णन किया जा सके?

भाषा द्वारा हम बा का विचार कर ही नहीं सकते। अिसके लिअे तो अुनकी मूर्तिको, अुनके चित्रको, आँखोंके सामने खडा करना चाहिये। अुनकी चाल, अुनका घूमना-फिरना, अुनकी कोमल आवाज और अिन सबसे बढकर अुनकी मीठी, निर्मल मुसकान हमें अुस महान् विभूतिकी शुचिता और वीरताका सच्चा दर्शन कराती है। यों देखें, तो बा बहुत अुग्र नहीं थीं। दक्षिण अफ्रीकामें और यहाँ आज़ादीकी लड़ाअीमें वे कअी बार जेल गअी थीं। लेकिन अुन्होंने यह कभी नहीं दिखाया कि जेल जाकर वे कोअी असाधारण काम कर आअी हैं। देशके लिअे अुन्होंने जो बड़े-बड़े बलिदान किये, स्वेच्छापूर्वक गरीबीको अपनाया, अपने सर्वस्वको छोडा, अपने प्रिय पतिके सहवास तकका त्याग किया, सो सब अुन्होंने अपने सहज भावसे और निरभिमान वृत्तिसे ही किया।

पिछली बार जब बा जेल गअीं, मैं वहीं थी। पुलिस अफसरके आने पर वे अुतनी ही मिठाससे अपना सामान बाँधनेमें लग गअीं। पहले दिन अेलान किया था कि ९ अगस्तको शिवाजी पार्कमें सभा होगी, और बापू अुसमें भाषण करेंगे। बापूकी गिरफ्तारीके बाद बा ने अुस सभामें जाने और बापूका संदेश सुनानेका निश्चय किया था। अुस दिन बा की गिरफ्तारी अेक बहुत अजीब ढंगसे हुअी। पुलिसका अेक बडा कद्दावर अफसर, जो हिन्दुस्तानी था, बा के सामने हाथ जोडकर खडा रहा और जरा झुककर बा से पूछने लगा: "आप घर ही रहेंगी या सभामें जायेंगी? आपका क्या हुक्म है?" अुसे भी अटपटा तो लगा होगा कि अुसके जैसा अल्पात्मा शरीरसे अितना मोटा-ताजा है और बा के जसी महान् आत्मा अितने नन्हे और नाजुक शरीरवाली है! बा ने तो अपनी अुसी मीठी मुसकानके साथ फौरन जवाब दिया: "मैं सभामें तो जाअूँगी ही।" अफसर बेचारा सोचमें पड गया। आखिर बोला: "तो आप अिस मोटरमें बैठेंगी? मैं आपको बापूके पास ले जाअूँगा।" अिस तरह बा की गिरफ्तारी हुअी। आश्रमके अेक छोटे लडकेको अिच्छा हुअी कि वह बा की साडी पर 'करेंगे या मरेंगे' का अेक बिल्ला लगा दे! वह लगाने गया। बा ने हलकेसे अुसे हटा दिया और कहा: "मुझे यह नहीं फबता।" यह थी बा की अंतिम यात्रा। वहाँसे वे वापस न आअीं।

अुन्होंने तो अुक्त व्रतका पालन बिना किसी आडम्बरके कर दिखाया। मैंने सुना है कि आगाखान महलके अुस मनहूस वातावरणमें अुनको अच्छा नहीं लगता था। आश्रमकी सादी किन्तु साफ़ कुटियामें रहनेका अुन्हें अभ्यास हो गया था। महलका वह फर्नीचर, जिसके अन्दर ढेरों धूल भरी रहती थी, अुन्हें बिलकुल न रुचता था। वहाँका वातावरण तो प्रतिकूल था ही। तिस पर वहाँ कुछ ही दिनों बाद महादेवभाअीकी मृत्यु हो गअी!

बापूके पिछले अुपवासके दिनोंमें मैंने बा को आखिरी बार देखा था। १९४३ की १८ वीं फरवरीका वह दिन था। वह पहला दिन था, जब बापूकी तबियत नाजुक हो गअी थी। रविवार ता० २१ फरवरीके दिन बापूकी तबियत बहुत ही नाजुक हो अुठी। अुस दिन बा के चेहरे पर विषादकी हृदय-विदारक घटा छाअी हुअी थी। वे सारे देशके — गरीब-अमीर सबके — हृदयमें व्याप्त दुःखकी प्रतिमूर्ति-सी लगती थीं। अैसा प्रतीत होता था, मानो समूचे देशकी ओरसे बा विनय कर रही हों कि "नहीं, नहीं, भगवन्! अितनी बड़ी कुरबानी नहीं हो सकती। अिस अंधेरे और भयावने बियाबानमेंसे हमारे देशको प्रकाश और शान्तिके मार्ग पर ले जानेके लिअे अिस नेताको बचा!" बापू तो शान्त थे और कहते थे: "कोअी घबराओ नहीं। अिस पार या अुस पार सब अेक ही है। मैं तैयार हूँ।" अिस परित्याग और अैसी अीश्वर-श्रद्धाके सामने शोकका कोअी स्थान ही नहीं हो सकता। किन्तु अपनी वीरतापूर्ण मुसकानके पीछे बा जिस दुःखको छिपाये हुअे थीं, वह तो असह्य ही था। आगाखान महलके सामने बैठाअी गअी दो-दो चौकियोंको पार करके बाहर निकलते समय मैं और मेरे साथी तो रो ही पड़े। शायद बापू न रहेंगे, अिसके दुःखकी अपेक्षा यह विचार अधिक दुःखदायी था कि बा का क्या होगा? अिस अन्तिम चित्रको भूलनेकी मैं बहुत कोशिश करती हूँ। राष्ट्रीय तूफ़ानके कुछ दिन पहले मैं सेवाग्राम गअी थी। अुस समयकी बा के अुस चित्रको अपने मनमें अंकित कर रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। प्रार्थनाके चौकसे लगे अपनी कुटियाके चबूतरे पर बा बैठी हैं, अुनके आसपास बहनोंका दरबार जुड़ा है और बा अपने विलक्षण व अनुपम

ढंगसे सबके साथ बात कर रही है। अुस समयकी बा की मुसकानसे मिलने-
वाला प्रकाश जितना अद्‌भुत था, अुतना ही अद्‌भुत था कअियोंके लिअे
काम कर-करके थकी हुअी बा का दोनों हाथ जोड़कर सबका स्वागत करना
था सबको विदा देना। अब तो वे अमर और विभूतिमय भारतीय नारी-
मण्डलके बीच सीता और सावित्रीके बराबर जा बैठी है। हज़ारों
वर्षों तक वे भारतवासियोंके लिअे आश्वासन और धैर्यका धाम
बनी रहेंगी।

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

पहली बार . २,२००
दूसरी बार ३,०००

जुलाओी, १९४९

दो रुपया

दो शब्द

कोचरबमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुअी, तभीसे भाअी नरहरि परीख अुसमें शामिल होनेवालोंमें हैं। अिसलिए चिरंजीव वनमालाको जो कुछ मिला है, सो आश्रममेंसे ही मिला है। वह सरकारी मदरसेसे और वहाँ मिलनेवाली शिक्षासे अछूती रही है, अिसलिअे यह माना जा सकता है कि वह मज़दूरी करना जानती है। लेकिन अुसने तो कस्तूरबाके जीवन-वृत्तान्तकी सामग्री इकट्ठा करनेका साहस किया है। अिसमें अुसने दूसरोंकी मदद ली है। यह लिखते समय मैंने दूसरे लेखोंको देखा नहीं है। चिरंजीव वनमालाका आग्रह था कि अुसके अपने लिखेको मैं देख जाअूँ। बेचारी लिखने तो बैठी कस्तूरबाके बारेमें, लेकिन बचपनमें मेरे साथ दौड़ी और खेली थी, सो मुझे कैसे भूलती? देखता हूँ कि अुसने अिधर-अुधरसे बहुतसी अप्राप्य हकीकत इकट्ठा की है और अुसे ठीक-ठीक सजाया है। अुसकी भाषा घरेलू और सादी है। मुझे अुसमें कहीं भी बनावट नहीं दिखाई दी। चिरंजीव वनमालाका यह पहला प्रयत्न कुल मिलाकर सफल हुआ है या निष्फल, अिसका फैसला तो पाठकोंको ही करना होगा।

चिरंजीव प्यारेलालकी बहन चिरंजीव सुशीलाबहनने जेलमें अुसे मिले हुअे बा के अनुभव लिखे थे। चिरंजीव वनमालाने सोचा था कि अुनमेंसे कुछ वह अपने लेखमें ले लेगी। लेकिन पढ़ने पर अुसे लगा कि बहन सुशीलाकी लिखावटमें अेक सहज कला है। अुसका अंगभंग करनेकी अुसकी हिम्मत न हुअी। मूल